

~~अमृत~~ पाटील [8180029385]

~~महारा~~ अग्रवाल

~~ज्ञेय~~

~~संगीत~~

~~दिव्य~~

xerox odar 7 4 4 8 0 4 3 5 4 3

xerox odar 7 4 4 8 0 4 3 5 4 3

xerox odar

अभ्यासक्रम

* सर्व समान्य शब्द संग्रह = 10 प्र. - 10 गुण

1) समानार्थी शब्द:

- अ] एकाच शब्दाचा एक अर्थ.
- ब] एकाच शब्दाचे अनेक अर्थ.

2) विलोक्यार्थी शब्द:

- अ] शब्द समुदायातूल एक शब्द.
- ब] शुद्ध शब्द.

* व्याकरण वाक्यरचना = 30 प्र. - 30 गुण

1) वर्ण विचार:

2) शब्द विचार:

- अ] शब्दांच्या जाती.
- ब] शब्द रास्ती.
- क] शब्द सिद्धी.

3) वाक्य विचार:

- अ] वाक्यांचे प्रकार.
- ब] वाक्य रूपोत्तर.
- क] वाक्य संख्येघण.
- ख] वाक्य पृष्ठकरण.
- ग] प्रयोग.
- घ] विशम चिन्हे.

* वाक्प्रचार व महणी = 10 प्र. - 10 गुण

* उतारा :

* वर्णविचार :

- अ) वर्णाचे स्वरूप ब] वर्णाचे उत्तरार क) अद्वार
- क) जोडाकर ख] योव्या वर्गरचना ग) अकार विलेक्रम
- घ] संधी.

वर्ण | (वर्णविचार)

- आपल्या मुखावटे निघाऊया / बाहेर पडणाऱ्या मुळ-
छवनीना वर्ण असे रहगतात.
- वर्ण म्हणजे रंग, मुखादून बाहेर पडलेले मुलाखनी हवेतून
विस्तृत जाऊ नयेत रहण्यात ते विशिष्ट रंगाने लिहून ठेवले जातात,
रहण्यात त्यांना वर्ण असे रहगतात.

* व्याख्या :-

1) मोरो केशव दामले :-

- मुखावटे उच्चारल्या जाऊया मुलाखनीना वर्ण
असे रहणतात.

- त्यांनी "शास्त्रीय मराठी व्याकरण" हा ग्रंथ लिहिला (१७११).

2) दादोबा पांडुरंग तर्खडकर :-

- 'अ' पासून 'ळ' पर्यंतच्या मूळाशरांना वर्ण असे
रहणतात.

- त्यांनी लिहिलेले ग्रंथ :-

- ① महाराष्ट्र भाषेचे व्याकरण. (१८३६)
- ② मराठी लघु व्याकरण.

- त्यांना लोकहितवादींनी "मराठी भाषेचे पाणी" असे रहले आहे.

3) कृष्णशास्त्री चिपकूणकर :- (वृहस्पती)

- वृहस्पती :- वोल्व्यात हुशार असलेला किंवा ज्याचे वक्तृत्व
चांगले आहे असा / देवांचा गुरु.

- कंठ, टाळू इ. अवयवांपासून जे मुलाखनी उच्चारले जातात
त्यांना वर्ण असे रहणतात.

- त्यांना ओक यांनी "मराठी भाषेचे जौन्सन" असे रहले आहे.

- त्यांनी "मराठी व्याकरणातील निवंश" (१८९३) हा ग्रंथ लिहिला.

4) विष्णुशास्त्री चिपकूणकर :-

- विष्णुशास्त्री हे कृष्णशास्त्री चिपकूणकर यांचे सुपुत्र होत.

- त्यांना "मराठी भाषेचे शिवाजी" असे संकोचले जाते.

मुलष्वनी

- ज्या ष्वनीचे अधिक विझाजन होत शकत नाही अशा ष्वनींना मुलष्वनी असे रहणतात.
- जे ष्वनी चिन्हांकित करता येतात अशा ष्वनींना मुलष्वनी असे रहणतात.
- ष्वनी हे आधिके मूलभूत घटक आहेत.

मुलष्वनी = वर्ण = स्वन

* मुलष्वनी आणि वर्ण यांतील फरक :-

| मुलष्वनी | वर्ण |
|--|-------------------------------------|
| → मुलष्वनी हे अमूर्त स्वरूपाचे असतात | → वर्ण हे मूर्त स्वरूपाचे असतात |
| → मुलष्वनी जिवंत, प्रवाही व परिवर्तनशील असतात. | → वर्ण स्थिर, कृत्रिम व वब्ध असतात. |
| - मुलष्वनीचे लिखित स्वरूप चर्णणजेच वर्ण होय. | |
| - मारठी आधेत ५० वर्ण आहेत. [G.R. = ६-११-२००९] | |

* वर्णमाला किंवा मुळाहरे :-

→ 'अ' पासून 'ळ' पर्यंतच्या वर्णांना वर्णमाला असे रहणतात.

1) स्वर :- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, औ, ए, ऐ, ओ, ऑ, औ.

2) स्वरादी :- अनुस्वार विसर्गी
अ अः

3) त्यंजने :- कठोर सृदू अनुनाशिक

| | | | |
|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ |
| च | छ | ज | ঝ |
| त | ল | ধ | ঢ |
| ত | থ | হ | ঢ |
| প | ফ | ভ | ঢ |

য, র, ল, ব,

শ, প, স

ত, ছ

4) विशेष संयुक्त व्यंजने :-

- मूळ, इक्ष - ही व्यंजने 'स्वर्णीस' यांनी मराठी भाषेत आणली.

- वर्णाचे दोन प्रकारे वर्गीकरण केले जाते :-

1) स्वरूपानुसार - (तीन प्रकार)

2) उच्चारानुसार - (नंबर प्रकार)

1) स्वरूपानुसार वर्गीकरण :- (वर्ण 50)

↓
स्वर

↓
स्वराळी

↓
हल / व्यंजन / परवर्ण / स्वराळन

1) स्वर :-

ज्या वर्णाचा उच्चार स्वतंत्र असतो, इतर वर्णांच्या मात्रती-
षिवाय होतो अशा वर्णाना स्वर म्हणतात

- स्वरोच्चाराच्या वेळी हवेचा मार्ग अडवलेला नसतो.

- स्वरोच्चाराच्या वेळी तोंड विवृत (उघडलेले) असते.

- स्वरोच्चारांत प्रवाहीपणा असतो.

- स्वर पुणीच्याशीत असतात.

उदा :- अ, आ, इ, ई, ऊ, ऊ, ऋ, ऋ, ए, अॅ, ऐ, ओ, आॅ, ओॅ.

- स्वर राळात वापरतांना दोन पद्धतीने वापरले जातात :-

① अक्षराच्या स्वरूपात :-

② चिन्हाच्या स्वरूपात :-



| स्वर | स्वरचिन्ह | नाम | उदा | विभ्रह |
|------|-----------|------------------|------|--------|
| अ | - | - | क | क + अ |
| आ | ट | काना | का | क + आ |
| ए | प | हस्त इकार | कि | क + इ |
| ॒ | प | बीर्ध इकार | की | क + ई |
| उ | ॒ | हस्त उकार | कु | क + ऊ |
| ऊ | ॒ | बीर्ध उकार | कू | क + ऊ |
| ऋ | ॒ | ऋकार | कृ | क + ऋ |
| ॠ | ॒ | लृकार | क्लृ | क + ॠ |
| ऋ | ॑ | मात्रा | के | क + ऋ |
| अ॒ | ॑ | अर्थचंद्र | कै | क + अ॒ |
| ऐ | ॑ | दोनमात्रे | कै | क + ऐ |
| ओ | ॑ | मात्रा व काना | कौ | क + ओ |
| आ॑ | ॑ | अर्थचंद्र व काना | कौ | क + आ॑ |
| औ॑ | ॑ | दोनमात्रे व काना | कौ | क + औ॑ |

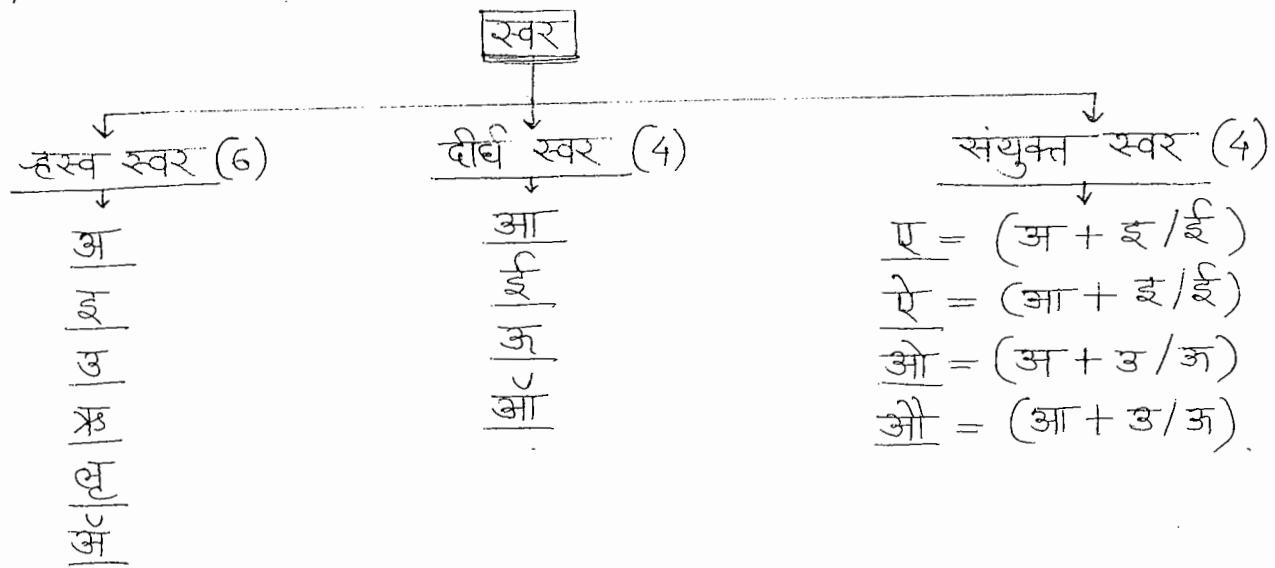
- स्वरंचे तीन प्रकाशत वर्गीकरण केले जाते :-

1) स्वस्पानुसार :- (उ प्रकारे)

2) उच्चारानुसार :- (२ प्रकारे)

3) व्युत्पत्तीनुसार :- (२ प्रकारे)

१) स्वरानुसार वर्गीकरण :-



① हस्त स्वर :-

ज्या स्वरांचा उच्चार करण्यासाठी एका मात्रेश्वरा वेळ भागातो त्यांना हस्त स्वर असे रहणतात.

- हस्त स्वरांची मात्रा एक मोजतात.

उदा:- अ, इ, उ, ऋ, ॠ, ओ.

② दीर्घ स्वर :-

ज्या स्वरांचा उच्चार करण्यासाठी दोन मात्रेश्वरा वेळ भागातो त्यांना दीर्घ स्वर रहणतात.

- द्विगुणीत स्वरांना दीर्घ स्वर रहणतात.

उदा:- आ, ई, ऊ, औ.

③ संयुक्त स्वर :-

दोन किंवा अधिक स्वरांच्या एकत्रीकरणातून बनलेल्या स्वरांना संयुक्त स्वर असे रहणतात.

उदा:-

ए = (अ + इ/ई)

ऐ = (आ + इ/ई)

ओ = (अ + उ/ऊ)

औ = (आ + उ/ऊ)

- संयुक्त स्वरांचा समावेश दीर्घ स्वरांमध्ये होतो.
- संयुक्त स्वरांची प्रृथग्ती मो. के. द्वामले यांनी सांगिली.

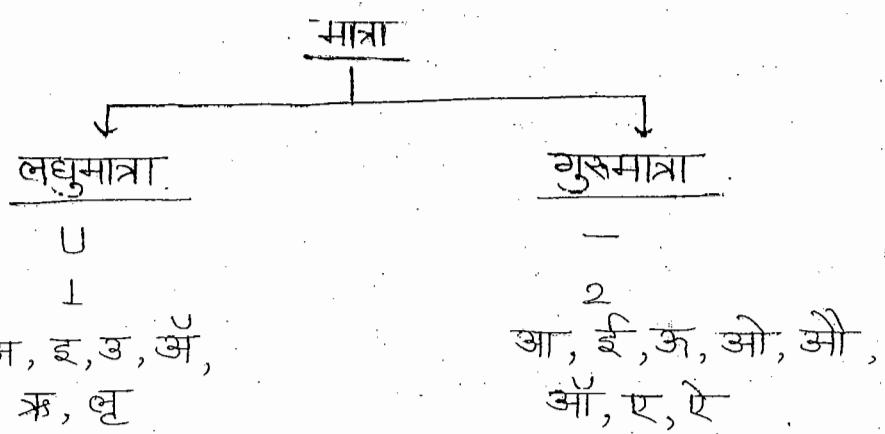
- मात्रा :-

- स्वराचे चिन्ह
 - उपाय
 - औषधाचे प्रमाण
 - वेळेचे परिमाण
 - वान्यातील मातीचे खडे.
- } मात्रेचे वेगवेशाले अर्थ

- मात्रा :-

एखादे अशर उच्चारायला बांगणाऱ्या वेळेचे परिमाण म्हणजे मात्रा होय.

- मात्रांचे दोन प्रकार मडतात :-



- एक मात्रा म्हणजे निमिष.

- निमिष :- डोऱ्याचे पाते लवण्यास लागणारा काळावडी म्हणजे निमिष होय.

$$\therefore 1 \text{ निमिष} = 4 \text{ द्वंद्व}$$

2) उच्चारानुसार वर्गीकरण :-

स्वर

1) सजातीय स्वर (स्वर्ण स्वर)

अ-आ
इ-ई
उ-ऊ
ए-ऐ
ओ-औ
ऑ-ऑ

2) विजातीय स्वर (अस्वर्ण स्वर)

अ-इ
आ-उ
ए-आ
आ-ई
इ-उ
ई-ए

1) सजातीय स्वर :-

एकच/समान उच्चारस्थान असलेल्या स्वरांना
सजातीय स्वर असे म्हणतात.

उदाः:- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ

2) विजातीय स्वर :-

मिळ उच्चारस्थान असणाऱ्या स्वरांना विजातीय
स्वर असे म्हणतात.

उदाः:- अ-इ, आ-ए, ई-ए.

3) व्युत्पत्तीनुसार वर्गीकरण :-

स्वर

1) सिद्ध स्वर

2) साधित स्वर

१) सिद्ध स्वर :-

जे स्वर स्वतंत्र, स्वयंभू किंवा मूळ स्वर असतात म्हणजेच त्यांची व्युत्पत्ती इतर स्वरांपासून शालेबी नसते, अशा स्वरांना सिद्ध स्वर असे म्हणतात.

उदाहरण : हस्त स्वर (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ऊ)

२) साधित स्वर :-

मूळ स्वरांपासून बनलेल्या स्वरांना साधित स्वर असे म्हणतात.

| <u>उदाहरण :-</u> | <u>दीर्घ</u> | <u>संयुक्त</u> |
|------------------|--------------|----------------|
| | आ | ए |
| | ई | ऐ |
| | ऊ | ओ |
| | ऑ | औ |

टीप :-

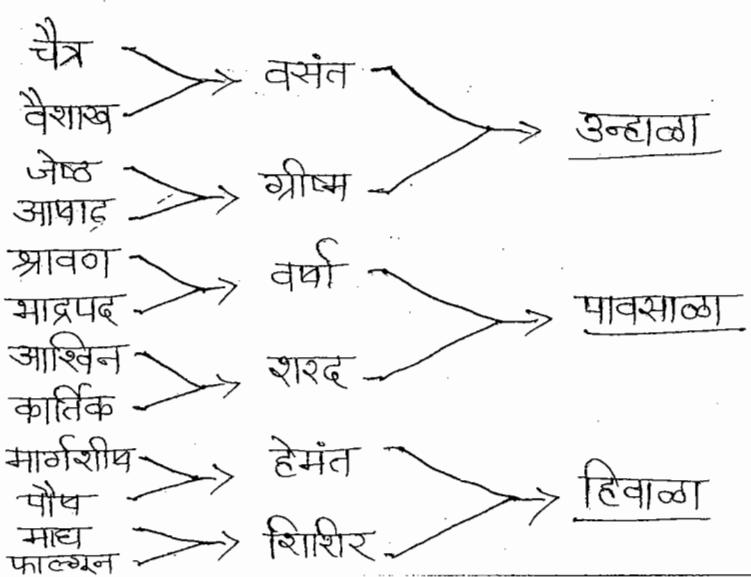
- अ॒ आगी ऑ हे दोन नवीन स्वर इंग्रजी भाषेच्या माध्यमावून मराठी भाषेत आले आहेत.

- अश्विंद मंगळसळकर यांनी त्यांचा समावेश मराठीत केला.

उदाहरण :- वैट, बौल, ऑफिस इ.

पाठी ५१

मराठी महिने



* हस्त आणि हीर्ष मधील फारक :-

| <u>हस्त स्वर</u> | | <u>हीर्ष स्वर</u> | |
|------------------|--|-------------------|-----------------------------|
| <u>शब्द</u> | <u>अर्थ</u> | <u>शब्द</u> | <u>अर्थ</u> |
| १) दिन | - दिवस (वासर) | दीन | - व्रतीक. |
| २) सूत | - सुलगा | सूत | - लागा |
| ३) शिर | - डोके | शीर | - नस |
| ४) मिलन | - भेट | मीलन | - मिठो |
| ५) सलिल | - पाणी | सलील | - सहज |
| ६) निज | - स्वतःहाता | नीज | - झोप |
| ७) जित | - पराभूत झालेला | जीत | - विजय |
| ८) चिर | - दिर्घकाळापर्यंत | चीर | - भेग |
| ९) पिक | - कोकिळा | पीक | - छान्य |
| १०) पाणी | - हात | पाणी | - जल |
| ११) शिव | - महादेव | शीव | - हद्द (Border) |
| १२) टिका | - ठिपका | टीका | - निंदा (आघ्या, समीक्षा) |
| १३) खचित | - मढवलेला | खचीत | - खरोखर |
| १४) भरित | - भरलेला, पुष्ट | भरीत | - वांग्यांचे भरीत |
| १५) माणिक | - सोनार | माणीक | - शत्रु |
| १६) सुर | - देव | सूर | - स्वर |
| १७) पुज्य | - शुन्य | पूज्य | - आदरार्थी |
| १८) किंतु | - परंतु | किंतु | - शंका |
| १९) प्रति | - कडे (प्रत्येकी) | प्रती | - प्रत (Xerox) |
| २०) शाकुण | - शुभचिन्ह | शाकूण | - शब्द, शापण |
| २१) अंतरीक्ष | - आकाश (आभाळ, शगन, नम अवकाश, अंतरिक्ष, व्योम, ख, अंबुट, वितान, वियत) | आंतरीक्ष | - आकाशासंबंधी |

| | | | | |
|-----|----------|-------------------|-----------|---------------------|
| 22> | अमदानी | - शजवट | आमदनी | - मिळकत |
| 23> | अरहित | - रद्दग न केलेले | आरहित | - आषीच रक्षण केलेले |
| 24> | अश्विन | - घोडे स्वार | आश्विन | - मराठी महिना |
| 25> | अरी | - शस्त्र, चाक | आरी | - शस्त्र |
| 26> | प्रसाद | - नैवेद्य, कृपा | प्रासाद | - शजवाडा |
| 27> | स्वगत | - स्वतःहाशी बोलणे | स्वगत | - आदर-सत्कार |
| 28> | वारि | - पाणी | वारी | - फेरी |
| 29> | हर | - शंकर | हार | - पराभव, माझ |
| 30> | दार | - दरवाजा | दारा | - पत्नी |
| 31> | तमा | - अंधार | तमा | - परवा |
| 32> | प्राथमिक | - सुख्खातीचे | प्राथमिका | - करंगळी, लर्जनी |
| 33> | प्रांत | - हुशार | प्रांता | - तीव्र बुद्धीमत्ता |

- काही स्वरोचा उच्चार आखुड तर काही स्वरोचा उच्चार हा वांवट आसतो / होतो.

- आखुड उच्चार - निमृत, लोकडा, अपूर्ण.

- वांवट उच्चार - संभृत, पूर्ण.

1) निमृत उच्चार / आखुड उच्चार :-

→ मराठीत अंत्य 'अ' निमृत उच्चारला जातो.

उदाः:- पानू, कमळ, वडील.

→ अंत्य अक्षर अकारान्त नसेल व उपांत्य अक्षर अकारान्त असेल तर उपांत्य 'अ' चा उच्चार निमृत होतो.

उदाः:- चपूटा, कपडा, नकूटा

→ चार अक्षरी शब्दातील दुसऱ्या अक्षरातील 'अ' निमृत उच्चारला जातो.

उदाः:- परखड, करवत, सरदार, खलूबत.

→ जोडाक्षर, अनुशवार, विसर्ग, यांच्या नंतरचा 'अ' निमृत उच्चा-
रला जातो.

उदा:- गिंत, चिंच, डिंक, रिस्त, शुच्छ, दुःख

2) लोकट उच्चार / संभूत उच्चार :-

→ अकाशान्त पूर्वीचे स्वर मराठीत लोकट उच्चारले जातात.

उदा:- गाव, मोर, कौल

→ व, ग, ह या एकाही शब्दांचा उच्चार लोकट होतो. (त्यातील
आगि
आहंकार मेल्ले)

→ तत्सम शब्दातील (संस्कृतमधील) अंत्य 'अ' लोकट उच्चारला जातो.

उदा:- शुण, विष, मंदिर

* स्वरांचा वापर :-

- उपसर्ग म्हणून स्वरांचा वापर होतो.

अ- (मराठी) → अजाग, अबोल, आगीत, असंख्य.

आ- (संस्कृत) → आमरण, आजन्म.

- प्रत्यय म्हणून स्वरांचा वापर :-

अ - कर, डर, मर

आ - ठेवा, झगडा, लढा

इ - बुडी, उडी, रडी

ऊ - चालू, झालू, उतास

आई - घोडाई, लडाई, शिभाई

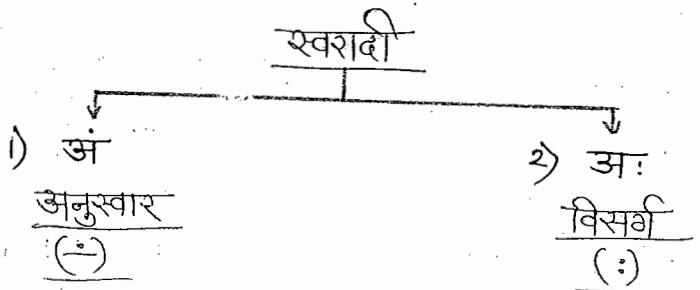
आऊ - टाकाऊ, विकाऊ, लहाऊ

: मराठी प्रत्यय :>

२) स्वरादी :- (अं, अः)

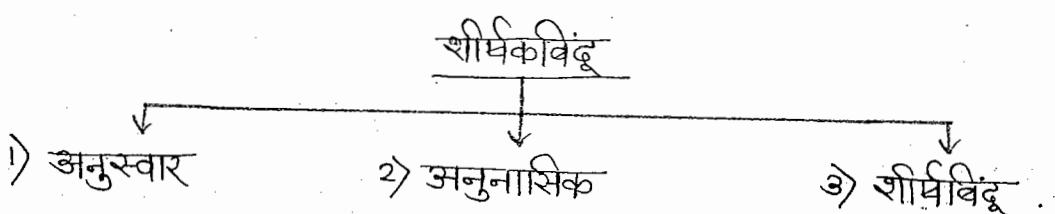
ज्या वणीचा उच्चार करण्याभगोदर स्वर येतो,
अशा वणीना स्वरादी असे म्हणतात.

- मी के वामले यांनी स्वरादीचा समावेश मराठीत केला.



- स्वरादीच्या अगोदर नेहमी हस्त स्वर येतो.

१) अनुस्वार / अनुनासिक / शीर्षकविंदू / शीर्षकविंदू / विंदू / परस्वर्ग :-



१) अनुस्वार :-(-)

शीर्षकविंदूचा उच्चार नाकातून जेळा स्पष्ट आणि
खणखणीत होतो, तेळा त्यास अनुस्वार असे म्हणतात.

- शीर्षकविंदूच्या मुठे जेळा स्फरीकाण्जने येतात तेळा त्याबा,
अनुस्वार असे म्हणतात.

- अनुस्वार परस्वर्ग महणून वापरता येतात.

उदा:- आंवा, चिंच, पंख, रंग.

२) अनुनासिक :-

शीर्षकविंदूचा उच्चार जेळा नाकातून अस्पष्ट आणि
ओळखता होतो तेळा त्यास अनुनासिक असे म्हणतात.

उदा:- पांच, हं, कांही, नाव, घरांत, कां

- अस्पष्ट उच्चार होणाऱ्या व मुळीच उच्चार न होणाऱ्या कोणत्याही
अनुनासिकावद्दल आला अनुस्वार देत नाहीत. *(New Rule)*

③ शीर्षविंदू :-

विंदूच्या पुढे जावणीय व्यंजने आव्यास त्या विंदूला -
शीर्षविंदू असे म्हणतात.

- तो अनुश्वार केवळ शीर्षविंदूने दाखवावा
- तो अनुश्वार परस्वर्ण वापरून दाखवू नये.

उदा:- संयम, सिंह, संवाह, संसार, संचना, संरक्षण, संहिता.

④ परस्वर्ण :-

स्वर्ण वर्ण :- एकाच उच्चारस्थानातून निघणाऱ्या वर्णाना स्वर्णवर्ण
असे म्हणतात.

उदा:- क, ख, ग, घ.

- परस्वर्ण लेखन म्हणजे अनुश्वारऐवजी विशिष्ट अनुनासिक वापरून
केलेले लेखन.
- अनुश्वाराच्या ऐवजी जे अनुनासिक वापरायचे असते ते परभळा-
राच्या वर्गातील स्वर्ण असते, म्हणून त्यास परस्वर्ण असे म्हणतात.

उदा:- अपंग

→ अनुश्वाराचे स्व अहर :- प

→ अनुश्वाराचे पर अहर :- ग

→ परभळार गटातील अनुनासिक :- ड

→ परस्वर्ण वापरून केलेले लेखन :- अपङ्ग.

2) विसर्ग :- (ः) विसर्ग याचा अर्थ आस सोडणे असा होतो

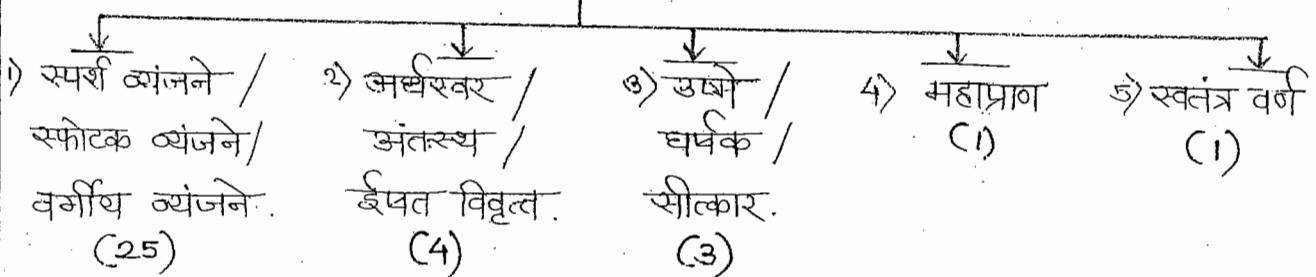
- विसर्गाचा उच्चार 'ह' या वर्णाला योडा हिंसडा देऊन केल्यासारखा
होतो.
- विसर्गपूर्वीचा स्वर नेहमी पहस्व असतो तर विसर्गाच्या पुढे नेहमी
कठोर व्यंजन येते.

उदा:- अष्टःपात (नाश), अंतःपूर, इतःपर, कःपदार्थ (रुल्लक),
तेजःपुंज, मनःपूत, यशःप्राप्ती, रजःकण, प्रातःकाळ, अंतःकरण,
चतुःसुत्री, चतुःशृंगी, दुःशासन, निःशब्द, निःशंख, निःश्वास,
निःसत्त्व, निःपक्षपाती, निःसंशय, निःस्तव्या, निःविशेष,
निःसंदिधि.

३) [व्यंजन / हल / परवर्ण / स्वरान्त :-]

- जे वर्ण उच्चारासाठी दुसऱ्या वर्णावरती अवलंबून असतात आशा वर्णाना व्यंजने असे रहणतात.
- व्यंजने उच्चारासाठी स्वरांवर अवलंबून असतात.
- पर म्हणजे दुसरा, व्यंजने उच्चारासाठी दुसऱ्या वर्णावरती अवलंबून असतात म्हणून त्यांना परवणी असे रहणतात.
- व्यंजने पूर्ण उच्चारली गेली की त्यांच्या शेवटी स्वर थेतो, म्हणून त्यांना स्वरान्त असे रहणतात.
- व्यंजने अपूर्ण उच्चाराची असल्यामुळे ती पाच मोडून बिहिली जावात, त्या चिन्हास हल विन्ह असे रहणतात. (१)
- व्यंजने उच्चारवेळी हवेचा मार्गी काहीसा अडवलेला असतो.
- व्यंजन उच्चारवेळी तोंड संवृत्त (वंद) असते.
- व्यंजनाचे प्रकार:-

व्यंजन



४) [स्पर्श व्यंजने / स्फोटक / वर्गीय व्यंजने :-]

ज्या व्यंजनांचा उच्चार करताना जिभेचा मुखातील विविध भागांना स्पर्श होतो, आशा व्यंजनाना स्पर्श व्यंजने असे रहणतात.

- व्यंजन उच्चाराच्या वेळी हवा अडवून जोशात वाहेच टाकली जाते, तेहा स्फोट निर्माण होतो, म्हणून त्यांना स्फोटक व्यंजने असे रहणतात.
- स्पर्श व्यंजनाचे पाच वर्ग पडतात, म्हणून त्यांना वर्गीय व्यंजने असे रहणतात.

उदा:- क् स् ग् घ् ङ् → (याचा उच्चार 'ग्' सारखा होतो.)
 च् छ् ज् झ् ञ् → (याचा उच्चार 'अन्' होतो.)
 त् त् त् त् त् न् न् न् न्
 प् फ् व् भ् म् म्

- स्पृशी व्यंजनाचे तीन प्रकार आणि पाच वर्ग पडतात :

स्पृशी व्यंजने (25)

| | १) कठोर / अधोष / श्वास / | २) मृदू / घोष / नाद / | ३) अनुनासिक / परस्परणी |
|------------------|--------------------------------|-----------------------------|---------------------------|
| वर्गीकृते नाव | क्, स् च्, ष् | ग्, घ् ज्, झ् | ङ् |
| १) क् | क्, स् | ग्, घ् | ङ् |
| २) च् | च्, ष् | ज्, झ् | ञ् |
| ३) त् | त्, ठ् | ङ्, ह् | ण् |
| ४) त् | त्, थ् | ह्, ष् | ञ् |
| ५) प् | प्, फ् | व्, भ् | म् |

१) कठोर व्यंजने / अधोष / श्वास (10) :-

जी व्यंजने उच्चारायला कठीण असतात, त्यांना कठोर व्यंजने असे महातात.

उदा :- क्, स्, च्, ष्, ठ्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्

२) मृदू व्यंजने / घोष / नाद (10) :-

ज्या व्यंजनांचा उच्चार तुलनेने मृदू, कोमल व सोपा असतो अशा व्यंजनांना मृदू व्यंजने असे महातात.

उदा :- ग्, घ्, ज्, झ्, ङ्, ह्, ह्, व्, भ्, म्

३) अनुनासिक / परस्वर्ण (५) :-

ज्या व्यंजनांचा उच्चार नाकातून होतो, त्या व्यंजनांना अनुनासिक असे म्हणतात.

उदा:- इ, झ, ग, ल म

- अनुनासिकांचा समावेश मूळ व्यंजनांमध्ये होतो.

२) अर्धस्वर / अंतस्थ (४) :-

ज्या व्यंजनांचा उच्चार स्वरांसारभा होतो, त्यांना अर्धस्वर असे म्हणतात.

- अर्धस्वर, स्पर्शव्यंजने व उष्मवर्ण यांच्या मध्ये शहतात म्हणून त्यांना अंतस्थ असे म्हणतात.
- मो. के. दामले यांनी अर्धस्वरांना ईपत विवृत हे नाव दिले.

उदा:- व्यंजन उच्चार (स्वर)

| | | |
|------|---|----|
| १) य | - | इ |
| २) र | - | ऋ |
| ३) ल | - | लृ |
| ४) व | - | उ |

* यणादेश :-

जेव्हा इ, उ, ऋ, लृ या स्वरांप्रेवजी य, व, र, ल हे वर्ण (व्यंजने) येतात तेव्हा त्यास यणादेश असे म्हणतात.

उदा:- १) शु + आगत

$$= \underbrace{\text{श} + \text{आ}}_{=} = \text{व} + \text{आ} = \underline{\text{वा}}$$

= स्वागत,

२) कोटि + अवधी

$$= \underbrace{\text{इ} + \text{अ}}_{=} = \text{य} + \text{अ} = \underline{\text{या}}$$

= कोत्यवधी

* संप्रसारण :-

जेव्हा युरु, लु, व या व्यंजनांची जागा जेव्हा इ, ऋ, लृ, उ हे स्वर घेतात, तेव्हा त्यास संप्रसारण असे म्हणतात.

उदा:- नवरात्र \Rightarrow नऊरात्री
 संप्रसारण

- अर्धिश्वरांचा समावेश मृदू व्यंजनात होतो.
- 'र' या व्यंजनाला 'कंपित वर्ण' असे चहगतात.
- 'र', 'ळ', 'ळ' यांना 'द्रव व्यंजने' असे चहगतात.

3) उष्म वर्ण / घर्षक / उष्मे (3) :-

ज्या व्यंजनांचा उच्चार करताना मुखात हवेचे घर्षण होजन उष्मता निर्माण होते, त्यास उष्म वर्ण असे चहगतात.

- 'कालेलकर' यांनी त्यांना 'सील्कार' असे चहटले आहे.
- 'मो' के. दामले यांनी त्यांना 'ईघत पृष्ठ' असे चहटले आहे.

उदा:- श, प, स.

- उष्म वर्णांचा समावेश कठोर व्यंजनात होतो.

4) महाप्राण (1) :-

ज्या व्यंजनांचा उच्चार करताना फुफ्फुसातील हवा मोठ्या प्रमाणात बाहेर टाकली जाते, त्या व्यंजनास महाप्राण असे चहगतात.

उदा:- ह.

- महाप्राणांचा समावेश मृदू व्यंजनात होतो.

5) स्वतंत्र वर्ण (1) :-

'ळ' हा मराठीतील स्वतंत्र वर्ण आहे. तो संस्कृतमधील 'अ' व्या ऐवजी मराठीत वापरला जातो, शिवाय त्याला मराठीत स्वतंत्र स्थानही आहे.

- 'ळ' हा वर्ण संस्कृतमध्ये नाही.
- 'ळ' हा वर्ण प्रविड माध्येच्या माध्यमातून मराठीत आला आहे.
- 'ळ' पासून सुरु होणारा एकही शब्द मराठीत नाही.

- 'ळ' या व्यंजनाचा समावेश मृदु व्यंजनामध्ये होतो.

- मराठीत ३४ व्यंजने आहेत, ती गोके दामले यांनी व विष्णुशास्त्री चिपक्कणकर यांनी मानली.

* संयुक्त व्यंजन :-

दोन किंवा अधिक व्यंजनांपासून बनलेल्या व्यंजनांना संयुक्त व्यंजन असे म्हणतात.

उदा :- झ = कू + घ

च = छ + न् + य् (मराठी)

= ग् + य् (हिंदी)

= ज् + झ् + य् (संस्कृत)

- 'ळ' आणि 'ळ' या संयुक्त व्यंजनांचा समावेश 'सवनीस' यांनी गाराठीत केला.

उदा :- क्र = कू + र्

म्र = मू + र्

स्त्र = सू + त् + र्

* हिल व्यंजन :-

दोन एकसारखी हिसारी व्यंजने एकत्र आली की, त्यास हिल व्यंजन असे म्हणतात.

उदा :- त्त = त् + त्

क्क = कू + कू

- प्रत्येक हिल व्यंजन हे संयुक्त व्यंजने असते पण, प्रत्येक संयुक्त व्यंजन हे हिल व्यंजन असेलच असे नाही.

उदा :- ट्ट = हिल व्यंजन / संयुक्त व्यंजन,

ठ्ठ = संयुक्त व्यंजन (फक्त)

* महाप्राण व्यंजने (14) :-

ज्या व्यंजनांच्या शेवटी 'ह' चा उच्चार होतो, त्या व्यंजनांना महाप्राण व्यंजने असे चहणतात.

महाप्राण व्यंजने = रपर्व व्यंजनाची दुसरी ओळ + चौथी ओळ + उष्म वर्ण + महाप्राण ('ह')

| | | | | |
|--------|---|---|----|---|
| उदा :- | ख | घ | श | ह |
| | छ | झ | प | |
| | ठ | ड | स् | |
| | अ | ष | | |
| | फ | भ | | |

* अल्पप्राण व्यंजने (20) :-

ज्या व्यंजनांच्या शेवटी 'ह' चा उच्चार होत नाही, अशा व्यंजनांना अल्पप्राण व्यंजने असे चहणतात.

अल्पप्राण व्यंजने = पहिली ओळ + तिसरी ओळ + पाचवी ओळ + अर्धस्वर + स्वतंत्र वर्ण ('ळ')

| | | | | | |
|--------|---|---|---|---|---|
| उदा :- | क | ग | ङ | ऱ | ळ |
| | च | ज | ञ | ় | |
| | ट | ় | ণ | ় | |
| | ত | হ | ় | ় | |
| | প | ব | ় | ় | |

* महाप्राणीकरण :-

जेव्हा अल्पप्राण व्यंजने महाप्राण बनतात तेहा, त्यास महाप्राणीकरण असे चहणतात.

| उदा :- | <u>अल्पप्राण</u> | <u>महाप्राण</u> |
|--------|------------------|-----------------|
| | चूह | - घर |
| | वाष्प | - वाफ |

* अल्पप्राणीकरण :-

जेव्हा महाप्राण व्यंजने अल्पप्राण व्यंजने बनतात तेहा, त्यास अल्पप्राणीकरण असे चहणतात.

| उदा :- | <u>महाप्राण</u> | <u>अल्पप्राण</u> |
|--------|-----------------|------------------|
| | सिंधु | - हिंदू |

सारांश

१) कठोर व्यंजने (13) :-

| | | |
|----|-----|----|
| क | ख | श |
| प | ष | ष् |
| त | ष्ट | त् |
| त् | थ | स् |
| म | फ | |

२) मृदु व्यंजने (21) :-

| | | | |
|---|---|---|----|
| ग | ध | ঝ | ঝ্ |
| জ | শ | ঝ | ঝ্ |
| ল | ভ | ল | ৰ |
| ব | ষ | ষ | ৱ |
| ম | ম | ম | ম্ |

३) वर्गीय व्यंजने (25) :-

- क्र पास्त्र म् पर्यंति (सर्व)

४) अवर्गीय व्यंजने (५) :-

| | | |
|---|---|---|
| ঝ | ঝ | ঝ |
| ঝ | ঝ | ঝ |
| ঝ | ঝ | ঝ |

५) स्फोटक व्यंजने (8) :-

| | |
|---|---|
| ক | খ |
| ত | ঠ |
| ন | ণ |
| ম | ণ |

৬) अर्धस्फोटक व्यंजने (12) :-

| | | |
|---|---|---|
| ঝ | ঝ | ঝ |
| ঝ | ঝ | ঝ |
| ঝ | ঝ | ঝ |
| ঝ | ঝ | ঝ |

वर्ण = 50

| |
|------------------|
| स्वर = 14 |
| হস্ত स्वর = 6 |
| দীর्घ स्वর = 4 |
| সंयुক्त स्वर = 4 |
| সीম্ব স্বর = 6 |
| সাধিত স্বর = 8 |

व्यंজন = 34

स्पर्शव्यंजनে = 25

কठোর ব্যংজনে = 13

মৃদু ব্যংজনে = 21

মহাপ্রাণ = 14

অল্পপ্রাণ = 20

বর্গীয় ব্যংজনে = 25

আবর্গীয় ব্যংজনে = ৭

স্ফোটক ব্যংজনে = ৮

অর্ধস্ফোটক ব্যংজনে = 12

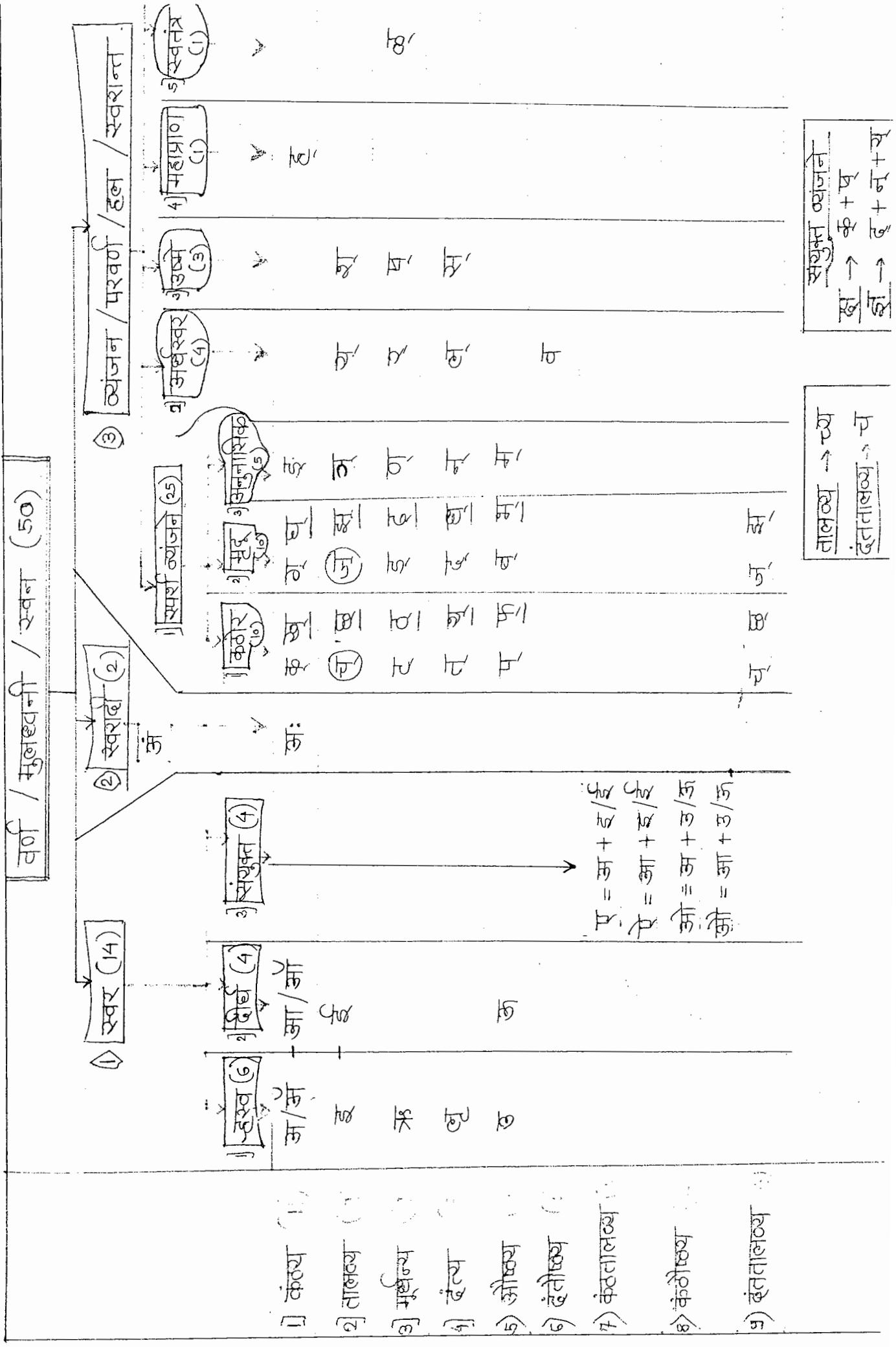
স্বরহী = ২

দ্রব ব্যংজনে = ৩

অর্ধস্বর = ৪

উষ্ম বর্ণ = ৩

কংপিত বর্ণ = ১



2) वणिचे उच्चारानुसार वर्गीकरण (१) :-

- वणिचे उच्चारानुसार नं० (१) प्रकार पडतात :-

1] कंठ्य वर्ण :- ज्या वणिचा उच्चार कंठातून होतो त्यांना कंठ्य वर्ण असे म्हणतात.

① स्वर (४) :- अ, आ, अ॑, आ॒

② स्वरादी (१) :- अः

③ व्यंजने (७) :- क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्

- shortform → (आवका)

2) तालव्य (टाळू) :-

जिमेचा टाळूला स्पर्श होऊन उच्चाराले जागारे वर्ण, म्हणजे तालव्य होय.

① स्वर (२) :- इ, ई

② व्यंजने (७) :- च्, छ्, झ्, झ॒, ञ्, य्, श्

- Shortform → (ताईचे थश)

3) मूर्धन्य :-

कंठ आणि टाळू यांच्या मधील मागाला गूढी असे म्हणतात, आणि मूर्धेला जिमेचा स्पर्श होऊन उच्चाराल्या जाणाऱ्या राखणारा मूर्धन्य असे म्हणतात.

① स्वर (१) :- ऋ

② व्यंजने (८) :- ट्, ठ्, इ, ई, ङ्, झ्, प्, ळ्

- Shortform → (मटणाचा रघ)

4) दृत्य :- जिमेचा दोताला स्पर्श.

① स्वर (१) :- अ॒

② व्यंजने (७) :- त्, थ्, द्, घ्, ञ्, ल्, स्

- Shortform → (दुष्काची लस्सी)

5] ओष्ठ्य :- जिभेचा ओठाला स्पर्श.

① स्वर (२) :- उ, ऊ

② व्यंजने (५) :- प्, फ्, व्, भ्, म्

- Short form → (उष्टा उपसा)

6] हंतौष्ठ्य :- हात आणि ओठ चांचा एकाच वेळी जिभेला स्पर्श होतो.

① व्यंजन (१) :- व

7] कंठतालव्य :- कंठतालव्य = कंठ + तालव्य

ए = अ + इ/ई

ऐ = आ + इ/ई

8] कंठओष्ठ्य / :- कंठओष्ठ्य = कंठ + ओष्ठ्य

कंछ्योष्ठ्य ओ = अ + उ/ऊ

औ = आ + उ/ऊ

9] हंततालव्य / हंतमूलीय / वर्त्स :-

- च्, छ्, झ्, झ्

* 'तालव्य' आणि 'हंततालव्य' मधील फरक :-

1) तालव्य :-

च, छ, झ, झ या अक्षरांच्या शेवटी उच्चार करतोना 'य' या उच्चार होतो. तेहा त्यास तालव्य उच्चार असे म्हणतात.

उदा :- च्य, छ्य, झ्य, झ्य.

1) जंग \rightarrow ज्यंग

2) छंत्री \rightarrow झ्यंत्री

3) चंक्र \rightarrow झ्यंक्र

4) झेल \rightarrow झ्येल

2] दंतलालव्य / दंतमूलीय / वर्त्स :-

य, छ, झ, झं यांचा उच्चार करतोना 'य' चा उच्चार होणार नाही.

उदा:- चमचा, चारा, चांदोबा, चाकर, जावई, झरा, झाड, झीप,
जात, चाक, चटकन, चघल, जड, जमाव, जत्रा.

★ अनुनाशिके परस्परी महणून वापरतांना त्या अक्षरावर अनु-स्वार असेल त्या अक्षराच्या पुढील अक्षर गटातील अनुनाशिक परस्परी महणून वापरावे.

| अनुस्वार युक्त अल्परे | अनुस्वाराच्या पुढे येगारी अल्परे | प्रसवी |
|--------------------------|---|------------------|
| । ० ० ० ० ० ० | क क्क ख ग घ घ घ्ग ज ज्ज श ट ट्ट ल ल्ल ट त त्त थ थ्थ ष्ठ प प्प फ फ्फ भ | ए अ न म |

| | |
|------------------|----|
| <u>उदा:-</u> | |
| रंग = रङ्ग | र |
| पुण्य = पड़ूँग्य | प |
| चिंच = चिंच | च |
| चंचल = चञ्चल | ञ |
| तंटा = तप्पा | ट |
| घंटा = घप्पा | घ |
| मिंत = मिन्त | मि |
| अंत = अन्त | अ |
| आंबा = आम्बा | म |

- मराठी शब्द परस्पर्य वापरन लिहिले जात नाहीत, ते अनुस्वार वापरन लिहिले जातात.
 - संस्कृत शब्द दोन्ही पछऱ्यांनी लिहिले जातात.
 - कथीकथी अर्थांमेद करण्यासाठी तत्सम शब्द परस्पर्य वापरन लिहिली जातात.

उदा:-

तत्सम् शब्द (अर्थ)

परस्वर्ण वापरन (अर्थ)

- | | | |
|-----------------------|---|--------------------------|
| 1) वेदांत (वेदामष्टे) | - | वेदान्त (वेदांच्याशेवटी) |
| 2) सुखांत (सुखात) | - | सुखान्त (सुखाचा शेवट) |
| 3) स्वरांत (स्वरात) | - | स्वरान्त (शेवटी सूर) |
| 4) शालांत (शाळेमष्टे) | - | शालान्त (शाळेच्या शेवटी) |

- अनुस्वाराच्या पुढे य्, र्, ल्, व्, श्, प्, स्, व्, श्, ह् ही व्यंजने आल्यास अनुस्वाराचा उच्चार य्, र्, ल्, व् सारखा होतो व्यास श्रृंगी होणे असे रहणतात.
- श्रृंगी होणे रहणाजे भास होणे

- 1) अनुस्वाराच्या पुढे 'य' हे व्यंजन आल्यास 'य' चे द्वित ठोते:-

- उदा:- 1) संयम → संय्यम
2) संयोग → संय्योग

- 2) अनुस्वाराच्या पुढे 'ल' आल्यास त्याचे द्वित ठोते:-

- उदा:- 1) संलभन → संल्लभन
2) संलाप → संल्लाप

- 3) अनुस्वाराच्या पुढे र्, व्, श्, प्, स्, ह्, श् ही व्यंजने आल्यास अनुस्वाराचा उच्चार 'व' सारखा होतो.

- उदा:- 1) संरक्षण → संप्रक्षण
2) संवाद → संव्याद
3) संशय → संप्रश्न
4) संसार → संप्रसार
5) सिंह → सिंक
6) संशा → संप्रक्षा

* शेवटी स्वतंत्र उभादंड असणारी व्यंजने (३) :-

→ ग, ण, श.

* मध्ये दंड असणारी व्यंजने (२) :-

→ क, फ.

* दंड नसणारे व्यंजन (१) :-

→ र.

* शेवटी उभा दंड असणारी व्यंजने (१८) :-

→ ख, घ, च, झ, ज, झा, झे, त, ञ, ख, खा, न, म, व, भ, मा, घ, व, खू, स.

* अष्टीदंड असणारी व्यंजने (१०) :-

→ छ, क्ल, झू, टू, ठू, डू, ढू, हू, ऊ.

→ ण, ल, टू, ठू, डू, ढू वी व्यंजने द्रविड भाषेच्या माहित्याकृत मरागीत आली आहेत.

अक्षर

- 1) व्यंजन + स्वर = अक्षर
 2) स्वर = अक्षर
 3) व्यंजन + स्वर + स्वरादी = अक्षर

- पूर्ण उच्चारला जाणारा वर्ण म्हणजे अक्षर होय.
- छवनीच्या किंवा भावाजांच्या खुणाना अक्षर असे म्हणतात.
- छवनीमिथ संकेतांच्या लेखनखुणा रुहणजे अक्षर होय.
- अक्षरामध्ये सर्व स्वर व स्वर युक्त व्यंजने यांचा समावेश होतो.
- स्वर + व्यंजन = अक्षर असे होत नाही.

$$1) \begin{array}{c} \text{स्वर} = \underline{\text{अक्षर}} \\ \text{अ} - \text{अ} \\ \text{आ} - \text{आ} \\ \text{ऊ} - \text{ऊ} \end{array}$$

* एक अक्षरी शब्द नेहमी दीर्घ बिहिली जातात.

$$2) \begin{array}{c} \text{व्यंजन} + \text{स्वर} = \underline{\text{अक्षर}} \\ \text{ह} + \text{ऋ} - \text{हृष्ट} \\ \text{क} + \text{ऋ} - \text{कृष्ट} \\ \text{क} + \text{बृ} - \text{कबृ} \\ \text{च} + \text{आ} - \text{चा} \end{array}$$

$$3) \begin{array}{c} \text{व्यंजन} + \text{स्वर} + \text{स्वरादी} = \underline{\text{अक्षर}} \end{array}$$

$$\begin{array}{l} \text{त} + \text{अ} + \text{विसर्ग} = \text{स्वतः} \\ \text{द} + \text{उ} + \text{विसर्ग} = \text{दुःख} \end{array}$$

जोडाक्षर

$$1) \begin{array}{c} \text{व्यंजन} + \text{व्यंजन} + \text{स्वर} = \underline{\text{जोडाक्षर}} \end{array}$$

$$2) \begin{array}{c} \text{व्यंजन} + \text{व्यंजन} + \text{व्यंजन} + \text{स्वर} = \underline{\text{जोडाक्षर}} \end{array}$$

- संयुक्त व्यंजनामध्ये / द्वित व्यंजनामध्ये जोळा स्वर मिसळला जातो तोळा त्यास जोडाक्षर असे रुहणतात.

उदा:- 1) सख्य → स् + अ + ख् + य + अ

2) जोड़ना → ज् + ओ + त् + स् + ज् + आ

3) द्वार → कं + ध + आ + र + अ

* जोड़कर लिहियाच्या होने पडूती आहेत :-

1) उझी लेखन पडूती :-

उदा:- आळा, विठ्ठल, कट्टा

2) आडवी लेखन पडूती :-

उदा:- आवळा, विठ्ठल, कट्टा

* 'र' हे व्यंजन जोडव्याच्या चार पट्टी आहेत :-

अ) व्यंजनापूर्वी 'र' आल्यास :-

1] रकार (-):- 2] रफार / रेफ (र्फ) :-

ब) व्यंजनानंतर 'र' आल्यास :-

1] रकार (र) : 2] रकार (र्क) :-

अ] 1) रकार (-) :-

- 'ह' आणि अकारान्त 'य' सोइन 'ह' आणि 'य' पूर्वी 'र' आल्यास रकार (-) हे चिन्ह वापरतात.

उदा:- कुळाड, पहस्व, घास, चहाट, कोपव्याव, पन्था, तच्छा, सुन्या

- 'र' या व्यंजनाच्या पूर्वीच्या अक्षरावर जेव्हा आघात होत नाही तेव्हा रकाराचे चिन्ह (-) वापरतात.

2) रफार / रेफ (र्फ) :-

- 'ह' आणि 'य' सोइन इतर व्यंजनापूर्वी 'र' आल्यास रफाराचे चिन्ह वापरतात.

- जेव्हा 'र' च्या अलीकडीन अक्षरावर आघात होतो तेव्हा रफाराचे चिन्ह वापरतात.

- रफार युक्त अक्षर हे जोडाकर असते.

- रफार ज्या अक्षरावर उत्त्वारबा जातो त्याच्या पुढील अक्षरावर तो दिला जातो.
 - रफाराच्या अलीकडील अक्षर नेहमी दीर्घ लिहावे.
 - रफाराच्या अलीकडील अक्षर दीर्घ असेल तर तो शब्द तत्सम असतो. (म्हणजेच संस्कृतमधून चराठीत आलेला)
- उदा:- जीर्ण, तीर्ण, शीर्ण, ऊर्ण, कूर्ण, चूर्ण, पूर्ण, पूर्ण, गूर्ण, शूर्ण, मूर्ण, आशीर्वाद, कीर्तन, दीर्घिका, मूर्ती, पूर्णिमा.

अपवाद :-

- 1) दुर (वाईट) :- दुर्गंधि, दुर्गती, दुर्वासना, दुर्दैव, दुर्भाग्य, दुर्जन, दुर्वल, दुर्दशा, दुर्व्यसन, दुर्बुद्धी.
- 2) निर (निघून गोलेला, नसलेला, वाईट) :-
- निर्व्यसनी, निर्व्याज, निर्व्यन, निर्विंश, निर्षवि, निर्णायक, निर्लज्ज, निर्वुद्ध, निर्भीडि, निर्देप, निर्मनुष्य.
- 3) चतुर (चार) :- चतुर्वर्ष्य, चतुर्दशा, चतुर्दशी, चतुर्थी.
- 4) वहिर (वाहेर) :- वहिर्गेल, वहिर्वक्र, वहिर्दिशा.

व] 1) रकार (ए) :-

- ट, ठ, ड, ढ या व्यंजनांनंतर 'र' आल्यास (ए) हे चिन्ह वापरतात.

उदा:- द्रक, द्रायव्हर, इम, राष्ट्र.

2) रकार (ई) :-

- ट, ठ, ड, ढ हे व्यंजनेसोइन इतर व्यंजनांनंतर 'र' आल्यास (ई) हे चिन्ह वापरतात.

उदा:- क्रम, प्रसाद, द्रव, प्रकार, व्राश, प्रकाश

* अ आणि ए भाषील फरक :-

1) अ :- स + रु + अ

उदा :- अजस्र (मोठ), चतुरस्र, सहस्र, सहस्रावधी, सहस्रवुद्धे, स्रवणे, रक्तस्राव, स्रोत, हिंस्र.

2) ए :- स + ट्रॅ + र + अ.

उदा :- एत्री, इत्री, मेस्त्री, शस्त्र, अस्त्र, शिरस्त्राण.

* जोडाहरांची उदा :-

- तीर्थ, प्रतीक्षा, परीक्षा, अभीष्ट, प्रावीप्य, ईश्वर, घूम्र, पूज्य.
- वरील सर्व शब्द तत्सम आहेत.

* 'न' आणि 'ण' भाषील फरक :-

| | <u>'न'</u> | | <u>'ण'</u> | |
|----|------------|-----------------|------------|-----------|
| | शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
| 1) | खुन | - हत्या. | खुण | - चिन्ह. |
| 2) | धन | - द्वाट. | घण | - धातोडा. |
| 3) | जान | - जीव. | जाण | - जोळख. |
| 4) | तन | - शरीर. | लण | - गवत. |
| 5) | तस्तन | - मोहणे. | तस्ण | - जवान. |
| 6) | निर्णयिक | - नायक नसलेला. | निर्णयिक | - अंतिम. |
| 7) | मन | - इंद्रिय. | मण | - वजन. |
| 8) | वर्णन | - वरच्यावाजुने. | वर्णण | - पाऊस. |

- * शब्द योग्य वर्णनप्रमाणे लाखे किंवा मुख्यनीति संख्या
मोजणे
- 1) सूक्ष्मदर्शी = स् + उ + क् + घ + म् + अ + द् + ऊ + र् + श् + ई
= 11
- 2) राम वनात गेली = र् + आ + म् + अ + व् + अ + न् + आ + त्
+ अ + ग् + ए + ल् + आ
= 14
- 3) वृत्तनिवेदक = व् + ऋ + त् + त् + अ + न् + ई + व् + ए + द्
+ आ + क् + अ
= 13
- 4) कृतज्ञता = क् + ऋ + त् + अ + द् + न् + य् + अ + त् + आ
= 10
- 5) निर्भर्त्सना = न् + ई + र् + श् + अ + र् + त् + स् + अ + न् + आ
= 11
- 6) अविच्छिन्न = अ + व् + इ + च् + छ् + ई + न् + न् + अ
= 9
- 7) भद्रोनिशयण = ल् + अ + क् + घ + म् + ई + न् + आ + र् +
आ + य् + अ + ग् + अ
= 14
- 8) पृष्ठीप्रदक्षणा = प् + ऋ + य् + व् + ई + प् + र् + अ + द् + अ
+ क् + घ + अ + ग् + अ
= 15
- 9) शानेंद्रिय = द् + न् + य् + आ + न् + ए + न् + द् + र् + ई + य्
+ अ.
= 12
- 10) सिंह = स् + इ + अनुस्वार + ह् + अ = 5
- 11) पाश्चात्य = प् + आ + र् + च् + आ + त् + त् + य् + अ
= 9

* 'अ'कार विल्हेक्रम :-

शब्दांची मांडणी मराठी वर्णमालेप्रमाणे करणे चहणजे अंकार विल्हेक्रम होय.

उदा :- चलनघट, चिला, चुकतमाकत, चलनवाढ, चटका, चंचुप्रवेश, चंद्रविंव, चंपक, चक्रपाणी.

क्रम :- १) चंचुप्रवेश २) चंद्रविंव, ३) चंपक ४) चक्रपाणी
५) चटका ६) चलनघट ७) चलनवाढ ८) चिला
९) चुकतमाकत.

२) दार, दाई, देशसेवक, द्राष्ट, व्वारपाल, दैवदुर्विलास, दानशूर, हांडगा, दहशतवादी, दर्दी, दंश, दंगा, दंडकारण्य.

क्रम :- १) दंगा २) दंडकारण्य ३) दंश ४) दर्दी ५) दहशतवादी
६) दाई, ७) हांडगा ८) दानशूर ९) दार १०) द्राष्ट
११) व्वारपाल १२) देशसेवक १३) दैवदुर्विलास.

३) वष्टडा, वडतर्फी, वलोपासना, वल्तीस.

क्रम :- १) वष्टडा २) वडतर्फी ३) वल्तीस ४) वलोपासना

५) पत्र, पराजित, पाहुणा, पत्थर

क्रम :- १) पत्थर २) पत्र ३) पराजित ४) पाहुणा

५) छमकी, छमाका, छन, छनगर.

क्रम :- १) छन २) छनगर ३) छमकी ४) छमाका

६) छवनीशास्त्र, छूम्प, छूमकेतू, छुळवड.

क्रम :- १) छुळवड २) छूमकेतू ३) छूम्प ४) छवनीशास्त्र

७) जातक, जाणीव, जानवे, जांभयी, जाऊ, जाई, जांभूळ

क्रम :- १) जाई २) जाऊ ३) जांभयी ४) जांभूळ ५) जाणीव,
६) जातक ७) जानवे.

८) अंदाज, अक्कल, अकक्स, अंमल

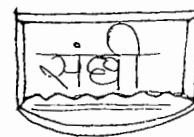
क्रम :- १) अंदाज २) अंमल ३) अक्कल ४) अकक्स.

१) शर्माशरम, गवाळग्रंथी, शडगडाट, गणराज्य

क्रम :- १) शडगडाट २) गणराज्य ३) गवाळग्रंथी ४) शर्माशरम.

१०) देऊन, दृष्टि, दुष्प्रण, दूर्ग, दुःखी.

क्रम :- १) दुःखी २) दूर्ग ३) दुष्प्रण ४) दृष्टि ५) देऊन.



व्याख्या :-

- एक मागोमाग घेणारे दोन वर्ण एकमेकांसाथे मिसळतात व एक नवीन वर्ण तयार होतो त्यास संखी असे म्हणतात.
- संखी म्हणजे सांखने, जोडने किंवा एकत्र करणे होय.
 - संखी हा प्रकार संस्कृत मध्यून मराठीत आला आहे.
 - संखी, वोबव्याच्या ओघात घडणारी प्रक्रिया आहे.
 - संखीमध्ये दोन शब्द एकत्र येतात, त्या शब्दांचा एकमेकांशी संवंबंध असतोच असे नाही.
 - वर्णाच्या एकत्रीकरणामुळे ते एकत्र आलेले असतात.
 - संखी म्हणजे वर्णाचे एकत्रीकरण होय.
 - संखीचा विग्रह अधिक (+) चिन्हाने दाखवला जातो.

विग्रह

१) सूर्य + उद्य
अ + उ = औ

२) जगत् + नाथ
त् + न = न्न

३) मनः + रथ
अ + उ = औ

४) गणेश + उत्सव
अ + उ = औ

संखी

सूर्योदित - स्वरसंखी /
गुणादेश

जगेन्नाथ - व्यंजनसंखी

मनोरथ - विसर्गसंखी

गणेशोत्सव - गुणादेश
स्वरसंखी

संख्याचे प्रकार

संख्या संखी

- 1) स्वर संखी (अच संखी)
- 2) व्यंजन संखी (हलू संखी)
- 3) किसर्ग संखी.

मराठीतील विशेष संखी

- 1) मुर्वरूप संखी
- 2) परस्पर संखी

अ] संख्या संखी :-

1) स्वर संखी :-

एकज मागोमाग येणारे दोन वर्ण जोळा स्वर असतात तेळा स्वर संखी होते.

$$\text{स्वर संखी} = \text{स्वर} + \text{स्वर}$$

आदेश :-

एका वर्णाची जागा जोळा दुसरा वर्ण घेतो वेळा व्यास आदेश असे रहिले जाते.

उदा :-

एकत्र येणारे स्वर

इव + आबय

(इ) + (आ)

वेनणारा आदेश

(आ)

कवि + इच्छा

(क) + (इ)

(च्छ)

एक + रुक

(अ) + (रु)

(रुक)

- आदेशाचे पाच प्रकार पडतात :

1) दीर्घादेश :

2) शुणादेश :

3) वृक्ष्यादेश :

4) यगादेश :

5) अयादी आदेश :

- आदेशाला अनुसरूप स्वरसंखीचे पाच प्रकार पडतात.

▷ दीर्घिदेश स्वरसंबंधी / दीर्घित्व स्वरसंबंधी / सजातीय स्वरसंबंधी :-

* दीर्घिदेश :- दीन सजातीय स्वर एकमेकांसमोर आवे असता त्याच्या वद्दल एक दीर्घि स्वर तयार होतो, त्यास दीर्घिदेश असे म्हणतात.

- दीर्घिदेश होऊन बनलेल्या संबंधीला दीर्घिदेश स्वरसंबंधी असे म्हणतात.

- दीर्घिदेश स्वरसंबंधी कडी ओळखावी :-

संबंधी झालेल्या अक्षराला काना, दुसरी वेळांटी, दुसरा उकार किंवा दीर्घि ऋ जोडला जातो.

| | <u>एकत्र येणारे स्वर</u> | <u>दीर्घिदेश</u> |
|----|--------------------------|-------------------|
| 1) | अ + अ | आ T |
| | अ + आ | आ T |
| | आ + अ | आ T |
| | आ + आ | आ T |
| 2) | ऋ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| 3) | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| 4) | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |
| | ॲ + ॲ | ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ ॲ |

अ / आ + अ / आ = आ

विध्रह

संघी

| | | | |
|-----|-----------------|---|--------------|
| १> | दीप + आवली | = | दीपावली |
| २> | गोल + आकार | = | गोलाकार |
| ३> | देव + आलय | = | देवालय |
| ४> | शुभ + आशीर्वाद | = | शुभा शीर्वाद |
| ५> | हिम + आलय | = | हिमालय |
| ६> | कार्य + आलय | = | कार्यालय |
| ७> | सचिव + आलय | = | सचिवालय |
| ८> | तडित + आधात | = | तडिताधात |
| ९> | लड + आसन | = | लडासन |
| १०> | सूर्य + अस्त | = | सूर्यस्त |
| ११> | चंद्र + अस्त | = | चंद्रास्त |
| १२> | नगर + अष्ट्यक्ष | = | नगराष्ट्यक्ष |
| १३> | सार + असार | = | सारासार |
| १४> | विद्या + अमृत | = | विद्यामृत |
| १५> | राजा + आक्षा | = | राजाक्षा |
| १६> | महिला + आश्रम | = | महिलाश्रम |
| १७> | विद्या + अर्थी | = | विद्यार्थी |
| १८> | मछ्य + अंतर | = | मछ्यांतर |

1) सुर + असुर = सुरासुर

2) इ/ई + इ + ई = इंडी
विश्वाह = संघी

3) गिरी + ईश = गिरीश

4) कवि + इच्छा = कवीच्छा

5) रवि + इंद्र = रवींद्र

6) माहि + इंद्र = महींद्र

7) कवि + ईश्वर = कवीश्वर

8) मुनि + इच्छा = मुनीच्छा

9) गोमती + इच्छा = गोमतीच्छा

10) पार्वती + ईश = पार्वीश

11) अभि + इष्ट = अभीष्ट

3) उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

विश्वाह = संघी

1) आनु + उदय = आनुदय

2) शुरु + उपदेश = शुरुपदेश

3) भू + उर्जित = भूर्जित

4) भू + उद्धार = भूउद्धार

5) भू + ऊर्जी = भूर्जी

6) वधू + उल्कध = वधूउल्कध

| | | |
|----------------|---|----------|
| 7) शुरु + अरु | = | शुरुअरु |
| 8) हनू + अन | = | हनूअन |
| 9) सिंधू + अमी | = | सिंधूअमी |

| | | |
|--------------|---|-------|
| 4) ऋ + ऋ | = | ऋ |
| विग्रह | | संघी |
| १) मातृ + ऋण | = | मातृण |
| २) पितृ + ऋण | = | पितृण |

2) गुणादेश स्वरसंघी / विजातीय स्वरसंघी :-

गुणादेश :-

अ/आ या स्वरांच्या पुढे अनुक्रमे इ/ई, उ/ऊ, ऋ
आले असता त्याच्याबद्दल अनुक्रमे ए, ओ, अरु असे आदेश
होतात. यास गुणादेश असे म्हणतात.

- गुणादेश होकेन व्याख्या संघीला गुणादेश स्वरसंघी असे म्हणतात.

- गुणादेश स्वरसंघी कशी ओळखावी :-

- संघी इंग्रजी अक्षराला एक मात्रा, एक काना मात्रा व
शेवटच्या अक्षराकर रफार येतो.

| | <u>एकप्र योगारे स्वर</u> | <u>गुणादेश</u> |
|----|--------------------------|----------------|
| 1) | अ + इ | - अ |
| | अ + ई | - ए |
| | आ + इ | - अ |
| | आ + ई | - ए |
| 2) | अ + उ | - ओ |
| | आ + उ | - ओ |
| | अ + ऊ | - ओ |
| | आ + ऊ | - ओ |

| | | | |
|-----|----------------|---|--------------|
| 3) | अ + ऋ | - | अ॒र् |
| | आ + ऋ | - | अ॒र् |
| 1) | अ/आ + इ + श्व | = | ए |
| | विग्रह | | संबी |
| 2) | लोक + इच्छा | | लोक॒इच्छा |
| 3) | राम + ईश्वर | | राम॒ईश्वर |
| 4) | गण + ईश | | गण॒श |
| 5) | लंका + ईश्वर | | लंक॒ईश्वर |
| 6) | स्व + इच्छा | | स्व॒इच्छा |
| 7) | महा + ईश्वर | | मह॒ईश्वर |
| 8) | देव + इंद्र | | देव॒इंद्र |
| 9) | सुर + इंद्र | | सुर॒इंद्र |
| 10) | गज + इंद्र | | गज॒इंद्र |
| 11) | रमा + ईश | | रम॒श |
| 12) | यथा + हृष्ट | | यथ॒ष्ट |
| 13) | ईश्वर + इच्छा | = | ईश्वर॒इच्छा |
| 14) | परम + ईश्वर | = | परम॒ईश्वर |
| 2) | अ/आ + उ/ऊ | = | ओ |
| | विग्रह | | संबी |
| 1) | जिसर्ग + उपचार | = | जिसर्ग॒उपचार |

| | | | |
|-----|-------------------|---|---------------------|
| २> | महा + उत्सव | = | <u>महोत्सव</u> |
| ३> | गणेश + उत्सव | = | <u>गणेशोत्सव</u> |
| ४> | पुरुष + उत्तम | = | <u>पुरुषोत्तम</u> |
| ५> | गंगा + उद्धक | = | <u>गंगोद्धक</u> |
| ६> | सूर्य + उदय | = | <u>सूर्योदय</u> |
| ७> | चंद्र + उदय | = | <u>चंद्रोदय</u> |
| ८> | खारा + ऊषा | = | <u>खारोषा</u> |
| ९> | एक + ऊन | = | <u>एकोन</u> |
| १०> | अन्य + ऊती | = | <u>अन्योक्ती</u> |
| ११> | समुद्र + ऊर्मी | = | <u>समुद्रोर्मी</u> |
| १२> | जल + ऊर्मी | = | <u>जलोर्मी</u> |
| १३> | गंगा + ऊर्मी | = | <u>गंगोर्मी</u> |
| १४> | स्वर + ऊच्चार | = | <u>स्वरोच्चार</u> |
| १५> | प्रथम + ऊपर्युक्त | = | <u>प्रथमोपस्थित</u> |
| १६> | रंभा + ऊस | = | <u>रंभोस</u> |

| | | |
|-----------|--------------|-------------------------------|
| अ / आ + ऋ | = | अर् |
| | | <u>विसर्ग</u> <u>संबंधी</u> |
| १> | महा + ऋषी | = महृषी |
| २> | देव + ऋषी | = देवृषी |
| ३> | ब्रह्म + ऋषी | = ब्रहृषी |
| ४> | शजा + ऋषी | = शजृषी |
| ५> | सप्त + ऋषी | = सप्तृषी |

3] वृष्ट्यादेश स्वरसंबी :-

अ/आ या स्वरोपुढे अनुक्रमे ए/ऐ, ओ/औ हे स्वर आल्यास त्याच्यावद्दल अनुक्रमे ऐ, औ असे आदेश ठेतात, त्यास वृष्ट्यादेश असे रहणतात.

| | <u>एकत्र येणारे स्वर</u> | <u>वृष्ट्यादेश</u> |
|----------|--------------------------|--------------------|
| 1) अ + ए | - | ऐ |
| 2) आ + ए | - | ऐ |
| 3) अ + ई | - | ऐ |
| 4) आ + ई | - | ऐ |
| 5) अ + ओ | - | औ |
| 6) आ + ओ | - | औ |
| 7) अ + औ | - | औ |
| 8) आ + औ | - | औ |

- वृष्ट्यादेश स्वरसंबी कर्षी ओळखावी :-

- संबी ल्लाबेल्ला अल्लाला दोन मात्रे किंवा एक काना दोन मात्रे येतात तेहा त्यास वृष्ट्यादेश स्वरसंबी असे रहणतात.

| | | | |
|----|------------------|---|-----------------|
| 1) | <u>अ/आ + ए/ऐ</u> | = | <u>ऐ</u> |
| | <u>विग्रह</u> | | <u>संबी</u> |
| 2) | सदा + एव | = | <u>सदैव</u> |
| 3) | जन + एक्य | = | <u>जनैक्य</u> |
| 4) | एक + एक | = | <u>एकैक</u> |
| 5) | प्रजा + एक्य | = | <u>प्रजैक्य</u> |
| 5) | मत + एक्य | = | <u>मतैक्य</u> |

| | | |
|---------------------|---|--------------|
| ६) विद्या + ऐश्वर्य | = | विद्यैश्वर्य |
| ७) देव + ऐश्वर्य | = | देवैश्वर्य |
| ८) लग + एक | = | लगैक |

| | | |
|---------------------|---|-------------|
| 2] <u>अ/आ + ओ/ओ</u> | = | ओ |
| <u>विग्रह</u> | | <u>संबी</u> |

| | | |
|-------------------|---|-------------|
| १) वन + ओपंची | = | वनौपंची |
| २) गंगा + ओघ | = | गंगौघ |
| ३) जल + ओघ | = | जलौघ |
| ४) वृक्ष + ओदार्थ | = | वृक्षौदार्थ |
| ५) महा + ओदार्थ | = | महौदार्थ |

4] यणादेश स्वरसंबी :-

$$\begin{aligned} \text{इ} + \alpha &= \text{ऐ} + \alpha \\ \text{उ} + \alpha &= \text{वे} + \alpha \\ \text{ऋ} + \alpha &= \text{रे} + \alpha \\ \text{भु} + \alpha &= \text{ले} + \alpha \end{aligned}$$

∴ α = कोणताही विजातीय स्वर
संबी

उदा:- १) पर्यटन विग्रह

$$\text{परि} + \text{अटन} = \underline{\text{पर्यटन}}$$

इ + अ = य + अ = य

$$2) \text{अति} + \text{छच्च} = \underline{\text{अत्युच्च}}$$

इ + उ = य + उ = यु

$$3) \text{प्रति} + \text{एक} = \underline{\text{प्रत्येक}}$$

इ + ए = ये + ए = ये

4) अष्टि + अथन = अष्ट्यथन
इ + अ = यू + अ = य

5) प्राति + अर्थ = प्रीत्यर्थ
इ + अ = यू + अ = य

6) मनु + अंतर = मन्वंतर
उ + अ = वू + अ = व

7) शंकु + आकार = शंक्वाकार
उ + आ = वू + आ = वा

8) छेनु + ओदर्घ = छेन्वोदर्घ
उ + ओ = व + ओ = वौ

9) गुरु + आळा = गुर्वीळा
उ + आ = व + आ = वा

10) मृ + अन = मरण
ऋ + अ = रू + अ = र

11) छू + अन = छरण
ऋ + अ = रू + अ = र

12) पिटू + आळा = पित्रीळा
ऋ + आ = रू + आ = रा
पिटू + राळा

13) मातृ + आळा = मात्राळा
ऋ + आ = रू + आ = रा
मातृ + राळा

14) मातृ + उत्सव = मात्रुत्सव
ऋ + उ = रू + उ = रु
मातृ + रुत्सव

- यणादेश स्वरसंबी कशी ओळखावी :-

- संबी झालेल्या शब्दात य, र, ल, व ही चार अक्षरे जोडालर महणून येतात.

5] अयादी आदेश स्वरसंबी :-

$$\text{ए} + \text{अ} = \text{अथ्} + \text{अ}$$

$$\text{ऐ} + \text{अ} = \text{आथ्} + \text{अ}$$

$$\text{ओ} + \text{अ} = \text{अव्} + \text{अ}$$

$$\text{औ} + \text{अ} = \text{आव्} + \text{अ}$$

उदा :- 1) ने + अन विग्रह = संबी
= नयन

$$\text{ए} + \text{अ} = \text{अथ्} + \text{अ} = \text{अथ}$$

2) ठी + अक = गायक

$$\text{ऐ} + \text{अ} = \text{आथ्} + \text{अ} = \text{आथ}$$

3) ठी + अन = गायन

$$\text{ऐ} + \text{अ} = \text{आथ्} + \text{अ} = \text{आथ}$$

4) गो + ईश्वर = गवीश्वर

$$\text{ओ} + \text{ई} = \text{अव्} + \text{ई} = \text{अवी}$$

5) नी + इक = नाविक

$$\text{औ} + \text{ई} = \text{आव्} + \text{ई} = \text{आवी}$$

2) व्यंजन संखी :-

एकामार्गोमार्ग येणाऱ्या दोन वर्णांपैकी पहिला वर्ण व्यंजन व दुसरा वर्ण व्यंजन किंवा स्वर असेन तर ते होन वर्ण एकमेकांमध्ये मिसळ्याने व्यंजनसंखी तयार होईल.

$$\boxed{\text{व्यंजन} + \text{व्यंजन} = \text{व्यंजनसंखी}}$$

$$\boxed{\text{व्यंजन} + \text{स्वर} = \text{व्यंजनसंखी}}$$

$$\boxed{\text{स्वर} + \text{व्यंजन} = \text{व्यंजनसंखी}}$$

- व्यंजन संखीचे प्रकार :-

1) प्रथम व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन)

2) तृतीय व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन / स्वर)

3) अनुनासिक व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन)

4) 'त' ची व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन / स्वर)

5) 'म' ची व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन / स्वर)

6) 'च' ची व्यंजन संखी :- (स्वर + व्यंजन)

7) 'न' ची व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन / स्वर)

8) 'र' ची व्यंजन संखी :- (व्यंजन + व्यंजन)

1) प्रथम व्यंजन संखी :-

पहिला वर्ण

दुसरा वर्ण

$$\boxed{\underline{\text{कठोर} / \text{मृदू}} (20) + \underline{\text{कठोर व्यंजन}} (10) = \begin{matrix} \text{क} \\ \text{च} \\ \text{ट} \\ \text{त} \\ \text{प} \end{matrix} + \underline{\text{कठोर व्यंजन}}}$$

- प्रथम व्यंजन संखी कशी ओळखावी :-

संखी झालेल्या शब्दात क/च/ट/त/प ही पाच अक्षरे

जोड़ान्ने रहने थेतात्.

| | | |
|----------------------|---|-------------|
| १) वाग् + ताङ्न | = | वाक्ताङ्न |
| २) वाग् + चाप्ल्य | = | वाक्चाप्ल्य |
| ३) वाग् + प्रचार | = | वाक्प्रचार |
| ४) वाग् + पती | = | वाक्पती |
| ५) विपद् + काल | = | विपक्लाल |
| ६) शरद् + काल | = | शरक्लाल |
| ७) द्वुष्ट् + पिपासा | = | द्वृपिपासा |
| ८) दिग् + पाल | = | दिक्पाल |
| ९) आपद् + काल | = | आपक्लाल |
| १०) घड् + चक्र | = | घट्चक्र |

ह, ठ, झ, झ, झ छी जोइन न बिहिता पाय मोइन लिहितात.

| | | |
|---------------------|---|---------------|
| १) पृथक् + करण | = | पृथक्करण |
| २) खिक् + कार | = | खिक्कार |
| ३) महत् + त्व | = | महत्त्व |
| ४) व्यक्तिमत् + त्व | = | व्यक्तिमत्त्व |
| ५) पश्चात् + ताप | = | पश्चात्ताप |

2) तृतीय व्यंजन संखी :-

$$\text{अ] } \boxed{\begin{matrix} \text{कठोर व्यंजन} + \text{सृदुव्यंजन} & = & \frac{\text{व}}{\text{ह}} & + \text{सृदु व्यंजन} \\ (10) & & \frac{\text{ड}}{\text{ड}} & \\ & & \frac{\text{ज}}{\text{ज}} & \\ & & \frac{\text{ग}}{\text{ग}} & \end{matrix}}$$

- तृतीय व्यंजन संखी कर्शी ओळखावी :-

- संक्षी झालेल्या शाळाल व्, ह्, ड्, ज्, ग् ही व्यंजने जोडाकर महणून येतात.

उदाहरण :- 1) दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन

2) दिक् + विजय = दिक्षिजय

3) वाक् + विहार = वान्विहार

4) वाक् + वेदी = वाऽवेदी

5) वाक् + वैजयंती = वार्षेजयंती

$$6) \text{ घट} + \text{रस} = \underline{\text{घटरस}}$$

⇒ पइ + रिपू = पाइपू

8) ਅਪ् + ਜ ॥ ਅਯ

७) अप् + थी = अथी. (समुद्र)

10) सत् + मावना = सद्मावना

$$\text{ii) } \underline{\text{अप्}} + \underline{\text{ट}} : = \underline{\text{अप्ट्ट}} \text{ (ठग)}$$

कट्टोर व्यंजन + स्वर = श्वर + स्वर

उदा :-

| | | |
|------------------|---|-----------|
| १) अचू + आदी | = | अजादी |
| २) जगत् + ईशा | = | जगदीश |
| ३) जगत् + ईश्वर | = | जगदीश्वर |
| ४) पट + आनन | = | पडानन |
| ५) सत् + इच्छा | = | सदिच्छा |
| ६) वाक् + ईश्वरी | = | वागीश्वरी |
| ७) सत् + उपाय | = | सदुपाय |

3

अनुनासिक व्यंजन संबी :-

कठोर / मृदू + अनुनासिक = अनुनासिक + अनुनासिक
 (20) (5)

उद्धव :-

| | | |
|------------------|---|-------------------|
| १> सत् + मार्ग | = | <u>सन्मार्ग</u> |
| २> वाक् + निश्चय | = | <u>वाङ्निश्चय</u> |
| ३> वाक् + मय | = | <u>वाङ्मय</u> |
| ४> सत् + मान | = | <u>सन्मान</u> |
| ५> पट् + मुख | = | <u>पष्टमुख</u> |
| ६> पट् + मास | = | <u>पष्टमास</u> |
| ७> सत् + मती | = | <u>सन्मती</u> |
| ८> जगत् + नाथ | = | <u>जगन्नाथ</u> |

4) [त' ची व्यंजन संघी :-]

- अ) $\overbrace{\text{त} + \text{च}} = \text{च} + \text{त} = \underline{\text{च्य}}$
- $\overbrace{\text{त} + \text{छ}} = \text{छ} + \text{त} = \underline{\text{छ्त}}$
- ब) $\overbrace{\text{त} + \text{ज}} = \text{ज} + \text{त} = \underline{\text{ज्ज}}$
- ✗ $\overbrace{\text{त} + \text{झ}} = \text{ज} + \text{झ} = \underline{\text{ज्झ}}$
- क) $\overbrace{\text{त} + \text{ट}} = \text{ट} + \text{त} = \underline{\text{ट्ट}}$
- ✗ $\overbrace{\text{त} + \text{ठ}} = \text{ठ} + \text{त} = \underline{\text{ठ्ठ}}$
- इ) $\overbrace{\text{त} + \text{ल}} = \text{ल} + \text{त} = \underline{\text{ल्ल}}$
- इ) $\overbrace{\text{त} + \text{श}} = \text{श} + \text{त} = \underline{\text{त्श}}$

अ)
$$\begin{array}{l|l} \text{त} + \text{च} = \text{च} + \text{त} = \underline{\text{च्य}} \\ \text{त} + \text{छ} = \text{छ} + \text{त} = \underline{\text{छ्त}} \end{array}$$

उदा:- 1) उत् + चारण = उच्यारण

2) सत् + चरित्र = सच्चरित्र

3) शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र

4) मवत् + चरण = मवच्चरण

5) उत् + छेद = उछ्नेद

ब)
$$\begin{array}{l|l} \text{त} + \text{ज} = \text{ज} + \text{त} = \underline{\text{ज्ज}} \\ \text{त} + \text{झ} = \text{ज} + \text{झ} = \underline{\text{ज्झ}} \end{array} \otimes$$

उदा:- 1) सत् + जन = सज्जन.

2) जगत् + जननी = जगज्जननी

3) यावत् + जीव = यावज्जीव

4) उत् + ज्वल = उज्ज्वल.

क)

$$\begin{array}{lcl} \text{त} + \text{ट} & = & \text{ट} + \text{ट} \\ \text{त} + \text{ठ} & = & \text{ट} + \text{ठ} \end{array} = \begin{array}{l} \text{ट्ट} \\ \text{ठ्ठ} \end{array}$$



उदा:- तत् + टीटा = तट्टीका

⇒ बृहत् + टीकाशास्त्र = बृहट्टीकाशास्त्र

इ)

$$\text{त्} + \text{ं} = \text{ल} + \text{ं} = \text{लं}$$

उदा:- तत् + लीन = तल्लीन

⇒ उत् + लंघन = उल्लंघन

③) उत् + लेख = उल्लेख

④) विद्युत् + लहरी = विद्युल्लहरी

इ)

$$\text{त्} + \text{श} = \text{च} + \text{छ} = \text{च्छ}$$

उदा:- सत् + शिष्य = सन्धिष्य

⇒ उत् + श्वास = उच्छ्वास

③) उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

④) उत् + शृंखल = उच्छृंखल (वरवरचा, उथळ)

5) 'छ' ची व्यंजन संखी :-

$$\text{स्वर} + \text{छ} = \underline{\text{छ}}$$

- उदा:-
- 1) मुक्त + छंद = मुक्तच्छंद
 - 2) परि + छेद = परिउछेद
 - 3) अनु + छेद = अनुच्छेद
 - 4) अर्थ + छटा = अर्थच्छटा
 - 5) मातृ + छाया = मातृच्छाया
 - 6) पितृ + छाया = पितृच्छाया
 - 7) शब्द + छल = शब्दच्छल
 - 8) स्व + छंद = स्वच्छंद
 - 9) प्र + छन्न = प्रच्छन्न
 - 10) आ + छावन = आच्छावन / आछावन
 - 11) आ + छन्न = आच्छन्न / आछन्न
 - 12) गोशी + छंद = गोशीच्छंद / गोशीछंद

6) 'म' ची व्यंजन संखी :-

$$\text{अ} > \boxed{\text{म} + \text{स्वर} = \underline{\text{म}} + \text{स्वर}}$$

- उदा:-
- 1) सम् + आचार = समआचार
 - 2) सम् + आप्त = समआप्त
 - 3) सम् + अरोप = समअरोप
 - 4) सम् + आंतर = समआंतर
 - 5) सम् + आधान = समआधान

६) सम् + आपन = समापन

७] म् + स्पर्श व्यंजन

'म्'चा लोप होऊन 'म'च्या अलीकडील अक्षरावर अनुस्वार येतो.

(प्रस्वर्ण)

उदा:- > सम् + पक्क = संपक्क / सम्पक्क

८) सम् + लाप = संताप / सन्ताप

९) सम् + न = संत / सन्त

१०) सम् + धर्ष = संधर्ष / सङ्धर्ष

११) सम् + चय = संचय / सङ्चय

१२) सम् + गती = संगती / सङ्गती

क] म् + अवर्गीय व्यंजने

'म्'चा लोप होऊन अलीकडील अक्षरावर अनुस्वार किंवा शीर्षविंदू येतो.

उदा:- > सम् + योग = संयोग

१३) सम् + शय = संशय

१४) सम् + सार = संसार

१५) सम् + लाप = संलाप (बोलणे).

१६) सम् + वेग = संवेग

१७) सम् + हार = संहार

१८) सम् + रक्षण = संरक्षण

- शीर्षविंदू मध्ये शब्द प्रस्वर्ण होत नाही.

⇒ ['न्' तीव्र व्यंजन संखी :-]

अ) $\boxed{\text{न्} + \text{कोणतेहो व्यंजन} = \text{न्-}(\text{निघून जाते})}$

उदा:- 1) राजन् + कुमार = राजकुमार

2) हस्तिन् + दंत = हस्तिदंत

3) आत्मन् + हत्या = आत्महत्या

4) राजन् + मुद्रा = राजमुद्रा

5) आत्मन् + संथम = आत्मसंथम

6) पश्चिन् + तीर्थ = पश्चितीर्थ

7) प्राणिन् + हिंसा = प्राणिहिंसा

8) आत्मन् + प्रशंसा = आत्मप्रशंसा

9) ब्रह्मन् + हत्या = ब्रह्महत्या

10) ब्रह्मन् + राक्षस = ब्रह्मराक्षस

11) ब्रह्मन् + चर्या = ब्रह्मचर्या

ब) $\boxed{\text{न्} + \text{स्वर} = \text{न्-}(\text{निघून जाते}) (\text{स्वरसंखी})}$

उदा:- 1) राजन् + इंद्र = राजेंद्र.

2) योगीन् + ईश्वरी = योगीश्वरी

3) आत्मन् + आराम = आत्माराम

४) 'र' ची व्यंजन संष्ठी :-

अ) $\boxed{र + सृदू \text{व्यंजन} = र+सृदू \text{व्यंजन}}$

उदा :- १) आशीर् + वाह = आशीर्वाह

२) आशीर् + वत्तन = आशीर्वचन

३) चतुर् + वर्ण = चतुर्वर्ण

४) चतुर् + वेद = चतुर्वेद

५) चतुर् + भूज = चतुर्भूज

६) चतुर् + मास = चतुर्मास

७) मुनर् + जन्म = मुनर्जन्म

८) मुनर् + मुक्रण = मुनर्मुक्रण

९) मुनर् + विवाह = मुनर्विवाह

१०) मुनर् + वसन = मुनर्वसन

११) निर् + मर्त्सना = निर्मर्त्सना

१२) द्वृ + भिक्ष = द्वृभिक्ष

ब) $\boxed{र + स्वर = र+स्वर}$

उदा :- १) चतुर् + अस्त्र = चतुरस्त्र

२) द्वृ + आग्रह = द्वृग्रह

३) चतुर् + आनन् = चतुरानन

४) चतुर् + अंग = चतुरंग

3] विसर्ग संबंधी :-

एका मात्रोमात्रा येगाऱ्या दोन वर्णपैकी पाहिला वर्ण विसर्ग व दुसरा वर्ण स्वर किंवा व्यंजन असेल तर ते दोन वर्ण स्फ्रेकऱ्यां-मध्ये मिसळून विसर्ग संबंधी होईल.

$$\underline{\text{विसर्ग}} + \underline{\text{स्वर}} = \underline{\text{विसर्ग संबंधी}}$$

$$\underline{\text{विसर्ग}} + \underline{\text{व्यंजन}} = \underline{\text{विसर्ग संबंधी}}$$

$$\underline{\text{व्यंजन}} + \underline{\text{व्यंजन}} = \underline{\text{व्यंजनाचा विसर्ग होऊन विसर्ग संबंधी}}$$

* विसर्ग संबंधीचे प्रकार :-

1) विसर्ग उकार संबंधी :-

2) विसर्ग 'र' संबंधी :-

3) विसर्ग 'ष' संबंधी :-

4) विसर्ग 'स' संबंधी :-

5) इतर विसर्ग संबंधी :-

1) विसर्ग उकार संबंधी :-

$$\boxed{\text{अ/आ} : + \text{मृदू व्यंजन} = \text{अ+उ} = \text{ओ} + \text{मृदू}}$$

उदा :- 1) मनः + भाव = अ + उ = मनोभाव
= ओ

2) सरः + वर = अ + उ = सरोवर
= ओ

3) तेजः + मय = अ + उ = तेजोमय
= ओ

- विसर्ग उकार संबंधी कशी ओळखावी :-

- संबंधी झालेल्या शब्दात दुसऱ्या अल्पराता एक कानामात्रा येतो व त्यापुढील अल्पर हे मृदू व्यंजन असते.

| | | |
|-----------------|---|----------------|
| ४) अष्टः + शती | = | अष्टोगती |
| ५) सरः + ज | = | सरोज (कमल) |
| ६) तपः + वल | = | तपोवल |
| ७) मनः + रथ | = | मनोरथ |
| ८) मनः + हर | = | मनोहर |
| ९) वयः + वृद्धि | = | वयोवृद्धि |
| १०) मनः + ज | = | मनोज |
| ११) पयः + लिंग | = | पयोलिंग (दंडग) |
| १२) पयः + द् | = | पयोद (दंडग) |
| १३) यशः + लाभ | = | यशोलाभ |
| १४) यशः + इंवर | = | यशोइंवर |
| १५) शिरः + मणी | = | शिरोमणी |

2) 'र' विसर्ग संबंधी :-

अ) $\boxed{र + \text{कठोर व्यंजन} = : + \text{कठोर व्यंजन}}$

- उदाः - १) अंतर् + करण = अंतःकरण
- २) पुनर् + स्थापना = पुनःस्थापना
- ३) पुनर् + प्रक्षेपण = पुनःप्रक्षेपण
- ४) पुनर् + प्रार्थना = पुनःप्रार्थना
- ५) पुनर् + साभरीकरण = पुनःसाभरीकरण

६) चतुर् + सुत्री = चतुःसुत्री

७) प्रातर् + संष्टया = प्रातःसंष्टया

८) प्रातर् + काल = प्रातःकाल

९) मुनर् + कथन = पुनःकथन

१०) चतुर् + शृंगी = चतुःशृंगी

ब) उ/इः + सृदूव्यंजन = रे + सृदूव्यंजन

उदाः -> दुः + जन = दुर् + जन = दुर्जन.

२) निः + भय = निर् + भय = निर्भय.

३) निः + यात = निर् + यात = निर्यात.

४) निः + छाव = निर् + छाव = निर्छाव

५) निः + विकार = निर् + विकार = निर्विकार

६) दुः + छर = दुर् + छर = दुर्छर

७) दुः + दम = दुर् + दम = दुर्दम

८) छनुः + विद्या = छनुर् + विद्या = छनुर्विद्या

क) उ/इः + र्षर = रे + र्षर

उदाः -> निः + अर्थक = निर्थक.

२) निः + अंक = निरंक

३) निः + आदर = निरादर

४) निः + हिंच्छ = निरिंच्छ

५) वहि: + ऊंगा = वहिरंगा

६) निः + ईह = निरीह.

3) विसर्ग 'ष' संबंधी :-

इ/उ : + क, ख, प, फ = ष्क, ष्ख, ष्प, ष्फ.

| | |
|-----------------------|-------------|
| अद्वा :- १) दुः + काळ | = दुष्काळ |
| २) नि : + काशन | = निष्कारण |
| ३) नि : + कष्ट | = निष्कष्ट |
| ४) नि : + काषण | = निष्काषण |
| ५) वहि : + कार | = वहिष्कार |
| ६) दुः + कृत्य | = दुष्कृत्य |
| ७) दुः + कर्म | = दुष्कर्म |
| ८) नि : + पाप | = निष्पाप |
| ९) नि : + पक्ष | = निष्पक्ष |
| १०) नि : + क्रिय | = निष्क्रिय |
| ११) नि : + कपट | = निष्कपट |
| १२) नि : + प्राण | = निष्प्राण |
| १३) नि : + फाण | = निष्पफ्ल |

अपवाह :- १) नि : + पक्ष = निष्पक्ष

२) दुः + ख = दुष्ख

4) विसर्ग 'स' संबंधी :-

अ) आ/आ : + कर/कार/कत्ती = ष्क + ---

- विसर्गीया माझे अ/आ स्वर व पुढे 'कृ' लावूची रूपे आल्यास विसर्गीया 'स' बनतो त्यास विसर्ग 'स' संबंधी असे म्हगलात.

- उदा:- 1) नमः + कार = नमस्कार
 2) मुरः + कार = मुरस्कार
 3) मुरः + कर्ती = मुरस्कर्ती
 4) भा॒ः + कर = भा॒स्कर
 5) श्रेयः + कर = श्रेयस्कर

ब> स् + कठोर व्यंजन = : + कठोर व्यंजन

- उदा:- 1) मनस् + पट्टल = मनपट्टल
 2) तेजस् + क०ा॒ = तेजक०ा॒

क> विसर्गीच्या मागे उ/इ स्वर आला व विसर्गीच्या पुढे व्यंजन आले तर विसर्गी कायम राहतो, किंवा विसर्गीच्या पुढे येणाऱ्या व्यंजनाचे द्वितीय होते.

→ १) उ/इ : + स/श = ① विसर्गी कायम राहतो
 ② स्स / श्श

- उदा:- 1) नि॒ः + संदेह = नि॒संदेह / निस्संदेह
 2) नि॒ः + सार = नि॒सार / निस्सार
 3) नि॒ः + शंक = नि॒शंक / निश्शंक
 4) दु॒ः + शासन = दु॒शासन / दुश्शासन

5) इतर विसर्गी संघी :-

अ> अ॒ः + कठोर व्यंजन = विसर्गी कायम राहतो

- उदा:- 1) रजः+क०ा॒ = रजक०ा॒
 2) इतः + पर = इतपर

- ३) अंतः + कलह = अंतःकलह
 ४) लेजः + पुंज = लेजःपुंज

व) अः + श्वर = विश्वर्गि निघून जाते.

उदा:- १) अतः+एव = अतएव

२) इतः+उत्तर = इतउत्तर

- क) १) : + च/छ = श्व + च = श्व
 २) : + त/थ = श्व + त = श्व
 ३) : + ट = श्व + ट = श्व

उदा: १) निः + चय = निश्चय

२) निः + चब = निश्चब

३) शब्दैः + चर = शब्दैश्वर

४) निः + चिंत = निश्चिंत

५) निः + तेज = निश्चेज

६) मनः + ताप = मनश्वाप

७) दुः + तर = दुश्वतर

८) अनुः + टंकार = अनुष्टंकार (अनुष्टांकार आवाज)

व) मराठीतील विशेष संखी :-

एकामागोमाग येणाऱ्या दोन स्वरांपैकी एक स्वर कायम राहतो व दुसरा निघून जातो, तेळा त्यास मराठीतील विशेष संखी असे म्हणतात.

* संखीचे प्रकार :-

1) पूर्वरूप संखी :-

2) पररूप संखी :-

1) पूर्वरूप संखी :-

एकामागोमाग येणाऱ्या दोन स्वरांपैकी एक स्वर कायम राहतो व दुसरा निघून जातो, तेळा त्यास पूर्वरूप संखी असे म्हणतात.

$$\begin{array}{l} \text{पूर्वरूप संखी} = \text{पहिला कायम} + \text{दुसरा स्वर निघून} \\ \text{राहतो (स्वर)} \quad \quad \quad \text{जातो} \\ (\checkmark) \quad \quad \quad (x) \end{array}$$

उदा :- 1) खिडकी + आत = खिडकीत

ई + आ
✓ + x

2) काही + असे = काहीसे

ई + अ

3) थोडे + असे = थोडेसे

ई + अ

4) कीती + एक = कीतीक

ई + ए

- कीती + एक = कीत्येक - (यणदेश स्वरसंखी)

ई + ए = य + ए
= ये

5) वरज + अनुस्प = वरजेनुस्प

< गरजे + अनुसूप = गरजे नुसूप

(सामान्य-रूप प्रत्यय)

2) परस्पर संबंधी :-

एकामागोमाग येणाऱ्या दोन स्वरांमधील पाहिला स्वर
लोप पावतो व दुसरा कायम शहतो, तेहा त्यास परस्पर संबंधी
असे म्हणात.

परस्पर संबंधी = पहिला स्वर + दुसरा कायम
 लोप पावतो (x) शहतो (स्वर) (cv)

छद्मा :- > ओत + ईव = ओतीव

$$2) \text{ घर} + \text{ई} = \text{घरी}$$

३) घर + आत = घरात

$$4) \text{ तेष्ये} + \text{इल} = \text{तेषील}$$

5) चुन + आट = चुनाट

$$6) 32 + 48 = \underline{80}$$

$$\Rightarrow \text{खाणे} + \text{आवक्ष} = \text{खाणावक्ष}$$

$$8) \text{ रेखा} + \text{ईव} = \text{रेखीव}$$

$$5) \text{ } \underline{\text{एक}} + \underline{\text{एक}} = \underline{\text{एको}}$$

10) न + उमजे = नुमजे

$$\Rightarrow \text{कर} + \text{अन} = \underline{\text{कर्मन}}.$$

- 'ही' हे शब्दयोगी अव्यय संख्याविशेषणाला जोडताना दोन प्रकारे प्रकृत संघी होते.

1) 'ह'चा भोप न होता :-

उदा:- 1) दोन + ही = दोन्ही

2) तीन + ही = तिन्ही

3) चार + ही = चाही

2) 'ह'चा भोप होअन :-

उदा:- 1) दोन + ही = दोनी

2) तीन + ही = तिनी

* * *

शब्दविचार

- 1) शब्दांच्या जाती.
- 2) शब्द शक्ती
- 3) शब्द सिद्धी

- * **शब्द :-** क्रमाने आलेल्या अक्षरांच्या समुद्राला शब्द असे म्हणतात.
- शब्द म्हणजे असा अक्षर समुद्र ज्याला खडीने किंवा संकेताने अर्थ प्राप्त होतो.
 - ज्याला अर्थ आहे असा एक किंवा अनेक अक्षरांचा समुद्र म्हणजे शब्द होय.
 - शब्दाला दोन प्रकारे अर्थ प्राप्त होतो.

- 1) खडी / परंपरेने
 - 2) व्युत्पत्तीने
- शब्द, उक्तरे, जोडळरे चांगी लवतो.
 - अक्षरे ही शब्दांची प्रश्नमोपस्थित संघटक असतात.
 - शब्दालाच पठ, प्रकृती, विकृती, संप असे म्हणतात

* शब्द आणि पद यांमधील फरक :-

- शम्, कुत्रा, काढी, मारतो - शब्द / प्रकृती
- शब्द वाक्यात वापरला असला पद वनते.
- प्रकृती वाक्यात वापरली असला विकृती वनते.
- रामने कुश्याला काढीने मारले - पद / विकृती

उदा :- मी, ल, ही, ऊ, तू, जी, ती, की, बी, पू, मू
[अपवाह] - नि

- मराठीनील एक अक्षरी शब्द नेहमी ढीर्घ निहावेत.
- प्रत्यय भागताना ती प्रश्न निहावेत.

नियम :-

उदा :- १) इथे, कुठे, पुढे

नियम :-

- अंत्य अक्षर हीर्घ असेल तर उपांत्य अक्षर प्रस्व लिहावे

उदा :- २) फजिती, मेहुनी,

नियम :-

- ऊकारान्त, ईकारान्त, एकारान्त अक्षरपूर्वीची उपांत्य अहेरे मराठीत प्रस्व लिहावी.

उदा :- ३) किला, तिसरा, शिल्लक, बुक्का, भुच्चा, दुप्पट

नियम :-

- मराठीत जोडाहरापूर्वीची अहेरे प्रस्व लिहिली जातात.

- मराठीतील प्रत्येक शब्द स्वरांत असतो.

अपवाद :- अन्

- मराठीत शब्दांच्या अंती येणारे उकार, ईकार हीर्घ-लिहिली जातात

अपवाद :- आणि

1) शब्दांच्या जाती :-

शब्द वाच्यात विविध प्रकारची कार्ये करते. शब्दांच्या त्या कार्यालाच शब्दांच्या जाती असे महणातात.

- शब्दाची जात वाच्यातील त्याच्या कार्यावरून ठरत असते.

उदा :- 1) पह्यी झाडवर वसला (शब्दयोगी अव्यय)

2) पह्यी वर उडाले (क्रियाविशेषण)

3) वर पिता मांडवात फिरत होते (विशेषण)

4) श्रीकृष्णा तु त्याला वर दें. (क्रियापद)

5) विष्णुने छूववाळाला वर दिला (नाम)

* शब्दांच्या आठ जाती आहेत :-

- शब्द वाच्यात आठ प्रकारपी कार्ये करलो, म्हणून शब्दांच्या आठ जाती पडतात.

शब्दांच्या जाती

(8)

विकारी / सव्यय /

संविभक्तीक

- 1) नाम
- 2) सर्वनाम
- 3) विशेषण
- 4) क्रियापद

अविकारी / अव्यय /

अविभक्तीक

- 5) क्रियाविशेषण अव्यय
- 6) शब्दयोगी अव्यय
- 7) उभयान्वयी अव्यय
- 8) केवलप्रयोगी अव्यय

- विकारी, अविकारी → सो. के. दामले

- अविभक्तीक, संविभक्तीक → दादोबा पांडुरंग तर्जुडकर

1) विकारी :-

- विकार म्हणजे बदल.

- मरावीत सधा विकार आहेत.

- गिंग, वचन, विभक्ती, पुरुष, अर्थ, काळ या शहा निकाराबूसार ज्या शब्दजाती व्हलतात त्यांना विकारी असे महणतात.
- नाम, विशेषण, सर्वनाम, क्रियापद.

2) अविकारी :-

- ज्या शब्द जाती विकाराबूसार व्हलत नाहीत त्यांना अविकारी असे महणतात.

- 1) क्रियाविशेषण अव्यय

- 2) शब्दयोगी अव्यय
- 3) उभयान्वयी अव्यय
- 4) केवलप्रधोगी अव्यय

1) विकारी

1) नाम :-

- नामाचे प्रकार.
- नामाचा लिंगविचार.
- नामाचा वचन विचार.
- नामाचे सामान्यरूप.
- नामाचा विभक्तीविचार.
- नामाचे वाक्यातील कार्य.

→ मराठीतील नाव महणजेच संस्कृतमधील नाम होय.

नाम - तत्सम्

नाव - तद्भव

* व्याख्या :-

प्रत्यक्ष दिसणाऱ्या किंवा कल्पनेने जाणणाऱ्या वस्तू, प्राणी, व्यक्ती, ठिकाण आणि त्यांचे गुणधर्म यांना दिलेले नाव महणजे नाम होय.

उदा :- - खूर्ची, फळा, ढगड - वस्तू

- माणस, स्त्री, पुरुष - व्यक्ति
- वाष्प, सिंह, हन्ती - प्राणी
- हुशारी, शरीबी, चांगुलपणा - गुणवर्गीला दिलेली नावे
- भारत, अमेरिका, अंबाजोगाई - ठिकाण
- मन, वाश, देव, स्वर्ग, नरक - कल्पनेने जाणलेले व्यक्ती, वस्तू, ठिकाणे

- नामाला तीन प्रकारचे विकार प्राप्त होतात:-

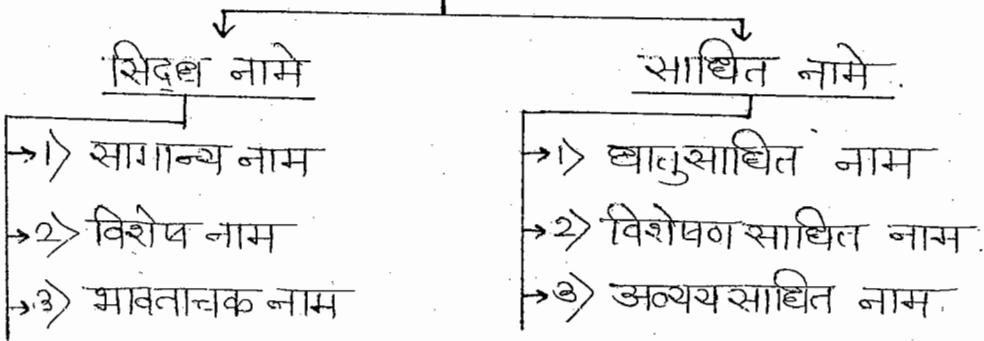
1) लिंगविकार :- घोडा - घोडी

2) वचनविकार :- घोडा - घोडे

3) प्रिभक्तीविकार :- घोडा - घोड्याने, घोड्याला, घोड्याचा

① नामाचे प्रकार :-

वर्गीकरण



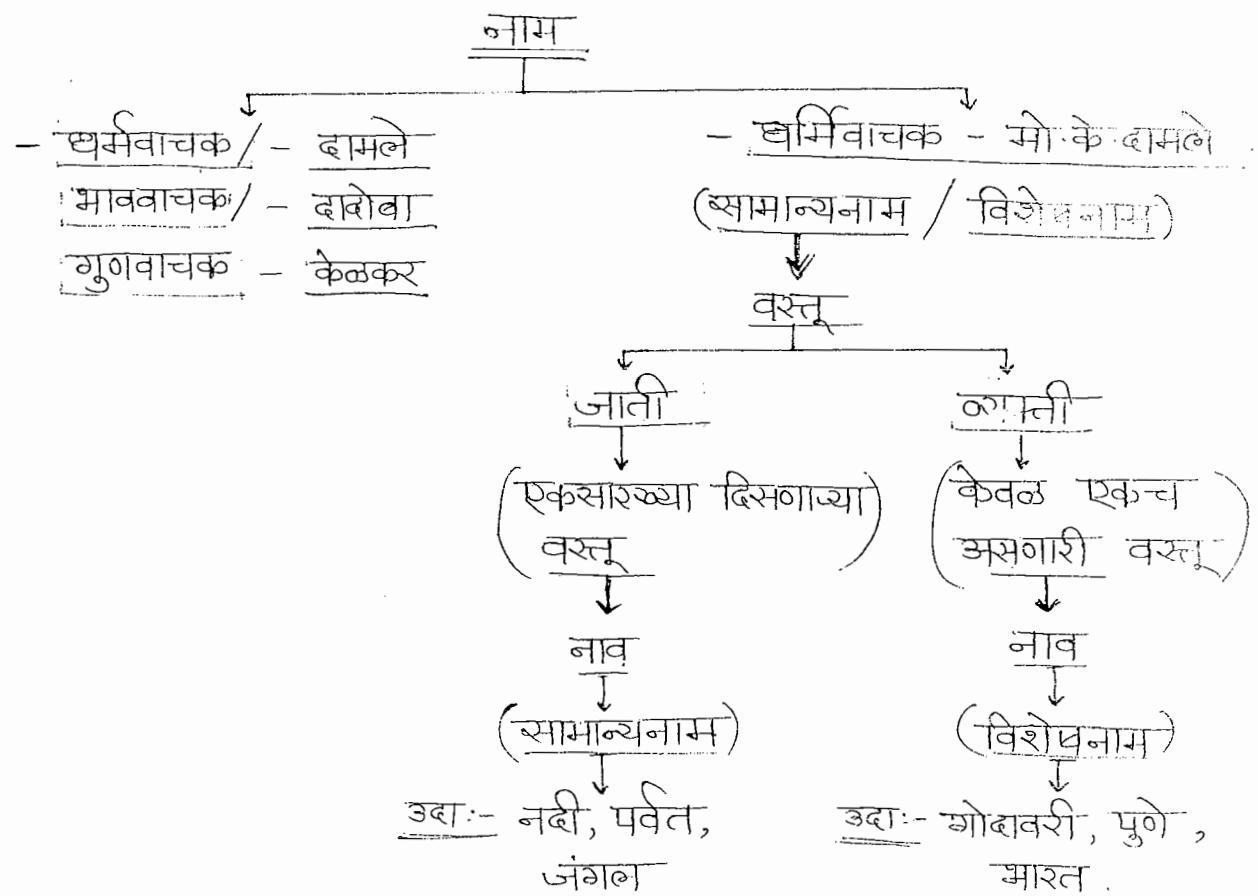
- नामाचे मुख्य तीन (३) प्रकार पडतात:

1) सामान्य नाम

2) विशेष नाम

3) भाववाचक नाम





⇒ घर्मवाचक नाम :-

व्यक्ती, वरन्, प्राणी, ठिकाण यांच्यामधील गुणहर्माला दिलेले नाव रहणार्जेच धर्मवाचक नाम होय.

- ज्या नामाबे सजीव व्यक्तिमधील भाव व निर्जीव वस्तुमधील गुण-
र्थी समजतो ल्यास भाववाचक नाम असे म्हणतात.
 - भाववाचक नामाबाब भर्मिवाचक नाम, गुणवाचक नाम असे म्हणतात.
 - नामाचे भर्मिवाचक नाम व भर्मिवाचक नाम मो.के. दामले यांनी
केले.
 - भाववाचक नामाला स्वतंत्र आस्तित्व नसते.
 - भाववाचक नाम सामान्यनामे व विशेषनामे यांच्यामुळे आश्रीत
असते.
 - भाववाचक नामाला स्पर्श, चव किंवा डोळ्यांनी पाहता येत नाही.
 - भाववाचक नाम हे एकवर्धनी असते.
 - सामान्यनामे, विशेषनामे व विशेषणे यांना विविष्ट प्रत्यय लागून
भाववाचक नाम बनते.

* यत्वपता वाई गिरी की वा आई

| प्रत्यय | नामविशेषण | उदाहरण |
|------------------|-----------|--|
| <u>य</u> | सुंदर | सौंदर्य, मालुर्य, छैर्य, शौर्य, औदार्य, शैशिल्य, गांझीर्य <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; display: inline-block;"> सुंदर शुर उदार ↓ ↓ ↓ उ-ओ (वृष्टि) </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; display: inline-block;"> सौंदर्य शौर्य औदार्य </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; display: inline-block;"> छैर शैशिल ↓ ↓ इ-ऐ (वृष्टि) </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; display: inline-block;"> छैर्य शैशिल्य </div> |
| <u>त्व</u> | देव | शत्रुत्व, मित्रत्व, शूरत्व, अघुत्व, महत्व, देवत्व |
| <u>पूणा / पू</u> | प्रामाणिक | प्रामाणिकपूणा, सोठेपूणा, लहानपूण, शाहांगपूणा |
| <u>ता</u> | नम्र | नम्रता, समता, मित्रता, दूरता, भिजनता |
| <u>ई</u> | श्रीमंती | श्रीमंती, शशीवी, लकड़ी, संही, बांधी, ऊंची, मालुरी. |
| <u>गिरी</u> | दादा | दादागिरी, ताईगिरी, गांधीगिरी, कामगिरी, सावण्यगिरी |
| <u>की</u> | पाटील | पाटीलकी, लोहारकी, सोनाशकी |
| <u>वा</u> | गोड | गोडवा, गारवा, ओलावा |
| <u>आई</u> | नवल | नवलाई, चपलाई, भरपाई, दांडगाई |

| <u>विशेषण</u> | <u>तदृष्टित प्रत्यय</u> | <u>भाववाचक नामे</u> |
|---------------|-------------------------|---------------------|
| चपळ | आई | चपळाई |
| गरीब | ई | गरीबी |
| शहाणा | पणा | शहाणपणा |

जात्यांतर

* जात्यांतर :-

एका शब्दाची जात वडलून दुसरी जात तथार होते त्यास जात्यांतर असे म्हणतात.

- आंतर = अन्य

- जात्यांतर = अन्य जात

- जात्यांतर घडवून आणणाऱ्या प्रत्ययांना तदृष्टित प्रत्यय असे म्हणतात.

* भाववाचक नामे :-

- यश, कीर्ती, विश्वास, अभिनय

* क्रिया दाखविणारी नामे - (भाववाचक)

- हास्य, चोरी, उड्डान

2) छमिवाचक नाम :-

गुण किंवा छर्म ज्या नामामध्ये राहतो महालेच वास करतो त्या नामांना छमिवाचक नाम असे म्हणतात.

- सामान्यनामे व विशेषनामे यांच्यामध्ये गुण / छर्म राहतो महालून त्योंना छमिवाचक नाम असे म्हणतात.

- वस्तू जगातल्या प्रत्येक गोष्टीला वस्तू असे संबोधिले जाते वस्तूचे दोन प्रकार पडतात:-

1) जाती:

2) व्यक्ती:

1) जाती :-

एक सारख्या दिसणाऱ्या वस्तुंना किंवा एकाच प्रकारच्या वस्तुंना जाती असे म्हणतात.

-सामान्यनाम :-

एकाच जातीच्या वस्तुंना जे नाव दिले जाते त्याना सामान्यनाम असे म्हणतात.

-सामान्यनाम :-

एकसारख्या दिसणाऱ्या वस्तू, प्राणी, व्यक्ती, ठिकाणे, दृश्य-वस्तू, अदृश्य वस्तू या सर्वांना जे नाव दिले जाते त्यास सामान्यनाम असे म्हटले जाते.

- सामान्यनामांना स्वतःचा अर्थ असतो.
- फक्त सामान्य नामाचेच अनेक वचन होते.
- सामान्य नामाबा जातीवाचक नाम, शटवाचक नाम असे म्हणतात.
- सामान्य नाम लिंग व वचन दर्शविते.
- पदार्थवाचक नामे व समुहवाचक नामे यांचा समावेश सामान्य नामांमध्ये होतो.

उदा :-

1) नातेसंबंध / मनुष्यप्राणी :-

→ मनुष्य, स्त्री, राजा, राणी, मुल, आई, वावा, शिक्षक, विद्यार्थी, माझा, मावशी, चोर शिपाई, नवरा, पल्जी, पवी.

2) मुलगी = सुता, तनया, आत्मजा, कन्या, दुहिता, नंदिनी, पुत्री, तनुजा

3) स्त्री = ललना, अवला, वनिता, रमगी, अंगला, अनिता

2) स्त्री साठी वेगळे शब्द :-

- अंतुरी = अस्तुरी, वायको, पल्जी, स्त्री.
- मानिनी = मानिस्त्री, सान असलेली स्त्री.
- मालिनी = अनिश्चय सुंदर स्त्री.
- वेल्हाळी = प्रियस्त्री.
- वामा, वामांगी = पल्जी, सुंदर स्त्री

- वहारी = सुन
- पुरंधी = सुदर प्रौढ़ स्त्री
- चारुगामी = सुदर स्त्री
- अनुरक्ता = प्रेमात पडलेली

③) नवरा = पती, कांत, भ्रतार, छनी, वल्लभ, कवेश, छव

③) मनुष्येतर प्राणी व पक्षी :-

→ कुत्रा, घोडा वाघ, सिंह, पाल, कासव, हत्ती, उंट, जिराफ, पोपट, मोर, कवृतर, कोकिळा, चिमणी.

1) पोपट = रावा, राघू, शुक, शक

2) कासव = कूर्म, कच्छप, कमठ, कमट, कच्छ

3) हरीण = सून, सारंग, पुरंग,

4) कावळा = वायस, एकाळा, काऊळा, काक

5) हत्ती = अज, सारंग, नाग, पिलू, करी

6) उंट = उंटर, उष्ट्र

7) सिंह = शार्दूल, केसरी, पंचानन, सृगेंद्र, सृगराज, वनराज

8) बेङ्गल = झेक, मंडूक, दुर्दुर

9) मुंगा = भ्रमर, अबी, मधुव, मिणिंद, मधुकर, मृंग

* काहो प्रस्तु :-

प्र.) मी नाग पाहिला या वाक्यातील नाग शब्दाचे दोन वेगवेगाळे अर्थ लिहा.

⇒) सर्प, हत्ती

प्र.) हत्ती या शब्दाबा समानार्थी शब्द शोषा

⇒) सारंग

~

४) वृक्ष, वेळी, फळे, फुले :-

→ आंवा, केळी, शुलाव, मोगरा, फणस, पिंपळ, वड

५) वृक्ष = तस, पादप, गुल्म, द्रुम, अग्रम, शाखी, विटप

६) जग आणि त्यानील मार्ग :-

→ ग्रह, तारा, खंड, देश, राज्य, जिल्हा, शहर, तालुका, गाव, गाल्ली
समुद्र, महासागर, पर्वत, डोंगर, घाट, दरी, ढग.

७) दृश्यपदार्थ :-

→ धर, द्वर, शोत, मळा, वाग, आन्य, पेंसिल, पेन, दुकान, पाई, खांब,
वाहने, घर, डवा, डवी
(गुजराती) (तेलगू)

८) अदृश्य पदार्थ :-

→ वारा, हवा, देव, राक्षस, अक्षरा, परी, भुत.

९) पदार्थवाचक नाम / द्रव्यवाचक नाम (सामान्यनाम) :-

संख्येत मोजता न येगाच्या नामांना पदार्थवाचक
नामे असे रहिणतात.

- जी नामे परिमाणात मोजली जातात (मी., किलो) अशा नामांना
पदार्थवाचक नामे असे रहिणतात.

उदा :- सोने, चांदी, गह, ज्वरी, साखर, दूष, तूप, दही.

१०) समूहवाचक नामे :-

ज्या नामावर एकाच प्रकारच्या नामांचा / वर्स्तूचा
एकत्रित उल्लेख होतो तेहात्यास समूहवाचक नाम असे रहिणतात.

उदा :- समा, सैन्य, संघ, मंडळ, समिती, लाफा, शर्फी, संसद,
कळप, जञ्चा, घोश, वर्ग.

1) शारीराचे अवयव :-

→ केस, नाक, डोळे, कान, हात, पाय.

- कपाळ = बलाट, झाल, निढळ, कपोल, निटील, आलिक.
- डोळा = नथन, लोचन, नेत्र, अक्ष, चक्षु, अंकक, आवावू.
- डोके = शिर, सस्तक (तत्सम), माथा, मूर्खी, शीर्ष
- तोंड = वदन, आबन, मुख, कुंड, वकत्र

2) विशेषनाम :-

एखाही विशेष, वर्त्तु, व्यक्ती, प्राणी, ठिकाण यांना दिलेले नाव म्हणजे विशेषनाम होय.

- विशेषनाम हे व्यक्तीविचक नाम असते.
- विशेषनामाचे अनेकवचन होत नाही, इत्यादि ते सामान्य नाम समजावे.
- विशेषनाम हे ठेवलेले नाम असते.
- विशेषनामांना खतःचा अर्थ नसतो.

उदा :-

- ठेवलेली नावे :- योगेश, महेश, पुजा, जैकलीन, श्रद्धा, सलमान, ---
- खंडांची नावे :- आशिया, आप्रिका, ---
- देशांची नावे :- मारत, पाकिस्तान, चीन, ---
- राज्य :- महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, ---
- शहर :- अंबाजोगाई, भातूर, पुणे, मुंबई, जळगाव, सोलापूर, ---
- वार :- सोमवार, मंगळवार, बुधवार, ---
- सण :- दिवाळी, दहसरा, पोळा, पंचमी, रंगपंचमी, ---
- नद्यांची नावे :- ठांगा, गोदावरी, श्रीमा, ---
- पर्वतांची नावे :- हिमालय, अनेमुडी, आल्प्स, ---

* सामान्यनामे विशेषनामाची कार्ये करतात :-

1) लता - सामान्यनाम

लता ही माझ्या मामाची मुळगी आहे - विशेषनाम

2) तारा - सामान्यनाम

तारा ही अभिनेत्री आहे - विशेषनाम

3) बेबी - सामान्यनाम

बेबी रोज कौले जात जाते - विशेषनाम

4) सागर - सामान्यनाम

सागर हा माझा मित्र आहे - विशेषनाम

5) पुरी - सामान्यनाम

आम्ही पुरीला जाऊन जठान्याचे दर्शन घेतले - विशेषनाम

6) नगर - सामान्यनाम

मी नगरला घेलो होतो. - विशेषनाम

* विशेषनामे सामान्यनामाची कार्ये करतात :-

- विशेषनामे सामान्यनामाची कार्ये ढेण प्रकारे करतात.

1) विशेषनामाचे अनेकवचन करण :

उदा:-

① स्त्रीया सोळा सोमवाराचे व्रत करतात.

② आमच्या वर्गात वरेच नाशद होते.

③ आमच्या तालुक्यात तीन टाकळ्या आहेत.

2) विशेषनामे सामान्यनामाचा छार्थ व्यक्त करतात :-

उदा:-

① माझा मित्र राहुल रहणाजे कुंभकर्णीच आहे.

कुंभकर्ण = झोपाळ माणूस

③ त्याच्या शाषणात काहीच राम नक्हता

राम = अर्थ

राम नसगे = अर्थ नसावे

④ त्याचे वडील म्हणजे जमदळनीच आहेत.

जमदळनी = शारीट माणूस

④ तुम्ही म्हणजे नुसते आंबच आहात.

आंब = ओळा (महादेव)

*भाववाचक नामे विशेषनामाचे कार्य करतात :-

उदा:-

① विश्वास - भाववाचक नाम

विश्वास हा विश्वासास पात्र आहे.
विशेषनाम विश्ववाचक नाम

② माणुरी - भाववाचक नाम

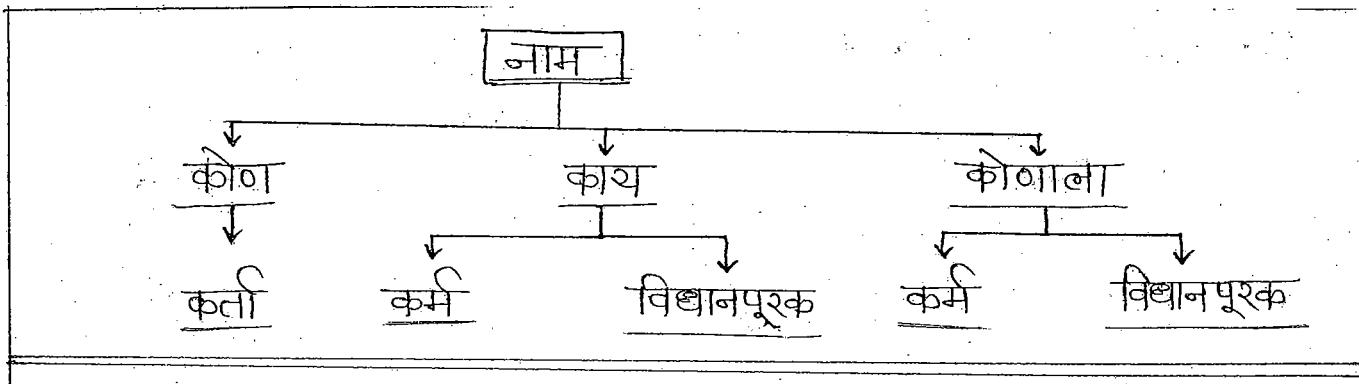
माणुरी विवाहानंतर परदेशी गोली.
विशेषनाम

③ अभिनय - भाववाचक नाम

अभिनय चोंगला अभिनय करतो.
विशेषनाम भाववाचक नाम.

② साधित नामे :-

इतर शब्दांपासून बनलेल्या नामांना साधित नामे असे
म्हणतात.



१ वातुसाधित नामः-

मुळ वातुला णे, ऊ, अ, ण हे चार प्रत्यय बांधून वातुसाधित नाम असेही ठेणावात.

— मुळ वातुला णे, ऊ, अ, ण हे चार प्रत्यय बांधून वातुसाधित नाम बनते.

उदाः:-

१) संयमीत माणसे आपले हस्त ओळात तर रहू पापव्यांत अपवित्रात.

| | | | |
|----------------|-----------------------------|-----------------------------|---------------------|
| नाम (कर्ता) | वातुसाधित नाम (काय ?) | वातुसाधित नाम (कोण ?) | क्रियापद (कोण ?) |
|----------------|-----------------------------|-----------------------------|---------------------|

— कोणव्याही शब्दांत 'त' प्रत्यय बांधून ते क्रियाविशेषण असते.

२) या रस्त्यावर माणसांची नीडमीच येजा असते

| |
|---------------|
| वातुसाधित नाम |
|---------------|

३) वावोंनी मला खाक आणला.

| |
|---------------|
| वातुसाधित नाम |
|---------------|

४) आई उल्हास्यात हळण-कांडप करते

| |
|---------------|
| वातुसाधित नाम |
|---------------|

५) शुक्लजींचे वागणे प्रेमळ असते.

| |
|---------------|
| वातुसाधित नाम |
|---------------|

→ भरवर वालो आरो^{व्या}साठी चांगले असते
↓
आदूसाधित नाम

⇒ कर नाही त्याला डर कशाला
 ↓ ↓
 घातसाधित नाम घातसाधित नाम

⇒ त्याचे पीठे अलीकडे वाढले आहे.
पीठे \downarrow वाढले \downarrow आहे
धातूसाधित सहाय्यक क्रियापद

② विशेषण साधित नाम:-

विशेषणांपासून वनलेल्या नामांना विशेषण सांकेत नाम

असे रहा तात.

-विशेषणांना विश्वकृतीचे प्रत्यय लागाल्यास ते नामाचे कार्य करतात

उदा: गरीब, श्रीमंत, वेडा, मूर्ख, सुंदर

⇒ श्रीमंतांना गर्व असतो

विशेषण साधित बास

2) सुंदरा मनामळ्ये भरली.

विशेषण साधित
नाम

३) वेडयाक्षी जास्त वेळ बोल्नु नये

विशेषण सा. ना.

③ अव्यय साधित नाम :-

अव्ययापासुन् वन्नेत्या नामाना अव्यय स्थापित नाम
असे रहेतात.

-उद्धव :-

- 2) भारतीय संखाची वाहवा व्याळी
अव्यव साधित
नाम

* STI Mains - 18 August :-

- 4) पाकिस्तान ओव्हाइंची छी-थु झाली
 ↓
 अव्यय सांकेत
 नाम

- 5) तो वापरे महाला
 ↓
 अव्यय साधित
 नाम

② * नामाचा लिंग विचार :-

लिंग म्हणजे चिन्ह किंवा खूण, नामाच्या रूपात्मन पुरुषत्व, स्त्रीत्व व उभयभिन्नत्व यांचा बोल्ह होतो त्यास लिंग असेहे म्हणतात.

- लिंगाचे मुख्य तीन प्रकार पडतात.

1) मुलिंग :- पुरुष जातीचा बोल्ह होतो - (तो)

2) स्त्रीलिंग :- स्त्री जातीचा बोल्ह होतो - (ती)

3) नपुंसकलिंग :- कोणत्याच जातीचा बोल्ह होत नाही - (ते)

- मराठीत अकाशन्त, आकाशन्त, इ, ऊ, ओ-काशन्त नामे आढळतात, मात्र ए, -ओ-ऐ- काशन्त नामे आढळत नाहीत.

1) अकाशन्त मुलिंगी नामाचे स्त्रीलिंगी रूप ई, आ, ईण प्रत्यय भागून होते।

| | <u>पुलिंगी</u> (अ) | | <u>स्त्रीलिंगी</u> (ई) |
|-----|-----------------------|---|---------------------------|
| 1) | देव | — | देवी |
| 2) | नट | — | नटी |
| 3) | नर | — | नारी |
| 4) | तस्णा | — | तस्णी |
| 5) | दास | — | दासी |
| 6) | साजन | — | सजनी |
| 7) | युवक | — | युवती |
| 8) | भगवान | — | भगवती |
| 9) | विद्वान | — | विदुषी |
| 10) | * मगर | — | मगरी |

| | | | |
|-----|---------|---|---------|
| 11> | वानर | — | वानरी |
| 12> | हंस | — | हंसी |
| 13> | बेड़क | — | बेड़की |
| 14> | श्रीमान | — | श्रीमती |

| | पुलिंगी (अ) | स्त्रीलिंगी (आ) |
|----|----------------|--------------------|
| १> | लेखक | लेखिका |
| २> | गायक | गायिका |
| ३> | नर्तक | नर्तिका |
| ४> | शिक्षक | शिक्षिका |
| ५> | मुख्याल्यापक | मुख्याल्यापिका |
| ६> | अल्यापक | अल्यापिका |

| | पुलिंगी (अ) | स्त्रीलिंगी (इण) |
|----|----------------|---------------------|
| १> | माकड़ | माकडीण |
| २> | वाघ | वाघीण |
| ३> | पाटील | पाटलीण |
| ४> | सिंह | सिंहीण |
| ५> | कुंभार | कुंभारीण |
| ६> | डॉक्टर | डॉक्टरीण |
| ७> | रोजार | रोजारीण |
| ८> | मालक | मालकीण |

2) आकारान्त पुलिंगी नामाचे स्त्रीलिंगी रूप ईकारान्त होते :-

पुलिंगी
(आ)

स्त्रीलिंगी
(ई)

| | | | |
|-----|------------|---|------------|
| 1> | फळा | — | फळी |
| 2> | वाडा | — | वाडी |
| 3> | पाडा | — | पाडी |
| 4> | खडा | — | खडी |
| 5> | माकरा | — | माकरी |
| 6> | लोटा | — | लोटी |
| 7> | आरसा | — | आरशी |
| 8> | आजा | — | आजी |
| 9> | काका | — | काकी |
| 10> | मामा | — | मामी |
| 11> | मावशा | — | मावशी |
| 12> | डवा | — | डवी |
| 13> | ग्रंथकर्ती | — | ग्रंथकर्ती |
| 14> | दांडा | — | दांडी |

3) ईकारान्त पुलिंगी नामाचे स्त्रीलिंगी रूप ईण प्रत्यय लावून होते :-

पुलिंगी
(ई)

स्त्रीलिंगी
(ईण)

| | | | |
|----|------|---|-------|
| 1> | चोबी | — | चोबीण |
| 2> | माळी | — | माळीण |

| | | | |
|----|-----------------|---|---------|
| ३) | हत्ती | — | हत्तीण |
| ४) | तेली | — | तेलीण |
| ५) | * कवी - (अपवाद) | — | कवयत्री |

४) काही मुलिंगी नामाची स्त्रीलिंगी रूपे वेगळ्या पदाखतीने

होतात :-

| | मुलिंगी | स्त्रीलिंगी |
|-----|---------|-------------|
| १) | पुरुष | स्त्री |
| २) | छंट | सांडणी |
| ३) | वेका | आटी |
| ४) | वैल | गाय |
| ५) | पोपट | मैना |
| ६) | बोकड | शेळी |
| ७) | साणु | साधवी |
| ८) | वर | वछू |
| ९) | विदूर | विष्वा |
| १०) | खोऱ्ड | कालवड |
| ११) | वाप | माय |
| १२) | वडील | आई |
| १३) | पिता | माता |
| १४) | रेडा | चौस |
| १५) | जवरा | वायको |
| १६) | पती | पत्नी |
| १७) | कीर | जाऊ |

| | | | |
|-----|-------|---|--------|
| 18) | मुलगा | - | सुन |
| 19) | राजा | - | राणी |
| 20) | मोर | - | बांडेर |

5) आकारान्त मुलिंगी नामाचे स्त्रीलिंगी रूप अळिकारान्त वर नपुंसकलिंगी रूप एकारान्त होते :-

| | <u>मुलिंगी</u> | <u>स्त्रीलिंगी</u> | <u>नपुंसकलिंगी</u> |
|----|----------------|--------------------|--------------------|
| 1) | मुलगा | - | मुलगे |
| 2) | पोरगा | - | पोरगे |
| 3) | कुत्रा | - | कुत्रे |
| 4) | घोडा | - | घोडे |
| 5) | कोळ्हा | - | कोळ्हे |
| 6) | वकरा | - | वकरे |

6) दोन्ही लिंगात येणारी नामे :-

| | <u>मुलिंगी</u> | <u>स्त्रीलिंगी</u> | <u>नपुंसकलिंगी</u> |
|----|----------------|--------------------|--------------------|
| 1) | वाग | - | - |
| 2) | टेकर | - | - |
| 3) | वेळ | - | - |
| 4) | विणा | - | - |
| 5) | मजा | - | - |
| 6) | व्याष्ठी | - | - |
| 7) | तंवाष्टु | - | - |
| 8) | संष्ठी | - | - |
| 9) | मष्ट | - | - |

| | | | | | | |
|-----|--------|---|--------|---|--------|--|
| 10> | जीन्जस | - | जीन्जस | - | - | |
| 11> | - | - | अस्वल | - | अस्वल | |
| 12> | - | - | मांजर | - | मांजर | |
| 13> | नेत्र | - | - | - | नेत्र | |
| 14> | झुक्कर | - | - | - | झुक्कर | |
| 15> | हशीण | - | - | - | हशीण | |
| 16> | पोर | - | पोर | - | पोर | |
| 17> | मुल | - | मुल | - | मुल | |

* पुलिंगी प्राणी:-

- गरुड, साप, उंदीर, सरडा, टोळ (पढी), सुरवंट, मगर, डेक्कण (मत्कून), पिपीलीका

* स्त्रीलिंगी प्राणी:-

- घार, कीड, घुस, सुसर, घोरपड, पिस्ट, जब्द, ऊ,

* भाववाचक नामाचे लिंग:-

- भाववाचक नामाचे लिंग प्रत्ययावलन ठरते

1] पुलिंगी प्रत्यय:-

पणा, वा

- राहाणपणा, प्रामाणिकपणा, घोडवा, ओलावा.

2] स्त्रीलिंगी प्रत्यय:-

ता, ई, की, गिरी

- मधूरता, नम्रता, घोडी, माछुरी, लंडी, आफुलकी, माणुसकी, घुलामगिरी, गांधीगिरी.

3] नपुंसकलिंगी प्रत्यय:-

य, त्व, पण,

- माणुर्य, शौर्य, छैर्य, मित्रत्व, दातृत्व, रसुत्व, लहानपण

⇒ सामाजिक शब्दाचे लिंग शेवटच्या शब्दावर्खन ठरते.

उदा:-

1) साखरभान

↓
पुलिंगी

2) भाजीपाळा

↓
पुलिंगी

3) मिठभाकरी

↓
स्त्रीलिंगी

4) गायरान

↓
नपुंसकलिंगी

5) देवघर

↓
नपुंसकलिंगी

- प्राणी मात्राचे लिंग हे वास्तविक असते तर वस्तूचे लिंग हे काल्पनिक असते.

* STI - Mains:

प्र) कोणता शब्द तिन्ही लिंगात सोईस्कर पणे वापरला जातो

1) बाग 2) मुऱ्हुस 3) पोर 4) वेळ

* 15-Feb - Assistant Mains,

प्र) मराठी लिंगव्यवस्थेवर्द्धल पुढील प्रमाणे विचार मांडता येतील

A) मराठीतील लिंगव्यक्त्या अत्यंत अनियमित व बारसोडीची आहे

B) लिंग ओळच्यव्यासाठी नामाच्या स्पाचा विचार केला जातो.

C) प्राणीमात्राचे लिंग वास्तविक असे नसते.

D) निर्जीवि वस्तूचे लिंग काळ्यनिक असे नसते.

अ * वचन :-

नामाच्या अंगी संज्ञ्या सुचिविष्याचा जो व्युत्थान
असतो त्यास वचन असे म्हणतात.

- वचनाचे दोन प्रकार पडतात.

1) एकवचन :- एकाच करतूचा वोष होतो

2) अनेकवचन :- अनेक करतूचा वोष होतो.

* पुलिंगी नामाचे अनेकवचन :-

आकाशान्त पुलिंगी नामाचे अनेकवचन एकाशान्त होते :-

| | एकवचन | अनेकवचन |
|-----|---------|---------|
| 1) | राजा | राजे |
| 2) | कुत्रा | कुत्रे |
| 3) | रस्ता | रस्ते |
| 4) | पंखा | पंखे |
| 5) | हंडा | हंडे |
| 6) | विळा | विळे |
| 7) | वाढा | वाढे |
| 8) | सदरा | सदरे |
| 9) | ससा | ससे |
| 10) | आंवा | आंवे |
| 11) | घोडा | घोडे |
| 12) | लांडगा | लांडगे |
| 13) | काटा | काटे |
| 14) | महिना | महिने |
| 15) | पडदा | पडदे |
| 16) | थिवाणवा | थिवाणवे |

| | | | |
|-----|--------|---|--------|
| १७> | दरवाजा | - | दरवाजे |
| १८> | गजरा | - | गजरे |
| १९> | माला | - | माले |
| २०> | डवा | - | डवे |
| २१> | जिल्हा | - | जिल्हे |

२) आकारान्ताशीवाय इतर पुलिंगी नामाची रूपे दोन्ही वचनात सारखीच राहतात:-

| | एकवचन | | अनेकवचन |
|-----|-------|---|---------|
| १> | वाध | - | वाध |
| २> | टेबल | - | टेबल |
| ३> | सिंह | - | सिंह |
| ४> | पुल | - | पुल |
| ५> | पेन | - | पेन |
| ६> | कागद | - | कागद |
| ७> | शत्रु | - | शत्रु |
| ८> | लाई | - | लाई |
| ९> | खड | - | खड |
| १०> | झाई | - | झाई |
| ११> | तेली | - | तेली |
| १२> | माळी | - | माळी |
| १३> | हल्ली | - | हल्ली |
| १४> | पळी | - | पळी |
| १५> | कवी | - | कवी |
| १६> | फोटो | - | फोटो |
| १७> | छनको | - | छनको |
| १८> | ऋनको | - | ऋनको |
| १९> | फोनो | - | फोनो |

* श्रीलिंगी नामाचे अनेकवचन :-

- संशरीत (अ) (आ), (ई) (ऊ), (ओ) कारान्त स्त्रीलिंगी नामे आढळतात. मात्र, औ, ए, ऐ, कारान्त आढळत नाहीत.

▷ अकारान्त श्रीलिंगी नामाचे अनेकवचन :- अ : आ वं ई .
-(ईकारान्त) :-

| | [एकवचन] | [अनेकवचन] |
|----|---------|-----------|
| १) | इमारत | इमारती |
| २) | भिंत | भिंती |
| ३) | महेस | महशी |
| ४) | सोय | सोषी, सोई |
| ५) | गाष | गाषी, गाई |
| ६) | जात | जाणी |
| ७) | विहीर | विहीरी |
| ८) | गंगत | गंगाली |

२) अकारान्त श्रीलिंगी नामाचे अनेकवचन - (आकाशन) :-

| | [एकवचन] | [अनेकवचन] |
|----|---------|-----------|
| १) | सुन | सुना |
| २) | चुक | चूका |
| ३) | विट | विटा |
| ४) | माळ | माळा |
| ५) | तारिख | तारखा |
| ६) | चार | चारा |
| ७) | गार | गारा |
| ८) | पार | पारा |

३) आकारान्त स्त्रीभेंगी नामाचे अनेकवचन आकारान्तच राहत :-

[एकवचन]

- १) शिक्षिका
- २) नायिका
- ३) नर्तिका
- ४) गायिका

[अनेकवचन]

- शिक्षिका
- नायिका
- नर्तिका
- गायिका

४) इकारान्त स्त्रीभेंगी नामाचे अनेकवचन वाकारान्त होते :-

[एकवचन]

- १) वही
- २) खिडकी
- ३) गाडी
- ४) सतरंजी
- ५) विडी
- ६) वाटली
- ७) बाई
- ८) गादी
- ९) फळी
- १०) साडी
- ११) पगडी
- १२) दासी - (अपवाद) -

[अनेकवचन]

- वस्त्रा
- खिडक्या
- गाड्या
- सतरंज्या
- विड्या
- वाटल्या
- बारा
- गाद्या
- फळ्या
- साड्या
- पगड्या
- दासी

५) ऊकारान्त स्त्रीभेंगी नामाचे अनेकवचन वाकारान्त होते :-

[एकवचन]

- १) सासू
- २) ऊ
- ३) जाऊ
- ४) जल्वा
- ५) पिसू

[अनेकवचन]

- सासवा
- ऊवा
- जावा
- जलवा
- पिसवा

| | | | |
|----|-------|-------------|-------|
| ६) | वाळू | - | वाळू |
| ७) | वाजू | → (अपवाद) - | वाजू |
| ८) | वस्तू | - | वस्तू |

६) ओकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे अनेकवचन आकारान्त होते :-

| | | | |
|----|-------|---|-------|
| १) | वायको | - | वायका |
|----|-------|---|-------|

* नपुंसकलिंगी नामाचे अनेकवचन :-

१) अकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे अनेकवचन एकारान्त होते :-

| | एकवचन (अ) | अनेकवचन (ए) |
|----|-----------|-------------|
| १) | पुस्तक | - |
| २) | फुल | - |
| ३) | झाड | - |
| ४) | घर | - |
| ५) | गाव | - |
| ६) | शहर | - |
| ७) | शरीर | - |
| ८) | द्वार | - |
| ९) | शोत | - |

२) एकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे अनेकवचन ईकारान्त होते :-

| | एकवचन (ए) | अनेकवचन (ई) |
|----|--------------|----------------|
| १) | खेडे | - |
| २) | तळे | - |
| ३) | फडके | - |
| ४) | गाणे | - |

| | | | |
|-----|--------|---------------------|--------|
| ५) | केळे | - | केळी |
| ६) | मडके | - | मडकी |
| ७) | कुत्रे | - | कुत्री |
| ८) | घोडे | - | घोडी |
| ९) | रताळे | - | रताळी |
| १०) | सोने | | |
| ११) | तांबे | → (पदार्थवाचक नामे) | |
| १२) | शिंसे | | |

- पदार्थवाचक नामाचे अनेकवचन होत नाही.

३) ऊकारान्त नपुंसकलिंबी नामाचे अनेकवचन एकारान्त होते :-

| | एकवचन (अ) | अनेकवचन (ए) |
|----|--------------|----------------|
| १) | वासऱ्य | वासरे |
| २) | लेकऱ्य | लेकरे |
| ३) | करड़ू | करडे |
| ४) | पिलू | पिले |
| ५) | लिंबू | लिंबे |
| ६) | पाखऱ्य | पाखरे |
| ७) | तटऱ्य | तटटे |
| ८) | शिंगऱ्य | शिंगरे |

४) काही नामे नेहमी अनेकवचनी असतात :-

- डोहाळे, कांजन्या, रोमांच, चिपऱ्या, शाहारे, वलोशा, हळा, आत्यापात्या.

5) समुहवाचक नामे नेहमी एकवचनी असतात, परंतु त्यांचे अनेक वचन होऊ शकते :-

| | [एकवचन] | [अनेकवचन] |
|----|---------|-----------|
| 1) | मंडळ | मंडळे |
| 2) | सामिती | सामित्या |
| 3) | जष्ठा | जष्ठ्ये |
| 4) | त्रिकुट | त्रिकुटे |

सारांश छ महावाच्या

1) लिंगविचार :-

| | [मुलिंगी नामे] | [स्त्रीलिंगी नामे] |
|----|----------------|--------------------|
| 1) | अ लेखक | आ लेखिका |
| 2) | अ देव | श्री देवी |
| 3) | अ वाब | शौ वावीन |
| 4) | आ मामा | मामी मामीन |
| 5) | शौ माळी | शौ माळीन |

2) वचनविचार :-

▷ पुलिंगी नामे :-

एकवचन

- 1) अ वाध
- 2) इ कवी
- 3) ऊ लाइ
- 4) आ दरवाजा
- 5) ओ फोनो

अनेकवचन

- | | |
|---|--------|
| अ | वाघ |
| इ | कवी |
| ऊ | लाइ |
| ए | दरवाजे |
| ओ | फोनो |

2) स्त्रीलिंगी नामे :-

एकवचन

- 1) अ गाय
- 2) अ वाट
- 3) आ सभा

अनेकवचन

- | | |
|---|--------|
| इ | गाष्ठी |
| आ | वाटा |
| आ | सभा |

| | | | |
|---|-----------------|---|-------------------|
| 4 | <u>अ</u> घही | - | <u>आ</u> वह्या |
| 5 | <u>अ</u> जाऊ | - | <u>आ</u> जावा |

3) नपुंसकलिंगी नामे :-

| | <u>एकवचन</u> | - | <u>अनेकवचन</u> |
|---|------------------|---|-------------------|
| 1 | <u>अ</u> पान | - | <u>अ</u> पाने |
| 2 | <u>अ</u> लेकर | - | <u>ए</u> लेकरे |
| 3 | <u>ए</u> गाने | - | <u>ओ</u> गाणी |

④ नामाचे सामान्यरूप :-

नामाला किंवा सर्वनामाला विश्वकृती प्रत्यय लागव्यापूर्वी नामात किंवा सर्वनामात जो बदल होते त्यास सामान्यरूप असे म्हणतात.

- विश्वकृती प्रत्यय लागव्यापूर्वी नामात होणारा बदल म्हणजे सामान्यरूप होय.
- नामाला विश्वकृतीचा प्रत्यय लागव्यापूर्वी नामाचे बदलणारे रूप सर्व प्रत्ययांसाठी सारखे, समान, सामान्य उसते म्हणून त्या रूपाला सामान्यरूप असे म्हणतात.

| <u>उदा:</u> | <u>नाम</u> | <u>सामान्यरूप</u> |
|-------------|------------|-------------------|
| 1) | कोयता | कोवत्या |
| 2) | माळी | माळ्या |
| 3) | झाड | झाडा |

१) मुलिंगी नामाचे सामान्यरूप :-

अंकारान्त मुलिंगी नामाचे एकवचनातील सामान्यरूप 'आंकारान्त' होते, तर अनेकवचनातील सामान्यरूप होताना 'आं' अनुस्वार येतो (आं)

| <u>नाम</u> (अ) | <u>एकवचन सामान्यरूप</u> (आ) | <u>अनेकवचन सामान्यरूप</u> (आं) |
|---------------------------------|--------------------------------|-----------------------------------|
| १) दगड - दगडाचा - दगडांचा | | |
| २) वाघ - वाघाचा - वाघांचा | | |
| ३) खांब - खांबाने - खांबांचा | | |
| ४) डोंगर - डोंगरावर - डोंगरांचा | | |
| ५) वर्ग - वर्गाचा - वर्गांचा | | |
| ६) देव - देवाला - देवांचा | | |
| ७) काळ - काळाशी - काळांचा | | |

⇒ निर्णय - निर्णयाचा - निर्णयांचा

⇒ आ'कारान्त पुलिंगी नामाचे एकवचनातील सामान्यरूप 'या'काशन्त होते तर अनेकवचनातील सामान्यरूप 'या'वर अनुस्वार देऊन होते (यां)

| [नाम] (जा) | [एकवचनातील सामान्यरूप] (या) | [अनेकवचनातील सा.स.] (यां) |
|---------------|--------------------------------|------------------------------|
| १) राजा | - राजाचा | - राजांचा |
| २) घोडा | - घोड्याला | - घोड्यांचा |
| ३) कुत्रा | - कुश्याला | - कुश्यांचा |
| ४) आंबा | - आंब्याचा | - आंब्यांचा |
| ५) दिवा | - दिव्याचा | - दिव्यांचा |
| ६) पंखा | - पंख्याचा | - पंख्यांचा |
| ७) दोरा | - दोऱ्याचा | - दोऱ्यांना |

अपवाद:- काका, मासा, नाना, दादा, चहा, आजोबा.

⇒ ई'काशन्त पुलिंगी नामाचे एकवचनातील सामान्यरूप 'या'काशन्त होते, तर अनेकवचनातील सामान्यरूप 'या'वर अनुस्वार देऊन होते (यां)

| [नाम] (ई) | [एकवचनातील सा.स.] (या) | [अनेकवचनातील सा.स.] (यां) |
|--------------|---------------------------|------------------------------|
| १) ओवी | - ओव्याने | - ओव्यांना |
| २) तेली | - तेल्याने | - तेल्यांना |
| ३) माळी | - माळ्याला | - माळ्यांचा |

अपवाद:- हत्ती, कवी, नंदी, मुबी, क्रधी

४) ऊकारान्त मुलिंगी नामाचे सामान्यरूप 'वाकंरान्त होते

| नाम (अ) | सामान्यरूप (वा) |
|------------|--------------------|
| १) विंचू | विंचवाला |
| २) भाऊ | भावाला |
| ३) नातू | नातवाला |

अपवाद:- वाक्, अङ्ग, पशु, शत्रू

२) स्त्रीलिंगी नामाचे सामान्यरूप :-

१) ईकारान्त स्त्रीलिंगी नामाचे एकवचनातील सामान्यरूप 'ईकारान्त होते, तर अनेकवचनातील सामान्यरूप 'यांकाशन्त होते.

| नाम (ई) | एकवचनातील सारू | अनेकवचनातील सारू (यां) |
|------------|----------------|---------------------------|
| १) नदी | नदीला | नद्यांचा |
| २) पाठी | पाठीला | पाठ्यांचा |
| ३) वाठी | वाठीने | वाठ्यांचा |
| ४) काठी | काठीला | काठ्यांचा |
| ५) साडी | साडीला | साड्यांचा |

२) अंकारान्त स्त्रीलिंगी नामाचे एकवचनातील सामान्यरूप 'ईकारान्त होते तर अनेकवचनातील सामान्यरूप 'ईकारान्त होते.

| नाम (अ) | एकवचन सारू (ई) | अनेकवचन सारू (ई) |
|------------|-------------------|---------------------|
| १) विहीर | विहीरींचा | विहीरींचा |
| २) भिंत | भिंतीला | भितींचा |

३) शीत - स्तिंत्रीचा - सितींचा

३) आँकारान्त स्त्रीलिंगी नामाचे एकवचनातील सामान्यरूप 'एकारान्त होते, तर अनेकवचनातील सामान्यरूप 'आँकारान्त होते'.

नाम
(आ)

एकवचन सासु
(ए)

अनेकवचन सासु
(आं)

| | | | | |
|--------|---|--------|---|---------|
| १) वाट | - | वाटेत | - | वाटांचा |
| २) बाट | - | बाटेत | - | बाटांचा |
| ३) जिम | - | जिमेला | - | जिमांचा |
| ४) विट | - | विटेला | - | विटांचा |

४) आँकारान्त स्त्रीलिंगी नामाचे जे एकवचनातील सामान्यरूप 'एकारान्त होते, तर अनेकवचनातील सामान्यरूप 'आँकारान्त होते':-

नाम
(आ)

एकवचन सासु
(ए)

अनेकवचन सासु
(आं)

| | | | | |
|-----------|---|----------|---|-----------|
| १) शाळा | - | शाळेला | - | शाळांचा |
| २) भाष | - | भाषेचा | - | भाषांचा |
| ३) दिशा | - | दिशेचा | - | दिशांना |
| ४) विद्या | - | विद्येचा | - | विद्यांचा |
| ५) हवा | - | हवेला | - | हवांचा |

३) नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप :-

४) अकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप 'आ'कारान्त होते :-

| <u>नाम (अ)</u> | <u>एकवचन सारू (आ)</u> | <u>अनेकवचन सारू (आं)</u> |
|--------------------|---------------------------|------------------------------|
| १) मुल | मुलाचे | मुलांना |
| २) फुल | फुलाला | फुलांचे |
| ३) झाड | झाडाचे | झाडांचा |
| ४) टोक | टोकाला | टोकांचा |
| ५) रोप | रोपाला | रोपांचा |
| ६) वाळ | वाळाला | वाळांचे |

५) इकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप 'या'कारान्त होते :-

| <u>नाम (ई)</u> | <u>सामान्यरूप (या)</u> |
|----------------|------------------------|
| १) पाणी | पाव्याचे |
| २) लोणी | लोव्याचे |
| ३) दही | दह्याचे |

६) अकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप 'आ'कारान्त होते :-

| <u>नाम (ऊ)</u> | <u>सामान्यरूप (आ)</u> |
|--------------------|---------------------------|
| १) लिंबू | लिंवाला |
| २) कोकरू | कोकशाला |
| ३) लेकरू | लेकराचे |
| ४) वासरू | वासराला |

4) एकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप 'याकारान्त होते :-

| [नाम] (ए) | [सामान्यरूप] (या) |
|--------------|----------------------|
| १) मडके | फडक्याचे |
| २) तळे | तव्याचा |
| ३) मडके | मडक्याचे |
| ४) गाडबे | गाडव्याचे |
| ५) गांजे | गाव्याला |
| ६) खोके | खोव्याचा |
| ७) डोके | डोक्याला |

5) उंकारान्त नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप 'वाकारान्त होते :-

| [नाम] (उ) | [सामान्यरूप] (वा) |
|--------------|----------------------|
| १) कुंकू | कुकवाचा |
| २) आसू | आसवाला |
| ३) जळू | जळवाला |

* सामान्यरूप होताणा 'द्वित' निधून जाते :-

| [नाम] | [सामान्यरूप] |
|----------|--------------|
| १) अक्कल | अक्केचा |
| २) चप्पल | चप्पलेचा |
| ३) शक्कम | शक्केचा |
| ४) वक्कल | वक्कलाचा |
| ५) छप्पर | छप्पराचा |

* सामान्यरूप होताना 'स' चे 'श' होते :-

| | [नाम] | - | [सामान्यरूप] |
|----|-------|---|--------------|
| 1) | घसा | - | घशाला |
| 2) | ससा | - | सशाला |
| 3) | कसा | - | कशाने |
| 4) | मासा | - | माशाला |
| 5) | रस्सा | - | रश्शाचा. |

* सामान्यरूप होताना 'अ' चे 'व' आणि 'ई' चे 'य' होते :-

| | [नाम] | - | [सामान्यरूप] |
|----|---------|---|--------------|
| 1) | देखळ | - | देवळाचा |
| 2) | पाझऱ्यस | - | पावसाने |
| 3) | फाईल | - | फायलीत |

* सामान्यरूप करताना 'म' पूर्वीचा अनुस्वार निघून जातो:-

| | [नाम] | - | [सामान्यरूप] |
|----|-------|---|--------------|
| 1) | हिंमत | - | हिमतीने |
| 2) | किंमत | - | किमतीचा |
| 3) | जंमत | - | जमतीचा |

* एकअष्टरी शब्दाचे सामान्यरूप होत नाही :-

| | [नाम] | - | [सामान्यरूप] |
|----|-------|---|--------------|
| 1) | क | - | क |
| 2) | ट | - | ट |
| 3) | म | - | म |

* इंग्रजी शब्दाचे सामान्यरूप केला-केला होत नाही :-

| | | | |
|----|--------|---|----------|
| 1) | टेबल | - | टेबलाचा |
| 2) | फोटो | - | फोटोचा |
| 3) | टीव्ही | - | टीव्हीचा |

* अमरिक राष्ट्राचे सामान्यरूप केला-केलाच होते :-

| | | | |
|----|-----------|---|-------------|
| 1) | पंदरपूर | - | पंदरपुरात |
| 2) | नगर | - | नगरला |
| 3) | पुणे | - | पुण्याचा |
| 4) | लातूर | - | लातुरात |
| 5) | अंधाजोगाई | - | अंधाजोगाईला |

सारांश

* नामाचे सामान्यरूप :-

1) पुलिंगी नामाचे सामान्यरूप :-

| नाम | एकवचन सा.रू. | अनेकवचन सा.रू. |
|---------------------|-----------------------|-------------------------|
| 1) <u>आ</u> वाध | <u>आ</u> वाघाला | <u>आं</u> वाघांचा |
| 2) <u>आ</u> राजा | <u>या</u> राजाला | <u>यां</u> राजांचा |
| 3) <u>ई</u> माळी | <u>या</u> माळ्याला | <u>यां</u> माळ्यांचा |

| | | | | |
|-------------|---|-----------|---|-----------|
| 4) <u>अ</u> | - | <u>वा</u> | - | <u>वा</u> |
| आओ | | आवाला | | आतांला |

अपवाद :- चाकू, पश्च, छड़

2) स्त्रीलिंगी नामाचे सामान्यरूप :-

| <u>नाम</u> | <u>एकवचन सांख</u> | <u>अनेकवचन सांख</u> |
|----------------------|----------------------|------------------------|
| १) <u>इ</u> बढ़ी | <u>ई</u> बढ़ीला | <u>या</u> बढ़ायांचा |
| २) <u>अ</u> विहीर | <u>ई</u> विहीरीचा | <u>ई</u> विहीरींचा |
| ३) <u>अ</u> वाट | <u>ए</u> वाटेत | <u>आ</u> वाटोचा |
| ४) <u>आ</u> शाळा | <u>ए</u> शाळेला | <u>आ</u> शाळांचा |

3) नपुंसकलिंगी नामाचे सामान्यरूप :-

| <u>नाम</u> | <u>एकवचन सांख</u> | <u>अनेकवचन सांख</u> |
|----------------------|-----------------------|------------------------|
| १) <u>अ</u> मुल | <u>आ</u> मुलाचे | <u>आ</u> मुलांना |
| २) <u>ई</u> पाणी | <u>या</u> पाण्याचे | <u>या</u> पाण्यांचा |
| ३) <u>ऊ</u> लिंबू | <u>आ</u> लिंबाचा | <u>आ</u> लिंबांचा |

| | | | |
|----|----------|-----------|------------|
| ४) | <u>स</u> | <u>या</u> | <u>यां</u> |
| | चाणे | गाय्याला | गाय्यांचे |
| ५) | <u>ऊ</u> | <u>वा</u> | <u>वां</u> |
| | कुंकू | कुंकवा | कुंकवांना |

* सहजलिंग :-

एखादे नाम उच्चारण्या-उच्चारण्या त्याचे लिंग आपणास समजते, त्यास सहजलिंग असे म्हणतात.

उदा:- छत्री, दगड, पुस्तक
 ↓ ↓ ↓
 (स्त्री) (पु.) (न.पु.)

* सामान्यलिंग / इष्टलिंग :-

ज्या शब्दांचे लिंग आपणास सांगता येत नाही, त्यास सामान्यलिंग / इष्टलिंग असे म्हणतात.

- इष्टलिंग हेतु नाव दादोवा मांडुरंग यांनी आगले.

उदा:- मी.

(5) नामाचा विभक्ती विचार :-

वाक्यात नामे आणि सर्वनामे वापरकी जातात, तेहा त्यांचा इतर शब्दोळी संबंध येतो. तो संबंध दाखवण्यासाठी नामे आणि सर्वनामे घांच्यात वढल होतात, त्या वढलांना विभक्ती असे म्हणतात.

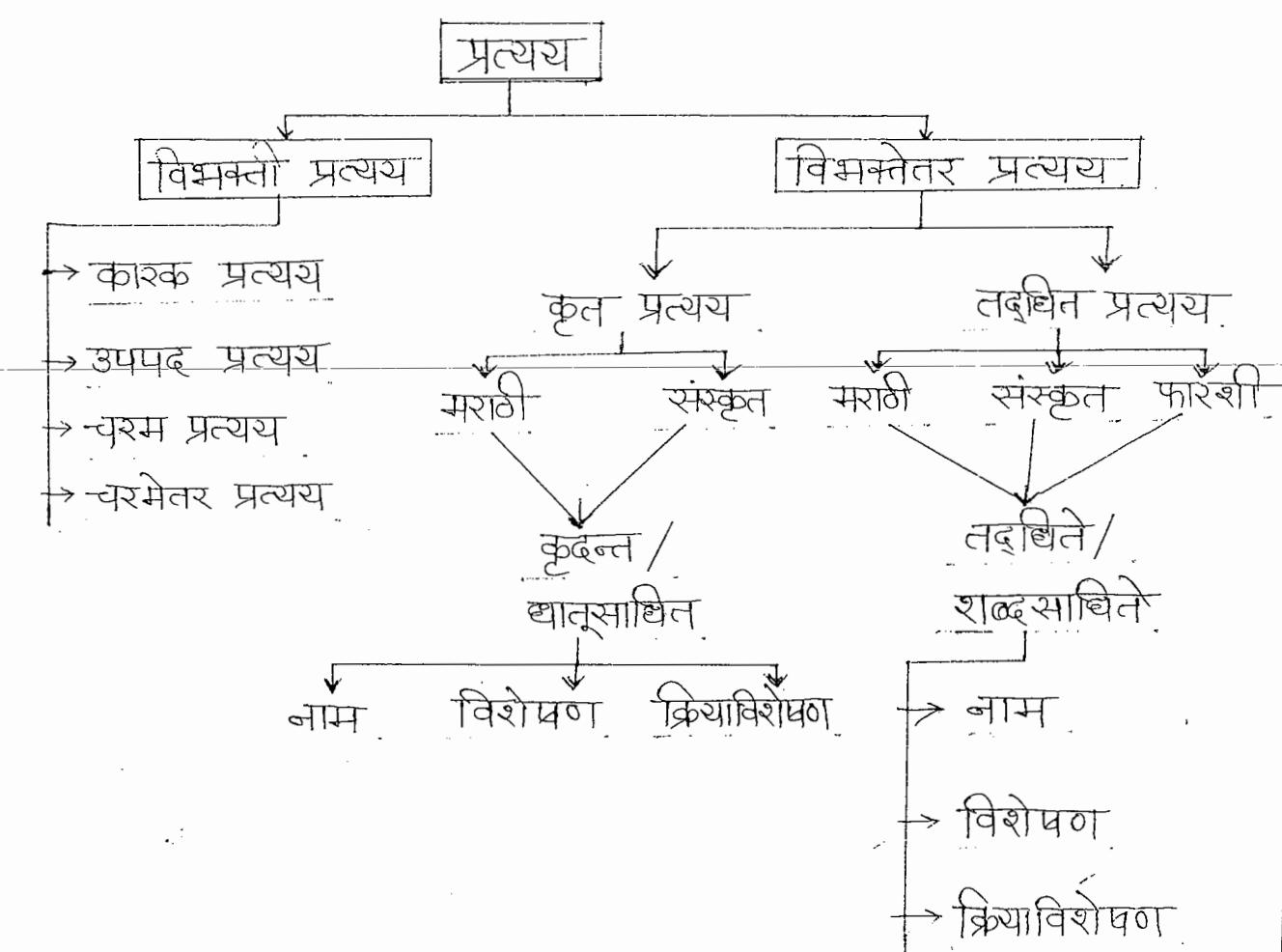
- नामे आणि सर्वनामे यांना विभक्ती प्रत्यय बाबून त्यांच्यामध्ये जो वढल होतो व्याखा विभक्ती असे म्हणतात, व त्या प्रत्ययांना विभक्ती प्रत्यय असे म्हणतात.

उदा:- गवत → नाम

गवता → समान्यरूप

गवताला → विभक्ती

ला → विभक्ती प्रत्यय



*प्रत्यय :-

शब्दांच्या (मुढे), पलीकडे, नंतर एक किंवा अनेक अक्षरे जोडली जातात त्यांना प्रत्यय असे म्हणतात.

उदा :- गुलाम^{गिरी} - फारशी प्रत्यय (^{गिरी})

गरीबी - मराठी प्रत्यय (^ई)

जाऊन - कृत प्रत्यय (^{जन})

श्रीमंताने - विश्वकृती प्रत्यय (^{ने})

प्रत्ययाचे दोन प्रकार पडतात :

1) विभक्ती प्रत्यय :-

2) विभक्तेतर प्रत्यय :-

1) विभक्ती प्रत्यय :-

शब्द वाक्यात वापरल्यानंतर शब्दांचा वाक्यातील इतर शब्दांशी संबंध येतो, तो संबंध उज्या प्रत्ययांनी दाखवला जाते त्यांना विभक्ती प्रत्यय असे म्हणतात.

उदा :- लेड्मण, वाग, शुर्पनखा, नाक, कापले.

-वाक्य :-

लेड्मणाने वाणाने शुर्पनखेचे नाक कापले

- नाम, सर्वनाम व क्रियापद यांच्यातील संबंध म्हणजे विभक्ती.
- विभक्ती प्रत्ययांना स्पतःचा अर्थ नसतो.

- वाक्यातील शब्दांचा एकमेकांशी असणारा संबंध दाखवणे हे विभक्ती प्रत्ययांचे मुऱ्य कार्य आहे.

+ विभक्ती प्रत्यय भागतांना नामाचे आमाव्यरूप होते.

- विभक्ती प्रत्यय लागलेला शब्द वाक्योपयोगी असतो.

- विभक्ती प्रत्यय भागून कोणताही नवीन शब्द तथार होत नाही.

उदा :- स, ला, ना, ते, चे, त्या, वी, ने, ए, शी, त, ई, आ, ऊन, हून.

- विभक्ती प्रत्ययांचे चार प्रकार पडतात :-

1) कारक प्रत्यय.

2) उपपद प्रत्यय.

३) चरम प्रत्यय

४) चरमेतर प्रत्यय

१) कारक प्रत्यय :-

- कारक :- नाम आणि सर्वनाम यांचा क्रियापदाशी संबंध येतो, तो संबंध किंवा नाते यास कारक असे म्हणतात.

- नामाचे क्रियापदाशी असणारे नाते सहा (६) प्रकारचे असते, म्हणून मराठीत सहा कारके मानली जातात.

- कारक संबंध :-

नाम आणि सर्वनाम यांचा क्रियापदाशी जो संबंध येतो, त्यास कारक संबंध असे म्हणतात.

- कारक प्रत्यय :-

नाम आणि सर्वनाम यांचा क्रियापदाशी येगारा संबंध ज्या प्रत्ययामुळे कजलो त्या प्रत्ययांना कारक प्रत्यय असे म्हणतात.

- कारक विभक्ती :-

कारक प्रत्ययांची जी विभक्ती असते त्या विभक्तीस कारक विभक्ती असे म्हणतात.

- कारकार्थ :-

कारक संबंधातून जो अर्थ व्यक्त होतो त्यास कारकार्थ असे म्हणतात.

- मराठीत सहा कारकार्थ मानली जातात.

कारकविभक्ती

प्रथमा

द्वितीया

तृतीया

चतुर्थी

पंचमी

सप्तमी

कारक प्रत्यय

-

स, ला, ना, ते

ने, नी, ए, ई, ही, शी

श, ला, ना, ते

अन, हुन

त, ई, आ

कारकार्थ

कर्ता

कर्म

करण

संप्रदान

अपादान

अधिकरण

उदा:- राम शवणास मारतो
कर्ता

| | | |
|------------------|----------------|------------------------------------|
| <u>राम-मारतो</u> | ⇒ कारक संवेद्य | } कर्ता आणि क्रियापदाचा संवेद्य |
| = | ⇒ कारक प्रत्यय | |
| <u>प्रथमा</u> | ⇒ कारक विभक्ती | |
| <u>कर्ता</u> | ⇒ कारकार्थ | |

| | | |
|----------------------|----------------|-----------------------------------|
| <u>शवणास - मारतो</u> | ⇒ कारक संवेद्य | } कर्म आणि क्रियापदाचा संवेद्य |
| <u>स</u> | ⇒ कारक प्रत्यय | |
| <u>द्वितीया</u> | ⇒ कारक विभक्ती | |
| <u>कर्म</u> | ⇒ कारकार्थ | |

2) उपपद प्रत्यय :-

- उपपद संवेद्य :-

नाम आणि सर्वनाम यांचा क्रियापद सोडन इतर शब्दांशी जो संवेद्य येतो, त्या शंखणाऱ्या प्रत्ययांना उपपद संवेद्य असे महणतात.

- उपपद प्रत्यय :-

उपपद संवेद्य दाखवणाऱ्या प्रत्ययांना उपपद प्रत्यय असे महणतात.

- उपपद विभक्ती :-

उपपद प्रत्ययांची निभक्ती महणजे उपपद विभक्ती होय.

- उपपदार्थ :-

उपपद संवेद्य जो अर्थ व्यक्त करतात त्यांना उपपदार्थ असे महणतात.

| <u>उपपद विभक्ती</u> | <u>उपपद प्रत्यय</u> | <u>उपपदार्थ</u> |
|---------------------|----------------------------|-----------------|
| षष्ठी | चा, ची, चे चे, च्या, ची | संवेद्य |

उदा :- आजोबांचा चम्मा हरवला

आजोबांचा - चम्मा → उपपद संबंध

चा → उपपद प्रत्यय

घडी → उपपद विभक्ती

संबंध → उपपदार्थ

⇒ शहुलने कुस्तीची स्पर्धा जिंकली
कर्ता विशेषण कर्म क्रियापद

- राहुलने - जिंकली → कारक संबंध

ने → कारक प्रत्यय

तृवीया → कारक विभक्ती

कर्ता → कारकार्थ

- स्पर्धा - जिंकली → कारक संबंध

— → कारक प्रत्यय

प्रथमा → कारक विभक्ती

कर्म → कारकार्थ

- कुस्तीची - स्पर्धा → उपपद संबंध

ची → उपपद प्रत्यय

घडी → उपपद विभक्ती

कर्म → उपपदार्थ

3) चरम प्रत्यय :- द्वितीया ते पंचमी थे प्रत्यय.

- चरम म्हणजे अंतिम.
- ज्या प्रत्ययांच्या मुऱे आणखी प्रत्यय बाबत नाही त्या प्रत्ययांना चरम प्रत्यय असे म्हणतात.
- द्वितीया पासून पंचमी पर्यंतचे प्रत्यय हे चरम प्रत्यय असतात.

उदाः:- मुलांना - द्वितीया विभक्ती

मुलाने - तृतीया विभक्ती

मुलाशी - चूतीया विभक्ती

मुलाहून - पंचमी विभक्ती

4) चरमेतर प्रत्यय :- पष्ठी व सप्तमी यांच्या प्रत्ययांना.

ज्या प्रत्ययांच्या मुऱे आणखी प्रत्यय बाबत नाही त्यांना चरमेतर प्रत्यय असे म्हणतात.

- चरमेतर प्रत्यय लागल्यामुळे नाम किंवा सर्वनाम यांना दोनदा विकार होतो.
- पष्ठी आणि सप्तमी यांच्या प्रत्ययांना चरमेतर प्रत्यय म्हणतात.

उदाः:-

1) तो → त्याच्या + त = त्याच्यात

पष्ठी + सप्तमी

2) नो → त्याच्या + ने = त्याच्याने

पष्ठी + तृतीया

3) घर → घरान + ला = घरानला

सप्तमी + चतुर्थी

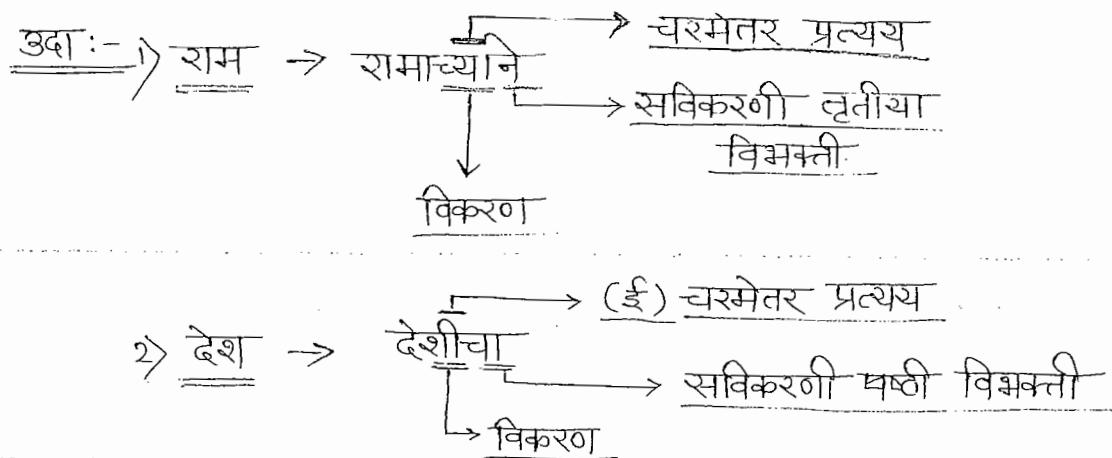
- चरमेतर प्रत्ययामुळे सविकरणी विभक्ती घडत येते.

→ सविकरणी विभक्ती :-

नामाचे सामान्यसंपर्क विभक्ती प्रत्यय यांच्यामध्ये जेळा एखादा प्रत्यय थेतो, तेळा त्या विभक्तीस, सविकरणी विभक्ती असे म्हणतात.

- सविकरणी विभक्ती शोकटच्या प्रत्ययावरून ओळखली जाते.

- सविकरणी विभक्ती होताना ज्या अद्वारामुळे ही विभक्ती घडते, त्या अद्वाराला विकरण असे म्हणतात.



→ समानाधीकरण विभक्ती :-

समासात एकप्र येणाऱ्या दोन शब्दांची विभक्ती जेव्हा
एकच असते तेळा त्यास समानाधिकरण विभक्ती असे म्हणतात.

ଓৰ্জি :-

→ व्याखिकरण विभक्ती:-

समासात एकत्र येणाऱ्या दोन शब्दांची विमर्शी जेव्हा वेगळी असते, तेव्हा त्यास प्याणिकरण विमर्शी असे म्हणतात.

उदा :- चक्रपानि = $\frac{\text{चक्र}}{\uparrow} \text{ आहे } \frac{\text{पानित}}{\uparrow} \text{ ज्यात्या}$ ($\because \text{पानी} = \text{हात}$)
 प्रथमा सप्तमी

- मराठीतील विभक्ती व्यवस्था संस्कृत मधून आली आहे.
 - संस्कृत मध्ये सात विभक्त्या आहेत.
 - संस्कृत मध्ये संबोधन विभक्ती नाही → (प्रथमेत समावेश)
 - मराठीत आठ विभक्त्या आहेत.

‡ दादोवा पांडुरंग :- आठ

→ मोडक :- आठ

→ गुंजीकर :- आठ

दामजे :- सात (द्वितीय मानवी नाही)

→ संबन्धीस :- सहा (प्रथमा आणि पंक्ती मानव्या नाहीत)

विभक्ती - आठ

कारके - सहा

कारकार्थ - सहा

उपपदार्थ - एक

- संबोधन या विभक्तीला कारकार्थ व उपपदार्थ नाही.

- तिचा उपयोग केवळ हाक मारव्यासाठी केला जातो, म्हणून हाक हा कारकार्थ मानतात.

- संबोधन दर्शविष्यासाठी स्वल्पविशमाचा वापर केला जातो.

- संबोधन विभक्ती असलेल्या वाक्यात 'तु' हा कर्ता घृहित घरावा भागतो.

उदा :-

1) रमेश, इकडे घावत ये.
संबोधन घावसाधित क्रियापद
(कर्ता) क्रियाविशेषण

2) रमेश इकडे घावत आला.
प्रथमा घावसाधित क्रियापद
(कर्ता) क्रियाविशेषण

* शून्य प्रत्यय :-

एखाद्या नामाचे / शब्दाचे अनेकवचन करताना जर त्याला कुठलेच प्रत्यय भागत नसतील तर, त्याला शून्य प्रत्यय असे म्हणतात.

उदा :- 1) वाव → वाध

2) हल्ती → हळ्टी

| | | | | | | |
|----------|-----------------|--------|-------------------|---------|---------|------------------------------------|
| विभक्तिः | एकावत् प्रत्ययः | उल्ला. | अनेकत् व प्रत्ययः | उल्ला. | कारकात् | विभक्ती प्रत्यक्तु अथवा |
| प्रथमा | — | देव | स, ला, (ते) | देवाना | कर्ता | प्रत, लादि, लाशोनि, लाशोनिथा |
| द्वितीया | स, ला, (ते). | देवास | की, (हि, ई), शी | देवांशी | कर्मि | भृत, कर्तृन, शेष, वर्तीन, |
| तृतीया | ने, (ए), शी | देवाशी | स, ला, ला, (ते) | देवाला | कर्मण | वरेवर, द्वारे, प्रमाणे, शोगे, करवी |
| चतुर्थी | — | देव | — | देवाहून | कर्ता | करिता, साठी, यास्तव, कट्ट, |
| पंचमी | — | — | — | कर्माना | विद्वाल | विद्वा, प्रवजा, शिवाय, |
| षष्ठी | — | — | — | उपादान | प्रवित | वाचून, पर्वत, पावेतो (पर्वित), |
| सप्तमी | — | — | — | — | — | आतून, नंतर, वीना (वाचून), |
| संबंधी | — | — | — | — | — | संबंधी, विषयी, वद्दुल |
| साप्तमी | — | — | — | — | — | आत, माझे, व्हाहेर, वर, आर्ली |
| संबोधात् | — | — | — | — | हाक | अमोर, गाडी, शोवती |
| संवादी | — | — | — | — | — | उम्हा, ए, अह, अरे, अगो, |
| संवादा | — | — | — | — | — | मगा. |

*विभक्ती प्रतिस्पृष्ट अव्ययः-

विभक्ती प्रत्ययांच्या ऐवजी वापरल्या जाणाऱ्या शब्द-
योगी अव्ययांना विभक्ती प्रतिस्पृष्ट अव्यय असे म्हणतात.

उदा:-

1) कृष्ण अर्जुनाप्रत वोलला

→ द्वितीया विभक्ती

→ कृष्ण अर्जुनाला वोलला

2) पत्राद्वारे वातमी कळविली

→ तृतीया विभक्ती

→ पत्राने वातमी कळविली

3) देवाप्रीत्यर्थ फुले आणा

→ चतुर्थी विभक्ती

→ देवाला फुले आणा

4) माघुरीपेढा सोनाली उंच आहे.

→ पंचमी विभक्ती

→ माघुरीदून सोनाली उंच आहे.

5) ही कथा राजा विक्रमादित्यासंवंधी आहे.

→ पृष्ठी विभक्ती

→ ही कथा राजा विक्रमादित्याची आहे.

6) पेटीमध्ये वरीच पुस्तके आहेत.

→ सातमी विभक्ती

→ पेटीत वरीच पुस्तके आहेत.

⇒ अहो स्वर्गस्थ देवता आम्हाला आशीर्वाद द्या
→ संबोधन विभक्ती
→ स्वर्गस्थ देवतांनो आम्हाला आशीर्वाद द्या.

* कारकार्थाचे अर्थ :-

कोणत्याही शब्दाची विभक्ती त्याला लागलेल्या प्रत्ययावरून ओळखायची असते मात्र कारकार्थ शब्दाच्या वाक्यातील कार्यवरून ठरवायेचा असतो.

- एकच विभक्ती अनेक कारकार्थ व्यक्त करू शकते.

* विभक्ती व त्याचे मुख्य कारकार्थ :-

1) प्रथमा :-

जेण्ठा शब्दाला कोणताच प्रत्यय आगलेला असतो तेहा त्या शब्दाची विभक्ती प्रथमा सांभारतात.

- प्रथमा विभक्ती दोन कारकार्थ व्यक्त करते.

2) कर्ता :-

3) अद्यिकरण :-

4) कर्ता :-

वाक्यात क्रिया करणाऱ्याला कर्ता असे उल्हासात.

5) कर्ता कसा शोषावा :-

→ कर्ता = (मूळ शात् + णारा कोण १)
(मूळ शात् + णारी कोण १)
(मूळ शात् + णारे कोण १)

- कर्ता हा प्रथमेचा मुख्य कारकार्थ आहे.

- वाक्याचा कर्ता नाम किंवा सर्वनाम असतो.

- जेण्ठा कर्त्याला कोणतेच प्रत्यय लागलेले नसतात तेहा तो प्रथमा विभक्तीत असतो.

उद्धः :- १) राम आवा खातो
कर्ता
(प्रथमा)

२) रामदास महाशहू फिरले
कर्ता
(प्रथमा)

३) मधु गोष्ठीचे पुस्तक वाचतो
कर्ता
(प्रथमा)

४) बस आमच्या घराजवळ आविते
कर्ता
(प्रथमा)

५) पावसाब्यात जमीन हिरवीगार दिसते
कर्ता
(प्रथमा)

२) आधिकरण :-

- जेणा वाक्यालील एखादा शब्द स्थळ दर्शवितो,
तेणा व्यास आधिकरण असे रहणातात.
- आधिकरण स्थळ किंवा काळ दर्शवितो.
- हा सप्तमीचा मुख्य कारकार्थ आहे.

2) द्वितीया :-

कर्म हा द्वितीयेचा मुख्य कारकार्ध आहे.

- कर्त्याने केलेली क्रिया ज्यावर घडते ते कर्म असते.
- कर्म नेहमी द्वितीया विश्वकृती असते, जर कर्मिला प्रत्यय बागले असतील तर त्यास सप्रत्ययी द्वितीया असे म्हणतात.
- जर कर्मिला प्रत्यय बागले नसतील तर त्यास अप्रत्ययी द्वितीया असे म्हणतात.
- कर्म काय व कोणाला चे उत्तर असते.
- कर्त्याने केलेली क्रिया कर्म सोसते.
- कर्म कसे शोधावे :-

$$\rightarrow \underline{\text{कर्म}} = (\text{मूळ खात्} + \text{ज्याची क्रिया कोणावर घडली?})$$

उदा :-

1) सुरेश पक्षी पकडतो
 ↓ ↓
 कर्ता कर्म
 प्रथमा द्वितीया (अप्रत्ययी)

2) सुरेश पद्ध्याला पकडतो.
 ↓ ↓
 कर्ता कर्म
 प्रथमा द्वितीया (सप्रत्ययी)

3) राम रावणास मारतो.
 ↓ ↓
 कर्ता कर्म
 प्रथमा द्वितीया (सप्रत्ययी)

4) शेहन पत्र लिहतो.
 ↓ ↓
 कर्ता कर्म
 प्रथमा द्वितीया (अप्रत्ययी)

३) तृतीया :-

जेव्हा शब्दाला (तृतीया) ने, ए, - शी, जी, ई, ही, शी हे प्रत्यय लागतात तेव्हा त्या शब्दाची विश्वकृती तृतीया असते.

- तृतीया विश्वकृती तीन कारकार्थ व्यक्त करते.

१) कर्ता

२) करण

३) अधिकरण

२) करण :-

करण हा तृतीयेचा मुख्य कारकार्थ आहे.

- करण म्हणजे क्रियेचे साधन होय.

- क्रिया ज्या साधनाने केली जाते, त्या शब्दाची विश्वकृती तृतीया. असते व कारकार्थ करण असतो.

उदा:-

१) श्रीकृष्णाने सुदर्शन चक्राने शिशुपालाचा वध केला.
 ↓ ↓ ↓ ↓
 कर्ता करण संवंध कर्म
 तृतीया तृतीया संवंध द्वितीया (अप्रत्ययी)

२) अर्जुनाने बाणाने माशाचा डोळा उडवला.
 ↓ ↓ ↓ ↓
 कर्ता करण संवंध कर्म
 तृतीया तृतीया संवंध द्वितीया (अप्रत्ययी)

३) काकीने काकाचा काळा कोट कात्रीने कराकरा कापला
 ↓ ↓ ↓ ↓
 कर्ता पक्षी कर्म तृतीया
 तृतीया संवंध द्वितीया करण
 (अप्रत्ययी)

→ जेव्हा एकच अक्षर पश्तपरत वाक्यात येतो तेव्हा त्यास अनुप्राप्त अलंकार म्हणतात.

4) आम्ही नदीच्या काठाने फिरायला गेलो .
प्रथमा संवंध तृतीया
कर्ता घषी (अधिकरण)

4) चतुर्थी :-

कर्म सोडून इतर कोणत्याही शब्दाला स, ला, ना, ते प्रत्यय लागल्यास त्या शब्दाची विभक्ती चतुर्थी असते.

- चतुर्थी विभक्ती चार कारकार्थ व्यक्त करते.

1) संप्रदान .

2) कर्ता .

3) अधिकरण .

4) उपादान .

1) संप्रदान :-

संप्रदान रहणजे दान, हा चतुर्थीचा मुळ्य कारकार्थ आहे.

- जेणा एखाद्या व्यक्तीला काहीतरी मिळते तेहा त्या शब्दाची विभक्ती चतुर्थी सांगतात च कारकार्थ संप्रदान सांगतात.

उदा :-

1) स्वातीने भिकाऱ्याला पैसा दिला .
कर्ता कोणाला ? काय ?
तृतीया व्यक्तीवाचक वस्तूवाचक
अप्रत्यक्षकर्म प्रत्यक्ष कर्म
चतुर्थी द्वितीया
(संप्रदान) (कर्म)
विभानपूर्क विधय
(कर्मपूरक)

२) अशोदेने श्रीकृष्णाला लोगी दिले।

| | | |
|--------------|-----------------|--------------|
| <u>कर्ता</u> | <u>कोणाला ?</u> | <u>काय १</u> |
| तृतीया | व्यक्तीवाचक | वस्तुवाचक |
| अप्रत्यक्ष | प्रत्यक्ष | |
| चतुर्थी | हितीया | |
| (संप्रदान) | (कर्मी) | |
| विद्यानपूरक | विधय | |
| (कर्मपूरक) | | |

३) शिक्षक विद्यार्थ्याना व्याकरण शिक्षवतात्।

| | | |
|--------------|-----------------|--------------|
| <u>कर्ता</u> | <u>कोणाला ?</u> | <u>काय १</u> |
| प्रथमा | व्यक्तीवाचक | वस्तुवाचक |
| अप्रत्यक्ष | प्रत्यक्ष | |
| चतुर्थी | हितीया | |
| (संप्रदान) | (कर्म) | |
| विद्यानपूरक | विधय | |
| (कर्मपूरक) | | |

४) विद्यार्थ्याने शिक्षकाला प्रभ विचारला।

| | | |
|--------------|-----------------|--------------|
| <u>कर्ता</u> | <u>कोणाला ?</u> | <u>काय १</u> |
| तृतीया | व्यक्तीवाचक | वस्तुवाचक |
| अप्रत्यक्ष | प्रत्यक्ष | |
| चतुर्थी | हितीया | |
| (संप्रदान) | (कर्म) | |
| विद्यानपूरक | विधय | |
| (कर्मपूरक) | | |

5) आजान् नानाला वाप सामाजिक
कर्ता केणाला ? काय ?
 तृतीया व्यक्तीवाचक वस्त्रवाचक
चतुर्थी द्वितीया
 अप्रत्यक्ष प्रत्यक्ष
(संप्रदान) (कर्म)
 विषानपूरक विषय
(कर्मपूरक)

6) मला जेवण करवते → कर्ता :-
चतुर्थी
कर्ता

7) त्याला कड औषध पिववते
चतुर्थी
कर्ता

8) तिला अश्यास करवते
चतुर्थी
कर्ता

9) त्याला आला खेळवते
चतुर्थी
कर्ता

3) अपादान :-

10) कोंदा चिरताना डोळ्याला पाणी आले
चतुर्थी
अपादान

4) आधिकरण :-

11) विलासराव भानुश्ला शहायचे
चतुर्थी
आधिकरण

१२) तो मुंवईस घोला
↓
चवुर्डी
अधिकरण

५) पंचमी :-

जेव्हा शब्दाबा 'कन' आणि 'हन' प्रत्यय लागतात तेहा या खब्बाची विभक्ती पंचमी असते.

-पंचमी विभक्ती होण कारकार्थ व्यक्त करते.

१) अपादान

२) करण

१) अपादान :-

आपादान म्हणजे 'वियोग' (दूशवा निर्माण होणे) किंवा 'तुलना' होय.

उदा :- १) अपादान :-

१) ती सर्वाहन दुशार आहे.
↓
पंचमी
अपादान

२) तो आवाहन आला
↓
पंचमी
अपादान

३) माणुरी सोनालीहन बुटकी आहे.
↓
पंचमी
अपादान.

२) करण :-

४) माझ्या हातून चळू झाली.
↓
पंचमी
करण.

6) पर्षी :-

जेव्हा शब्दाला चा, ची, चे प्रत्यय लागतात तेहा त्या शब्दाची विश्वकृती पर्षी असते.

- पर्षी ही विश्वकृती 'संबंध' हा उपपदार्थ व्यक्त करते.
- त्याचवरोवर कर्ता, अपादान व अधिकरण हे कारकार्थ ही व्यक्त करते.

7) उपपदार्थ :-

उदा:-

1) रोजारचा वाळू क्रिकेट खेळतो.
↓
पर्षी
संबंध

2) आमचा मुलगा शाळेत जातो.
↓
पर्षी
संबंध

8) कर्ता:-

1) त्याची उत्तरपत्रिका लिहून झाली.
↓
पर्षी
कर्ता

2) त्याचा अभ्यास करून झाला.
↓
पर्षी
कर्ता

9) अपादान :-

1) शिंक्याचे सुटले व वोक्याचे फावले.
↓
पर्षी
अपादान

10) अधिकरण :-

1) योगी दिवसाचे झोपतात व रात्रीचे जागतात.
↓
पर्षी
अधिकरण

7) सप्तमी :-

जेव्हा शब्दाला (तुळा, आ) के प्रत्यय लागतात, तेव्हा त्या शब्दाची विभक्ती सप्तमी असते.

सप्तमी विभक्ती दोन कारकार्थ व्यक्त करते.

▷ अधिकरण.

2) करण

▷ अधिकरण :-

अधिकरण हा सप्तमीचा मुख्य कारकार्थ आहे.

- जेव्हा इथादा शब्द [स्थित] आणि [कृत] दोन विनो तेव्हा त्या शब्दाचा कारकार्थ अधिकरण सांगतात.

उदा :-

▷ आई वाजारात घोली.

↓
सप्तमी

अधिकरण

2) वावा रात्री उशीरा घरी आले.

कर्ता सप्तमी

अधिकरण

2) करण :-

उदा :-

▷ तू आव्या पावळी परत जा.

↓
सप्तमी

करण.

8)

2) तू आव्या पाशी परत जा.

↓
सप्तमी

करण.

३) संबोधन :-

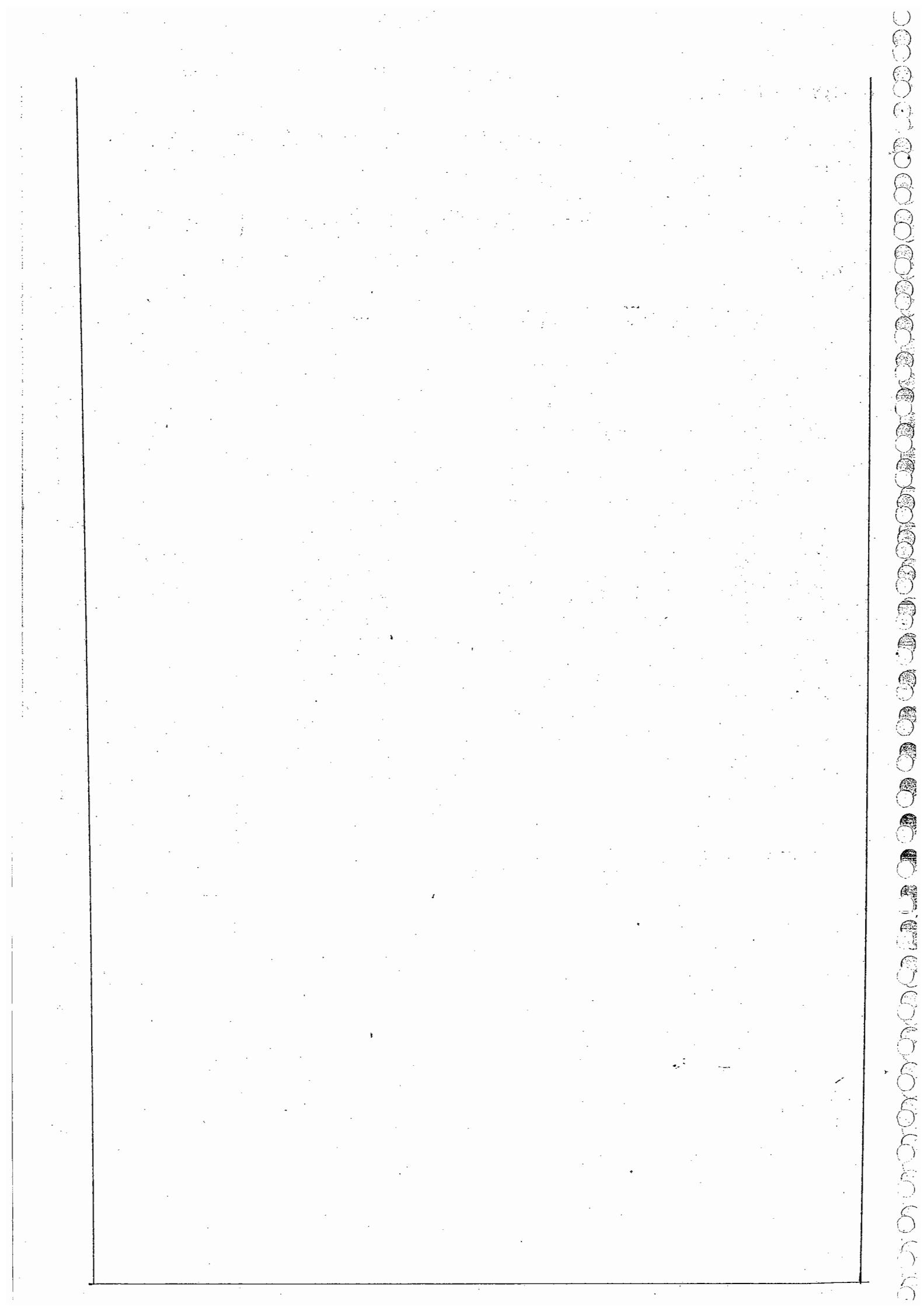
संबोधन या विभक्तीला एकवचनात प्रत्यय लागत नाही, तर अनेकवचनात 'नो' हा प्रत्यय लागतो.

- संबोधन विभक्तीचा वापर केवळ 'हाक' सारण्यासाठी केला जातो.

उदाः -

1) मुलांनो, वाहेर या.
 ↓ ↓
संबोधन हाक

2) रमेश, इकडे ये.
 ↓ ↓
संबोधन हाक



2) सर्वनाम :-

सर्व प्रकारच्या नामाच्या ऐवजी येणारा शब्द रहणारे सर्वनाम होय.

- सर्वनाम वाक्यात एकटे येत नाही, अगोदर नाम येते मग त्याच्या ऐवजी सर्वनाम येते.
- सर्वनामाला स्वतंत्र लिंग, वचन, विभक्ती नसते.
- सर्वनाम नामाच्या ऐवजी येत असल्याने नामाची लिंग, वचन, विभक्ती सर्वनामाला प्राप्त होते.
- सर्वनामाला संबोधन विभक्ती नसते.
- मराठीत मूळ १ सर्वनामे आहेत. (मी, तू, हा, जो, तो, कोण, काय, आपण, स्वतः)

*लिंगानुसार बदलणारी सर्वनामे :- (3)

- 1) हा-ही,
- 2) तो-ती,
- 3) जो-जी

*वचनानुसार बदलणारी सर्वनामे :- (5)

- 1) मी- आबही
- 2) तू- तुर्ही
- 3) हा - हे
- 4) तो - ते
- 5) जो - जे

*लिंग व वचन घेणानुसार बदलणारी सर्वनामे :- (3)

- 1) हा-ही-हे
- 2) तो-ती-ते
- 3) जो-जी-जे

*लिंग व वचन दोघांनुसार न बदलणारी सर्वनामे :- (4)

- 1) कोण.
- 2) काय.
- 3) आपण.
- 4) स्वतः.

* सर्वनामाचे मुख्य प्रकार :- (6)

- 1) पुळघवाचक सर्वनामे
- 2) दर्शक सर्वनामे
- 3) संबंधी सर्वनामे
- 4) प्रश्नार्थक सर्वनामे
- 5) अनिश्चित / सामान्य सर्वनामे
- 6) आत्मवाचक सर्वनामे / स्वतः वाचक सर्वनामे / निजवाचक सर्वनामे

1) पुळघवाचक सर्वनामे :-

- पुळघ :- व्याकरणात बोलणारा, ऐकणारा आणि उच्चाच्या विधयी बोलणे जाते त्यांना पुळघ असे म्हणालात.
- त्याच्या वद्दून येणाऱ्या सर्वनामाला पुळघवाचक सर्वनाम असे म्हणालात.

| | एकवचन | अनेकवचन |
|----------------------|------------------|--------------------|
| बोलणारा → प्रथमपुळघ | मी (आपण) | आम्ही (आपण) |
| ऐकणारा → द्वितीयपुळघ | तू (आपण) | तुम्ही (आपण) |
| इतर → तृतीयपुळघ | तो, ती, ते (आपण) | वे, त्या, ती (आपण) |

- प्रश्न :

- व्याकरणातील पुळघ व लोकिक जीवनातील पुळघ दोन्ही एकच अर्थात् तृतीय पुळघी सर्वनामे द्विन्ही लिंगे वद्दलात.
- यातील फक्त उत्तरार्थी वरेवर आहे.

उदाः :-

1) मी नियमीत व्याख्याम करतो.
 ↓
प्रथमपुळघी (अनेकवचनी) पुळघवाचक सर्वनाम

2) आम्ही खूप अभ्यास करतो.
 ↓
प्रथमपुळघी अनेकवचनी पुळघवाचक सर्वनाम

३) मी तुला व तिलाही घरी बोलावणार आहे.

→ मी - प्रथमपुरुषी एकवचनी

तु - द्वितीयपुरुषी एकवचनी

तिला - तृतीयपुरुषी एकवचनी

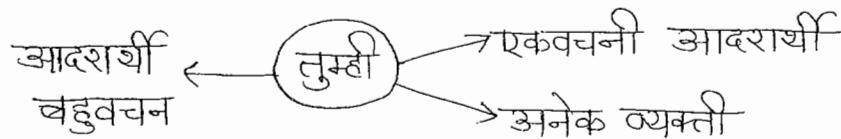
४) मी वाहेर गेलो होतो तेव्हा आपण इकडे आलात का?

→ आपण

तुम्ही - द्वितीयपुरुषी एकवचनी पुरुषवाचक सर्वनाम

* आदरार्थी वहुवचन:-

आपब्यापेणा सोऽया व्यक्तीवद्दिल बोलताना त्यांचा आदर राखण्यासाठी त्यांना अनेकवचनी उच्चारले जाते, [↑] आदरार्थी वहुवचन असे म्हणतात.



५) तुझ्या सांगव्यावरुन आपण त्याच्याशी झांडगार नाही

→ आपण

मी = प्रथमपुरुषी एकवचनी पुरुषवाचक सर्वनाम

६) तिने मला भेटायला बोलावले आणि आपण आलीच नाही.

→ आपण

ती = तृतीयपुरुषी एकवचनी पुरुषवाचक सर्वनाम

७) कमगार नेत्यांनी मोर्चा मंत्रालयासमोर नेला आणि आपण येट मन्त्रांकडे गेले

→ आपण

ते (अनेकवचन) = तृतीयपुरुषी अनेकवचनी पुरुषवाचक सर्वनाम.

४) शिक्षक मुलीला उपरोक्ताने म्हणाले, " आपण रङ्गी यांवरून
चोलाल का"

⇒ आपण
↓

तू = द्वितीय पुस्तकी एकवचनी पुस्तकवाचक सर्वनाम

2] दर्शक सर्वनाम :-

- दर्शक म्हणजे हास्यविणी, जवळची किंवा दुरची वस्तु कास्यवाच्यासाठी वापरल्या जागाच्या सर्वनामांना दर्शक सर्वनाम असे म्हणातात.
- जवळची वस्तु - हा, ही, हे, हे, ह्या, ही
- दुरची वस्तु - तो, ती, ते, ते, त्या, ती
- सर्वसाधारणपणे सर्वनामी नामाच्या ऐवजी येत असतात ; परंतु दर्शक सर्व-
भागे नामाच्या अगोदर येते आणि नाम काय आहे हे दर्शविनात.
- वाक्यात दर्शक सर्वनाम चार प्रकारे वापरले जाते

1) नामाच्या अगोदर :-

नामाच्या अगोदर येणारे दर्शक सर्वनाम आणि ते
नाम दोन्ही एकच असतात.

उदा:-

1) तो पक्षी आहे
दर्शक सर्वनाम

2) ते ह्यांड आहे
दर्शक सर्वनाम

3) हा टेवल आहे.
दर्शक सर्वनाम

4) ती खिडकी आहे.
दर्शक सर्वनाम

2) विशेषणाच्या पूर्वी :-

विशेषणाच्या पूर्वी येणारे दर्शक सर्वनाम व विशेष-
नाच्या नंतर येणारे नाम दोघे एकच असतात.

उदा:-

1) ते माझे दप्तर आहे
↓
दर्शक सर्वनाम

2) हे माझे बाबा आहेत.
↓
दर्शक सर्वनाम

3) ती त्याची वही आहे.
↓
दर्शक सर्वनाम

4) ती सुरती गाय आहे.
↓
दर्शक सर्वनाम

3) नामाच्या नंतर :-

नामाच्या नंतर येणारे दर्शक सर्वनाम व ते नाम
दोघे एकच असतात.

- नामानंतर येणारे दर्शक सर्वनाम विष्णानपुरकाचे कार्य करते.

उदा:-

1) छत्रपती शिवाजी महाराज हे महाराष्ट्राचे दैवत आहेत.
↓
दर्शक सर्वनाम (विष्णानपुरक)

2) साने गुरुजी हे मुलांचे लाडके कवी आहेत.
↓
दर्शक सर्वनाम

4)

उदा:-

1) कुठ आहे ती चोरवा ; तो वया पळला
 दर्शक सर्वनाम

2) माझा फोन कुठे आहे ; तो वय तिकडे पडला आहे.
 दर्शक सर्वनाम

* दर्शक सर्वनामांचा सार्वनामिक विशेषण म्हणून वापर:

- तो, ती, ते हे शब्द नामाच्या पूर्वी येतात पण नामावद्धत नाहीती सांगव्यासाठी वाचयात विष्णी विशेषण शेते, तेव्हा तो, ती, ते हे सार्वनामिक विशेषनाचे कार्य करतात.

उदा:-

1) ती थाथ रुरती आहे.
 सर्वनामिक विशेषण विष्णी
 विशेषण

2) ते गवत आहे
 सार्वनामिक विशेषण

3) ते हिरवे गवत आहे.
 दर्शक सर्वनाम
 सार्वनामिक विशेषण

4) ते गवत हिरवे आहे
सार्वनामिक विशेषण

* पुरुषवाचक सर्वनाम व दर्शक सर्वनाम यांतील फरक :

→ तो सछ्या आराम करत आहे
पुरुषवाचक - वृत्तियपुरुषी एकवचनी पुरुषवाचक सर्वनाम

→ तो वैल आहे
दर्शक सर्वनाम

* उभयान्वयी अव्ययाचा दर्शक सर्वनाम म्हणून वापर :

→ शिवाजीला संभाजी म्हणून एक पुत्र होता.
↓
हा → दर्शक सर्वनाम.

* कालवाचक क्रियाविशेषण अव्ययाचा दर्शक सर्वनाम म्हणून वापर :

→ मंदा दू पुढे हो हा मी आलोच.
↓
अगोच - दर्शक सर्वनाम

* संबंधी सर्वनामाचा उभयान्वयी अव्यय म्हणून वापर :

→ तू जे म्हानोस ते थोऱ्य नाही
=
संबंधी
सर्वनाम
↓
दर्शक सर्वनाम
↓
उभयान्वयी अव्यय म्हणून वापर.

⇒ संवेदी सर्वनाम :-

वाक्यात पुढे येणाऱ्या दर्शक सर्वनामाशी संबंध दर्शवणाऱ्या सर्वनामाना संबंधी सर्वनाम असे म्हणतात, या पुढे येणाऱ्या दर्शक सर्वनामाना अनुसंबंधी सर्वनामे असे म्हणतात.

जो, जी, जे, जे, ज्या, जी, — के, ती, ते, ते, त्या, ती।

- संबंधी सर्वनामे वाक्यान् एकटी वापरता येत नाहीत.
 - केळा-केळा संबंधी सर्वनामे अष्ट्याहूत (गृहीत घरणे) असंतात.

अद्यता :-

1) जो लक्ष शब्दी तो पाठी चाखी।
 शंखी हस्ति सर्वनाम सर्वनाम

⇒ ज्याचे झान कमी व्याची वडवड फार असते .
संवच्छी दर्शक

③ जो चढेल तो पडेल.
संवधी दर्शक

④ ज्याचं जळत त्यालाचं कळत
संवर्धी दर्शक

5) जे चकाकने ते सारेच थोने नसते
संवेदी दृष्टिक

⇒ जैसे करावे तैसे भरावे
 ↓
संवधी दृश्कि

⇒ जो अभ्यास करते हैं तो पास होती है।

- संबंधी सर्वनामाचा वापर मिश्रवाक्य बनवण्यासाठी केला जातो।


गौण प्रधान

उदा:-

जी मुलगी सर्वांत बुटकी होती ती पुहे आली

गौण वाक्य
 (हे वाक्य कर्ता (ती) वद्दल माहिती सांगते)

प्रधान वाक्य
 (कर्ता, कर्म काढव्यासाठी प्रधान वाक्यातील क्रियापदाला प्रस्तु विचारणे)

4) प्रश्नार्थक सर्वज्ञाम :-

वाक्यात प्रश्न विचारव्यासाठी येणाऱ्या सर्वनामांना
प्रश्नार्थक सर्वनामे असे इहणतात.

- प्रश्नार्थक शर्वनाम असलेल्या वाक्याच्या शेवटी प्रश्नार्थक (१) चिन्ह येते.
- काय - वस्तुसाठी.
- कोण - व्यक्तीसाठी.

उदा :-

१) दारात कोण आहे ?

२) दुला काय पाहिजे ?

→ अधिकार्य किंवा मिनित दर्शविव्यासाडी प्रस्तार्थक
“द्वितीय” केली जाते.

सर्वनामाची

उदा :-

› तुळ्या घरी कोण-कोण आहे ॥

२) वाजारातून काय-काय आगले १

३) कार्यक्रमाला कोण-कोण आले हीने ।

४) तुला या दुकानातून काय-काय हवे ।

५) अनिश्चित सर्वनामे /सामान्य सर्वनामे :-

जेव्हा 'कोण' आणि 'काय' ही रुक्णनामे वाक्यात प्रश्न-विचारण्यासाठी न घेता ती कोणत्या नामावद्दुल आली आहेत हे निश्चित-पणे संगता घेत नाही तेव्हा त्यांना अनिश्चित सर्वनामे म्हणतात. -अनिश्चित सर्वनामाच्या शेवटी प्रश्नचिन्ह घेत नाही.

उदा:-

१) कोणी कोणाला हसू नये.

अनिश्चित सर्वनाम

२) त्या पेटीत काय आहे हे मला माहीत नाही.

३) त्या दुकानात काय वाटडेल ते मिळते.

४) कोणी म्हणतात कर्णाचा जन्म कानात झाला.

५) चुप्लहेशाला काय माहीत नसले.

६) कोण काय करतो तेच व्हातो सी.

७) लुमच्यासारी काय पण.

→ अनिश्चित सर्वनामाला सामान्य सर्वनाम असे हादेवा पांडुरंग यांनी महसले आहे.

6) आत्मवाचक सर्वनाम / निज वाचक / स्वतःवाचक :-

'आपण' आणि 'स्वतः' ही सर्वनामे जेव्हा स्वतःबद्दल वापरली जातात, तेव्हा त्यास आत्मवाचक सर्वनाम असे महणतात.

उदाः:-

- 1) स्वतः मेल्याशिवाय स्वर्गं दिसत नाही.
 - 2) स्वतः केल्याशिवाय कोणतेही काग निट होत नाही.
 - 3) सुभाषचंद्र वोस आपणाला राष्ट्रभक्त मानतात.
 - 4) ती आपणहून माझ्याकडे आली.
 - 5) त्याने आपणहून सत्याग्रहात आग घेतला.
- आत्मवाचक 'आपण' वाक्याच्या सुरुवातीला येत नाही.

* सर्वनामाचा विशेषती विचार :-

| | | | | | | |
|--------|-------------------|------------------|-----------------|-------------------|-------------------|-------------|
| मी | मला | मी, म्हणा | मला | मीहुन / माझ्याहुन | माझा, माझी, | माझात |
| तु | तुला / तुस | तु, त्वा | तुस / तुला | तुझ्याहुन | तुझा, तुझी | तुझात |
| आमही | आमहास, आमहाला | आमही | आमहास, | आमहाहुन, | आमचा, आमची, | आमच्यात, |
| तुम्ही | तुम्हाला, तुम्हास | तुम्ही | तुम्हास, | तुम्हाहुन, | तुमचा, तुमची, | तुमच्यात, |
| ती | त्याला, त्यास | त्याने, त्याशी | त्याला, त्यास | त्याहुन, | त्याचा, त्याची, | त्याच्यात. |
| ती | तिला, तिस | तिने, तिझी | तिस, तिला | तिहुन, | तिला, तिली, | तिल्यात. |
| ती | त्यांना, त्यांस | त्यांजी, त्यांशी | त्यांना, त्यांस | त्यांहुन, | त्यांचा, त्यांची, | त्यांच्यात. |
| हा | हळाला, हळास | हळाने, हळाशी | हळाला, हळास | हळाहुन, | हळाचा, हळाची, | हळाच्यात |
| हि | हिला, हिस | हिने, हिझी | हिला, हिस | हिज्याहुन | हिचा, हिची, | हिच्यात. |

| | | | | | |
|-------|-----------------|------------------|-----------------|---|---|
| हु | ह्यांना, ह्यांस | ह्यांनी, ह्यांशी | ह्यांना, ह्यांस | ह्यांचा, ह्यांची, ह्यांचे, ह्यांच्या | ह्यांचा, ह्यांची, ह्यांचे, ह्यांच्या |
| जो | ज्याला, ज्यास | ज्यानि, ज्याशी | ज्याला, ज्यास | ज्याहून, ज्याच्याहून | ज्याला, ज्यास |
| जी | जिला, जिस | जिनि, जिशी | जिला, जिस | जिहून, जिच्याहून | जिला, जिची, जिचे, जिच्या |
| जे | ज्यांना, ज्यांस | ज्यांनी, ज्यांशी | ज्यांना, ज्यांस | ज्यांचा, ज्यांची, ज्यांचे, ज्यांच्या | ज्यांचा, ज्यांची, ज्यांचे, ज्यांच्या |
| वगऱ्य | | | कशास, | कशाला | कशास, |
| | | | कशानि, | | कशानि, |
| | | | कशाशी | | कशाशी |
| कोणा | | | कोणा, | कोणाला | कोणा, |
| | | | कोणी, | | कोणी, |
| | | | कोणाशी | | कोणाशी |
| आपणा | | | आपणा, | आपणाला | आपणा, |
| | | | आपणी, | | आपणी, |
| | | | आपणाशी | | आपणाशी |
| स्वतः | | | स्वतःहास, | | स्वतःहात. |
| | | | स्वतःहाशी | | स्वतःहाती. |
| | | | स्वतःहाला | | स्वतःहाला. |

कृष्ण + नाम = विशेषण
किंतु + नाम
कृष्णता + नाम

3) विशेषण :-

- नामावद्वल विशेष माहिती सांगून नामाची व्याप्ती शब्दाला विशेषण असे रहणतात.
- व्याप्ती मर्यादित करणे म्हणजे संख्या कमी करणे.
- जशी-जशी विशेषणे वाढत जातात तरी-तरी कमी-कमी होत जाणार.
- विशेषण ड्या नामावद्वल माहिती सोबते व्या असे रहणतात, व त्यांच्यातील संबंधाबा विशेषण संबंध असे रहणतात.

उदा :-

चतुर मुलगा.
↓ ↓
शुद्ध मुलगी.
↓ ↓
(विशेषण - विशेष्य)

- विशेषणाचे दोन प्रकार पडतात :-

1) आधि विशेषण :-

2) विद्धी विशेषण :-

1) आधि विशेषण :-

विशेषण जर नामापूर्वी अले आधि विशेषण असे रहणतात.

उदा :-

1) गोड आंवा.
विशेषण नाम

2) चांगला मुलगा.
विशेषण नाम

3) हापूस आंवा.
विशेषण नाम

जाए वाच्य प्राकृता वशापण याने तांदित वाक्यात १० काद वक्ता | प्रश्नपूर्ण क्रियाविशेषण
— वाक्य पृथक्करणात अधिविशेषणे बोन प्रकारचे कार्य करतात काविकरा

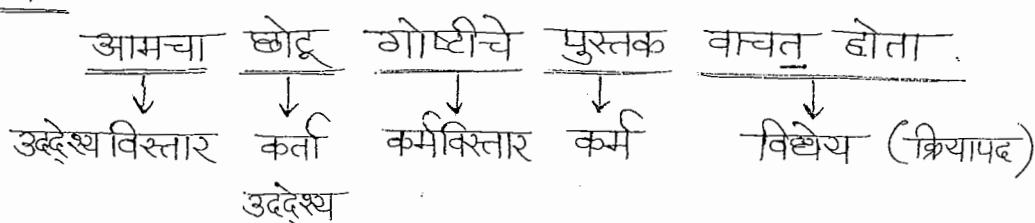
1) उद्देश्य विस्तार :-

- कर्त्त्याच्या विशेषणास उद्देश्य विस्तार असे रहणतात.

2) कर्म विस्तार :-

- कर्माच्या विशेषणास कर्म विस्तार असे रहणतात.

उदा:-



2) विषीविशेषण :-

विशेषण जर वाक्यात नामाच्या नंतर आले असेल तर त्यास विषीविशेषण असे रहणतात.

- वाक्य पृथक्करणात विषीविशेषणे विषीपूरकाचे कार्य करतात.

- विषीपूरक हा विषेय पूरकाचा प्रकार आहे.

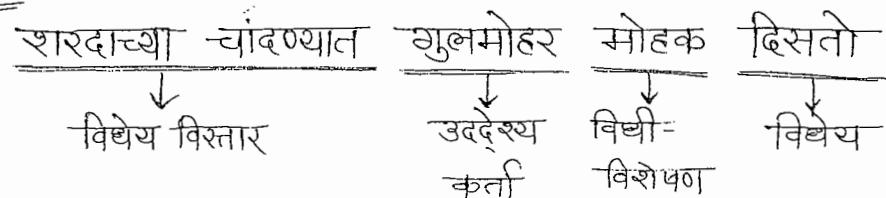
- जेहा वाक्यात विषीविशेषणे घेतात तेहा ती एकाच वेळी दोन प्रकारची कार्य करतात.

1) विशेषण.

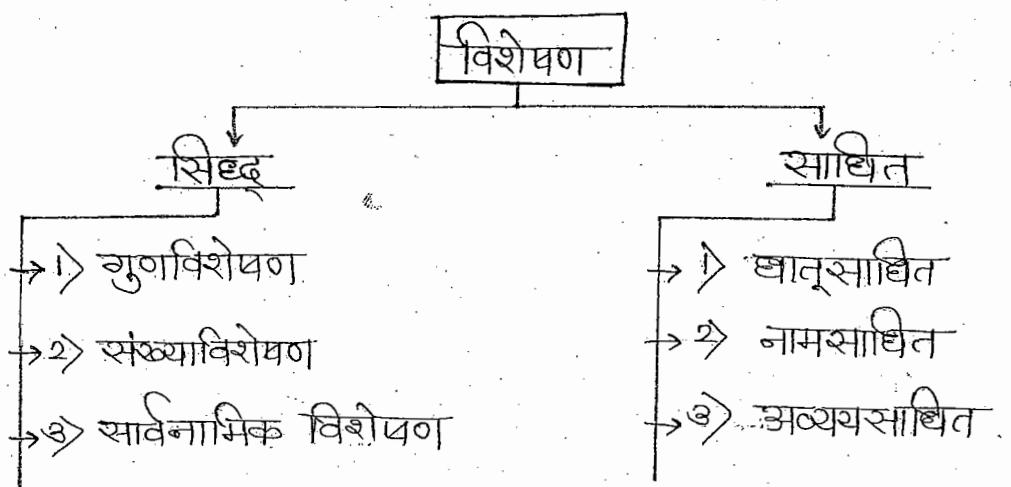
2) क्रियाविशेषण

- तेहा त्यांचे कार्य फक्त विषी विशेषणाच रहणावे.

उदा:-



-विशेषणाचे दोन प्रकारे वर्गीकरण केले जाते :-



(1) **सिद्ध विशेषण :-**

मुळच्या विशेषणांना सिद्ध विशेषणे असे रहणात.

- सिद्ध विशेषणाचे मुख्य तीन प्रकार अडलात.

(1) **गुणविशेषण :-**

नामवा सुण, रंग, स्वभाव, चव, स्वरूप आकाश

ईत्यादी व्यक्त करणाऱ्या विशेषणांना गुणविशेषण असे रहणात.

→ रंग → हिरवे पान

बाल शर्ट

निळी पैन्ट

भगवा झोडा

} सर्व विशेषणाचे कार्य करतात.

- उखल पांढरे ढोणे → खूप लाभ होणे.

- तांबडे फुटणे → उगवणे, उजाणे.

- तोंड काळे करणे → निघून जाणे.

- तोंडला काळे फासणे → अपर्किर्णी होणे.

- पिवळी करणे → लघ्न करणे.

- हात पिवळे करणे → लघ्न करणे.

- पांढर्या पाथाची → अपशाकुनी.

- बाल कंदील → छोका.

(गुणविशेषण वापसन
वाक्प्रचार)

2) स्वभाव :> लवाड लांडगा

गरीब माणस
छूट कोल्हा
कंजूस मारवाडी
उदार व्यक्ती
शांत मुलगी
मंद झुळूक
कठोर आवाज
प्रामाणिक कुत्रा

3) रूप/स्वरूप :> कच्चा पेस्ट

विकट वाट
सरळ सारी
रिकम्मा पेबा
वाकडी वाट
जाड व्यक्ती
कुश व्यक्ती
कडक लहमी
गरम चहा
झुंच झाड
आखूड बुद्धी
अरुंद वाट

4) चव :> 1) कइ कारले.

- 2) गोड आंबा
- 3) खारट मिठ
- 4) लिखट मिरची
- 5) तुरट आवळा
- 6) आंखट चिंच

(2) संख्याविशेषण :-

नामाची संख्या दर्शविणाऱ्या विशेषणांना संख्याविशेषणे असे म्हणतात.

-प्रकार :-

- 1) गणनावाचक.
- 2) क्रमवाचक.
- 3) आवृत्तीवाचक.
- 4) पृथकत्ववाचक.
- 5) अनिश्चित.

1) गणनावाचक संख्याविशेषण :-

गणना म्हणजे नोंदणे होय, जी विशेषणे नामाची संख्या नोंदव्यासाठी वापरली जातात, भाषा विशेषणांना गणनावाचक संख्याविशेषण असे म्हणतात.

उदा :-

- 1) एक मुलगा.
- 2) पाच पेन.
- 3) बाळो लपवे.
- 4) एक करोड.
- 5) दहा हजार (अशुत)

* गणनावाचक संख्याविशेषणाचे प्रकार :-

① पूर्णक वाचक :- पूर्ण संख्येचा वोष होतो.

- उदा :-
- 1) दहा आंबे
 - 2) वीस माऊसे

② अपूर्णक वाचक :- अपूर्ण संख्येचा वोष होतो.

- उदा :-
- 1) अर्धी शाकरी.
 - 2) चतकोर पोळी.
 - 3) सर्वा लपथा.
 - 4) साडेतीन एकर जमीन.
 - 5) अडीच इक्कन आंबे.

अर्धचंद्र = हाकल्लून देठे
 अर्धचंद्र = अष्टमीचा चंद्र

③ साकल्यवाचक :- ही श्रावण उत्तमा तर

साकल्यवाचक महणजे दिलोल्या वरतुपैकी सर्वच्या सर्व होय.

- गणनावाचक विशेषणांना (संख्या विशेषणांना) 'ही' हे शब्दयोगी अव्यय जोडून साकल्यवाचक संख्याविशेषणे बनतात.

उदा:- 1) चारही दिशा

2) तीनही क्रतू

3) चारही रस्ते

4) तुम्ही उभयता (दोघेही) → विषी विशेषण महणून वापर.

5) वारही महिने

⇒ क्रमवाचक संख्याविशेषण :-

नामाचा क्रम दर्शविणाऱ्या विशेषणांना क्रमवाचक संख्याविशेषणे असे महणतात.

उदा:- पहिला, दुसरा, तीसरा.

1) दुसरी गळब्बी.

2) पाचवा मजला.

3) पाहिला प्रथम.

4) दहावा प्रयोग.

5) सत्तरावा वाढदिवस.

6) प्रथम फ्रेणी.

7) तृतीय क्रमांक.

8) द्वितीय पारितोषिक.

3) आवृत्तीवाचक :-

एथादे नाम अनेकवेळा आल्यास त्याची आवृत्ती घडली असे म्हणतात, ते ह्याच्युवणाऱ्या विशेषणांना आवृत्तीवाचक विशेषणे असे म्हणतात.

4) पट :-

- 1) दुप्पट फायदा.
- 2) तिप्पट बफा.
- 3) चौपट तोटा.
- 4) दसाट गुले.

2) गुणीत :-

- 1) द्विगुणीत आनंद.
- 2) त्रिगुणीत उत्साह.
- 3) चातुर्गुणीत शीर्थ.
- 4) दशगुणीत मिळकत.

उदा:- नववारी साडी,
सहावारी साही.

- 1) चौरंगी लंडन.
- 2) तिरंगी भारिका.
- 3) सहापद्धरी रस्ता.
- 4) दुहरी रेल्वे मार्ग.

4) पृथक्त्ववाचक संख्याविशेषण :-

पृथक म्हणजे वेगळे, जी विशेषणे नामाचा वेग-वेगळा वोध करून देतात, अशा विशेषणांना पृथक्त्ववाचक संख्याविशेषणे असे म्हणतात.

- गणनावाचक संख्याविशेषणे वोनदा आली की ती पृथक्त्ववाचक अशी घनतात.

गणनावाचक ती (३) शाल्याभिनी अस्थांजेने की

साकल्यवाचक पृथ्याविशेषण]

- पृथकत्वाचक संख्याविशेषणाच्या मध्ये संयोग चिनाचा वापर (-) केला जातो.

उदा :-

- 1) एक-एक मुलगा
- 2) दोन-दोन मुली
- 3) दहा-दहाचा गट
- 4) सहा-सहा खेळाऱ्ह
- 5) वीस-वीस पाने.

5) अनिश्चित संख्याविशेषण :-

जी विशेषणे नामाची निश्चित संख्या दर्शवित नाहीत त्यांना अनिश्चित संख्याविशेषणे असे म्हणतात.

उदा :-

- 1) काही पुरत्के
- 2) थोडी साखर
- 3) पुष्कळ प्रथलं
- 4) अनेक देश
- 5) इतर जनावरे.
- 6) अन्य माणसे.
- 7) ईत्यादी फळे
- 8) एकंदर परिस्थिती.

| | |
|----------------|--------------------|
| शुक्र = डुक्कर | } (समानार्थी शब्द) |
| शुतुर = उट | |

3) सार्वनामिक विशेषण :-

कृमा + नान
काठाता + नान
किनी + नान

सर्वनामांपासून बनलेल्या विशेषणांना सार्वनामिक विशेषणे असे म्हणतात.

| <u>सर्वनाम</u> | <u>विशेषण</u> |
|----------------|----------------------------------|
| १) मी | माझा |
| २) तू | तुझा |
| ३) तो | त्याचा |
| ४) आम्ही | आमचा, आमची, आमचे |
| ५) तुम्ही | तुमचा |
| ६) ती | तिचा |
| ७) हा | असा, असबा, इतका, एवढा, अमका |
| ८) तो | तसा, तसबा, तितका, तेवढा, तमका |
| ९) जो | जसा, जितका, जसबा, जौवढा |
| १०) कोण | कोणता, केवढा |
| ११) काय | कसा, कसबा |

उदा:-

१) कशी मुलगी हवी तुला ?

२) कोण मुलगी होती तुइल्यावरीवर ?

३) कसबे मुस्तक वाचू नये ?

उदा:-

{ कशी, कोण, कसबे या
विशेषणांच्या पुढे जर
नाम आले तर ते,
विशेषण सार्वनामिक
विशेषण असते }

- ५) कसला न्रास होतोय तुला १
- ६) त्याने काय पलार्ही आणले होते २
- ७) आम्ही श्रीमंत आहोत.
- ८) आम्हा श्रीमंतांना कशाची वारज
- ९) जितका जास्त अभ्यास कराण लितके जास्त भार्क मिळवील.
- १०) आमचे आजोवा
- ११) लिंगा पेन
- १२) लमका माणूस
- १३) इतका शर्ग
- १४) जसा देश तसा वेश

② साधित विशेषण :-

▷ नामसाधित विशेषण :-

नामापासून बनलेल्या विशेषणांना नामसाधित विशेषणे असे कहणात.

कवाच + नाम

कीणता + नाम

फिटी + नाम

उदा :-

- ▷ वृत्तपत्र विक्रेता
- ▷ कापड दुकान
- ▷ हरडी चाक
- ▷ सोबापुरी चारऱ
- ▷ मुगेशी पठडी
- ▷ नागापुरची संत्री
- ▷ नाशिकची द्राशे.
- ▷ ग्रंथ दिंडी
- ▷ मांड्याचे दुकान
- ▷ फळ आजी
- ▷ शौर्याची कथा

| <u>नाम</u> | <u>विशेषण</u> |
|------------|---|
| ▷ माती | मातकट - तदृष्टित प्रत्यय मराठी प्रत्यय |
| ▷ तेल | तेलकट |
| ▷ पाणी | पाणचट |
| ▷ ऊरीर | शाशीरिक ↓ शरीर+इक - संस्कृत प्रत्यय |
| ▷ समाज | सामाजिक |

| | | |
|-----------|---|---|
| ७) वेद | - | वैदिक |
| ८) आधा | - | आधिक |
| ९) बुद्धी | - | बौद्धिक / <u>बुद्धीमान</u> - तदृष्टित फारशी प्रत्यय |

शब्द + तदृष्टित प्रत्यय = तदृष्टित / शब्दसाधित = विशेषण

| | | |
|-------------|---|--------------------------|
| १०) गरज | - | गरज् |
| ११) माघ्य | - | माघ्यवान् / माघ्यशाढी |
| १२) शास्त्र | - | शास्त्रीय |

⇒ छातुसाधित विशेषण :-

मुळ छातुना प्रत्यय लागून वनलेल्या विशेषणांना
छातुसाधित विशेषण असे म्हणतात.

उदा:-

- १) पोहणारा मुलगा
- २) पिणारा माणस
- ३) लिहिणारा लेखक
- ४) वाचणारा वाचक
- ५) वाहती नही
- ६) छावती वस
- ७) पळती झाडे
- ८) गोलेले दिक्ष
- ९) वाचलेले पुस्तक
- १०) आलेल्या मुली
- ११) चालेला ट्रक

मुळछातुला उदा:- पोह, पि, त्र,
वस, वाच इत्यादीना णारा,
लेला / लेली, लेले, त्री, इत्यादी
प्रत्यय लागून वनलेल्या विशेष-
णांना छातुसाधित विशेषण
असे म्हणतात.

आत् + प्रत्यय (कृते) → मराठी → कृदृष्ट → विशेषण

उदाः:

सुट्सुट + ईत → मराठी → सुट्सुटीत → विशेषण

चकचक + ईत → मराठी → चकचकीत → विशेषण

कुरकुर + ईत → मराठी → कुरकुरीत → विशेषण

नियम :-

- नेव्हा व्हात्वा 'ईत' प्रत्यय बागतो तेव्हा व्याच्या अलीकडीन शब्द दीर्घ लिहावा व उकार प्लस्त लिहावा.

- कृत मराठी प्रत्यय बागून बनणारी आत्साधित विशेषण.

1) ईत :- सुट्सुटीत, करकरीत.

2) आत् :- झोपाळू, लाजाळू, विसराळू, सोसाळू.

3) ईक :- सडीक, घडीक,

4) खोर :- भांडखोर, विडखोर,

5) ईव :- जाणीव, रेखीव, घोटीव, कोरीव, पाढीव.

- तदीकित मराठी प्रत्यय (मराठी) बागून बनणारी शब्दसाधित विशेषण.

1) कर :- सुखकर, दिनकर, प्रभाकर } ही आत्साधित विशेषण)
2) ई :- लोखंडी, लाकडी, वजनी } नाहीत.

प्रमाण नामाच्या लिंगवर्णन प्रमाणे विशेषणाना विकास होतात. परन काढी विशेषणे घटी घिरी घर्व क्यव्ही घमान असतात.

* गोठ, झुंदर, आळशी, झोपाळू

* काढी विशेषणाऱ्याचा व्याक अथवा असता नाही तरी तरी असता.

असता नाही तरी असता.

३) अव्ययसाधित विशेषण :-

अव्ययप्रासून वनलेल्या विशेषणांना अव्ययसाधित विशेषणे असे म्हणतात.

उदा:-

- 1) पुढच पाझेल
- 2) वरचा मजला
- 3) मधला मार्फी
- 4) मागील दार
- 5) समोरील छोबी
- 6) लिकडची मुलवी
- 7) इकडचा मुलगा.

* अविकारी विशेषणे : ^{प्र०} अ कु इ गुणात्मक विशेषण अविकारी

1) अकाशान्त विशेषणे अविकारी असतात :- प्र० विशेषण अविकारी
असतात

- 1) श्रीमंत
- 2) गरीब
- 3) उच्च
- 4) ओर

तर आकाशान्त विशेषणे मात्र अविकारी
असतात
- विशेषणाना आभाव रूपात्मा विकार
छेणा

अ, र, ३ विशेषणात्मा आभाव रूप नाही

आ - विशेषणात्मा आभाव रूप या

2) ईकाशान्त विशेषणे अविकारी असतात :- छेत

- 1) आळशी
- 2) गावटी
- 3) अगारी
- 4) शाहरी

3) आकाशान्त विशेषणे अविकारी असतात :-

- 1) कडू
- 2) ठेंगू
- 3) बहू - (खूप, असंख्य)

4) गणनावाचक किशेषणे अविकारी असतात :-

- 1) दहा मुले
- 2) वीस मुली
- 3) पन्नास मेस

प्र० विशेषण = ३ लिंग वर्धन विभक्ती विकार

मध्यनाम = ५ लिंग, पर्वन, विभक्ती, पूर्वष

नाम = ३ लिंग वर्धन विभक्ती

* समासधटित विशेषण :-

समासापासून बनलेल्या विशेषणांना समासधटित विशेषण असे कहातात.

उदा:-

- एकवचनी \Rightarrow राम
- भालचंद्र \Rightarrow शंकर
- चक्रधर \Rightarrow विष्णु
- लंबोदर \Rightarrow गगेश
- क्रांतीकारक \Rightarrow संभाजी

- ही सर्व उदाहरणे बहुव्रीही समासाची आहेत.

* विशेषणाचे सामान्य रूप :-

अकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त विशेषणाचे सामान्यरूप होत नाही मात्र, ऊकारान्त विशेषणाचे सामान्यरूप 'या' कारान्त होते.

| विशेषण | नाम | विशेषणाचे सामान्यरूप | नामाचे सामान्यरूप |
|--------|-------|----------------------|-------------------|
| कडू | कारले | कडू कारले | कडू कारब्याचा |
| गोड | आंबा | गोड आंबा | गोड आंब्याचा |
| आळशी | मुलगा | आळशी मुलगा | आळशी मुलाचा |
| मला | माणस | मल्या माणस | मल्या माणसाचा |
| वेडा | मुलगा | वेड्या मुलगा | वेड्या मुलाचा. |

* दोन संख्या विशेषणे जोळा एकत्र येतात, तेव्हा वैकल्पिक 'हुंदू समास' होतो.

उदा:- 1) दहापंचरा 2) वीसपंचवीस 3) पाचपन्नास.

* जेव्हा दोन संख्यांमध्ये आपण किंवा चा वाफर / उच्चार करू शकतो, तेव्हा वैकल्पिक हुंदू समास होतो.

उदा:- दहा किंवा पंचरा.

4) क्रियापद

- वाक्याचा अर्थ पूर्ण करणाऱ्या शब्दाला क्रियापद असे महगतात.
 - क्रियापद वाक्याचा अर्थ पूर्ण करतानाऱ्य कव्याचे कोणती क्रिया केली हे दर्शविते, तसेच क्रियापद स्थिती व स्थित्यांतर दर्शविते.
 - क्रियापद क्रिया, घटी, स्थिती, स्थित्यांतर दर्शवितो.

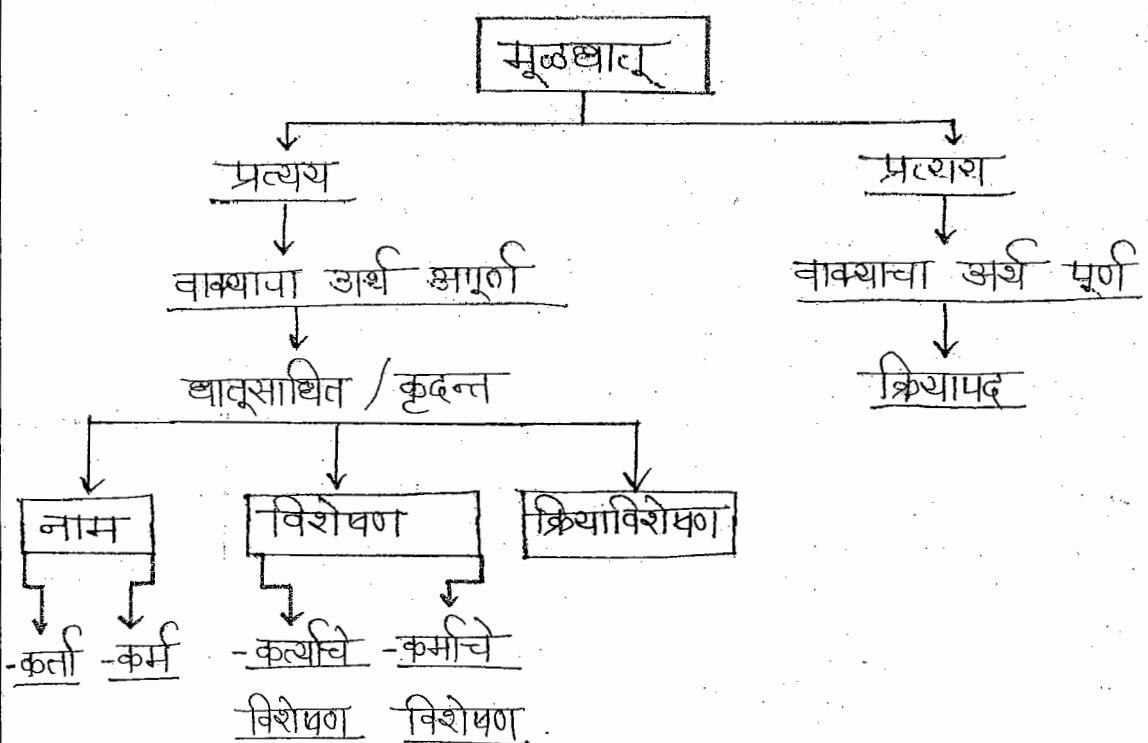
उदा:-

- 1) आकाश पुस्तक वाचतो. → क्रिया → सकर्मिक

2) आकाश जोशत छावतो. → गती → अकर्मिक

3) आकाश डॉक्टर जाहे. → स्थिती → अपूर्ण विद्यान
क्रियापद

4) आकाश M.D. झाला. → स्थित्यांतर → अपूर्ण विद्यान
क्रियापद



* मूलधातृ :-

क्रियापदाचे प्रत्ययशहित रूप महणजे मूलधातृ होय.

छदा :-

1) एकाकरी मूलधातृ :- जा, ये, पी, खा, ने, ते, हे, घे

2) दोनाकरी मूलधातृ :- वस, उठ, बिह, मर, कर, छर, जेव, झोप, लिह, निज, वाच.

3) तीनाकरी मूलधातृ :- आठव, पकड, उघड, पाठव, करव, साठव, पटव, कटव.

*

षातुसाधित :-

षातूला प्रत्यय लागून अपूरी क्रिया द्वारा विणाऱ्या शब्दाला षातुसाधित असे महणतात.

-षातुसाधितचे तीन प्रकार पडतात:-

1) षातुसाधित नाम :-

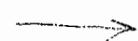
2) षातुसाधित विशेषण :-

3) षातुसाधित क्रियाविशेषण :-

1) षातुसाधित नाम :-

षातूला प्रत्यय लागून बनणाऱ्या नामांना षातुसाधित नाम असे महणतात.

-षातूला ण, ऊ, ऊ, ण प्रत्यय लागून षातुसाधित नाम बनते.



| कृदन्ताचे नाव | आतूसाधिताचे उद्दा: | वनणारी जात |
|---------------|--|------------|
| १) <u>णे</u> | चालणे, रडणे, खावणे, खाणे, पिणे, मळणे, हसणे | <u>नाम</u> |
| २) <u>ऊ</u> | आज, पिऊ, चालू, रडू, हसू, मळू | <u>नाम</u> |
| ३) <u>अ</u> | कर, डर, रड, वस, उठ, आष, पळ | <u>नाम</u> |
| ४) <u>ण</u> | जेवण, ढळण, कोडण, रडण, हसण | <u>नाम</u> |

२) आतूसाधित विशेषण :-

आतुंना प्रत्यय लावून वनणाऱ्या विशेषणांना आतूसाधित विशेषण असे रहणतात.

| कृदन्ताचे नाव | आतूसाधिताचे उद्दा: | वनणारी जात |
|---------------------|-----------------------------|------------|
| १) णारा/णारी, णारे | पिणारा, पिणारी, पिणारे | विशेषण |
| २) लेला/लेली/लेल्या | पिकलेला, पिकलेली, पिकलेल्या | विशेषण |
| ३) ता/ती/ते | वाहता, वाहती, वाहते | विशेषण |

३) आतूसाधित क्रियाविशेषण :-

मूळबातुंना प्रत्यय लागून वनणाऱ्या क्रिया विशेषणांना आतूसाधित क्रियाविशेषण असे रहणतात.

कृद्वन्ताचे नाव

बातूसाधिताचे उद्दा:

वनणारी जात

१) अन

रहून, हसून, चालून,
घेऊन, वसून

क्रियाविशेषण

२) त

हसत, रडत, चालत,
फिरत, वसत

क्रियाविशेषण,

३) ताना

चालताना, रडताना,
फिरताना, वोलताना,
हसताना.

क्रियाविशेषण.

* एक अक्षरी बातूला 'अन' प्रत्यय भावताना मूळभाव आहे तसा
जोडावा:

उदा:- जा, खा, पी, ये, ने, घे.

शुद्धबातूसाधित :- जाअन, खाअन, पीअन, येअन, नेअन, घेअन.

अशुद्धबातूसाधित :- जावून, खावून, पीवून, येवून, नेवून, घेवून.

* दोन अक्षरी बातूला 'अन' प्रत्यय भावताना फक्त अकार
देऊन पुढे 'न' लिहावा:

उदा:- जेव, ठेव, पाव, थाव, चाव, लाव.

शुद्धबातूसाधित :- जेवून, ठेवून, पावून, थावून, चावून, लावून.

अशुद्धबातूसाधित :- जेऊन, ठेऊन, पाऊन, थाऊन, चाऊन, लाऊन.

१ सिद्धि क्रियापदे :-

मूळवात्पासून वनणाऱ्या क्रियापदेना सिद्धि क्रियापदे असे म्हणतात.

उदा:- खा, पी, ये, जा → मूळ वात् / जनक वात्

खातो, पितो, गेला, जातो → मूळ वात् पासून वनलेबी सिद्धि क्रियापदे.

-प्रकार :-

सकर्मिक क्रियापदे :-

कर्त्त्वपासून निवालेली क्रिया ज्याव्यावर घडते, किंवा क्रियेचा परिणाम ज्याव्यावर घडतो व्यास कुर्म असे म्हणतात.

- कर्त्त्वाला क्रियेचा 'आश्रय' असे म्हणतात.

- कर्माला क्रियेचा 'विषय' असे म्हणतात.

- जेळा क्रियेचा आश्रय व क्रियेचा विषय वेण्ठी वेगवेगळी असतात तेळा ते क्रियापद सकर्मिक असते.

- जेळा कोण आणि काथ / कोणाला या प्रश्नांची उत्तरे वेगवेगळी येतील तेळा ते क्रियापद सकर्मिक असते.

- क्रियेचा परिणाम कर्मावर घडत असल्याने क्रियावाचक व्यात् सकर्मिक असतात.

छद्मे: खिडिणे, वाचणे, जेवणे, खाणे, पिणे, काढणे, मारणे, पकडणे, देणे, घेणे.

- जेळा वाच्यात एकच कर्म असते तेळा व्यास 'सकर्मिक क्रियापद' असे म्हणतात.

- जेळा वाच्यात एक प्रत्यक्ष कर्म व दुसरे अप्रत्यक्ष कर्म असते, तेळा त्या क्रियाघदास 'हिकर्मिक क्रियापद' असे म्हणतात.

काथ :- प्रत्यक्ष कर्म → वस्तुवाचक कर्म → विषय → विभक्ती :- हितीया → कारकार्थ :- कर्म.

कोणाला :- अप्रत्यक्ष कर्म → व्यक्तीवाचक कर्म → कर्मपूरक → विभक्ती :- चतुर्थी → कारकार्थ :- संप्रदान.

1) आकाशने पुस्तक वाचून काढले → सकर्मक
कर्ता कर्म
आश्रय विषय

2) रामने झाडावर चढून पतंग काढला → सकर्मक
कर्ता कर्म
आश्रय विषय

3) वि.स. खांडेकरांनी अनेक पुस्तके लिहिली → सकर्मक
कर्ता अनिश्चित कर्म
आश्रय संज्ञाविशेषण

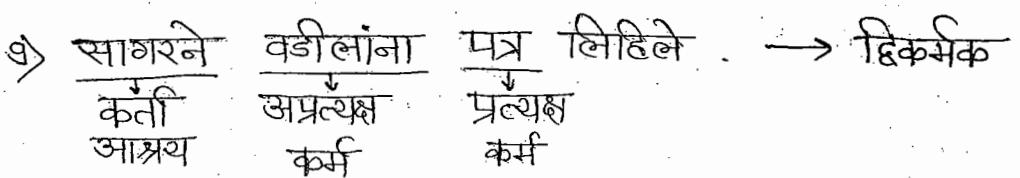
4) आरोही सुरेल वीत गाते → सकर्मक
कर्ता कर्म
आश्रय विषय

5) अद्यमठाने शुर्पनखेचे नाक कापले → सकर्मक
कर्ता कर्म
आश्रय विषय

6) श्रीकृष्णाने साधिपाणिना दृष्टिणा दिली → द्विकर्मक
कर्ता अप्रत्यक्ष कर्म प्रत्यक्ष
आश्रय विषयपूरक/ कर्मपूरक

7) शिळ्कांनी विद्यार्थ्यीना दृतिबास शिकवला → द्विकर्मक
कर्ता अप्रत्यक्ष कर्म प्रत्यक्ष
आश्रय

8) विद्यार्थ्यीने शिळ्कांना प्रश्न विचारला → द्विकर्मक
कर्ता अप्रत्यक्ष प्रत्यक्ष
आश्रय कर्म



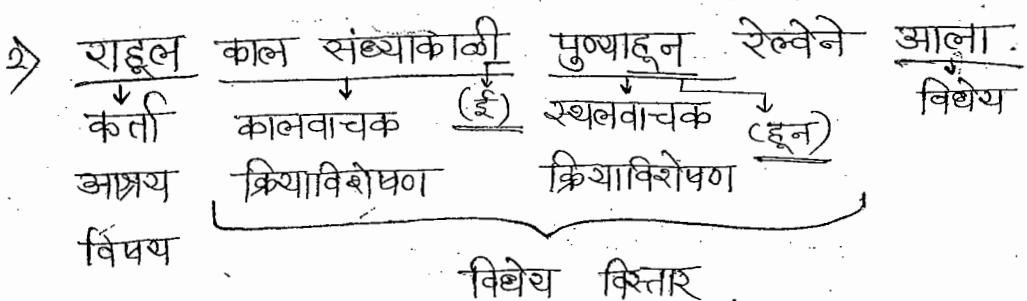
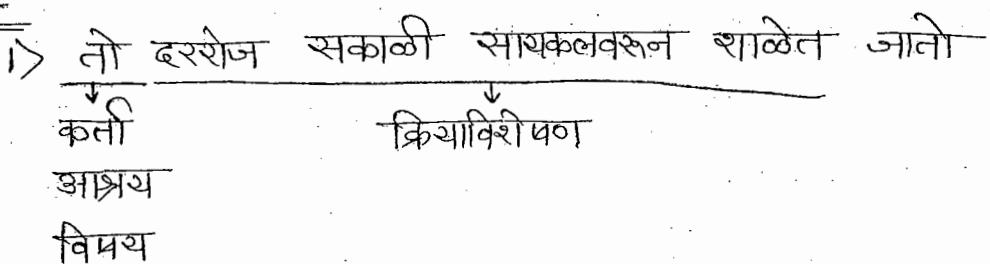
* काही हिकर्मक क्रियापदे :-

→ देणे, विचारणे, सांगणे, लिहिणे, शिकवणे.

2) अकर्मक क्रियापदे :-

- जेव्हा कर्त्त्यापासून निधालेली क्रिया कर्त्त्यापाशीच यावत असेल तेव्हा त्या क्रियापदाबा अकर्मक क्रियापद असे म्हणतात.
- क्रियेचा आश्रय व क्रियेचा विषय दोघेही एकच असतील तर त्या क्रियापदास अकर्मक क्रियापद असे म्हणतात.
 - जेव्हा वाक्याचा कर्ता त क्रियापद दोघेच वाक्याचा अर्थ पूर्ण करतात, तेव्हा त्यास पूर्ण अर्थाचे अकर्मक क्रियापद असे म्हणतात, त्यालाच पूर्ण विषयान क्रियापद असेही म्हणतात.
 - गवीवाहक चाकू अकर्मक असतात.

उदा:-



विषेय किस्तार + विषेय ⇒ विषेय विभाग.

३) सुरेश जोरात मावतो.
कर्ता
आश्रय

४) आम्ही दर्शोज पहाटे लवकर उठतो.
कर्ता क्रियाविशेषण
आश्रय
विषय

५) सूर्य पूर्वला उगवून स्थिमेला मावळतो.
कर्ता चतुर्थी (कर्म नसल्यामुळे)
आश्रय
विषय

६) तो शत्रीचा अस्यासासाठी जागतो.
कर्ता क्रियाविशेषण
आश्रय
विषय

७) तो रस्त्याने भरभर चालू लागला
कर्ता क्रियाविशेषण संयुक्त
आश्रय क्रियापद
विषय

८) बादली पाण्याने भरली.
कर्ता
आश्रय
विषय

९) अीष्म ऋतूत वृक्षांची पाने गळतात.
क्रियापदाची कर्त्याचे कर्ता
विशेषण

10) ती खेळन दमली.

कर्ता

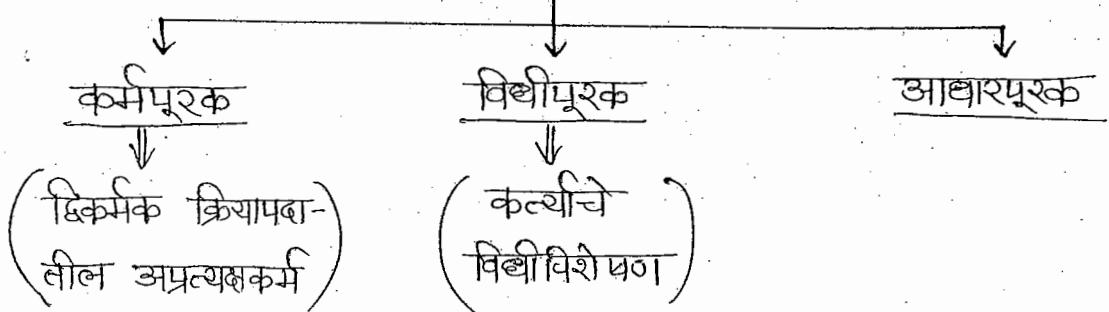
आत्मय

विषय

अपूर्ण विषयान क्रियापद / अपूर्ण अर्थाचे अकर्मिक क्रियापद :-

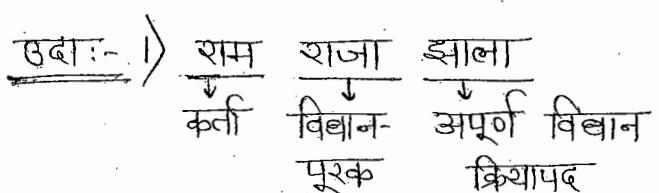
- वाक्याचा कर्ता व क्रियापद दोघे मिळून वाक्याचा अर्थ पूर्ण करण्याशाही बासगर्थ घरतात, तेळा तात्त्वाचा अर्थ पूर्ण करण्यासाठी क्रियापदाला एका पूरक शब्दाची गरज आसले त्यास विषयानपूरक किंवा विषेषपूरक असे म्हणतात. व त्या क्रियापदास अपूर्ण विषयान क्रियापद असे म्हणतात.
- विषयानपूरकाचे / विषेषपूरकाचे तीन प्रकार घडतात:

विषेषपूरक / विषयानपूरक



विषयानपूरकाचे वाक्यातील स्थान :-

- 1) नाम / सर्वनाम :- कर्ता व त्यानंतर येणारे नाम किंवा सर्वनाम हे दोघे एकच असतील, तेळा कर्त्यानंतर येणारे नाम / सर्वनाम विषयानपूरकाचे कार्य करते.



2) कालीदास कवी होता.
 कर्ता विद्यान् अपूर्ण विद्यान्
 पूरक क्रियापद

3) ती डॉक्टर आहे.
 कर्ता विद्यान् अपूर्ण विद्यान्
 पूरक क्रियापद

— आहे, होता, शाळा, होईल, नव्हता, नाही, अशी क्रियापदे जेव्हा वाक्यात एकटीच येतील तेव्हा ती विद्यानपूरक घेऊन येतात.

4) तो वकील नाही
 कर्ता विद्यानपूरक अपूर्ण विद्यान
 क्रियापद

5) राकेश चित्रपट निर्माता नव्हता.
 कर्ता विद्यानपूरक अपूर्ण विद्यान
 क्रियापद.

6) मोही हे भारताचे पंतप्रधान आहेत.
 कर्ता विद्यान् विद्यानपूरक अपूर्ण विद्यान
 पूरक क्रियापद.

2) कर्त्याची विद्यीविशेषणे:- कर्त्याची विद्यीविशेषणे जेव्हा वाक्यात येनात, तेव्हा ती विद्यानपूरकाची कार्ये करनात, तेव्हा त्यास 'विद्यीपूरक' असे महागतात.

उदा: > वैभव हुशार आहे.
 कर्ता विद्यानपूरक अपूर्ण विद्यान
 विद्यीपूरक क्रियापद
 विद्यीविशेषण

२) शेहिणी सुंदर दिसते .

| | | |
|-------|--------------|----------|
| कर्ता | विद्यानपूरक | अपूर्ण |
| | विद्यीपूरक | विद्यान |
| | विद्यीविशेषण | क्रियापद |

३) गुलमोहर मोहक हिसते

| | | |
|-------|--------------|----------|
| कर्ता | विद्यानपूरक | अपूर्ण |
| | विद्यीपूरक | विद्यान |
| | विद्यीविशेषण | क्रियापद |

४) गुरुजी शगावलेले दिसतात

| | | |
|-------|--------------|----------------|
| कर्ता | विद्यानपूरक | अपूर्ण विद्यान |
| | विद्यीपूरक | क्रियापद |
| | विद्यीविशेषण | |

५) नाम / सर्वनाम :- चतुर्थी विशकतीचे प्रव्यय भागलेली नामे आणि सर्वनामे विद्यानपूरकाचे कार्य करतात.

उदा: १) गुलाबाला कोट असतात .

| | | |
|-------------|-------|-------------------|
| विद्यानपूरक | कर्ता | अपूर्ण विद्यान |
| | | क्रियापद (अकर्मक) |

२) मला दुष्ट आवडते

| | | |
|----------|-------|-------------------|
| विद्यान- | कर्ता | अपूर्ण विद्यान |
| पूरक | | क्रियापद (अकर्मक) |

३) आवडीला ऊंडी वाजते .

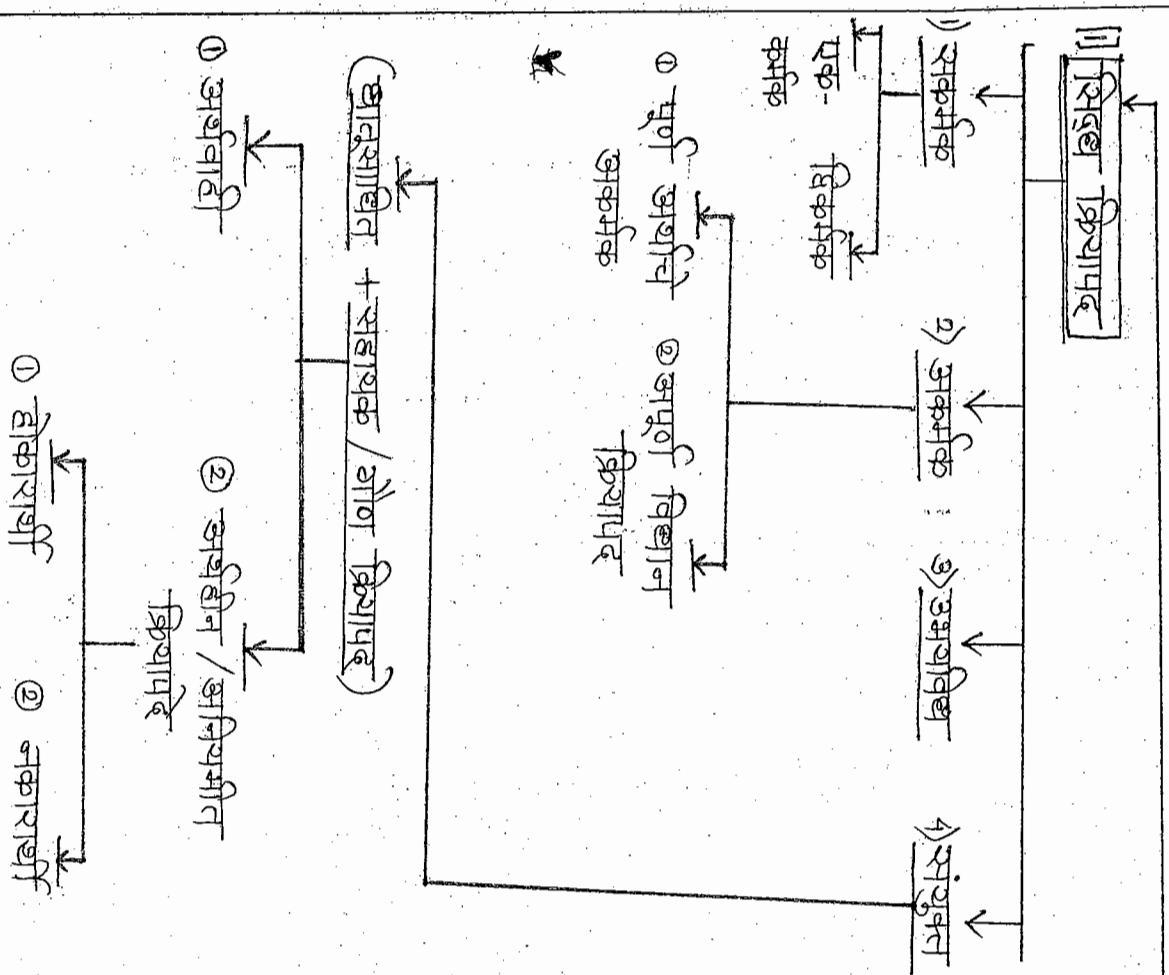
| | | |
|-------------|-------|-------------------|
| विद्यानपूरक | कर्ता | अपूर्ण विद्यान |
| | | क्रियापद (अकर्मक) |

*अकर्मक क्रियापदे:-

असणे, नसणे, उठणे, वृसणे, पडणे, रडणे, स्फुटणे, मरणे,
निघणे, झोपणे, खकणे, उडणे, खावणे, थांवणे, जागणे, वाढणे,
हिंजणे, जळणे, प्रकाशणे, तुटणे, सुटणे, वाजणे, भिजणे,
शिजणे, सुजणे, सुजणे, विक्षणे, पोळणे, पिकणे, विघडणे,
विनसणे, आवडणे, दिसणे, घावणे, मिळणे, कळणे, सचणे,
शोभणे, भाजणे, घोशणे, लोळणे



क्रियापद



(आनुसाधित + सहायक / गौण क्रियापद)

① अर्थवाचि
② अर्थविन / अनियमीत
क्रियापद

① होकारार्थी
② नकारार्थी

उ) उभयविषय क्रियापदे:-

जी क्रियापदे सकर्मक व अकर्मक होन्ही ही प्रका-
रची असतात अशा क्रियापदांना उभयविषय क्रियापद असे म्हणतात.

उदा:-

1) वाळाचे खेळणे मोडले
विशेषण कर्ता अकर्मक क्रियापद

वाळाने खेळणे मोडले
कर्ता कर्म सकर्मक क्रियापद

2) देवळाचे दार उघडले
विशेषण कर्ता अकर्मक क्रि.

पुजाव्याने देवळाचे दार उघडले
कर्ता विशेषण कर्म सकर्मक क्रि.

3) माझी छत्री हरवली
विशेषण कर्ता अकर्मक क्रि.

मी छत्री हरवली
कर्ता कर्म सकर्मक क्रि.

4) मला प्रसंग आठवला
सर्वनाम कर्ता अकर्मक क्रि.
सिवानपूरक

मी प्रसंग आठवला
कर्ता कर्म सकर्मक क्रि.

5) माझे चोट कापले
 विशेषण कर्ता अकर्मिक क्रि.

लेधमाने शुर्पिनखेचे नाक कापले
 कर्ता विशेषण कर्म सकर्मिक क्रि.

- काही आतुंच्या स्थात योडासा वहब केला की, ती सकर्मिक घनतातः

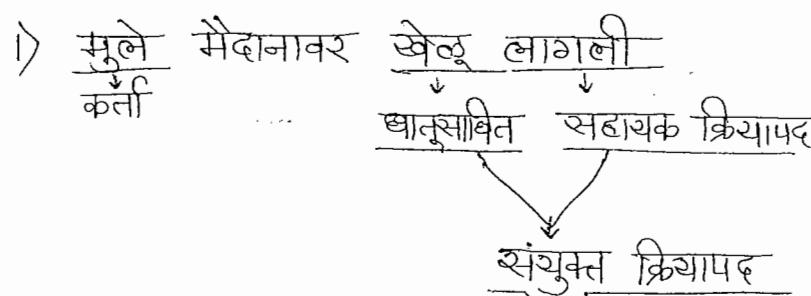
| <u>अकर्मिक क्रियापदे</u> | <u>सकर्मिक क्रियापदे</u> |
|--------------------------|--------------------------|
| १) पडणे | - पाडणे |
| २) गळणे | - घाळणे |
| ३) द्विणे | - दावणे |
| ४) मरणे | - मारणे |
| ५) सुटणे | - सोडणे |
| ६) टळणे | - टाळणे |
| ७) सुटणे | - तोडणे |
| ८) शुंतणे | - गोवणे |
| ९) फुटणे | - फोडणे |
| १०) तरणे | - तारणे |

| <u>कर्म</u> | <u>क्रियापद</u> |
|-------------|-----------------|
| विश्वास | - ठेवणे |
| प्रेम | - करणे |
| पाणी | - घालणे |
| मार | - देणे |
| विचार | - करणे |

४) संयुक्त क्रियापदः:-

आत्मसाधित व त्यापुढे येणारे सहायक क्रियापद, दोघे मिळून एकच क्रिया दर्शवित असतील तर असा क्रियापदांना संयुक्त क्रियापद असे म्हणतात.

उदा:



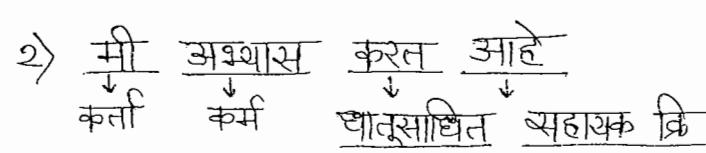
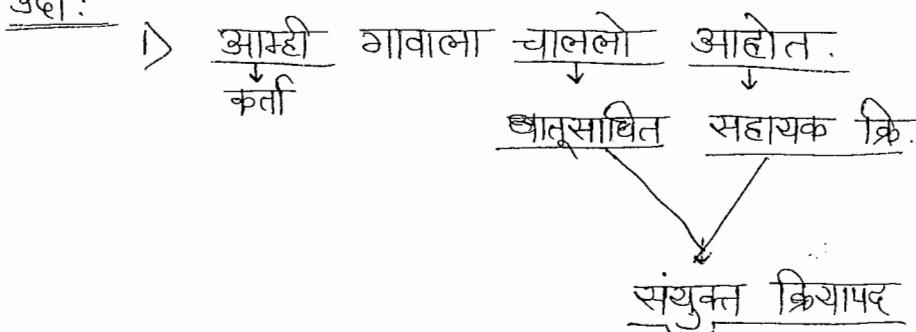
- संयुक्त क्रियापदाच्या वाक्याचा कर्ता शोषिताना आत्मसाधितामधील मूळ व्यातूला प्रश्न विचारावा.

1) सहायक क्रियापदः:-

आत्मसाधित व त्यापुढे येणारे सहायक क्रियापद दोघे. मिळून एकच क्रिया दर्शवित असतील तर आत्मसाधिताच्या पुढे येणाऱ्या व आत्मसाधिताला मदत करणाऱ्या क्रियापदाला सहायक क्रियापद असे म्हणतात.

- सहायक क्रियापदांनाच शौण क्रियापद असे म्हणतात.

उदा:



- आत्माधित व त्यापुढे येणारे सहायक क्रियापद, दोव्हे मिळन वेगवेगळ्या क्रिया दर्शवित असतील तर त्यापुढे येणाऱ्या क्रियापदाला सहायक क्रियापद न म्हणता त्या क्रियापदाला मुळ्य क्रियापद असे रहेणात.

उदा:-

1) आकाशने पेस्ल झाडावर चाढन काढला।

↓ ↓
आत्माधित मुळ्य
क्रिया- क्रियापद
विशेषण

2) मी तिला मतंग बनवून दिला।

↓ ↓
आत्माधित मुळ्य
क्रियाविशेषण क्रियापद

- सहायक क्रियापदाचे दोन प्रकार पडतात.

1) अर्थवाही सहायक क्रियापदे.

2) अर्थठीन सहायक क्रियापदे.

1) अर्थवाही सहायक क्रियापदे :-

सहायक क्रियापदे जेव्हा क्रियापदाच्या अर्थात् अधिक भर घालतात, तेव्हा त्यांना अर्थवाही सहायक क्रि. असे म्हणतात.

उदा:-

1) करू शकतो, गाऊ शकतो, लिहू शकतो, नाचू शकतो \Rightarrow (शामळ्य)

↓
अर्थवाही सहायक क्रियापद

2) करू पाहतो, जाऊ इच्छितो, देऊ इच्छितो \Rightarrow (इच्छा)

↓
अर्थवाही स. क्रि.

३) पाहू दे, करू दे, येऊ दे \Rightarrow (अनुमोदण)

अर्थवाही सहायक क्रियापद

४) बोलू लागला, निहू लागला, येऊ लागला \Rightarrow (प्रारंभ)

अर्थवाही स. कि.

५) रडत वसला, हसत सुटला, खेळत राहिला \Rightarrow (सातत्य)

अर्थवाही स. कि.

६) केले पाहिजे, गेले माहिजे, करावे बागते \Rightarrow (कर्तव्य)

अर्थवाही स. कि.

७) खेळत असू, वसत असू, उतत असू \Rightarrow (रीत)

अर्थवाही स. कि.

८) वाचून झाले, कलून टाकले, हसून सोडले, टाकून वसलो \Rightarrow (पूर्णता)

अर्थवाही स. कि.

२) अर्थीन सहायक क्रि. / अनियमित क्रियापदे :-

जी क्रियापदे क्रियेच्या

अर्थीत भर घालत

नाहीत अशा क्रियापदांना अर्थीन सहायक क्रियापदे असेहे

म्हणतात.

*अनियमित क्रियापद :-

ज्या क्रियापदांना काळाचे व अर्थाचे प्रत्यय आघात नाहीत असा क्रियापदांना अनियमित क्रियापदे असे म्हणलात.

असू - आहे, होता, झाला, होईल - अनियमित.

*नियमित क्रियापद :-

ज्या क्रियापदांना काळाचे व अर्थाचे प्रत्यय आघात असा क्रियापदांना नियमित क्रियापदे असे म्हणलात.

चाल - चालतो, चालला, चालेलं }- नियमित

चाव - चावतो, चावला, चावेल }

-अर्धीन सहायक क्रियापदाचे दोन प्रकार पडतात:

- ① होकारार्थी :- आहे, होता, झाला, होय, असले.
- ② नकारार्थी :- नाही, नको, नसलो, नलगें, नव्हे, नये.

उदा:-

1) तु ढोन शब्द वोलून जा.
 ↓ ↓
 आत्साधित मुळ्य क्रि.
 क्रियाविशेषण

2) प्रत्येकाने काढीलरी केले पाहिजे.
 ↓ ↓
 आत्साधित सहायक क्रि.

3) ढादा परवाच गावाला जाऊन आला
 ↓ ↓
 आत्साधित मुळ्य क्रियापद
 क्रियाविशेषण

4) मी माझे काम पूर्ण करून टाकले
आत्साधित सहायक क्रि.

5) लता मंडोशकर आता शान नाहीत
आत्साधित सहायक क्रि.

6) आपण काहीही करु शकतो
आत्साधित सहायक क्रि.

7) त्याने पुस्तक वाचून काढले
आत्साधित सहायक क्रि.

8) बाळ, एवढा लाई खाऊन टाक
आत्साधित सहायक क्रि.

9) बाळ, एवढा लाई खाऊन जा
आत्साधित मुख्य क्रि.
क्रियाक्रीयण

10) आता सरेजण जीअन घ्या
आत्साधित सहायक क्रि.

11) सकाळी फिरायबा गेले पाहिजे
आत्साधित सहायक क्रि.

12) बाळ आता चालू लागला आहे
आत्साधित सहायक क्रि.

14) माझे वोलून इसाले
वात्साधित सहायक की.

2) साधित क्रियापद :-

इतर शब्दांपासून वर्णलेख्या क्रियापदांना साधित क्रियापदे असे म्हणतात.

- शक्ति व प्रयोजक क्रियापदांचा समावेश साधित क्रियापदांमध्ये होतो.

1) शक्ति क्रियापद :-

जेळा क्रियापदाच्या क्षेपावरून कर्त्त्याचे क्रिया करण्याचे सामर्थ्य समजाते वेळा त्या क्रियापदाबा शक्ति क्रियापद असे म्हणतात.

$$\rightarrow \text{शक्ति क्रियापद} = \text{मुळधातू} + \text{वतो/घते}$$

उदा:-

1) मला भाषास करवतो.
↓
शक्ति क्रियापद

2) त्याला डोंगर चढवतो.
↓
शक्ति क्रि.

3) त्याच्याच्याने आता जेवण करवते.
↓
शक्ति क्रि.

4) त्याच्याच्याने कदू औषध पिववते.
↓
शक्ति क्रि.

५) त्याच्याच्याने पुस्तक वाचिवते
 ↓
 शक्य कि

टीप: - शक्य क्रियापदे सर्वांगीक व असर्वांगीक दोन्ही प्रकारे घेतात.

② प्रयोजक क्रियापद :-

ज्या वाक्याचा कर्ता स्वतः क्रिया करत नसून दुसर्या कोणाला तरी क्रिया कराऱ्यला नावतो वेळा त्यास प्रयोजक क्रियापद असे म्हणतात.

- प्रयोजक क्रियापदे नेहरी सर्कारी असतात्.
 - प्रयोजक क्रियापदे बनवताना 'आगम' होतो.

* आगम :- शब्द वनत असताना मध्येच एखाहा वर्ण येतो त्यास
आगम असे महतात.

- तो वर्ण जर 'इ' असेल तर त्यास 'इडागम' (इट्ट+आगम) असे संहितात.

उदाहरण: हस + इ + वतो = हसवितो
 इंडिगम
 ↑

→ प्रयोजक क्रियापद वनवताना हीन अहरि छातुला 'वलो' किंवा 'वते'

उदा:- हस वते, पळ वते, चल वते

→ एक अक्षरी छात्रा वावितो किंवा वाविते हा प्रत्यय भागले

उदा :- खावविते, ज्ञेवविते, धेवविते

प्रथोजक क्रियापद्धतीले कर्ता शोधताना साधित छातुला घर्जन विचारवा.

उद्दा :-

1) महारी माकडाला नाचवितो

↓ ↓ ↓

कली कर्म नाचविणाश कोणे ?

→ वाई वालाला हसविते
कर्ती कर्म हसविणाशी कोण १

③ आहि वाळाला चालविते
 करी करी चालविणारी कोण?

⇒ श्रीकृष्णने भीमाकूर्म जरासंघाला मारविले
कर्त्ता कर्म मारविणारा कोण १

5) पही कृष्णले (कर्ता \Rightarrow भोकानी \Rightarrow अधाहत) \downarrow
 कर्म अपलेला

③ नामसाधित क्रियापद :-

३ ज्ञामापासून वर्णणाच्या क्रियापदांना नामसाधित
क्रियापद असे महतात.

| <u>नाम</u> | | <u>क्रियापद</u> |
|------------|---|-----------------|
| १) पूजा | - | पुजने |
| २) इतरा | - | इतरणे |
| ३) रेखा | - | रेखाटणे |
| ४) ठग | - | ठगाळणे |
| ५) माणस | - | माणसाळणे |

| | | | |
|-----|--------|---|------------|
| ६) | हात | - | हाताक्षणे |
| ७) | राग | - | रागावणे |
| ८) | इच्छा | - | इच्छिणे |
| ९) | शंग | - | शंगणे |
| १०) | ठेच | - | ठेचाक्षणे |
| ११) | लाथ | - | लाथाडणे |
| १२) | स्खून | - | स्खूनावणे |
| १३) | फेस | - | फेसाक्षणे |
| १४) | संताप | - | संतापणे |
| १५) | खर्च | - | खर्चणे |
| १६) | दहा | - | दहावणे |
| १७) | जमा | - | जंमणे |
| १८) | ताप | - | तापणे |
| १९) | उज्जेड | - | उजाडणे |
| २०) | प्रकाश | - | प्रकाशणे |
| २१) | रक्त | - | रक्ताक्षणे |
| २२) | चोर | - | चोरणे |

उदा:-

१) व्याचा हात रक्ताक्ला

↓
नामसाधित क्रियापद

२) तो माझी पुस्तके नेहमी हाताक्तो

३) व्याने विहीरीत डोकावले

४) व्याने घेऊ लाथाडला

५) तिच्या आठवणीने त्याके डोळे पाणावले

④ विशेषण साधित क्रियापद:-

विशेषणांपासून बनणाऱ्या क्रियापदांना विशेषण साधित क्रियापदे असे महालात.

| विशेषण | क्रियापद |
|-----------|-----------|
| १) आखूड | आखूडणे |
| २) लंद | लंदवणे |
| ३) घंड | घंडवणे |
| ४) उमा | उमारणे |
| ५) गार | गारठणे |
| ६) शेड | शेडवणे |
| ७) काळा | काळवंडणे |
| ८) वेड | वेडावणे |
| ९) नम्र | नम्रे |
| १०) लोंब | लोंबवणे |
| ११) उंच | उंचावणे |
| १२) ओला | ओलावणे |
| १३) लंगडा | लंगडणे |
| १४) मिश्र | मिश्रणे |
| १५) लकड | लाकणे |
| १६) स्थिर | स्थिरावणे |
| १७) चिकट | चिकटणे |
| १८) लुवाड | लुवाडणे |

उदा:-

१) तिला पाहलाच त्याने हात

उंचावले

विशेषणसाधित क्रियापद

२) तो तिच्यापासून दुरावला

३) त्याने मदतीचा हात आखडला

४) त्याने वस्तू लोवविभी

५) सिमेकशील तोका चंडावल्या

६) चेंडू सिमारेपेजवळ रिशेशावला

⑤ अव्ययसाधित क्रियापद :-

अव्ययापासून बनणाऱ्या क्रियापदांना अव्ययसाधित क्रियापदे असे रहनात.

— पुढे, मागे, खाली, वर, इकडे, तिकडे.

छदा :-

१) संगणकामुळे माणसे पुढारली
↓
अव्ययसाधित क्रियापद

२) अज्ञानामुळे माणसे मागासली

३) त्याची तव्येत खालावली.

३

इतर :-

① मावकर्तृक / अकर्तृक क्रियापदे :-

जेणा क्रियेचा 'माव' हव वाक्याचा कर्ता असले, तेण्हा त्या क्रियापदोना मावकर्तृक क्रियापदे असे महणतात.

उदा:-

- १) तिला आज मळमळते
मावकर्तृक
- २) माझ्या घरात खवखवते
माव
- ३) आज भवकर सांजावले
माव
- ४) आज भवकर उजाडले
माव
- ५) आज सारखे गडगडते
माव

क्रियापदाला काय हा प्रश्न
विचाराला असला कर्ता
मिळत नाही महणून याला
मावकर्तृक / अकर्तृक क्रियापदे
महणतात."

② करणरूप क्रियापद :-

ज्या वाक्यातील क्रियापद 'होकारार्थी' असते, अशा क्रियापदांना करणरूप क्रियापदे असे महणतात.

उदा:-

- १) आज शाळेला सुट्टी आहे
- २) आम्ही नेहमी अभ्यास करतो
- ३) मुले गाणे गातात.

होकारार्थी क्रियापद

③ अकरणरूप क्रियापद :-

ज्या वाक्यातील क्रियापद 'नकारार्थी' असते, अशा क्रियापदांना अकरणरूप क्रियापद महणतात.

उक्तः-

1) आज शाळेला सुट्टी नाही

2) आज आम्ही काहीच अभ्यास केला नाही.

3) आज सिनेमाघृहात कोणताच चित्रपट नाही.

नंकारार्थी
क्रियापद.

क्रियापदाचे काळ

- क्रियापदाच्या रूपावरून क्रिया केळा घडली हे समजते तेळा त्यास क्रियापदाचे काळ असे म्हणतात.

- क्रियापदाच्या काळाचे तीन प्रकार पडतात:-

1) वर्तमान काळ - क्रिया सध्या घडते आहे, असा वोध होतो.

2) भूत काळ - क्रिया पूर्वी घडली होती, असा वोध होतो.

3) अविष्य काळ - क्रिया पुढेल घडेल, असा वोध होतो.

- काळाचे प्रत्येकी चार प्रकार पडतात:-

1) साधा काळ:

2) अपूर्ण काळ:

3) पूर्ण काळ:

4) रिती काळ:

वर्तमान काळ

1) साधा वर्तमान काळ :-

क्रिया सध्या घडते आहे हे समजते.

- वाक्यात एकच क्रियापद असते.

- मूळबाबुला 'त' प्रत्यय लागतो.

उदा:-

- 1) तो मरभर जेवतो
- 2) ती सुंदर अश्वर काढते
- 3) कू प्रेम करतोसे
- 4) आम्ही चित्रपट माहतो
- 5) ते गाणी मऱ्णतात
- 6) मी अश्यास करलो

-साध्या वर्ले मानकाळाचा वापर :-

1) त्रिकाळावाष्टीत सत्य सांगव्यासाठी :-

उदा:- ① अर्द्ध पूर्वी सुर्योदयात ते पाश्चिमीस मावळतो.

② पृथ्बी सूर्याभोवती फिरते.

③ माणी उतारकडे वाहते.

2) ऐतिहासिक सत्य सांगव्यासाठी :-

उदा:- ① लानाजी मऱ्णतो, "आषी लघन कोंडाव्याचे".

3) अवतरण देलाना :-

छवा:- ① विवेकानंद मऱ्णतात, "कोणतेही काम निष्ठेने करा".

② पंडीत नेहरु मऱ्णतात, "आराम हराम आहे".

2) अपूर्ण वर्तमान काळः-

आपण बोलतेवेळी जर क्रिया चालू असेल तर ती अपूर्ण वर्तमान काळात सांगतात.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (त + आहे)

उदा:-

1) शिक्षक व्याकरण शिकवत आहेत.

2) मी निवंध लिहित आहे.

3) तू काय करत आहेस.

4) तू कुठे जात आहेत.

5) आम्ही फिरायला जात आहोत.

6) तूम्ही कुठे जात आहात.

7) ती कॉलेजला जात आहे.

3) पूर्ण वर्तमान काळः-

बोलते वेळी क्रिया पूर्ण झाली असेल तर ती पूर्ण वर्तमान काळात सांगतात.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (ल + आहे)

उदा:-

1) मी पुस्तक वाचले आहे

2) तीने अश्यास केला आहे.

3) त्यांनी चित्रपट पाहिला आहे.

4) मुले मैदानावर गेली आहेत.

5) आम्ही जेवण केले आहेत.

4) रिती वर्तमान काळः-

- रित म्हणजे पद्धत, सवय, वर्तमानकाळात एखादी क्रिया करण्याची सवय असेल कर ती रितीवर्तमान काळात सांभतात.
- वाक्यात संथुलत क्रियापद (त+असलो / असते / असतात)
 - साध्या वर्तमान काळाच्या वाक्यात जेव्हा दरशेज, नेहमी, नियमीत, नित्य, सतत, सदा, वारंवार हे शब्द येतात, वेळा त्या वाक्याचा काळ रिती वर्तमानकाळ असतो.

उदा:-

- 1) तू नेहमी फोनवर बोलत असतेस.
- 2) मी नियमित अभ्यास करत असलो.
- 3) तू नेहमी तिच्याकडे का पाहत असतोस.
- 4) मी नियमित पुस्तक वाचतो.
- 5) मी रोज पहाटे उहतो.

5) सन्निहित भूतकाळः-

- सन्निहित म्हणजे जवळचा, बुक्ताव घडलेला.
- बुक्त्याच घडलेल्या भूतकाळावद्दल सांगताना वर्तमानकाळाचा वापर करतात, त्यास सन्निहित भूतकाळ म्हणतात.

उदा:-

- 1) संध्या शाळेतून येते तोच पाऊस सुरु झाला.
- 2) गुरुजी वर्गीत येतात तोच मुले पसार झाली.
- 3) मी छत्री उघडतो तोच पाऊस सुरु झाला.

6) संनिहित भविष्यकाळ :-

जवळचा भविष्यकाळ दाखविण्यासाठी वर्तमानकाळाचा
वापर करतात त्यास सन्निहित भविष्यकाळ म्हणतात.

- पहिले वाक्य आशार्थी असते.

उदा:-

1) तू विचार मी शांगतोच → आशार्थी

2) तुम्ही बसा मी येतोच → आशार्थी

2] भूत काळ

1) साथा भूतकाळ :-

भूतकाळात घडलेली घटना सांगव्यासाठी आव्या भूतकाळाचा वापर करतात.

- वाक्यात एकच क्रियापद येते
- मूळ वाचनाला 'अ' प्रत्यय लागवो.

उदाः:-

1) तू काल दिवसमर जोपलास.

2) तुम्ही चित्रपट पाहिलात.

3) याने मुश्तक वाचले.

4) यांनी एकमेकांकडे पाहिले.

5) आम्ही काल अश्यास केला.

- काही व्याख्याती भूतकाळी रूपे वेशळ्या पदब्धतीने देतात:-

| मूळवात्र | | भूतकाळी रूपे |
|----------|---|--------------|
| 1) जा | - | घोला |
| 2) ये | - | आला |
| 3) हे | - | दिला |
| 4) कर | - | केला |
| 5) आ | - | खाल्ला |
| 6) मर | - | मीला |

- भूलकाळी रूपे होताना 'अ'चा 'आ' देतो:-

| मूळवात्र (अ) | | भूतकाळी रूपे (आ) |
|--------------|---|------------------|
| 1) निघ | - | निघला |
| 2) पळ | - | पळला |

३) उड - उड़ाला

४) बूड - बूड़ाला

- मूतकाळी संरूप होताना 'त' चा आगम होतो:-

मूलधातृ

मूतकाळी संरूप (त)

१) घे - घेतला

२) थू - थुतला

३) घाल - घालतला

२) अपूर्ण मूतकाळ :-

आपण बोलतेवेळी मूतकाळात एखादी क्रिया चालू होती हे दाखवव्यासाठी अपूर्ण मूतकाळाचा वापर होतो.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (त + होता)

उदा :-

१) आम्ही नाचत होतो.

२) सचिन क्रिकेट खेळत होता.

३) झी सिनेमा पाहत होतो.

४) तुम्ही काय करत होतात.

५) तू का पळत होतास.

६) पूर्ण मूतकाळ :- क्रिया मूतकाळात पूर्ण झाली हे सांगव्यासाठी पूर्ण मूतकाळ वापरतात.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (स + होता).

उदा :-

- 1) त्याने काम केले होते
- 2) आम्ही चित्रपट पाहिला होता
- 3) तिने गांगे गायले होते.
- 4) मी गांगे ऐकले होते
- 5) तुम्ही चित्रपट पाहिले होते.

4) रिती भूतकाळ :-

या काळावश्यक क्रियेची भूतकाळातील स्तंषा समजते.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (त + असे)

उदा :-

- 1) ती शाळेत जात असे.
- 2) तो झाडत असे.
- 3) तुम्ही व्याकरण शिकवत असत.
- 4) आम्ही व्याकरण शिकत असू.
- 5) तू घेवत असे.
- 6) मी अभ्यास करत असे.

5) सन्निहित भविष्यकाळ :-

सन्निहित म्हणजे जवळचा, जवळचा भविष्यकाळ दाखविल्यासाठी भूतकाळाचा वापर करतात.

उदा :-

- 1) ती पाहा, वस आली (येणार आहे)

2) तो पाहा, पोष्टमन आला (येणर आहे)

6) निःसंशय भविष्यकाळः :-

एखादी क्रिया भविष्यात आप्नीने घडणार असेल, तर ती साच्या भविष्यकाळात सांगितली जाते, त्यास निःसंशय भविष्यकाळ असे म्हणतात.

उदा :-

1) देवाची घकती केली की फळ मिळालेच म्हणून समजा.

2) चूक झाली की शिक्षा मिळालीच म्हणून समजा.

3) जवळ आला की मार मिळालाच म्हणून समजा.

अ) भविष्यकाल

1) साथा भविष्यकाल :-

एष्यादी क्रिया पुढे घडेल हे शोभ्यव्याख्यादी साध्या भविष्यकाकाचा वापर करतात.

- वाक्यात एकच क्रियापद येते.

- मळ खात्यां ईन / ईल / एन / एन इत्यादी प्रत्यय लागतात.

उदा :-

1) वू विनपट पाढ्याल

2) आम्ही क्रिकेट खेळू

3) तो जेवण करेल

4) ती गाणे गाईल

5) तुम्ही सिनेमाला जाल

6) तुम्ही उद्या रात्री पोहोचाल

7) ती मला झेटैल

8) मी काम करील

2) अपूर्ण भविष्यकाल :-

भविष्यात क्रिया चालू असेल वी द्वाख्यव्याख्याती अपूर्ण भविष्यकाल वापरतात.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (त + असेल / असेन)

उदा :-

1) मी भाड्यास करू असेन

2) तुम्ही उद्या मुंवईला पोहवतू असाल

3) मुले मैदानावर खेळू असलील

- ४) तो क्रिकेट खेळत असेल
- ५) ती निवंद्य लिहित असेल
- ६) आम्ही जेवण करत असू
- ७) आम्ही उद्या खेळत असू

३) पूर्ण भविष्यकाळ :-

भविष्यात एखादी क्रिया पूर्ण झालेली असेल हे दाखवण्यासाठी पूर्ण भविष्यकाळ वापरलात.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (ल + असेल)

उदा :-

- १) मी अभ्यास केला असेल
- २) तिने गांे रहिले असेल
- ३) आम्ही चिन्पट पाहिला असेन
- ४) त्याने मेटकाई बनवले असेल
- ५) तुम्ही प्रवास पूर्ण केला असाल
- ६) तुझी परीक्षा झाली असेल.

४) रिती भविष्यकाळ :-

वर्तमानातील सवय भविष्य काळातही चालू आहे हे सांगण्यासाठी रिती भविष्यकाळ वापरतात.

- वाक्यात संयुक्त क्रियापद (त + जाहिन / राहील / जाहिल)

उदा :-

- १) मी अभ्यास करत जाहीन.

२) दू क्रिकेट खेळत राहील.

३) ती गांवे म्हणत राहील.

४) आम्ही सर्वांची काळजी घेत राहू.

५) तुम्ही आधार करत राहाल.

६) वो सर्वांना मदत करत राहीन.

सारांश

| | साथा | अपूर्ण | पूर्ण | रिती |
|---------|------|----------|----------|-----------------------|
| वर्तमान | त | त + आहे | त + आहे | त + असतो |
| भूतकाळ | ब | त + होता | त + होता | त + असे |
| भविष्य | ईल | त + असेन | त + असेन | त + शहीन त + जाहिन |

काही प्रश्न

१) रमेश उद्या गावाला जागार नाही → साथा भविष्यकाळ.

२) तो घरे बोलत नाही → साथा वर्तमानकाळ.

३) तो गावाला घेलेला नक्हता → पूर्ण भूतकाळ.

४) तो कषीच गावाला जात नाही → रिती वर्तमानकाळ.

५) तो कोणचेही ऐकत नसे → रिती भूतकाळ.

- ६) तो कोणाचेही ऐकणर नाही \rightarrow साथा भविष्यकाळ
७) त्याने चित्रपट पाहिलेला नाही \rightarrow पूर्ण वर्तमानकाळ.
८) तो काम करत नाही \rightarrow साथा वर्तमानकाळ.

क्रियापदाचे अर्थ

- क्रियापदाच्या स्पावरून जेण्ठा आज्ञा, विनंती, उपदेश, प्रार्थना, सल्ला, कर्तव्य, शक्यता, योग्यता, इच्छा इ. अर्थ व्यक्त होतात. तेहा व्यास क्रियापदाचे अर्थ असे महणतात.
- क्रियापदाच्या अर्थाचे चार प्रकार पडतात.

1) स्वार्थः

2) आज्ञार्थः

3) विष्णवर्थः

4) संकेतार्थः

1) स्वार्थी क्रियापद :-

ज्या क्रियापदाबा स्वतःद्याचा अर्थ असतो व जे क्रियापद काळाशिवाय इतर अर्थ व्यक्त करत नाही, अशा क्रियापदाबा स्वार्थी क्रियापद असे महणतात.

उदा:-

1) मर्जी उंच उडाला

2) गायी शनातून परत आल्या

3) आज आकाशात चंद्रकोर दिसली

4) सुर्य पूर्वेस उगवलो

5) उद्या पाऊस पडणार नाही

2) आज्ञार्थी क्रियापद :-

क्रियापदाच्या स्पावरून आज्ञा विनंती, उपदेश, आशीर्वाद, प्रार्थना, सल्ला, माणारी, परवानगी, अनुमोदन इ. अर्थ व्यक्त होतात, तेहा व्या क्रियापदास आज्ञार्थी क्रियापद असे महणतात.

- आज्ञार्थी वाक्याच्या शेवटी मूळबाबू येतो

उदा:-

- 1) तू वाजारातून लवकर ये - आज्ञा.
- 2) या चौराळा तुरुंगात न्या - आज्ञा.
- 3) मलाही सहलीला येऊ द्या - विनंती.
- 4) देवा मला पास कर - प्रार्थना.
- 5) देव तुमचे मले करो - आशीर्वाद.
- 6) देवा सर्विना सद्गुद्धी दे - प्रार्थना.
- 7) गुरुजी, मी आत येऊ १ - अनुमोदन / परवानगी.
- 8) तुम्ही दूरसोज पहाटे फिरायला जात जा - सल्ला.
- 9) तू हे प्रकरण पोलिसांकडे नो - सल्ला.
- 10) मला ५० रुपये द्या - मागणी.
- 11) तू आईबडीलांची सेवा करायला पाहिजेस - उपदेश.

3) विष्णुर्थी क्रियापदः:-

विष्णुर्थी म्हणजे कर्तव्य, जेळा क्रियापदाच्या स्पावसन कर्तव्य, योग्यता, शक्यता, इच्छा, चिंता, तर्क इ. अर्थ व्यक्त होतात, तेळा त्या क्रियापदास विष्णुर्थी क्रियापद असे म्हणतात.

- मूळवातूला वा, वि, वे प्रत्यय बागतो.

उदा :-

- 1) मुलांनी आईबडीलांचा मान राखावा → कर्तव्य.
- 2) असावा सुंदर चौकलेट चा वंगला → इच्छा.

- ३) आता तो चित्रपटभृङाल असावा \rightarrow शक्यता.
- ४) बाणे आवे तर बतादिवीनीच \rightarrow योग्यता.
- ५) द्विशतक झळकवावे तर रोहितनेच \rightarrow योग्यता.
- ६) अशा प्रसंगी त्यांनी करावे तरी काय \rightarrow चिंता
- ७) वर्गीत गोंगाट आहे, वहुषा शिक्षक वर्गीत नसावेत \rightarrow तर्क
- ८) या पशीदेत नव्हीच मला प्रश्नम क्रमांक मिळावा \rightarrow शक्यता.
- ९) आता तो मैदानावर क्रिकेट खेळत असावा \rightarrow शक्यता.

४) संकेतार्थी क्रियापद:-

संकेत न्हणजे 'अट', जेव्हा क्रियापदाच्या स्पर्शन 'जर-तर' अशी अट हशीविली जाते तेष्वा ते क्रियापद संकेतार्थी क्रियापद असते.

उदा:-

- १) आगझी ढोडे शिकला असलास तर नोकरी मिळाली असती.
- २) जर पाळस चोंगला पडला असता तर पिके चोंगली आली असती.
- ३) जर वेळीच पाण्याची व्यत केली असती लर पाणीटंचाई जागवली नसती.

क्रियापदाचा आख्यात विचार

- संस्कृत मध्ये क्रियापदाला 'आख्यात' असे महगतात.
- क्रियापदाचा रूपावरून काळ व अर्थ यांचा बोध होतो, तसेच क्रियापदाला काळाचे व अर्थाचे विकार(वहल) होतात या विकारांना आख्यात विकार असे महगतात.

आख्यात प्रत्यय:- हे विकार दाखवण्यासाठी क्रियापदाला जे प्रत्यय लागतात त्या प्रत्ययांना आख्यात प्रत्यय महगतात.

- मराठीत आत आख्याते मानली जातात:
- चार - काळाची
- तीन - अर्थाची

| <u>काळ व अर्थ</u> | <u>उदा.</u> | <u>आख्यात</u> <u>प्रत्यय</u> | <u>आख्याताचे नाव</u> |
|---------------------|------------------------------|---------------------------------|----------------------|
| <u>वर्तमान काळ</u> | तो खेळतो | त | प्रथम त-आख्यात |
| <u>भूत काळ</u> | तो खेळला | ल | ल-आख्यात |
| <u>रिती भूत काळ</u> | तो चेष्टा | इ | ई-आख्यात |
| <u>शविष्य काळ</u> | तो खेळले | ईल | ईल-आख्यात |
| <u>आज्ञार्थी</u> | मी खेळूळू | ऊ | ऊ-आख्यात |
| <u>विष्यर्थी</u> | त्याने खेळावे | व | व-आख्यात |
| <u>संकेतार्थी</u> | तो खेळता तर वरे झाले असले | त | द्वितीय त-आख्यात |

क्रियाविशेषण

- क्रियापदाचे विशेषण म्हणजेच क्रियाविशेषण होय.
- क्रियापदावद्दल माहिती सांबणाऱ्या शब्दाला क्रियाविशेषण असे म्हणतात.
- क्रिया केळा घडली कोठे घडली कशी घडली व किती प्रमाणात घडली हे दर्शविणाऱ्या शब्दांना क्रियाविशेषण असे म्हणतात.
- क्रियेचे स्थळ, काळ, शीत आणि प्रमाण दर्शविणारे शब्द म्हणजे क्रियाविशेषण होय.
- वाक्य पृथक्करणात क्रियाविशेषण, विषेय विस्ताराचे कार्य करतात.
- काढी क्रियाविशेषणे किंवा असतात नर काढी अविकाशी असतात.
- जेळा क्रियाविशेषण विकारी असते लेळा त्यास फक्त क्रियाविशेषण असे म्हणतात.
- जेळा क्रियाविशेषण अविकाशी असतात तेळा त्याना क्रियाविशेषण अव्यय असे म्हणतात.
- क्रियाविशेषण व क्रियाविशेषण अव्यय आंतील फरक शब्दनीस यांनी सोगीतला.

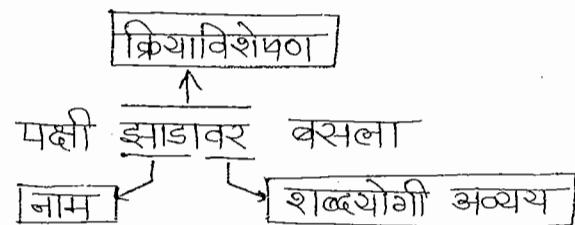
उदा: १) मुलगा चांगला गातो. } क्रियाविशेषण (विकारी)
 मुलगी चांगली गाते. }

मुलगा जोशात छावलो. }
 मुलगी जोशात छावते. } क्रियाविशेषण अव्यय (अविकाशी)
 मुले जोशात छावतात. }

- क्रियाविशेषणे वाक्यात सकर्मक व अकर्मक या होन्ही प्रकारच्या क्रियापदावशेषर येते.
- क्रियाविशेषणाचे वाक्यातील स्थान निश्चित नसते, ते शुस्तवातीला, मध्ये, खोवटी कोठेही येऊ शकते.

- एखाद्या नामाला शब्दयोगी अव्यय जोडल्यास लो शब्द जर स्थळ-आणि काळ दाखवत असेल, तर तो पूर्ण शब्द क्रियाविशेषणाचे कार्य करतो.

उदा:-



- एखाद्या नामाला सातमी विभक्तीचे प्रत्यय बांगल्यास लो शब्द क्रियाविशेषणाचे कार्य करतो.

उदा:- 1) सर्व लोक गावात राहतात.
क्रियाविशेषण

2) सुरेश आज लवकर घरी घेला
क्रिया.वि.

- क्रियाविशेषणाचे प्रकार :-



क्रियाविशेषण

[1] अधिमूलक

1) इथलवाचक
2) कालवाचक

1) स्थितीवर्द्धक
2) ग्रानीदर्शक
3) सातत्यवर्द्धक
4) ज्ञातुलीबर्द्धक

3) शीतीवाचक
4) प्रश्नमात्रवाचक

1) प्रकारवर्द्धक
2) निष्पत्यवर्द्धक
3) उत्तुकरणादर्शक
4) प्रतीतादर्शक - (जीवव्यास तेवहे)

[2] स्वरूपमूलक

1) सिद्ध
2) साधित
3) रस्तानिक

1) नामस्याधित
2) आत्मस्याधित
3) सर्वनामस्याधित
4) एकाक्षरी

1) प्रस्तावक
2) निषेषाधिक
3) आवृहवाचक

5) समासधित

- क्रियाविशेषणाचे सिद्धृ, साधित व स्थानिक असे प्रकार मोळे दामले यांनी पाडले.

1) अर्थमुलक :-

① स्थलवाचक :- क्रियेचे ठिकाण दर्शवणाऱ्या क्रियाविशेषणांना स्थलवाचक क्रियाविशेषणे रहणात.

- स्थलवाचक क्रियाविशेषणे कोरे, कोरून, कुठपर्यंत ची उत्तरे असतात.

2] स्थितीदर्शक स्थलवाचक क्रियाविशेषण अव्यय :-

क्रियेचे निश्चित ठिकाण दर्शवणाऱ्या क्रियाविशेष-
णांना स्थितीदर्शक क्रियाविशेषणे असे रहणातात.

- कोरे १ चे उत्तर.

उदा :- इथे, तिथे, इकडे, तिकडे, जिकडे, अलीकडे, पलीकडे, आत, वाहेर, मागे, पुढे, मध्ये, सर्वत्र, सभोवा, सगळीकडे, चोहीकडे.

2] गतीदर्शक स्थलवाचक क्रियाविशेषण अव्यय :-

क्रियेची गती दर्शवणाऱ्या क्रियाविशेषणांना गतीदर्शक-
क्रियाविशेषण अव्यय असे रहणातात.

- कोरून, कुठपर्यंतचे उत्तर.

- स्थितीदर्शक क्रियाविशेषण अव्ययांना 'अन' प्रत्यय लावला की ती,
गतीदर्शक क्रियाविशेषण अव्यय बनतात.

उदा :- इथून, तिथून, इकइन, तिकइन, जिकइन, अलीकइन, आतून,
पलीकइन, वाहेझन, पुढून, मागून, मधून, सगळीकइन.

उदा :-

१) त्या तिथे, पलीकडे, तिकडे, माझीया प्रियेचे झोपडे.

स्थितीदर्शक क्रियाविशेषण अव्यय

2) जेथे जातो तेथे तू माझा सांगली.
↓
स्थितीदर्शक

3) कोरे बुडाला तो सोन्याचा गोळा.
↓
स्थितीदर्शक

4) अहो खाली काय वसलात वर वसा की.
↓
स्थितीदर्शक

5) काळचा पाऊस सगळीकडे पडला.
↓
स्थितीदर्शक

6) आनंदी आनंद घडे जिकडे, निकडे, चोहीकडे.
↓
स्थितीदर्शक

7) जो तो आपुल्या जागी जखडे नजर न वावे तटा-पलीकडे
↓
स्थितीदर्शक

8) माझ्या समोरुन साप ढोला.
↓
गतीदर्शक

9) नवे फुंकीले सोनारे इकडून तिकडे घोले वारे.
↓
गतीदर्शक स्थितीदर्शक

10) विमाने आल्हून वर झेपावली
↓
गतीदर्शक

11) इथपासून सर्व आमचीच घरे आहेत.
↓
गतीदर्शक

१२) येञ्चन नदी जवळ आहे
गतीदर्शक

② कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय :-

क्रिया केळा घडली हे दर्शवणाऱ्या क्रियाविशेषणांना
कालवाचक क्रियाविशेषण असे म्हणतात.

१) कालदर्शक / क्षणवाचक :-

कालदर्शक :- आज, आता, नावडतोव, लगेच, पूर्वी, नंतर, काल,
उद्या, परवा, अलीकडे, मागे, पुढे, हल्ळी, सच्चा,
सांप्रत, तात्काळ, केळा, जेळा, तेळा, इ.

प्रकार :-

१) सातत्यदर्शक :- सदा, सर्वदा, सतत, नित्य, चेहमी, निषमीत, अदोवीत
अवधीवाचक रात्रभूर, दिवसभूर, → (शतोरात)

२) आवृत्तीदर्शक :- मुनःपुन्हा, वारंवार, क्षणोक्षणी, सालोसाल, दररोज,
दरमहा, दरसाल

उदा :-

१) काल शाळेला सुट्टी होती
कालदर्शक

२) पूर्वी शिष्क पांगोटे घालत
कालदर्शक

३) काल पाहिले मी स्वप्न नवे
कालदर्शक

४) तो विक्रेता नेहमी आमच्याकडे येत असतो
सातत्यदर्शक.

५) सदा सर्वदा योग तुळा घडावा.
सातत्यदर्शक

६) तो वारंवार आजारी पडते.
आवृत्तिदर्शक

७) मुलांनी शतोरात मंडप उमारला
सातत्यदर्शक

८) आम्ही दरवर्धी महाक्लेश्वरला जाते
आवृत्तिदर्शक

९) मी दृशेज व्यायाम करते.
आवृत्तिदर्शक

:एक अव्यय वाक्यात दोन वेभवेगाच्या प्रकारे कार्य करते:

१) मार्गे एकदा भेट झाली होती.
कालदर्शक

गावाच्या मार्गे नदी आहे.
स्थितीदर्शक

२) गावाच्या अलीकडे लगेच नदी लागते.
स्थितीदर्शक

अलीकडे तो मला दिसलाच नाही.
कालदर्शक

३) मी पुढे पाहिले; पण काही दिसलेच नाही.
स्थितीदर्शक

वाका म्हणाले, "पुढे पाहा काय होतं ते!"
कालदर्शक

७) शीतीवाचक क्रियाविशेषण:-

क्रिया कर्ती घडली हे सांगणाऱ्या क्रियाविशेषणांना शीतीवाचक क्रियाविशेषण असे महतात.

प्रकार :-

१) प्रकारदर्शक :- वेगात, सावकाश, जलद, जोशात, हळू, वेगाने, मुद्दाम, उगीच, मोफत, फूट, कसे, जसे, लसे, व्यर्थ, आपोआप, अवचित.

२) निश्चयदर्शक :- निश्चित, नवकी, खचीत (खरोखर), निःसंशय, निशुण, निष्पालस, खुशाल.

३) अनुकरणदर्शक / :- पटपट, भरभर, चमचम, छमछम, तुरुतुरु, ऊईऊई, घवन्यानुकरणदर्शक रिपरिप, रुनुझुनु, दुङ्दुङ्दु, पटकन, झटकन, चटकन, इटपट, बदावद, आडकन, खडाखड, लुडलुड.

उदाः-

१) वाळाने पटकन उडी मारली
अनुकरणदर्शक

२) जाताना सावकाश जा
बातूसाधित प्रकारदर्शक
क्रियावि.

३) पाणी छाटगाय पिऊ नकोस
अनुदर्शक

४) त्याला नवकी अश मिळेल
निश्चयदर्शक

५) मी तुम्हाला निशुण सांगतोय
निश्चय

6) वावांनी मला मुद्दाम पाठवले आहे.
प्रकारदर्शक.

7) आकाशान तरि चमचम करतात.
नामसाधित अनुदर्शक
क्रियावि.

8) मी हाटपट सांगतो तुम्ही पटपट लिहा
अनुदर्शक.

9) कुत्रा जलद घावतो
प्रकारदर्शक.

10) असे कसे हे घडले अवचीत
प्रकारदर्शक.

(4) परिमाणवाचक / संख्यावाचक क्रियाविशेषण :-

क्रिया कितीवेळा घडली, क्रिया किती प्रमाणात घडली हे सांगणाऱ्या क्रियाविशेषणांना परिमाणवाचक क्रियाविशेषण असे म्हणतात.

- प्रकार :-

1] प्रकर्षदर्शक :-

प्रकर्ष म्हणजे जास्त, जास्तपणा द्वाखवणारी क्रियाविशेषणे - खूप, पुष्कळ, अदिक, अतिशय, कार, बहुत, अत्यंत, सर्वथा, साफ, विलकूल.

2] अल्पत्वदर्शक (कमी) :-

अगदी, कमी, ओडे, जरा, कवचित, काही.

3] पूर्तीत्वदर्शक :- पूरे, पुरेसे, वेताचे, माफक, बरोबर, यथास्थित,

उदा:-

- 1) वृद्धांनी कमी खावे जास्त जगावे
 ↓
 अभ्यर्थक

2) आपण आता माझे योडे एका
 ↓
 अल्पवद्दर्शक

3) त्याने अत्यंत नम्रपणे जबाबदारी स्विकारली
 ↓
 प्रकर्षदर्शक

4) मला अगदी शोडा चहा छ्वा
 ↓
 विशेषण

5) जरा इकडे ये.
 ↓
 अल्पवद्दर्शक

2] स्वरूपमूलक :-

प्रकार :-

1] सिद्ध क्रियाविशेषण :-

मूळच्या क्रियाविशेषणांना सिद्ध क्रियाविशेषणे असे म्हणतात.

- कमी, आज, आता, इकडे, तिकडे, जास्त, इ.

2] साधित क्रियाविशेषण :-

इतर शब्दांपासून बनलेल्या क्रियाविशेषणांना साधित क्रियाविशेषणे असे म्हणतात.

प्रकार :-

- 1] नामसाधित :- व्यक्तीशः, वस्तुः, दिवसा, रात्री, घरी, जागी, भरात, शब्दशः, अद्वरशः.

- 2] सर्वनामसाधित :- असे, तसे, कसे, जसे, कोणीकडे, कोणीकडून, जोपर्यंत, तोपर्यंत, ज्याआधी, त्याआधी, ज्यामुळे, त्यामुळे.

- 3] विशेषणसाधित :- एकदा, दोनदा, दहादा, शंभरदा, हजारदा, लांवून, दुसऱ्यान, जवळन,

- 4] आत्साधित :- असत, रडत, ओळत, कळत, नकळत, घेऊन, जाऊन, थावताना, उठताना, वसताना, खाताना.

- 5] समासघटित :- आजन्म, आमरा, अथाशक्ती, घरोघरी, गावोगावी, जागोजागी, दरशोज, समोरासमोर
(अव्ययभाव समास)

उदा :-

1) गेला माथव कुणीकडे
सर्वनामसाधित

2) आम्ही अनेकदा मेटलो
विशेषणसाधित

3) त्याने हसत-हसत विषय वदलला
आत्साधित

4) छांदरट छनश्री बावताना घपकन पडली.
आत्साधित

5) मी आलाच जेवून वसलो
आत्साधित

6) जो पर्यंत पाऊस पडत नाही तो पर्यंत शेतकऱ्यांचे काही खरे
नाही. सर्वनामसाधित

7) तो आजन्म ब्रह्मचारी राहिला
समासधित.

३) स्थानिक क्रियाविशेषण:-

नामे, सर्वनामे, विशेषणे, अव्यय वाक्यात जशीच्या-
तशी घेतात व क्रियापदावद्दुळ माहिती सांडलात महणजेच क्रियाविशे-
षणाचे कार्य करतात, तेव्हा त्यांना स्थानिक क्रियाविशेषणे असे
महणतात.

उदा:-

१) व्याला काय माती माहितीय

नाम

स्थानिक क्रि.वि.

२) हिमेश काय कपाळ शातो!

नाम

स्थानिक क्रि.वि.

३) शवाई गंधर्व संगीत महोत्सवात भीमसेन काय गायिलेत

सर्वनाम

स्थानिक क्रि.वि.

४) हा पेटरा उचलायला चार माठाशे तरी लागतील.

उभा अव्यय

स्थानिक क्रि.वि.

4) एकाक्षरी क्रियाविशेषण :-

उदा:-

1) न माझे तयाची रमा होय दासी.
→ निषेषार्थक.

2) कुठे गेलास तू न सोंगता न बोलता
→ निषेषार्थक.

3) ए माझ्याशी बोल ना.
→ आव्रहवाचक.

4) माझा एवढा निशेप सोना ना.
→ आव्रहवाचक.

5) कुणी कोडे माझे उकलील का ?
→ प्रश्नार्थक.

6) का तू माझ्याशी असं वागतेस ?
→ प्रश्नार्थक.

2) शब्दयोगी अव्यय

- जी अव्यये नामा-सर्वनामांना जोडून घेतात व त्याचा वाक्यातील इतर शब्दांशी संबंध हर्षवितात त्यांना शब्दयोगी अव्यय असे, म्हणतात. - (मो. के. दामले)
- नामार्थक शब्दांशी योग करून घेऊन क्रियाविशेषणाचा अर्थ व्यक्त करणाऱ्या व त्या नामाचा क्रियापदांशी संबंध जोडणाऱ्या अव्ययांना शब्दयोगी अव्यय असे म्हणतात. - (गो. ग. आग्रकर)
- ज्या शब्दांचा योग नामवाचक शब्दांशीच होतो त्याचे व्याक्या-योगाने सामान्यरूप होते, त्यास शब्दयोगी अव्यय असे म्हणतात. - (दादेबा पांडुरंग तर्खडकर)
- शब्दयोगी अव्यये शब्दाभा जोडून लिहिली जातात, ती सूटी लिहिली जात नाहीत.
- शब्दयोगी अव्यय शब्दाभा जोडताना [नामाचे] सामान्य रूप होते.
- शब्दयोगी अव्यय ज्या शब्दाभा जोडलेले असते त्या शब्दाचा वाक्यातील इतर शब्दांशी संबंध जोडणे हे शब्दयोगी अव्ययाचे गुण कार्य आहे.

*शब्दयोगी अव्यय व क्रियाविशेषण अव्यय चांतील फरक :-

- क्रियाविशेषण अव्यये वाक्यात स्वतंत्रपणे वापरली जातात, तरी शब्दयोगी अव्यये शब्दाभा जोडूनच वापरली जातात.

उदा:-

1) दशव्यानंतर दिवाळी आलीच → शब्दयोगी अव्यय

2) सगळी फळे नंतर आणा. → क्रियाविशेषण अव्यय

⇒ शामावाचून अयोष्येतील जनतेचे सर्व काढी अडले
 नाम

⇒ लहानांपुढे सोडयांनी वळ दाखवू नये.
 विशेषण

⇒ तुश्याविना मला मुळीच करमत नाही
 सर्वनाम

⇒ तुझे गीत घाष्यासाठी सूर लागूदे
 खात्र

⇒ इथपासून तिथपर्यंत आमचीच हद्द आहे
 → क्रियाविशेषण अव्यय

- शब्दयोगी अव्यय नाम-सर्वनामांकरोकर इतर शब्दांनाही जो इन घेतात.

* शब्दयोगी अव्ययाचे प्रकार :-

विभक्ती
↓

⇒ कालवाचक शब्दयोगी अव्यय :- (सप्तमी)

→ पूर्वी, नंतर, मागे, पुढे, पर्यंत, पावेतो, आणी, अंती, शेवटचे

2) स्थलवाचक : श.अ. :- (सप्तमी)

→ आत, वाहेर, मागे, पुढे, मध्ये, जवळ, पाशी, समेर, वर,
खाली, झोवती, कडे, गयी, नजीक, समीप.

३) करणवाचक शा.अ. : (तृतीया)

→ योजे, सुले, करवी, कडून, द्वारा, हालून

४) हेतु / उद्दिष्टवाचक शा.अ. : (चतुर्थी)

→ साठी, करिता, काऱणे, अर्थी, प्रित्यर्थ, निमित्त, स्तव,

५) तुलनावाचक शा.अ. / तरतमशावस्युचक : (पंचमी)

→ तर, तम, मेहो, परिस, मध्ये

६) व्यतिरेकवाचक शा.अ. : (पंचमी)

→ शिवाय, औरीज, विना, वाचून, व्यतिरिक्त, परता.

७) ओष्ठतादर्शक शा.अ. : (तृतीया)

→ ओष्ठ, सारखा, सम, समान, प्रमाणे, वरहुकूम.

८) साहचर्यदर्शक शा.अ. : (तृतीया)

→ सह, बरोबर, सवे, संगे, सहित, सकट, निशी, समवेत.

९) संबंधवाचक शा.अ. : (षष्ठी)

→ संबंधी, विशी, वद्धल, विघ्याती.

१०) द्विादर्शक शा.अ. : (द्वितीया)

→ कडे, प्रत, प्रती, आघी, लागोनि.

11) विनीमयवाचक शा.अ.:

→ बद्दल, ऐवजी, जागी, बदली

12) विरोधवाचक शा.अ.:

→ विरुद्ध, उलट, उलटे

13) आगवाचक शा.अ.:

→ पैकी, आदून,

14) परिमाणवाचक शा.अ.:

→ मर

* 15) केवल्यवाचक शा.अ.:

→ केवल, मात्र, फक्त, च, ना, वरीक

* 16) संग्रहवाचक शा.अ.:

→ सुदृष्टा, देखील, पण, ही

१७) संस्कृत शब्दशोधी अव्यय :

→ पर्यात, विना, समीप, समक्ष, परोक्ष.

| - | <u>समक्ष</u> ↓ समीर | <u>परोक्ष</u> ↓ आपल्या पाहीमार्गे | <u>अपरोक्ष</u> ↓ समोर |
|---|---------------------------|--|-----------------------------|
|---|---------------------------|--|-----------------------------|

१८) विशेषणसाधित :

→ सम, सारखा, समान, सहित,

१९) आवृत्साधित :

→ देखत, देखील, करिता, लागी, लागून

२०) नामसाधित :

→ हातून, हाती (हात), पाथी (पाय), विषयी (विषय), संवंधी (संवंध) अर्थी (अर्थ), प्रमाणे (प्रमाण), मष्टे (मष्ट), कारणे (कारण), शेवटी (शेवट), दुवारा (द्वारा), मुळे (मूळ)

उदा :-

१) सांखरेखजी गूळ ल्या → विनिमयवाचक.

२) तुमच्यासारी कायपण → हेतूवाचक.

३) सूर्योपेक्षा तेजस्वी कोण आहे → तुलनावाचक.

४) तुम्हावर केली मी मर्जी वहाल → स्थलवाचक.

५) दगडापेक्षा विट मऊ → तुलना.

- 6) शेरभर दूष्ट द्या → परिमाणवाचक
- 7) घराजवळ विजेचा स्वांव आहे. → स्थलवाचक
- 8) सर्वमध्ये ही मुलगी उठून दिसते → तुलनावाचक
- 9) घरामधे वन्याच वस्तु आहेत → स्थलवाचक
- 10) शिवाजी महाराजांवद्दल कोणाबाबी अभिमान वाटतो.
→ संबंधीवाचक
- 11) त्यावद्दल मला काय मिळेला → विनिमयवाचक
- 12) कबीही, कुठेही, कुणीही सांडोल असा सोपा मंत्र आहे हा
→ संग्रहवाचक
- 13) हनुमानच समुद्र लंघून जाऊ शकतो. → कैवल्यदर्शक
- 14) आज आपली ह.आफ्रिके विसद्धि चैंच आहे. → विरोचनदर्शक
- 15) कृष्णासमंता शाम सावळा → योग्यतादर्शक
- 16) माणसाची छाव अज्ञाताकडून ज्ञाताकडे असते → दिशादर्शक
- 17) नियतीपुढे कोणाचेही चालत नाही. → स्थलवाचक
- 18) तुड्यावाचून मला मुळीच करमत नाही. - व्यतिरेकवाचक

* शुद्ध शब्दयोगी अव्यय :-

जी शब्दयोगी अव्यये नामाला जोडली जात
असताना नामाचे सामान्यरूप होत नाही अशा शब्दयोगी अव्ययांना
शुद्ध शब्दयोगी अव्यय असे म्हणतात.

- (च), (ना), (ही), सुदृष्टा, देखील, पण, मात्र

उदा:-

1) शमावरे^{वर} सीतासुदृष्टा वनात गेली.
 ↓
 साहचर्य शुद्ध श.अ.

2) कवी-कवी प्राणीही माणसासारखे वागतात.
 ↓
 शुद्ध श.अ.

3) तूपण आमच्यावरोवर चल
 ↓
 शुद्ध श.अ.

4) देवसुदृष्टा अक्तोंसाठी खावळ थेतो
 ↓
 शुद्ध श.अ.

5) सर्वजग मुढे गेले मात्र एकमुलगी मागे शहिली.
 ↓
 शुद्ध श.अ.

6) देवच कातीतरी कर शकली.
 ↓
 शुद्ध श.अ.

7) देवदेखील माणसर आहे.
 ↓
 शुद्ध श.अ.

8) तोना! माहित आहे.
 ↓
 शुद्ध श.अ.

9) लहमणही रामावरोवर वनात गेला.
 ↓
 शुद्ध श.अ.

੩) ਤੁਭਯਾਨਵਥੀ ਅਵਧਿ

- उभय महणजे दोन आगी अन्वय महणजे संवंध
 - दोन शब्द किंवा दोन वाक्य यांचा संवंध द्वाखावप्यासाठी किंवा दोन शब्द किंवा दोन वाक्य जोडप्यासाठी वापरल्या जाणाऱ्या अव्ययांना, उभयान्वयी अव्यय असे महणतात.
 - उभयान्वयी अव्ययाचे दोन प्रकार पडतात :-

- 1) प्रथान्तरसूचक उभयान्वयी अव्ययः-

2) ग्रीष्मान्तरसूचक उभयान्वयी अव्ययः-

* उपवास्य :-

एका मोऱ्या वाक्यात जी छोटीछोटी वाक्ये येतात, अशा वाक्यांना उपवाक्य असे म्हणतात.

- उपवाक्याचे दोन प्रकार पडतात :-

उपवाक्य

उदा :-

१) प्रधान उपवास्त्व :-

जे उपवाक्य अर्थात्या दृष्टीने श्वलंत्र असते, दुसर्या वाक्यावरती ऊबलं द्वून नेसते, अशा वाक्याला प्रधान उपवाक्य असे महणतात.

उद्दा:-

सचिनने शतक इल्लकावले; पण भारताने सामना घमावला

2) गौण उपवाक्य :-

जे उपवाक्य अर्थाच्या दृष्टीने प्रथान उपवाक्यावरली अवलंबून असते, त्यास गौण उपवाक्य असे म्हणतात.

उदा :-

1) शजा महणाला की हलीकसन साखर वाटा. → मिश्र वाक्य.
↓ ↓ ↓
प्रथान उपवाक्य स्वरूप गौण उपवाक्य
बोधक

1) प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :-

होन समान दर्जाचे शब्द किंवा समान दर्जाची दोन वाक्ये म्हणजेच होन प्रथानउपवाक्य, जोहा उभयान्वयी अव्ययांनी जोडली जातात तेळा, उभयान्वयी अव्ययास प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय असे म्हणतात.

-जोहा प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय होन समान दर्जाची वाक्ये जोडते, तेळा त्या वाक्यास संयुक्त वाक्य असे म्हणतात.

- संयुक्त वाक्यातील प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय काढून टाक-थ्यास होन स्वतंत्र केवळ वाक्ये तयार होतात.

उदा :- आगि, व, पण, परंतु

2) प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्ययाचे प्रकार :-

1) समुच्चयबोधक प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :-

2) विकल्पबोधक प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :-

3) उत्तरान्तवोधक प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :-

4) परिणामबोधक प्रथानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :-

१) समुच्चयवोषक प्रधानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :- (++)

समुच्चय महणजे मिळाप किंवा अष्टिकची भर.

- जी उभयान्वयी अव्यय पहिल्या वाक्यात अष्टिकची भर घालतात त्यांना समुच्चयवोषक उभयान्वयी अव्यय, असे महणतात.
- आगि, व, अन्, नि, शिवाय, आणखी.

२) विकल्पवोषक प्रधानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :- (++)

जी उभयान्वयी अव्यये दोघांपैकी एकाची निवड दर्शवितात, अशा उभयान्वयी अव्ययांना विकल्पवोषक उभयान्वयी अव्यय असे महणतात.

- किंवा, अथवा, वा, की, अगर, नाहीतर.

३) न्युनत्ववोषक प्रधानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :- (++)

जी उभयान्वयी अव्यये पहिल्या वाक्यातील न्युन महणजेंच कमीपणा दुसऱ्या वाक्यात दाखवितात, तेहा अव्ययांना न्युनत्ववोषक उभयान्वयी अव्यय असे महणतात.

- पण, परंतु, परि, किंतु, वार्की.

४) परिणामवोषक प्रधानत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :- (++)

जेव्हा पहिल्या वाक्याचा परिणाम दुसऱ्या वाक्यात दर्शविला जातो, तेव्हा अशा उभयान्वयी अव्ययांना परिणामवोषक उभयान्वयी अव्यय असे महणतात.

- महणून, सवव, त्यामुळे, यस्तव, याकरिता, तस्मात, अतःएव, तेहा, त्याकृरिता.

(+) → प्रधान वाक्य.

(-) → गोण वाक्य.

उदाः

१) वैश्वला शिकलेली नि सुदूर वस्त्र हवी.
समुच्चय-
बोधक

२) शाई आणि वडील दोघे वाजाशत गेली.
समुच्चय-
बोधक

३) सोसाथाचा वारा सुतला व॒ घरवरील पत्रे उडून गेली.
समुच्चय बोधक

४) शास्त्रज्ञांनी शोष लावले महारूप जग सुखी झाले
परिणाम बोधक

५) तुला प्रेम हवे की पैसा याचा निट विचार कर.
विकल्प-
बोधक

६) गड आला पृष्ठ सिंह गेला.
न्युनत्व बोधक

७) आंव्याला मोहोर आला परंतु फळे भागलीच नाहीत.
न्युनत्व बोधक

८) लाईचा पाय ओडा मुरगवला आहे बाकी सर्व ठीक.
न्युनत्व बोधक.

९) खेंडी तूटे वा पारंवी तूटे.
विकल्प बोधक

१०) उत्तरपत्रिकेतील उत्तरे काळ्या अवार निळ्या शाईने
लिहावित.
विकल्प बोधक

- 11) कार्यक्रमाला मुख्यमंत्री येतील अथवा उपमुख्यमंत्री उपस्थित
राहील. विकल्पबोधक
- 12) यंत्र हे शाप की वरदान.
विकल्पबोधक
- 13) जिंकू किंवा मर्स
विकल्पबोधक
- 14) मोडेन पण वाकणार नाही
न्युनत्वबोधक
- 15) मरावे परि किरीसिपे उरावे
न्युनत्वबोधक
- 16) तानाजीने टाच मारली अनु तो घोड्यावर स्वार झाला
समुच्चयबोधक
- 17) उत्कृष्ट बोणाची कोणाची तुमची नाहीतर आगची
विकल्पबोधक
- 18) ची आजारी आहे शब्द लळाला येऊ शकणार नाही
परिणामबोधक
- 19) यंदा कर्तव्य नाही तस्मात् वधूपरीहा नाही
परिणामबोधक
- 20) ते मनापासून बोलतात अतःएव त्यांचे सर्व ऐकतात.
परिणामबोधक
- 21) जोरात वारा सुटला वृ झाडांची वाळलेली पाने रिंगा
घालू भागली. समुच्चयबोधक

२२) वधता-वधता सूर्य बुडाला आणि पश्चिमू दिशेने लाल रंगाचा
शाळू परिथान केला समुच्चय
बोल्वक

23) वू जा पग लेकर परत ये
न्युनत्व बोधक

24) दैह राहो आयुवा जावो मनी पांझरंगी दृढ भाव राहो
विकल्पबोक्षक:

25) कुणी निंदा वा वंदा आमुचा हा स्वहिताचा छंदा.
 ↓
 विकल्पबोधक.

2) गोपत्वसूचक उभयान्वयी अव्ययः-

एक प्रथान वाक्य व एक गौण वाक्य यांना जोडणाऱ्या उभयान्वयी अव्ययांना गौणत्वसुचक उभयान्वयी अव्यय असे महणतात.

- ਮਹਣਜੇ, ਕੀ, ਕਾਂ, ਮਹਣੂਨ, ਆਸ਼ਤਵ, ਜਰ, ਤਰ

- गौणत्वसंयुक्त उभयान्वयी अव्ययाचे प्रकार :-

- 1) स्वरूपवोलक गौणत्वसूचक उभयान्वयी अव्ययः -

- ⇒ कारणवोष्टक औषत्वसूचक उभयान्वयी अव्ययः -

- ③ उद्देश वोषक गौणत्वसूचक अभयान्वयी अव्यय :-

- 4) संकेतवोष्टक गीतावस्थक उभयान्वयी अव्ययः-

- 1) रसरूपवौष्ठक वौणत्वसुचक उभयाज्वयी अव्यय :- (+...)

पहिल्या वाक्याचे स्वरूप किंवा पहिल्या वाक्यातील नाम-सर्वनाम यांच्याबद्दल अधिक स्पष्टीकरण मुंहे केले जाते तेहा अशा अव्ययांना स्वरूपबोल्याक उभयान्वयी अव्यय म्हणतात.

- रहणजे, रहणून, की, जे

संस्कृत-मछ्ये वापरतात

ତଥା:

- 2) एक रूपया रहणारे शंभर पैसे
स्वसुपबोधक

- ③ मुख्याजवकील सिंहगड महणजे पूर्वीचा कोंठाणा असे.
महणजे
 रक्तपब्दोषक

4) विनंती अर्जि ऐसा जे _____
स्वरूपबोधक

5) शिंहगड महान् एक किल्ला आहे.
↓
स्वरूपबोधक

6) वाबा महाले की येताना तुला कपडे आणि
प्रधान वाक्य श्वरूप नाम शौण वाक्य वोल्क

2) कारण वोषक गौणत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :- (+-)

प्रधान वाक्याचे कारण गौण वाक्याल सांगितले जाते, तेहा त्यास कारणवौष्ठक उभयान्वयी अव्यय असे रहणात.

- कारण, कारणकी, का-की.

उदा :-

२) रमेशचा सत्कार झाला कारण तो राज्यात पडिला आला
 ↓ ↓ ↓
 प्रथानं वाक्य कारण- क्रियाविशेषण वौगं वाक्य
 वौष्ठक

③ आम्हाला मराठी ठ्याकरण निट जमत नाही का-की आम्ही
त्याचा अभ्यास नीट करत नाही. काशावोषक

३) उद्देशबोधक गौणत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :- (- +)

प्रधान वाक्याचा उद्देश गौण वाक्यात सांगितला जातो, तेव्हा त्यास उद्देशबोधक उभयान्वयी अव्यय असे महणतात.

- महणून, सबव, आस्तव, आकरिता, यामुळे.
- उद्देशबोधक उभयान्वयी अव्ययाच्या आधी विषयार्थी क्रियापद येते.

उदा :-

१) चांगले उपचार क्हावे यास्तव तो पुण्यात आला
 ↓ ↓ ↓
 गौणवाक्य उद्देशबोधक प्रधान वाक्य

२) चांगला अश्यास क्हावा महणून त्याने अश्यासिका लावली
 ↓
 उद्देशबोधक

३) चांगला पती मिळावा महणून तिने सोळा सोमवार केले.
 ↓
 उद्देशबोधक

४) काढीतरी काम मिळावे याकरिता मी तुमच्याकडे आलो.
 ↓
 उद्देशबोधक

५) परीक्षेत पहिला क्रमांक मिळावा यास्तव त्याने अप कष्ट घेतले.
 ↓
 उद्देशबोधक

4) संकेतबोधक ग्रीणत्वसूचक उम्मथान्वयी अव्यय :-

"संकेत महाजे अट."

- वाक्यात जर, तर, जरी-तरी ही उम्मथान्वयी अव्यये अट किंवा संकेत वर्णवितात.

- जर- तर, जरी- तरी.

उदा:-

1) जर चांगला उम्मास केबा तर यश मिळेल.
 ↓
संकेतबोधक

2) जरी वाईत भूक लागली तरी वाहेस्वे काही घाऊ नका.
 ↓
संकेतबोधक

3) जर मुस्तक नीट वाचले तर तुम्हाला व्याकरण चांगले कळेल.
 ↓
संकेतबोधक

* एकच 'की' वेगवेगऱ्या ठिकाणी वापरन वाक्ये :-

1) तुला चहा हवा की कॉफी → केवलवाक्य
 ↓
विकल्पबोधक

2) दोन जिने चड्ड्ले की हमाकांडना दम लागलो → संयुक्त वाक्य
 ↓
परिणामबोधक

3) शाजा महाला की हल्तीवरुन साखर वाटा → मिश्रवाक्य
 ↓
स्वरूपबोधक

4) मला वर्षीस मिळाले की अर्बी रक्कम मी तुला देईन → मिश्रवाक्य
 ↓
संकेतबोधक

* एकच 'महान्' वेगवेगळ्या ठिकाणी वापरून वाढे:-

1) मला नोकरी मिळाली महान् आईला फार आनंद झाला
→ संयुक्त वाक्य परिणामबोधक

2) बानदेव महान् एक संत होऊन गेले
→ स्वरूपबोधक

→ केवल वाक्य

3) हवापालट व्हावा महान् तो अंड हवेच्या ठिकाणी गेला
→ उद्देशबोधक

→ मिश्र वाक्य

4) एक डॉलर महणजे साठ रूपये होय

→ केवल वाक्य

5) मराठ्यांचा इतिहास वाचला महणजे शिवाजींचे महत्व कळेल
→ संकेतबोधक

→ संयुक्त वाक्य

6) तुम्ही हमला आहात तेहा जरा अशम करा
→ परिणामबोधक

→ मिश्र वाक्य

4) केवलप्रयोगी अव्यय

- मनातील छत्कट झावना व्यक्त करणाऱ्या अव्ययांना केवलप्रयोगी अव्यय असे म्हणतात.
- केवलप्रयोगी अव्ययांनंतर उद्गारवाचक विन्हाचा वापर केला जातो.
- केवलप्रयोगी अव्ययांचे प्रकार :-

1) हृष्टदर्शक :- वा!, वावा!, वाह वा!, ओहो!, आहा!, आहाहा!

2) शोकदर्शक :- अरेरे!, हाय!, हायहाय!, अगाई!

3) आश्चर्यदर्शक :- अवव!, बाफे!, अरेच्या!, ओ!

4) प्रशंसादर्शक :- शाळ्वास!, छान!, घ्ले!, घ्लेवा!,
भ्ले, शाळ्वास!, फक्कड!, खाशी!, खास!

5) संमतीदर्शक :- हाहा!, जीहा!, अच्चा!, वश्य!, ठीक!

6) विरोधदर्शक :- छेछे!, छाट!, अह!, ऊँह!, छे!

7) तिरस्कारदर्शक :- छी!, छीछी!, शी!, शी शी!, हुडत!

8) मौनदर्शक :- चूप!, गप!, गप!,

9) संवोषनदर्शक :- ए!, अरे!, अरे ए!, अग!, अग ए!, अहो!

१०) व्यर्थकेवलप्रयोगी अव्यय :-

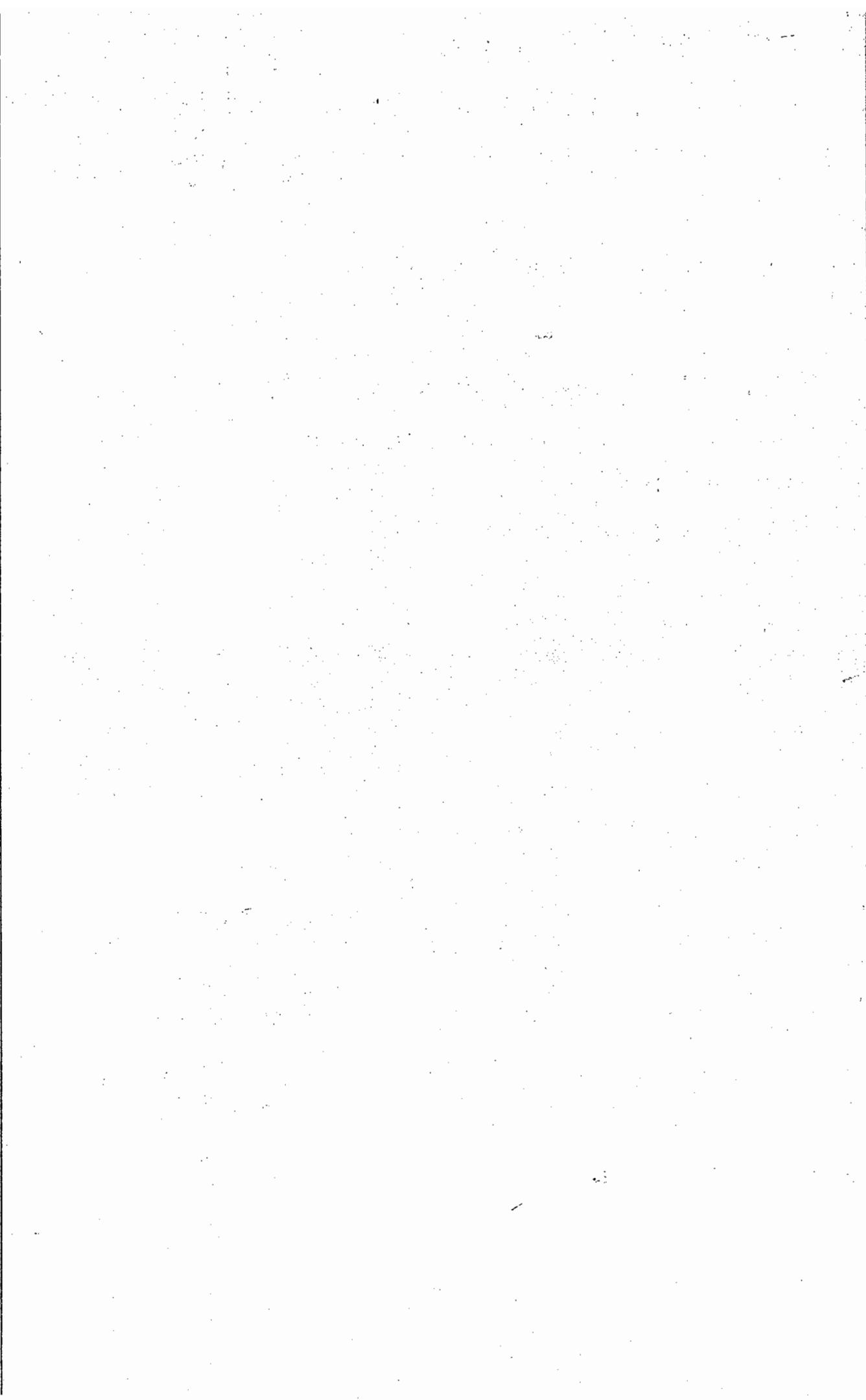
जे शब्द कोणताही अर्थ प्रकृत करन नाहीत, परंतु वोल-
प्यात सातत्याने येतात अशा अव्ययांना व्यर्थकेवलप्रयोगी अव्यय
असे म्हणतात.

→ लेका, वेटा, वापडा, आपली, आपला, म्हणे

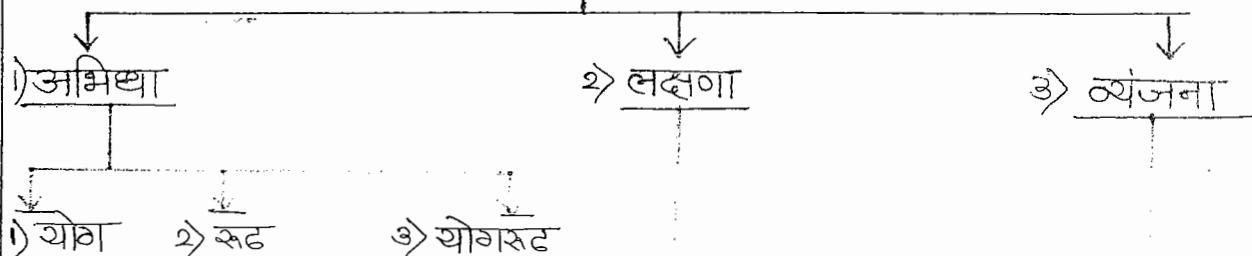
११) पादप्रशार्थ / पालुपदे केवलप्रयोगी अव्यय :-

बोलताना, बोलणाऱ्याची एक लकव, अशी त्या
भक्तीनुसार काही शब्द किंवा काही वाक्य बोलताना परत-परत,
येतात त्यास, पालुपदे असे म्हणतात.

→ वर का, अस का, हो का, जळल मेल, कळल, नाही कळलं,
काय कळल.



शास्त्र शक्ति



१) गौणीलक्षणा (सादृश्य)

- १ सारोपा
गौणीलक्षणा
- २ साथ्यवसाना
गौणीलक्षणा

२) शुद्धा लक्षणा (सादृश्येतर)

- १ सारोपा शुद्धा लक्षणा
- २ साथ्यवसाना शुद्धा लक्षणा
- ३ उपादान शुद्धा लक्षणा
- ४ लक्षण लक्षणा शुद्धा
लक्षणा.

१) शास्त्री व्यंजना

- १ अभिधामूलक शास्त्री
व्यंजना.
- २ लक्षणमूलक शास्त्री
व्यंजना.

२) अर्थी व्यंजना

- १ कर्तृष्वनी
- २ इस्थिष्वनी ←
- ३ अलंकारध्वनी ← → संस्कृत

1) अभिष्ठा शब्दशक्ती :-

अमूर्त किंवा आकारहीन शब्दांच्या ठिकाणी वस्तु किंवा कल्पना साकार करण्याचे सामर्थ्य असते त्यास साहित्य-शास्त्रात अभिष्ठा असे म्हणतात.

- अभिष्ठा शब्दशक्ती जो अर्थ व्यक्त करते त्या अर्थासि मुख्यार्थ, वाच्यार्थ, स्फृष्टार्थ, मुलार्थ, मुलगार्थ असे म्हणतात.
- व ती शक्ती व्यक्त करणाऱ्या शब्दास 'वाचक' असे म्हणतात.

मुख्यार्थ :-

सामाजिक संकेताने शब्दाला जो एक सरळ अर्थ प्राप्त होतो त्यास मुख्यार्थ असे म्हणतात.

- शब्द उच्चारज्यानंतर लगेच प्रगट होणारा अर्थ म्हणजे मुख्यार्थ होई.
- अभिष्ठा ही शब्दाची मुलभूत व प्राथमिक शब्दशक्ती आहे.
- कार्यालयीन उपयोग, शैक्षणिक साहित्य इ. ठिकाणी अभिष्ठा शब्द-शक्तीचा वापर केला जातो.

उदा :- साप, घुस, मनुष्य, सिंह, वाध

1) आम्ही गावाला घेलो.

→ अभिष्ठा शब्दशक्ती

2) मी अभ्यास करतो.

| <u>शब्दशक्ती</u> | <u>आर्थ</u> | <u>शब्द</u> |
|-------------------|---|-----------------|
| 1) <u>अभिष्ठा</u> | - वाच्यार्थ / मुख्यार्थ / स्फृष्टार्थ / - मुलार्थ / मुलगार्थ | <u>वाचक</u> |
| 2) <u>लक्षणा</u> | - लक्ष्यार्थ | <u>लाक्षणिक</u> |
| 3) <u>व्यंजना</u> | - व्यंश्यार्थ / छव्यार्थ / - प्रतिथमान अर्थ. | <u>व्यंजक</u> |

— अभिष्ठा शब्दशक्तीचे प्रकार :—

1) योग अभिष्ठा :-

जेव्हा व्युत्पत्तीने शब्दाचा अर्थ सिद्ध होतो, तेव्हा त्या अभिष्ठेस योग अभिष्ठा असे म्हणतात, व त्या शब्दास 'योगिक' असे म्हणतात.

योग अभिष्ठेचे उदा.

| | | <u>व्युत्पत्ती</u> |
|----|---------|--------------------|
| 1) | भारतीय | भारत |
| 2) | दर्शनीय | दर्शन |
| 3) | शब्देय | शब्दा |
| 4) | कर्म | कर्म |
| 5) | हस्त | हस्त |
| 6) | अर्छदेय | अर्छदा |
| 7) | वर्णनीय | वर्णन |

2) सूट अभिष्ठा :-

'सूट' म्हणजे परंपरा, जेव्हा शब्दाची व्युत्पत्ती सांगता येत नाही व अर्थ सूटी परंपरेने घेतला जालो तेव्हा त्या शब्दशक्तीस सूट अभिष्ठा असे म्हणतात.

उदा :- झाड(वृक्ष), मंडप, तरु, अख(घोडा), पुस्तक, पेला, वळी,

3) योगसूट अभिष्ठा :-

शब्दाचा अर्थ व्युत्पत्तीने सांगता येतो पण तो सूटीच्या मदतीने सराजावून घेतला जालो, तेव्हा त्या शब्दशक्तीस योगसूट अभिष्ठा असे म्हणतात.

योगसूट अभिया

व्युत्पत्तीने मिळणारे अर्थ

खटीने घेतला
जाणारा अर्थ

सप्त
(सरपटणारे)

- साप, पाल, सरडा, कीटक -

साप

खग
(आकाशात गमन - पक्षी, सूर्य, चंद्र, व्रह,
करणारे) लारे.

पंकज
(चिखलात जन्म -
बोगारे)

- कमळ, बेइक, कीटक -

कमळ

2) लक्षणा शक्ती :-

वास्त्यार्थिला किंवा मुख्यार्थिला वाढा येऊन व्याच्या जवळचा अर्थ घ्यावा बागतो, तेहा त्या अर्थास लक्षार्थ असे म्हणतात.

- लक्षार्थ व्यक्त करणाऱ्या शब्दशक्तीला लक्षणा शब्दशक्ती असे म्हणतात.
- लक्षणा शब्दशक्ती व्यक्त करणाऱ्या शब्दाबा 'वाक्षगिक' असे म्हणतात.
- लक्षणा शक्ती होण्यासाठी तीन अटींची पूर्णता छावी बागतेः

1) मुख्यार्थी वाढा

2) लक्षार्थी-मुख्यार्थी संबंध

3) राढी किंवा प्रयोजन

- लक्षणा शक्तीचे दोन प्रकार म्हणतात:-

1) घौणी लक्षणा

2) शुष्का लक्षणा

1) घौणी लक्षणा/ सादृश्य लक्षणा :-

घौणी म्हणजे गुण, जी लक्षणा शक्ती गुणावरती आण्यारबेली असते तिला घौणी लक्षणा असे म्हणतात, तसेच ती साम्यभावावरती (सरचेपणावरती) आण्यारबेली असते.

उदा:-

1) तो म्हणजे कुंभकरणच होण्य

झोपावृपगा - गुण व्यक्त होतो.

2) तो बृहस्पती आहे.

दुशारपणा - गुण व्यक्त होतो

- गौणी लक्षणे दोन प्रकार पडतात :-

- 1) सारोपा गौणी लक्षणा.
- 2) साध्यवसाना गौणी लक्षणा.

1) सारोपा गौणी लक्षणा :-

गुणाकर आसारलेल्या गौणी लक्षणोमध्ये जोळा
लक्षार्थिचा आरोप मुख्यार्थविर केला जातो तेहा त्यास सारोपा-
गौणी लक्षणा असे महातात.

उदा:-

1) तिचे बेत्र महणजे कमळन.
मुख्यार्थ कमळाचा आरोप बेत्रावर लक्षार्थ

2) तिचे मुख महणजे चंत्रन.
चंत्राचा आरोप मुख्यावर

3) जग हे बंदी शाळा.
बंदीशाळेचा आरोप जगावर

4) तिचे दात महणजे मोतीच.
मोत्याचा आरोप दातावर

5) शवलाच्या पात्यावर पडलेले दवविंदू महणजे मोतीच.
मोत्याचा आरोप दवविंदूवर

6) लळ महणजे तुळंगच.
तुळंगाचा आरोप लळावर

२) साध्यवसाना गौणी लक्षण :-

साध्यवसान म्हणजे लोप पावणे किंवा नाहीसे होणे.

- ज्या गौणी लक्षणेमध्ये ज्या मुख्यार्थावरती आरोप केला जातो, त्या मुख्यार्थाचे जेव्हा साध्यवसान होते तेव्हा त्या गौणी लक्षणेस साध्यवसाना गौणी लक्षणा असे उणतात.

उदा:-

१) (डोळ्याकडे पाहन) हे कमल आहेत.
↓
साध्यवसान

२) (त्याच्याकडे पाहन) शाढवाळा वोलवा.
↓
साध्यवसान

३) (दाताकडे पाहन) मोती हसले
↓
साध्यवसान

४) (तिच्याकडे पाहन) हा चंद्रच भूतलाकरती अवतरला आहे.
↓
साध्यवसान

2) शुद्धा लक्षण :- / सांदृश्येतर लक्षण :-

जी लक्षण कार्यकारणभावावरती आवारित असेते
त्या लक्षणेस शुद्धा लक्षण असे म्हणतात.

- शुद्धा लक्षणेचे चार प्रकार पडतात :-

1) सारोपा शुद्धा लक्षण:-

2) सांघ्यवसाना शुद्धा लक्षण:-

3) उपादान शुद्धा लक्षण:-

4) लक्षण लक्षणा शुद्धा लक्षण:-

1) सारोपा शुद्धा लक्षण:-

लक्षार्थीचा मुळ्यार्थविरती आरोप केला जातो पण
तो शुगावर आवारलेला नसून कार्यकारणभावावरती आवारलेला असतो,
तेहा त्या लक्षणेस सारोपा शुद्धा लक्षण असे म्हणतात.

उदा:-

1) आंबा महार्जे वलसेवनच.
मुळ्यार्थ ← → लक्षार्थ

2) सांघ्यवसाना शुद्धा लक्षण:-

ज्या मुळ्यार्थविरती आरोप केला जातो, तो
गाळला जातो, तेहा त्यास सांघ्यवसाना शुद्धा लक्षण असे
म्हणतात.

उदा:-

1) (आंब्याकडे पाहून) तो वलसेवनच करीत आहे.
↓
सांघ्यवसाना

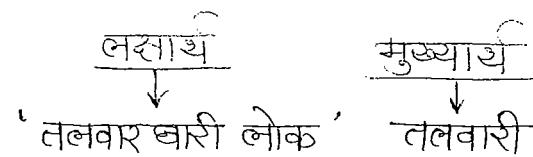
3) उपादान शुद्धा लक्षणा :-

उपादान रहणाजे आगऱ्यी काही अर्थाचा समावेश.

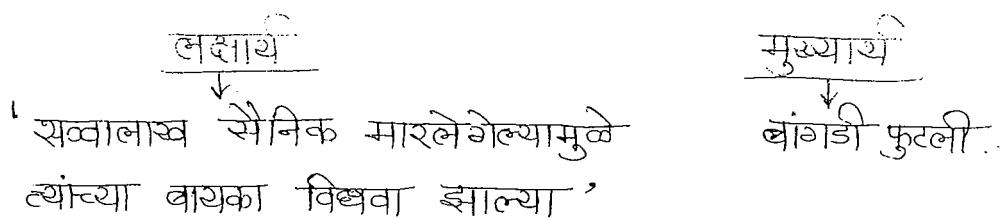
-जेव्हा शब्दाचा मुख्यार्थ व लक्षार्थ एकाच वेळी बाहेर पडतात, तेण्हा त्या लक्षणेस उपादान शुद्धा लक्षणा असे रहणातात.

उदा:-

1) किल्ल्यातून शंशर तलवारी बाहेर पडल्या.



2) पानिपतावर सव्वालाख बांगडी फुटली.



3) भर्नात हजार पान जेअन उठले.

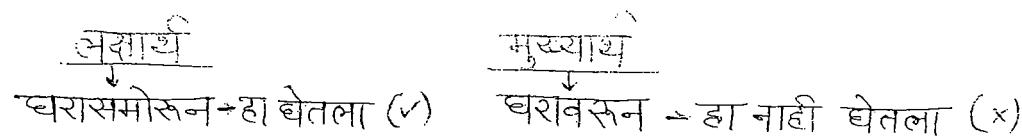


4) लक्षण लक्षण शुद्धा लक्षणा :-

या लक्षणेमध्ये मुख्यार्थ, लक्षार्थाला मुढे करून आपण बुल्त होतो, तेळा शब्दशक्तीस लक्षण लक्षण शुद्धा लक्षण असे रहणातात.

उदा:-

1) आमच्या घरावसन हेती घेला.



२) मुलांनो या ताटावर कसा

लक्षार्थ
↓
ताटाशेजारी

मुख्यार्थ
↓
ताटावर

३) आम्ही गहू घातो

लक्षार्थ
↓
गळाचे पदार्थ

मुख्यार्थ
↓
गहू

४) तो बदीवर घोला.

लक्षार्थ
↓
बदीचा काठ

मुख्यार्थ
↓
बदीवर

३) व्यंजना शक्ती :-

वाच्यार्थिकरोवर आणखी अर्थ व्यक्त करण्याची जी शब्दाची शक्ती असते तिथा व्यंजना शक्ती असे म्हणतात.

- व्यंजनेने जो अर्थ व्यक्त होतो, त्या अर्थाची प्रचिनी ऐकाशाला यावी लागते, महून त्या अर्थास 'प्रतियमानअर्थ' असे म्हणतात.
- शिवाय व्यंजना शक्ती जो अर्थ व्यक्त करते त्यास 'व्यंव्यार्थ' किंवा 'छवन्यार्थ' असेही म्हणतात व त्या शब्दाबा 'व्यंजक' असे म्हणतात.
- व्यंजना शक्तीचे प्रकार :-

1) शाळ्डी व्यंजना :-

2) अर्थी व्यंजना :-

1) शाळ्डी व्यंजना :-

जी व्यंजनाशक्ती शब्दावरती आषारलेली असते, तिथा शाळ्डी व्यंजना असे म्हणतात.

- शाळ्डी व्यंजनेचे दोन प्रकार पडतात :-

1) अभिष्ठामूलक शाळ्डी व्यंजना :-

2) लक्षणामूलक शाळ्डी व्यंजना :-

1) अभिष्ठामूलक शाळ्डी व्यंजना :-

शब्दाचे दोन मुख्यार्थ असतात, त्यातील एक निश्चित होऊन दुसरा सुचकतेने जागवतो तेहा त्या शब्दशक्तीसि अभिष्ठामूलक शाळ्डी व्यंजना असे म्हणतात.

उदा :-

1) आता मी मुक्खाचे व्रत सोडणार नाही

→ मुक्खाचे दोन अर्थ - ① चुंवन ② न वोलणारा.

2) आयुष्यात प्रथमच हार स्विकारण्याची वेळ आली.

→ हार शब्दाचे दोन अर्थ - ① पराभव ② फुलांची माळ.

3) ही गाडी जावयाची आहे.

→ जावयाची शब्दाचे दोन अर्थ - ① जावई ② जाव्याची

4) लक्षणामूलक व्यंजना :-

लक्षणेतील प्रयोजन समजव्यासाठी व्यंजना शक्तीचा आधार घ्यावा लागतो, तेहा त्या शब्दशक्तीस लक्षणामूलक व्यंजना असे बहुतात.

उदा :-

1) मी तुकाराम वाचला.

→ लक्षणे जाणवणारा अर्थ - तुकारामांचे साहित्य

→ व्यंजने व्यक्त होणारे अर्थ - तुकाराम महाराजांनी खिलेला शब्देना शब्द वाचला

2) गंगाधाम घोषः

→ व्यंजने व्यक्त होणारे अर्थ - गंगेच्या किनारी जागवणारी शितलता, शार वारा, उत्साह.

2) अर्थी व्यंजना:-

ऐकणाऱ्याच्या मनावर, अर्थावर आधारलेले अर्थाचे वेगवेगळे पदर व्यक्त होतात त्यास, अर्थी व्यंजना असे महतात.

-अर्थी व्यंजनेचे तीन प्रकार पडतात:

- 1) वस्तुष्वनी
- 2) रसष्वनी → संस्कृत
- 3) अलंकारष्वनी

1) वस्तुष्वनी :-

उदा:-

- 1) सुर्यस्त झाला.
- 2) पाच वाजले.
- 3) बारा वाजले.
- 4) समाजात वावरणारे असले साप ठेचून काढले पाहिजेत.
- 5) घरातील ही घूस भगोदर वाहेर काढा.

PSI Mains - 2013

- 1) स्वातंत्र्ययुद्धाच्या काळात देशभक्तांनी शोगलेला लुकळावास महणजे राष्ट्रहिताशी दिलेली अन्नीपरीक्षाच होय
↓
⇒ सारोपा शौणी लक्षणा

ASST Mains - 2015

- 1) गंगेत गवऱ्यांची वरती.
⇒ लक्षणा

2) छव्यार्थ म्हणजे काय ?

→ व्यंजना शक्तीमुळे व्यक्त होणारा अर्थ.

* **सूट लक्षण :-**

शब्दाचा — लक्ष्यार्थ जेव्हा काळाच्या ओघात मुख्यार्थ बनलो तेव्हा त्या भूषणेस सूट लक्षणा असे म्हणतात.

उदा:- 1] प्रवीण :- मुख्यार्थ

प्रवीण :- वीणा वाजवव्यात पटाईत

लक्ष्यार्थ

निष्णात, निपूण

→ पण आला तोच मुख्यार्थ बनला आहे.

2] कुशल :- मुख्यार्थ

कुशल :- सुगंधी गवत वेचणारा - कुश = गवत

लक्ष्यार्थ

तरवेज, हुशार, चतुर

→ पण आला तोच मुख्यार्थ बनला आहे.

काव्यशृणु

- काव्यशृणु तीन प्रकारचे अर्थ व्यक्त करते :-

१) प्रसाद :- (सोपेपणा)

- सोपी, सुवोष्ठ व अर्थ चक्कन समजारी श्चना म्हणजे प्रसादीक श्चना होय.

उदा:-

१) तुकशम मदाशजांचे अभंग

२) बालकविंची फुलराणी, औंडुंवर कविता

३) डा. दि. माडवुळकरंच्या कविता

→ प्रसाद व्यक्त होते.

२) माणुर्य :- (माणुर्य, घोडवा, कोमलता)

- नाह निर्माण करण्याची किंवा अनुप्रासात्कम श्चना.

- जेव्हा कवितेमध्ये मृदू वर्ण, अनुप्रास अलंकार वापरले जातात लेव्हा त्या कवितेला माणुर्य प्राप्त होते.

उदा:- प्रेमगिते, लावणी.

३) ओज :- (आवेश, जोरकसपणा)

- कठोर वर्णाचा वापर.

- अशा श्चना 'वीर शैद्र' रसाला पोषक असतात.

उदा:-

१) पोवाडा.

२) देशभास्तिधर गीते.

३) शुद्धबंगीते.

- रस या संस्कृत शब्दाचा अर्थ सची घेणे / आखाद घेणे असा होतो.
- ज्यावेळी एखादा वाचक एखाद्या साहित्यकृतीशी तादात्म्य पावलो तेला त्याच्या अंतःकरणातील भावना जागृत होतात, त्यावेळी रस निर्माण होतो.
- साहित्यात नऊ (९) रस मानले जावात :-

1) शृंगार रस :- स्थायी भाव
 ↓
(रत्नी)

- स्त्री-पुरुषांना एकमेकांबद्दल वाटगाच्या प्रेमातून या रसाचा उगम होतो.

उदा:- लावणी, प्रेमरीत

- प्रकार :-

① सात्त्विक रस :-

- पती-पत्नीच्या प्रेमातून उत्पन्न होणारा.

उदा:-

- 1) डोळे हे जुलगी गडे शोखोनी मज पादू नका.

② विप्रबलंग रस :-

प्रेमाच्या विफलतेतून निर्माण होतो.

2) वीर रस :- स्थायी भाव
 ↓
(उत्साह)

उदा:- शमशरीरे, पोवाडे, शौर्य, पराक्रम यांच्या कथा.

1) जय जय महाराष्ट्र माझा भरजा महाराष्ट्र माझा

3) हास्य रस :- स्थायी माव
(विनोद / हास)

उदा :- विडंबन काव्य, चेष्टा, विनोद, हास्यकथा, विनोदी चित्रपट

1) सत्वर पावगे मला

भवानी आई शेडगा वाहीन तुला

सासरा माझा गावी गेबा, तिकडेच खपवी त्याला

भवानी आई शेडगा वाहीन तुला

सासू माझा जाव करले, लवकर निर्दिली लिला

भवानी आई शेडगा वाहीन तुला

4) अद्भुत रस :- स्थायी माव
(विस्मय / आश्चर्य)

उदा :- जादूच्या कथा, परीच्या कथा

1) आटपाट नगरात दुखाचे तळे, लव्यांच्या काठी पेढ्यांचे झाले
नगरातले लोक सारेच वेडे, वेड्यांनी वांखलेत बर्फीचे वाढे.

5) रौद्र रस :- स्थायी माव
(क्रोष / शर्क)

उदा :- क्रोष, चीड या झावनेतून हा रस निर्माण होतो.

1) पाड सिंहासने दुष्ट ती पालथी,
ओट हलीकरूनी मलाचृप झालती.

माजलेला राजा

6) वीभत्स रस :-

स्थायी भाव
↓
(घृणा / किळस / जुगुप्सा)

उदाहरण घृणा / किळस निर्माण होते।

7) भयानक रस :-

स्थायी भाव
↓
(भय / भिती)

उदाहरण शुद्धि, मृत्यु, घून, सुड इ. वर्णनात्मक हा रस निर्माण होतो।

1) भिती कथा.

2) रहस्य कथा.

8) करुण रस :-

स्थायी भाव
↓
(शोक)

उदाहरण शोक, वियोग, संकट इ. वर्णनात्मक हा रस निर्माण होतो।

1) आई मरणाची कोणी आईस हाक मारी.

9) शांत रस :-

स्थायी भाव
↓
(शांती / शांती.)

उदाहरण मरमेश्वर शक्तीत्वने हा रस निर्माण होतो।

1) अमृताहनी गोड नाम तुझे देत्रा.

शब्द सिद्धी

- शब्द सिद्धी म्हणजे शब्द कसा सिद्ध झाला, म्हणजेच कसा बनला हे पाहणे होय.

- शब्द सिद्धीचे दोन प्रकार पडतात :-

1) सिद्ध शब्द :

2) साधित शब्द :

1) सिद्ध शब्द :-

भाषेतील जे मुळ शब्द असतात अशा शब्दाना सिद्ध शब्द असे म्हणतात.

- सिद्ध शब्दांचे चार प्रकार पडतात.

1) तत्सम शब्द.

2) लद्भव शब्द.

3) देशी शब्द.

4) परमाधीय शब्द.

1) तत्सम शब्द :-

तत्सम म्हणजे त्या सारखे, संस्कृत भाषेतून जसेच्या तसे मराठीत आलेल्या शब्दाना तत्सम शब्द म्हणतात.

उदा :-

1) शासकीय शब्द :- अधिसूचना, परिभाषा, अष्ट्यादेश, अधिनियम, परिपत्रक, नियोजन, आघोर, सचिवालय, अनुदान, आयुक्त, अभियंता, प्रशासक, राजपत्र, निर्वाचन, अटीहाक.

2) शिळ्हण क्षेत्र :- मुळ्याख्यापक, प्रशाळा, बालभवन, प्राचार्य, ग्रंथपाल, शिष्यवृत्ती, पर्यवेक्षक, घृहपाठ.

३) तत्समु अव्यये हस्तान्त लिहिली जातात:-

: परंतु, तथापि, अव्यापि, यथामति, इति

४) अकाशन्तामुर्वीचे अक्षर पहस्व असेल तर तो शब्द तत्सम
असतो. (अंत्य 'अ')

: गुण, विष, मंदिर, तरुण, हित, शिव, सुत, मधुर.

५) अंत्य व उपांत्य दोन्ही अक्षरे दीर्घ असतील तर तो शब्द
तत्सम असतो:-

: नीती, शीती, विश्वती, भूमी, स्फूर्ती, पूजा, ग्रीता, पीडा,
क्रीडा, ..., बीला,

६) जोडाळराच्या मुर्वीचे अक्षर जर दीर्घ असेल तर तो शब्द तत्सम
असतो:-

: शून्य, ईश्वर, परीक्षा, पूज्य, प्रतीक्षा, ग्रीष्म, वीढण, सूहम,
दूद्र, प्रावीण्य, अभीष्ट, दीर्घ, मूर्ख, महूर्त, जीर्ण, चूर्ण,
अपूर्व, स्फूर्ती, विस्तीर्ण, पूर्व.

७) जोडाक्षराच्या पूर्वीची अक्षरे पहस्व असणारे तत्सम शब्द :-

: मित्र, भिज्जल, पुष्य, गुच्छ, दुव्ध, अरिष्ट, चरित्र, कनिष्ठ,
वरिष्ठ,

८) सामासिक शब्दातील पहिल्या शब्दाचे अंत्य अक्षर जर पहस्व
असेल तर तो शब्द तत्सम असतो:-

: लघुकथा, शुरुदगिणा, शत्रुपक्ष, मृत्युकाळ, सृष्टि सौदर्य,
कविसंग्रह, पशुपक्षी, हरिकृपा, मानुविलास, मृत्युलेष्य,
वायुलहरी, पतिपत्नी, शिशुविहार.



तत्सम (संस्कृत)

| | | | |
|----|--------|---|--------|
| १ | लघु | - | लघू |
| २ | गुरु | - | गुरुः |
| ३ | वायु | - | वायू |
| ४ | मृत्यु | - | मृत्यू |
| ५ | कवि | - | कवी |
| ६ | सृष्टि | - | सृष्टी |
| ७ | पशु | - | पशू |
| ८ | हरि | - | हरी |
| ९ | पति | - | पती |
| १० | शिशु | - | शिशू |

इ) सामाजिक शब्दातील पाहिल्या शब्दाचे अंत्य अक्षर दीर्घ असेल तरीही तो तत्सम असतो:-

: लक्ष्मीपुत्र , पृथ्वीतल , वृषभपरीक्षा , अग्नीनीमंडळ , भूगोल , रजनीकांत , नदीतीर , वृषभवर , गौरीहर , कस्तूरीमृग , सरस्वतीसदन , महीपाल , शरयूतीर , श्रीविर .

तत्सम (संस्कृत)

| | | | |
|---|---------|---|---------|
| १ | लक्ष्मी | - | लक्ष्मी |
| २ | पृथ्वी | - | पृथ्वी |
| ३ | वृष्ट | - | वृष्ट |
| ४ | नदी | - | नदी |
| ५ | गौरी | - | गौरी |

10) सूर्यीतीव घटक तत्सम् असतात :-

: आदित्य, सूर्य, पृथ्वी, सृष्टि, छरणी, जननी, कौमुदी, शशी
क्षितिज, भिरी, सरिता, युग, जल, अञ्जी, वेणु, अग्रवान्,
देव, पिण्ड, ईश्वर, हरि.

11) कर्म-धर्म, शत्रुसेना, संतवाणी, चतुरविद्वान्, शिष्यविद्यार्थी,
दासामित्र, गुरुस्वामी वंदू, कोमल-ज्ञान, युक्तीप्रिती, जन्ममृत्यु,
कद-विष. (तत्सम् शब्द).

2) तद्भव शब्द :-

संस्कृत शब्द मराठीत घेताना ल्यांच्या मूळ रूपात
योडा वढल होतो, अशा शब्दांना तद्भव शब्द असे म्हणतात.

| <u>तत्सम शब्द</u> | <u>तद्भव शब्द</u> |
|-------------------|-------------------|
| १) मर्किट | मार्केट |
| २) मुदू | माझ |
| ३) व्याघ्र | वाघ |
| ४) अगिनी | वहीण |
| ५) मिथून | मीहाणा |
| ६) तक्क | ताक |
| ७) वृणा | वन |
| ८) दीप | दिवा |
| ९) वंदू | चोच |
| १०) कोमल | कोवळा |
| ११) रवसू | सासू |
| १२) पर्ण | पाण |

| | | | |
|-----|----------|---|------------|
| १३) | कर्ण | - | कान |
| १४) | शुम्र | - | शूर |
| १५) | अश्रू | - | आश्रू |
| १६) | चर्मि | - | चामडे |
| १७) | मुष्ठी | - | मूठ |
| १८) | दुःख | - | दूळ |
| १९) | देवालय | - | देऊळ |
| २०) | व्याम | - | वाव |
| २१) | नील | - | निळा |
| २२) | वृद्धि | - | वाढ |
| २३) | बल | - | बळ |
| २४) | शर्किरा | - | साखर |
| २५) | सूदा | - | माती |
| २६) | पश्चाताप | - | पश्च |
| २७) | भृह | - | घर |
| २८) | कार्य | - | काम, काज |
| २९) | भ्रातु | - | भाइ |
| ३०) | पुष्प | - | फुल |
| ३१) | हस्त | - | हात |
| ३२) | हस्तीन | - | हल्ली |
| ३३) | अंजली | - | ओंजळ |
| ३४) | अङ्गी | - | आग |
| ३५) | विद्युत | - | वीज |
| ३६) | घट | - | घडा (घागर) |
| ३७) | पद | - | पाथ |

| | | | |
|-----|--------|---|-------|
| ३४) | खशूर | - | सासरा |
| ३५) | चक्र | - | चाक |
| ३६) | वाहु | - | वाही |
| ३७) | वंष्या | - | वंझ |
| ३८) | गदर्भ | - | गाढव |
| ३९) | कलश | - | कळस |
| ४०) | शीला | - | शिळा |
| ४१) | खण्डा | - | अन |
| ४२) | नाम | - | नाव |

७) देशी शब्द :-

जे शब्द मराठी भाषेतच लशार झालेले आहेत असा शब्दांना देशी शब्द असे नृणात.

उदा:-

१) खरीराचे अवयव :- डोके, डोळा, पोट, कंवर, गुडधा, घड, हाड, ओटी, झोप.

२) प्राणी व पक्षी :- घोडा, बोका, रेडा, चिमणी, ठेकून, शघू.

वस्यान उदा:-

→ टपोरे डोके असलेला हंत्यारवंद चोर, पोटासाठी विखलातून कचरा, हगड्योंडे तुडवत डोंगरातील मळकट वाटेने उजेड नसताना, जातो.

→ बाजरा शोतकव्याचा मुलगा वारकव्याचे सोंग घेऊन घोड्यावरून पायरीपायरीने होरवा चढू वढत पोवडा म्हणत झाडातून जातो.

- वेडाचा आजार झालेला खुळा शेवी आंघोळ न करताच
अवोला घरून झोपेत भुगडे नेसून डोंगरावर उड्या मारतो.
- वाजरीचे थाळीपीट व बार झालेले वांगे लुटाऱ्या लाकुडतोडथा
ओव्यावर घसून घातो.

4) परभाषीय शब्द :-

इतर जायेतून मराठीत आलेल्या शब्दांना परभाषीय
शब्द असे म्हणतात.

1) हिंदी :-

→ हिंदू के वच्चे, वेटे दिल की वात नानी और माई के सामने
मत करना, नहीं तो करोड रुम हेकर भी मिळाफ नहीं होगा.
(तपास)

2) उर्दू :-

उर्दू

→ सुद्दार मिजाजी, माई को सुवह-सवेरे उनके वहली और
वहती के बिए खुदा की वत्ती मुवारक हो. -(वेअद्व)

3) तामिळी :-

→ तामिळी चिल्लीपिल्ली भेंडीचे सार व मठगू पितात.

4) तेलगू :-

→ वेठविगारी करणारा तेलगू तांडेल, बंडीतील लाळ्याच्या
डवीत ठेवलेले किइक-मिइक देऊन तृपातील अनारसा व मुंड
वखटाला घरेकी करतो. -(परपोक, गवारोल) - (शिकेकाई)

5) ગુજરાતી :-

→ ગુજરાતી માળંચી અપરાતફર કરણાર રિકામટેકડા છોકરા ડલ્યાત ઘાલલેલ્યા હી, હોકવ્યાસારી શોઠ તુસ્હાલા હજા કરેલ.

→ દાદર મણીલ એઝેલ ચરણ્યાવર તયાર કેલેલા આહીચા સદરા ધાબતો, જેમતેમ બાગવડ કેલેલા માવા હલાલામાર્ફિત હવેલીન વિકલો.

→ ઘરજમાઈ નાનાવટી ગુજરાતી શિશીચ્યા નવબકઢેલા હસ્તાક ફાસણ્યાસારી પરિહારચી મલમપટ્ટી ગારીશેવ દેઝાન કરતાત.
(અસા મથળા) - (ઢંગર)

6) ફારશી :-

→ હંગામી ફારશી પેણવ્યાંચી હકીકત હી આહે કી, પૌલાબી પેણવે સામના કરવ્યાપેલા વાણવર્ગીચાત, શાઈ-શહનાઈ, મેના- મૈફલ, હપ્તા- મહિના, અબ્રુ- અલ્ટર, ડામ-ડૌલ કરત રાહિલે. વ્યામુલે સરકારી ખાણોસુમારી વાઢલી હજાર ગરીબાંચી રવાનગી લોફેલા વામ લાંબાન સાફ કરવ્યાસારી ઝાલી, તર પૈદાઈશી દોસ્ત હમેશા લેઝિમ ઘેલત, અવકારી જાહાગીરીચી પાયમલ્લી કરત રાહિલે.

→ ખવરદાર દસ્તુર ખુદુ આસામી બાષ્પર લગણ્યાવા નજરાગ પાલખી આગિ પોશાખાસહિત દિર્ગાઈને પણ તારચેવર ઘેલાત.
(પિકદાની)

७) पोर्टुगीज :-

घरातील वस्तू :- बंब, बादली, पशत, पंप, चावी, साबण, बूच, इस्त्री, कंपू, पूरावा, बायको.

खाद्यपदार्थ :- काजू, पपडी, बटाटा, तंबाखू, कोवी, माव, अनन्नस, शावुहाना, हापुस, फणस, झोपळा, पेसु, बोटी, पायरी.

आंख्यांच्या जाती

→ टोपीवाले पोर्टुगीज मेस्त्री विजावीके तिजोरीमे कर्नल की पिस्तूल, कमांडर का मैसा और पाढी का पगार रखा है, और अलमारी मे पलटन का शिरपेच, तुऱ्हंग के काडतूस रखे हैं.

८) इंग्रजी :-

: टी.व्ही, डॉक्टर, पेन, सायकल, स्टेशन, हॉस्पिटल, फाईल, रेल्वे, पास, ब्रेक, कप, सिनेमा, टेलिफोन, कोर्ट, पार्सल.

९) अरबी :-

→ अरबी अर्ज हे तुम्हारे जमीन की मोताब (मोजमाप) जाहीर करो, हुक्म की तालीम हो मोज-नक्कल नहीं चलेगी.

→ तवलेका खासा ईनाम पाने के लिए पैज मंजूर होनी चाहिए.

→ फाजील खर्च उर्फ कर्ज गमजाके सिवा मेहनत से, कलमसे बिष्ठी हुई बातमी शान और तशीफ के काबील होवी.

→ - विश्वील्ला जमात की करार की नजाकत को समझते हुए तेलाक जाहीरनामा फलाने की वफादारी साफ करता है।
- (कनात, सरबत, अलंग, मजलीस, माल, ताजीम, अजील)

10) कानडी :-

→ अन्ना विठेवा कांबळे हंड्यातील भांड्यातल्या चिरघुटातील
आकरीवर मुरकुंडी होअन पडलेले झुरळ झटका.

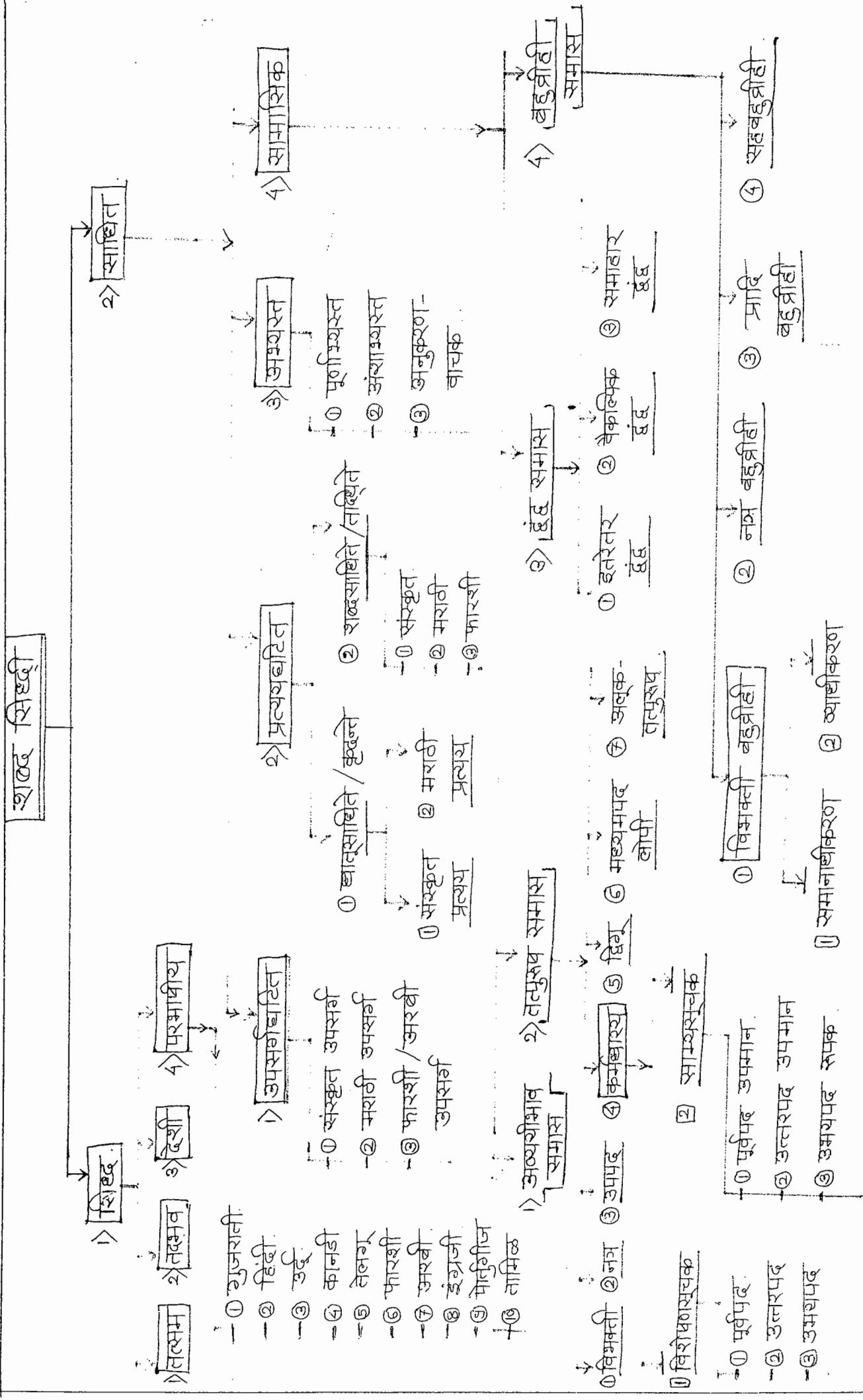
→ आकरा छोलीतील पेहीत परडी, कोरडा तांब्या, बांबुला
चुंडाळलेली कुँची, नैवेद्यासाठी चिंच, खोबरे, उठीद, तप आण.

→ जेवणासाठी उतप्पा, डोसा, लवंग टाकलेला दोडका आणि पडवळ,
गाजर व आवळ्याची कोशिंदीर कर.

→ लाई अडकीता न छब्बल्याने गाड्यातील शिकेकाई विळीने
चिरुन गालाला लाव.

(किल्ली, चंबू, निमटा, चाकरी, नय, काठी, कैवार (वाज),
प्रभाव).

↑
अर्थ



2) साधित शब्द :-

मूळ शब्दांना उपसर्व, प्रत्यय किंवा विकृती होऊन बनलेल्या शब्दांना साधित शब्द असे म्हणतात.

-साधित शब्दांचे चार प्रकार पडतात :-

1) उपसर्वघटित शब्द :

2) प्रत्ययघटित शब्द :

3) अध्यस्त शब्द :

4) सामासिक शब्द :

1) उपसर्वघटित शब्द :-

* उपसर्व :-

शब्दाव्या पूर्णी, मार्गे, अलीकडे, अगोदर, एक किंवा अनेक अद्भुते जोडलोत, त्या अक्षरांना उपसर्व असे म्हणतात.

उदा:- आ, प्र, प्रति, सं, उप, अप

- उपसर्व लाभान् बनलेल्या शब्दांना उपसर्वघटित शब्द असे म्हणतात.

- उपसर्वाना स्वतःहाचा अर्थ असतो.

- उपसर्व स्वतंत्रपणे वापरता येत नाहीत, बहुन् त्यांना शब्द आहेत असे म्हणता येत नाही.

- उपसर्वाचे स्वरूप अव्ययासारखे असते.

- उपसर्व उद्या शब्दाखा जोडला जातो, त्या शब्दाचा उर्ध्वांशु उपसर्वामध्ये असते.

| <u>उपसर्व</u> | <u>शब्द</u> | <u>अर्थ</u> |
|---------------|-------------|-------------|
| प्र + हार | प्रहार | घाव |
| आ + हार | आहार | सौजन |
| वि + हार | विहार | फिरणे |
| सं + हार | संहार | नोश |
| परि + हार | परिहार | निवारण |

| | | | | |
|---------------------|---|--------|---|----------|
| <u>उप</u> + हार | - | उपहार | - | भेटवस्तू |
| <u>अप</u> + हार | - | अपहार | - | चोरी |
| <u>उप + आ + हार</u> | - | उपाहार | - | नाष्टा. |

- उपसर्गाचे तीन प्रकार पडतात:-

- 1) संस्कृत उपसर्ग.
- 2) मराठी उपसर्ग.
- 3) फारशी / अरबी उपसर्ग :

1) संस्कृत उपसर्ग:

संस्कृत उपसर्गाना पहिली वेळांटी व पहिला उकार असतो.

| <u>उपसर्ग</u> | <u>अर्थ</u> | <u>उदा:</u> |
|---------------|----------------------------------|--|
| <u>आति</u> | - फार / अधिक / प्रमाणापलीकडे. | - अतिशय, अतिरेक, अतिलोग, अतिसार, अतिप्रसंग, अतिक्रम, अत्यंत, अत्यानंद. |
| <u>आधि</u> | - मुख्य / श्रेष्ठ | - अधिपती, अधिकार, अधिकरण, आधिग्रहण, अधिदैवत, अध्यात्म, अध्ययन, अध्यापन. |
| <u>अनु</u> | - मार्ग / सारखे | - अनुवाद, अनुस्वार, अनुकूल, अनुयायी, अनुभव, अनुरूप, अनुक्रम, अनुमति, अनुकरण, अनुज. |
| <u>अभि</u> | - पूर्वी / जवळ | - अभिमुख, अभिनंदन, अभिनय; अभिरुची, अभिवृत्ती, अभ्यास, अभ्युदय |
| <u>उत्</u> | - श्रेष्ठ / उंच | - उत्कर्ष, उत्पत्ती, उन्नती, उत्तीर्ण, उद्योग, उलम, उत्प्रेक्षा, उत्कट, उत्पादन. |

उप - जवळ / घौण - उपवास, उपनेत्र, उपकार, उपप्रमुख,
उपपद, उपक्रम, उपाष्टक.

दुर् - वाईट / दुष्ट - दुर्गुण, दुर्दृश्य, दुष्टत्व, दुष्काळ,
दुर्जिण, दुर्बिज्ञ, दुर्मिळ, दुर्वै, दुर्वीण,
दुर्विसिना.

निर्/नि - वाहेर /
नसलेला - निर्धन, निर्विज्ञ, निर्गत, निरंतर,
निरोगी, निकामी.

परि - पूर्ण / गोल - परिपूर्ण, परिपाक, परिणाम, परिवार,
परिपाठ, परिश्रम, परिक्रमा, परिसर,
परिचय, परिभाषा, पर्थिन.

प्रति - उलट / फिरून - प्रतिकार, प्रतिविवंव, प्रतिदिन, प्रत्येक,
प्रतिष्ठनी, प्रतिकूल, प्रतिशब्द, प्रत्यक्ष.

वि - विशेष / शिवाय - विष्यात, विज्ञान, विधवा, विसंगती,
विपल्ती, विचार, विहार, विकार, विसर्ज,
विस्मरण, विशेष.

सु - चांगले / सोपे - सुग्रास, सुभाषित, सुकर, सुगम, सुदिन,
सुशिष्टित, सुगंध, सुजाग, सुवेष.

सम् - चांगले / वरेवर - संस्कार, संस्कृत, संगम, संगीत,
संतोष, संकल्प, संकोच, संचय,
संग्रह, संसार, संयोग.

प्र - आषिक / पुढे - प्रबल, प्रगती, प्रवाह, प्रदोष (पहाटेची वेळ),
प्रकोप, प्रसिद्ध, प्रवास, प्रविण, प्रस्थान.

अव - खाली / विरुद्ध - अवमान, अवगुण, अवनत, अवकृपा, अवतरण

अप - मासून / खाली / कमी / हीन / विरुद्ध - अपकार, अपमान, अपराध, अपघात,
अपशाकून, अपञ्चश.

पर - उलट / परत - पराजय, पराक्रम, पराभव, पराकाष्ठा, परामूत.

आ - पासून / पर्यंत / थोडे / - आजन्म, आमरण, आक्रमण, आचरण,
[दीर्घ]
उपसर्ग] हळके / पलीकडे / आक्रोश, आकर्षण, आभार, आदर,
विसृष्टदृ आगमन.

2) मराठी उपसर्ग :-

: अव अद्वा कठी आड अरनि पाड : → उपसर्गसाठी shortcut वाच्य.

उपसर्ग

अर्थ

उदा:

अव - हीन / कमी - अवजड, अवघड, अवद्सा, अवकळा, अवलक्षण.

अद्वा - अर्धा

- अदघाव, अदशेर, अदकोस, अदमास, अहमूरे.

फट

- फार / उघड

- फटफजिती, फटकळ, फटकेवाजी, फटकारा.

आड

- लहान / गोंग /
आतीला

- आडनाव, आडवाट, आडकाळी, आडवळण, आडदांड, आडाणी, आडरान.

भर

- मुख्य / पूर्ण

- भरजी, भराव, भरदिवसा, भरचौकात, भरसमेत, भरपेट, भरपूर, भरगच्च, भरजवानी.

नि

- नसलेला

- निकोप, निलाजरा, निनाढी, निकासी.

पड

- दुसरा / गोंग

- पडजिम, पडसाद, पडताला, पडछाया,

अ/अन्

- अभाव

- अजान, अडाणी, अबोल, अनोळळी.

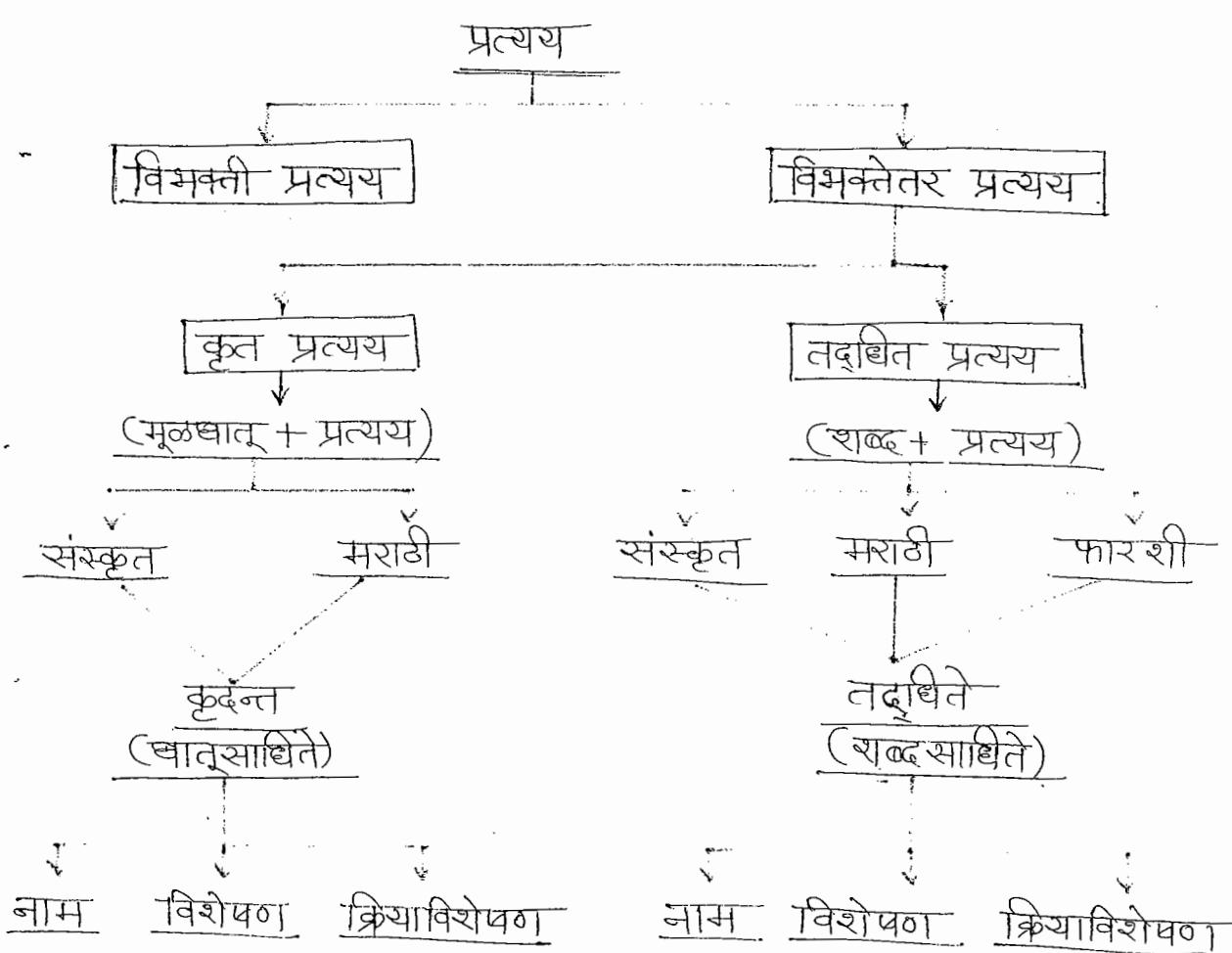
३) फारशी / अरबी उपसर्गः-

| <u>उपसर्ग</u> | <u>अर्थ</u> | <u>उदा:</u> |
|---------------|------------------------|---|
| <u>ऐन</u> | - मुख्य/पूर्ण | - ऐनहंगाम, ऐनखर्च, ऐनदौलत, ऐनवेल |
| <u>कम</u> | - अपुरा/कमी | - कमनशीत्र, कमजोर, कमकुवत |
| <u>गैर</u> | - वाचून/विना | - गैरहजर, गैरशिस्त, गैरसमज, गैर- सावध, गैरसोय, गैरहिशोबी |
| <u>हर</u> | - प्रत्येक | - हररोज, हरमहा, हरसाल, हरशोकडा, हरमजल |
| <u>ना</u> | - अभाव | - नाउमेद, नाराज, नापसंत, नालायक, नाकवूल |
| <u>वद</u> | - वाईट | - वदनाम, वदसूर, वदलीकिक, वदम्भाल वदफैल, |
| <u>विन</u> | - शिवाय/वाचून | - विनश्चुक, विनतक्रार, विनायस्त, विनष्टोक, विनहरकत. |
| <u>वे</u> | - वाचून/शिवाय/ रहित | - वेडर, वेहिमान, वेगवू, वेदम, वेफिकीर, वेपर्वा, वेकायदा, वेगुमान, वेअदवी. |
| <u>हर</u> | - प्रत्येक | - हररोज, हरसाल, हरधडी, हरवक्त, हरहाल, हरकामी |
| <u>सर</u> | - मुख्य | - सरकार, सरदार, सरहद्, सरपंच, सरचिट्ठीस |
| <u>ला</u> | - विस्थृ | - लावारिस, लाचार. |

हम - समान / पूर्ण / - हमदृढ़, हमरस्ता, हमसाथा,
हमराह, हमउम्र, हमराज.

2) प्रत्ययघटित शब्द :-

प्रत्यय :- मूळ शब्दाच्या मुँहे एक किंवा अनेक अल्पे जोडली जातात,
त्या अल्पांना प्रत्यय असे म्हणतात. (पलीकडे, नंतर)



प्रत्ययघटित शब्द :-

प्रत्यय भागून वनलेल्या शब्दांना प्रत्ययघटित शब्द
असे म्हणतात.
- प्रत्ययांना स्वतःहाचा अर्थ नसतो.

-प्रत्यय वाक्यात स्वर्तंत्रपणे वापरली जात नाहीत.

1) कृत प्रत्यय:-

मूळातूला भागाच्या प्रत्ययांना कृत प्रत्यय असे महणतात.

-कृत प्रत्यय लाघून वनणाऱ्या शब्दाला कृदृष्ट असे महणतात.

$$\boxed{\text{कृत}(\text{करीत}) = \underline{\text{कृ}}\underline{\text{त}} + \underline{\text{अ}}}$$

-कृदृष्ट महणजे ज्याच्या अन्ती केवळ कृत प्रत्यय आहे असा शब्द.

-कृत प्रत्ययांचे दोन प्रकार पडतात:

1) संस्कृत कृत प्रत्यय :

2) मराठी कृत प्रत्यय :

1) संस्कृत कृत प्रत्यय:-

1) संस्कृत कृत प्रत्यय लागून तथार झालेली कृदृष्टे:-

| | |
|-------------|---|
| <u>अक</u> | - लारक, मारक, कारक, बायक, जनक लेखक. |
| <u>अना</u> | - वंदना, कल्पना, तुलना, <u>प्रार्थना</u> , <u>वेदना</u> (अतील आवृत्त सापडत नाहीत). |
| <u>अनीय</u> | - श्रवणीय, मनणीय, पुजणीय, रमणीय, वंदनीय |
| <u>अन</u> | - पालन, नंदन, वंदन |
| <u>तव्य</u> | - कर्तव्य, श्रोतव्य. |
| <u>य</u> | - कार्य, देय, पेय, त्याज्य, ओव्य |
| <u>ता</u> | - त्राता, वक्ता, नेता, वाता, शास्ता |

2) मराठी कृत प्रत्यय लोगून वजणारी कृदन्ते:

| | | |
|--------------|---|--|
| <u>आळू</u> | - | झोपाळू, विसराळू, लाजाळू, सोसाळू (विशेषण) |
| <u>णावळ</u> | - | खाणावळ, वाचणावळ, लिहिणावळ, टाकणावळ, घूणावळ, दळणावळ (नाम) |
| <u>णारा</u> | - | लिहिणारा, वाचणारा, खावणारा (विशेषण) |
| <u>रा</u> | - | नाचरा, हसरा, नाचरा, कापरा, दुखरा - (विशेषण) |
| <u>खोर</u> | - | मांडखोर, चिडखोर (विशेषण) |
| <u>आऱ्या</u> | - | टाकाऱ्या, विकाऱ्या, शिकाऱ्या, लढाऱ्या, ठिकाऱ्या (विशेषण) |
| <u>आई</u> | - | ओदाई, चराई, शिलाई, छुलाई (नाम) |
| <u>ईक</u> | - | सडीक, पडीक (विशेषण) |
| <u>ईत</u> | - | अखबखीत, चकचकीत, टवटवीत, (विशेषण) |
| <u>ईव</u> | - | रेखीव, कोरीव, घोटीव, जाणीव, पाळीव, ओतीव (विशेषण) |
| <u>ऊन</u> | - | करून, उदून, वसून (क्रियाविशेषण) |

अ - कर, डर, मर, लुट, तुट

ऊ - खाऊ, झाइ, उतारू, चालू (नाम/विशेषण)

प - दळप, वाटप, कांडप

पी - दळपी, वाटपी, कांडपी

2) शब्दसाधिते / तदृष्टिते :-

तदृष्टित प्रत्यय :- मूळ वाक् सोइन इतर शब्दांना जे प्रत्यय लागतात त्यांना तदृष्टित प्रत्यय असे म्हणतात.

- तदृष्टित प्रत्यय भागून जे शब्द बनतात त्यांना तदृष्टिते / शब्द-साधिते असे म्हणतात.

- तदृष्टित प्रत्ययांचे तीन प्रकार पडतात:-

1) संस्कृत प्रत्यय.

2) मराठी प्रत्यय:

3) फारशी प्रत्यय:

4) संस्कृत प्रत्यय भागून बनारी तदृष्टिते:

अ - यादव, राघव, पांडव, आर्य, सौभद्र (नाम)

इक - काशिक, मानसिक, मासिक, लोकिक, वासिक

इत - आनंदित, दुःखित, मूळित, उत्कंठित

ईन - कूलीन, शालीन, नवीन

कीय - परकीय, राजकीय, स्वकीय

त्व - जडत्व, मूर्खत्व,

मान/वान - अनवान, बुद्धिमान, विद्वान, श्रीमान.

2) मराठी प्रत्यय भागून तथार झालेली तदृष्टिते :-

आई - शिष्टाई, मलाई, चपळाई

ई - वजनी, लाकडी, पितळी, लोखंडी

कर - सुखकर, दिनकर, प्रभाकर

करी - शेतकरी, गावकरी, पहारेकरी, भाडेकरी

की - माणूसकी, उनाडकी, रोतकी, आवकी

खोर - चहाडखोर, चैष्टेखोर, हरामखोर

वाईक - नातेवाईक, मसालेवाईक, तच्छेवाईक

सर - गोडसर, वेडसर, काळसर, शोळसर, ओबसर

3) फारशी प्रत्यय भागून तथार झालेली तदृष्टिते :-

गर/गार - सौदागर, वाजीगर, जादूगर, कामगार, शुक्केगार, माहितगार.

वान - गाडीवान, बागवान, पैलवान

स्थान/स्तान - हिन्दूस्थान, पाकिस्तान, अफगाणिस्तान

गिरी - कामागिरी, शुभ्रामागिरी, मुख्यगिरी

दार - दुकानदार, फौजदार, जमीनदार, इमानदार, हौलदार, अत्रुदार, खारदार

वाज - नखरेवाज, ढगावाज, बफेवाज, कुर्फेवाज.

बंद - पगडबंद, हत्यारबंद, नालबंद, चिरेबंद.

खाना - कारखाना, तोफखाना, हल्तीखाना, द्वाखाना.

दान / दानी - ईक्तदान, नैत्रदान, शामदान, कलमदान,
मच्छरदानी, पिकदानी, चहादानी, फुलदानी.

नवीस - फडणवीस, चिटनवीस.

जीस - चिट्ठीस, फडणीस.

आवाद - औरंगाबाद, मोमिनाबाद, हैदाबाद.

नामा - पंचनामा, करारनामा, जाहीरनामा, हुक्मनामा.

3) अभ्यर्त शब्द / द्विस्वर्त / पुनर्स्वर्त शब्द :-

अभ्यर्त शब्द :

शब्दाची मुनरावृत्ती होऊन बनलेल्या शब्दांना अभ्यर्त शब्द असे रहणात.

-अभ्यर्त शब्दाचे तीन प्रकार पडतात:

- 1) पूर्णाभ्यर्त :
- 2) अंशाभ्यर्त :
- 3) अनुकरणवाचक :

1) पूर्णाभ्यर्त शब्द :- [पूर्ण + अभ्यर्त]
एकच पूर्ण शब्द जेव्हा दोनदा येतो तेहा व्यास पूर्णाभ्यर्त शब्द असे रहणात.

① पहिला शब्द जसाच्यातसा दोनदा येतो:-

उदा:- हळूहळू, घरघर, कोणकोण, काथकाय, कोरेकोरे, मागेमागे, मुढेपुढे, जवळजवळ, कसेकस, हालडाल, तिळतिळ, मळमळ, जळजळ, मधूनमधून क्षणक्षण, एकएक, हायहाय,

② किंचित वदलून :-

उदा:- समोरासमोर, गावोगावी, आपोभाप, मागीमाग, घरेबरी, पावलोपावली, पानोपानी, दारोदारी, खालोखाल.

③ मध्ये 'च' प्रत्यय येऊन :-

उदा:- वरच्यावरी, आलच्याआली, मागच्यामागे, पैसाचपैसा, मजाचमजा, लोंवचलोंव, घरच्याघरी.

① नामे :- घरघर, लिळतिळ, शनशन, हालहाल, माणसामाणसात,
रातोशत, गटागटात, तुकडेतुकडे.

② सर्वनामे :- मीची, वृत्त, जोन्जो, तोन्तो, कोणकोण, कायकाय.

③ विशेषणे :- मोरमोठे, लगानलगान, एकएक, दोनदोन, काळाकाळा,
बालबाल, वेगवेगळा, निरनिशळा.

④ अव्यये :- जेंद्रेजेंद्रे, तेंद्रेतेंद्रे, कोठेकोठे, पुढेपुढे, मागेमागे,
हळहळ, जेळजेळा, तेळतेळा, वारंवार, जागेजागा,
आलोखाल, छेछे, वावा, हाथहाय, कबीकबी.

⑤ आत्मसाधिते :- हस्तहस्त, रडतरडत, खेळतखेळत, जाताजाता, मळपळ,
खेचाखेच,

⑥ अंशाभ्यस्त शब्द :- [अंश + अभ्यस्त]

केळाकेळा जोडथळ होताना एकच पूर्ण शब्द
दोनदा न येता दुसरा शब्द एखादे अल्लर वद्दलून येतो तेळा त्या
शब्दास अंशाभ्यस्त शब्द असे म्हणतात.

- केळाकेळा एकत्र येणारे दोन शब्द हे एक्गेकांचे विरुद्धार्थी शब्द
असतात.

- केळाकेळा एकत्र येणारे दोन शब्द एकाच अर्थाचे असतात.

① एक अल्लर वद्दलून येणारे :-

उदा :- शेजारीपाजारी, दगडविगड, अर्बामूर्धा, जेवणाविवण,
अघळपघळ,

② विरुद्धार्थी शब्द :-

उदा :- खराखोटा, वरेवाईट, उल्टासूलटा, पापपुण्य.

③ समानार्थी शब्द :-

उदा :- दगडखोंडा, भाजीपाला, कागदपत्र, साधूसंत, दीनदुक्का, चेष्टामस्करी, साधामोळा, परिपूर्ण, कामकाज, मालापाचोळा, घन्हाट, दंगामरती, हालअपेष्टा, बाजारहाट, साजशृंगार, अरपकड, कामधंदा, डावपेच, घनदौलत, अक्कलहुशारी, मेवामिठाई, होमहवन, रितीरिवाज, बाडविस्तारा, अट्टमरकरी.

* मराठी, फारशी व संस्कृत भाषा मिसळून बनारे शब्द :-

→ अक्कलहुशारी, डावपेच, जुलूमजवरी [फारशी + मराठी]

→ अम्मलवजावणी, कागदपत्र अचिवेच, मेवामिठाई, बाजारहाट [फारशी + मराठी]

→ रितीरिवाज, मानमरातव, दंगामरती, अट्टमरकरी, घनदौलत [मराठी + फारशी]

→ नित्यनेहमी, वहुतफार [संस्कृत + मराठी]

→ परिपूर्ण [संस्कृत + संस्कृत]

→ दगडखोंडा [मराठी + मराठी]

३) अनुकरणवाचक शब्द / नावानुकारी / छवन्यानुकारी :-

काढी शब्दात एखाद्या छवनीवाचक शब्दाची पुनरावृती इसालेली असते, त्यास अनुकरणवाचक शब्द असे महातात.

① नामे :- बडवड, हळहळ, किरकिर, रिपरिप, कडकडाट, गडगडाट, फडफडाट, वटवट, कुरकुर, घळघळाट,

② विशेषणे :- गुटगुटीत, गुवगुवीत, खुसखुशीत, लुसलुशीत, सुटसुटीत तरतरीत.

③ अव्यये :- अदाखदा, गाठागाट, झपाझप, वडावडा, लुढलुढ, लुढपुढ, चुढचुढ, मुळमुळ, तुळतुळ, लुढखुढ, दुडदुड, झुळझुळ.

4) सामासिक शब्द :-

- दोन शब्दांमधील परस्पर संवंच दाखविणारे विशेषती प्रत्यय, उभयान्वयी अव्यय, शब्दयोगी अव्यय ग्रावून त्यांचा जो एक सुट्टुटीत जोडशब्द तयार होतो त्यास सामासिक शब्द असे म्हणतात.
- सामासिक शब्द तयार करण्याच्या प्रक्रियेला समास असे म्हणतात.
 - समास हा शब्द संस्कृत वातू (सम + आस) पासून तयार झाला आहे, त्याचा अर्थ एकत्र करणे असा आहे.
 - समास ही शब्दाची आधितील काटकसर आहे.
 - समासात एकत्र येणाऱ्या दोन शब्दांचा एकमेकांशी संवंच असतो
 ↓
 (नाम)
 (सामान्यनाम)

विग्रह :-

सामासिक शब्द कोणत्या शब्दापासून तयार झाला आहे, याची फोड करून दाखवणे म्हणजे विग्रह होय.

समास ⇒ शब्दांचे एकत्रीकरण

सामासिक ⇒ दोन शब्दांच्या एकत्रीकरणाने
 शब्द तयार होणारा जोडशब्द

विग्रह ⇒ शब्दाची फोड

विग्रह

शजाच्चा वाडा

सामासिक शब्द

राजवाडा

समास

तत्पुरुष समास

वनालील भोजन
 ↓
 आतील

जन्मापासून

वनभोजन

तत्पुरुष समास

अव्ययीभाव समास

आई अग्री वडील - आईवडील - दुंद समास

गजासाश्च आनन - गजानन - बहुवीही समास
आहे ज्याचे

- समासात दोन किंवा अधिक पदे एकत्र येतात, त्या एकत्र येणाऱ्या पदांपैकी कोणत्या पदाला महत्व आहे, यावरुन समासाचे चार प्रकार पडतात:-

1) अव्ययीभाव → पहिले पद महत्वाचे → प्रथम पद प्रधान समास समास

2) तत्पुरुष समास → दुसरे पद महत्वाचे → द्वितीय पद प्रधान समास

3) दुंद समास → दोन्हीही पदे महत्वाची → उभयपद प्रधान समास

4) बहुवीही - → दोन्हीही पदे महत्वाची → अन्यपद प्रधान समास
समास नसलात.

1) अव्ययीभाव समास :-

ज्या समासातील पहिले पद महत्वाचे असून ते अव्यय असते, तेळा त्या समासाला अव्ययीभाव समास असे म्हणतात.

- अव्ययीभाव समासाचा सामासिक शब्द क्रियाविधानाचे कार्य करतो.

① संस्कृत उपसर्ग :-

संस्कृत उपसर्ग संस्कृतमध्ये अव्ययाचे कार्य करतात.

उदाः :- आ, प्रति, यथा.

- आ :- आजन्म, आमरण, आकंठ

- प्रति :- प्रतिवर्धी, प्रतिदिन, प्रतिमाह.

- यथा (प्रमाणे) :- यथायोग्य, यथायुक्त, यथाशास्त्र, यथाविष्वी,
यथान्याय, यथावकाश, परोक्ष, अपरोक्ष वेगळी उदा.

② फारशी उपसर्वे :-

- दर :- दररोज, दरसाल, दरमहा, दरवर्धी
- हर :- हरसाल, हरवक्त, हरघडी, हरमाहिना
- वे :- वेमालूम, वेलाशक, वेशक, वेसुमार
- विन :- विनतकार, विनश्ति, विनायास्त, विनतोड.

वैरहंजर, वरहुक्तम → वेगळी उदा.

③ किंचित वद्दलून / द्विस्कृत शब्द :-

उदा :- गावोगाव, समोरासमोर, मागोमाग, पावलोपावली, लाणोल्पणी,
द्विवसेद्विवस.

- मराठी शब्द :-

उदा :- द्विसाढवळ्या, घरवसल्या, गावगान्ना, माणसागणिक.

२) तत्पुरुष समास :-

ज्या समासातील दुसरे पद महत्वाचे असते, त्या समासाला तत्पुरुष समास असे म्हणतात.

- तत्पुरुष समासात विभक्तीला महत्व असते.

- तत्पुरुष समासाचे प्रकार:-

१) विभक्ती तत्पुरुष समास :

२) नभ तत्पुरुष समास :

३) कर्मखार्य तत्पुरुष समास :

४) द्विग्रु समास :

५) मध्यमपदबोधी तत्पुरुष समास :

६) उपपद तत्पुरुष समास :

७) अलूक तत्पुरुष समास :

१) विभक्ती तत्पुरुष समास :-

ज्या समासाचा विश्वरूप करताना घाळेला विभक्ती प्रत्यय घालावा लागेवो त्यास विभक्ती तत्पुरुष समास असे म्हणतात.

* द्वितीया विभक्ती तत्पुरुष समास :- (स, ला) → विभक्ती प्रत्यय.

समास

विभ्रह

| | | |
|----------------|---|-----------------|
| १) राजाश्रित | - | राजास् आश्रित |
| २) दुःखप्राप्त | - | दुःखास् प्राप्त |
| ३) देशागत | - | देशास् गत |
| ४) रामाश्रित | - | रामास् आश्रित |
| ५) कृष्णार्पित | - | कृष्णाला अर्पित |
| ६) परपीडा | - | परास् पीडा |

* तृतीया विभक्ति तत्पुरुष समास :- (ने) (सारखा)

विभक्ति प्रत्यय शब्दयोगी अव्यय

| | <u>समास</u> | <u>विशेष</u> |
|-----|--------------|-------------------|
| १) | तोडपाठ | तोडने पाठ |
| २) | बुधीजड | बुधीने जड |
| ३) | हस्तलिखित | हाताने लिखित |
| ४) | कष्टसाध्य | कष्टाने साध्य |
| ५) | चौपट | चारने पट |
| ६) | दुप्पट | दोनने पट |
| ७) | कपाळकरंटा | कपाळाने करंटा |
| ८) | तोडपाटीलकी | तोडने पाटीलकी |
| ९) | ईश्वरनिर्मित | ईश्वराने निर्मित |
| १०) | प्रव्यसाध्य | प्रव्याने साधित |
| ११) | मतिमंद | मतिने मंद |
| १२) | गुणठिन | गुणाने ठिन |
| १३) | मातृसदृश्य | माते <u>सारखी</u> |

* चतुर्थी विभक्ति तत्पुरुष समास :- (स, ला) (साठी)

विभक्ति प्रत्यय शब्दयोगी अव्यय

| | <u>समास</u> | <u>विशेष</u> |
|----|-------------|---------------------------|
| १) | बाईलवेडा | बाई <u>साठी</u> वेडा |
| २) | मेंढवाडा | मेंढ्यां <u>साठी</u> बाडा |
| ३) | कमरपट्टा | कमरेस <u>साठी</u> पट्टा |
| ४) | पोळपाट | पोळी <u>साठी</u> पाट |

| | | | |
|-----|---------------|---|--------------------|
| ६> | व्यवहारैपयोगी | - | व्यवहारसाठी उपयोगी |
| ७> | क्रिडामुवन | - | क्रिडेसाठी मुवन |
| ८> | व्रंथालय | - | व्रंथासाठी आलय |
| ९> | कृष्णार्पण | - | कृष्णासाठी अर्पण |
| १०> | शजवाडा | - | शजासाठी वाडा |
| ११> | गांगार्पण | - | गंगेसाठी अर्पण |
| १२> | विद्यागृह | - | विद्येसाठी गृह |
| १३> | गाथाशन | - | गाथीसाठी शन |
| १४> | डोईजड | - | डोक्यासाठी जड |
| १५> | व्याहीझोजन | - | व्याहीसाठी झोजन |
| १६> | लोकरक्षित | - | लोकासाठी रक्षित |

- पंचमी विमक्ती तत्पुरुष समास :- (अन) (आतून, पासून)
 ↓
विमक्ती प्रत्यय साळद्योगी अव्यय

| | <u>समास</u> | <u>विभ्रह</u> | |
|----|---------------|---------------|---------------------|
| १> | शोभमुक्त | - | शोभातून मुक्त |
| २> | ऋणमुक्त | - | ऋणातून मुक्त |
| ३> | जातीभ्रष्ट | - | जातीतून भ्रष्ट |
| ४> | जन्मस्वभाव | - | जन्मापासून स्वभाव |
| ५> | चौरमय | - | चौरापासून मय |
| ६> | बालमित्र | - | बालपणापासून मित्र |
| ७> | गर्भाश्रीमिंत | - | गर्भापासून श्रीमिंत |
| ८> | वडीलाभाजित | - | वडीलापासून भिजालेले |

| | | | |
|-----|------------|---|-----------------|
| ७) | शन्मुभय | - | शान्त्रपासुन भय |
| १०) | संकटमुक्त | - | संकटातून मुक्त |
| ११) | पापमुक्त | - | पापातून मुक्त |
| १२) | धर्मभ्रष्ट | - | धर्मातून भ्रष्ट |

- यष्ठी विभक्ती तत्पुरुष समास :- (चा, ची, चे)

विभक्ती प्रत्यय

| | <u>समास</u> | | <u>विभक्ति</u> |
|-----|-------------|---|------------------------|
| १) | राष्ट्रछवज | - | राष्ट्राचा छवज |
| २) | पुष्पमाला | - | पुष्पाची माला |
| ३) | देवपूजा | - | देवाची पूजा |
| ४) | पोटपूजा | - | पोटाची पूजा (जेवण) |
| ५) | सूर्यप्रकाश | - | सूर्याचा प्रकाश |
| ६) | धर्मवेड | - | धर्माचे वेड |
| ७) | समुद्रकाठ | - | समुद्राचा काठ |
| ८) | घरमालक | - | घराचा मालक |
| ९) | सर्पमित्र | - | सर्पाचा मित्र |
| १०) | लोकमित्र | - | लोकांचा मित्र |
| ११) | लोकनेता | - | लोकांचा नेता |
| १२) | वाधनख | - | वाधेचे नख |
| १३) | कमळफूल | - | कमळाचे फूल |
| १४) | राजपुत्र | - | राजाचा पुत्र |
| १५) | भूपती | - | भूचा पती (देव) |
| १६) | सिताकांत | - | सितेचा कांत → (पती) |

- सप्तमी विभक्ती तत्पुरुष समासः - (त) (आतील)

विभक्ति प्रत्यय शब्दोंगी अव्यय

| | <u>समास</u> | | <u>विशेष</u> |
|-----|--------------|---|------------------|
| १> | शास्त्रपंडीत | - | शास्त्रात् पंडीत |
| २> | वेदपरंगत | - | वेदात् परंगत |
| ३> | पानकोंवडा | - | पाण्यातील कोंवडा |
| ४> | रानडुकर | - | रानातील डुकर |
| ५> | कूपमङ्कु | - | कूपातील मङ्कु |
| ६> | दानशूर | - | दानात् शूर |
| ७> | स्वर्गवास | - | स्वार्गातील वास |
| ८> | कलानिमुण | - | कलेत् निमुण |
| ९> | लोकप्रिय | - | लोकात् प्रिय |
| १०> | घृहकलह | - | घृहातील कलह |
| ११> | घृहप्रवेश | - | घृहातील प्रवेश |
| १२> | वनगाय | - | वनातील गाय |

*प्रतिपादिके :-

ज्या शब्दाच्या जाती व्यक्ती, वस्तु, ठिकाणे व त्यांचे गुणवर्ग दर्शवितात अशा शब्दजातींना प्रतिपादिके असे म्हणतात.

- नाम, सर्वनाम, विशेषण यांना प्रतिपादिके असे म्हणतात.
- प्रदिपदिके ही व्याख्या मराठीत कृष्णशास्त्री चिपळगकर यांनी आणली.

२) नव तत्पुरुष समास :-

ज्या समासातील पहिले पद नकारार्थी असते, त्या समासाला नव तत्पुरुष समास असे म्हणतात.

उपसर्ग :- अ, अ, न्, ना, वे, नि, गैर

उदा :- अयोध्य अनादर, अमुल्य, अज्ञान, अहिंसा, नाश्तिक, नाभेद, नावङ्गता, नाखुश, वेडर, अपुरा, अक्षय, गैरप्रकार, नाईलाज

३) कर्मचारय समास :-

ज्या समासामध्ये एकपद नाम व दुसरे पद विशेषण असते त्या समासाला कर्मचारय समास असे म्हणतात.

- कर्मचारय समासातील दोन्ही पदे एकाच विभक्तीत असतात.
- कर्मचारय समासाचे दोन प्रकार पडतात:-

कर्मचारय समास

विशेषण सूचक

- पूर्वपद विशेषण.
- उत्तरपद विशेषण.
- उभयपद विशेषण.

साम्यसूचक कर्मचारय

- पूर्वपद उपमान
- उत्तरपद उपमान
- उभयपद संपक

॥ विशेषणसूचक कर्मचारय समास :-

ज्या समासात एकत्र येणाऱ्या दोन शब्दांचा नामविशेषण असा संवेद असतो, त्यास विशेषणसूचक कर्मचारय समास असे म्हणतात.

- केळाकेळा या समासात एकत्र येणारी दोन्ही पदे विशेषणेच असतात.

-प्रकार (३) :-

① पूर्वपद विशेषण कर्मचारय समास :-

या समासातील पहिले पद विशेषण असते, -
(विशेषण + नाम)

उदा:- निलकमल, महाराष्ट्र, सुवचन, शुभवर्तमान, तांबडमाती,
काळमांजर, सावळाराम, पूर्वित्र, उत्तररात्र

② उत्तरपद विशेषण कर्मचारय समास :-

या समासातील दुसरे पद विशेषण असते व
पहिले पद नाम असते (नाम + विशेषण)

उदा:- — , पुरुषोल्लम, प्रसंगविशेष, घननिळ, शमद्याक्षु,
अमांतर, विषयातंर, पळांतर, आधांतर, वेशातर, देशातर,
जात्यांतर (अंतर म्हणजे अन्य)
— जशेल्लम.

— उत्तरपद विशेषण व पूर्वपद विशेषण या समासांचा विश्राह कर-
ताना मध्ये असा शब्द येतो.

③ उभयपद विशेषण कर्मचारय समास :-

या समासातील होणी पदे विशेषणीच असतात.

— या समासाना विश्राह करताना 'चूप' शब्द येतो. (विशेषण + विशेषण)

उदा:- पांढराचुप्र, काळाकृट, पिवळाच्यमक, लालशडक, हिरवाण्यार,

2) साम्यसूचक कर्मिकारय समास :-

ज्या समासामध्ये उपमेय, उपमान असा संबंध असतो, त्या समासाबा साम्यसूचक कर्मिकारय समास असे म्हणतात.

उपमेय :-

ज्याची तुलना केली जाते त्यास उपमेय असे म्हणतात.

- समोर असलेले (प्रस्तूत)

उपमान :-

ज्याच्याशी तुलना केली जाते त्यास उपमान असे म्हणतात.

- समोर नसलेले.

उदा :- साखर

त्रिकार (3) :-

① पूर्वपद उपमान कर्मिकारय समास :-

- यातील पहिले पद उपमान असते. (उपमान + उपमेय)

उदा :-

कमलनयन, कमलचरण, मेघशाम, चंद्रगुच्छ.

② उत्तरपद उपमान कर्मिकारय समास :-

- यातील दुसरे पद उपमान असते. (उपमेय + उपमान)

उदा :-

नरसिंह, राजर्धी, मुखचंद्र, चरणकमल.

③ उभयपद स्वपक कर्मिकारय समास :- (सारखा)

उपमेय आणि उपमान हे दोघे एकच आहेत असे दोखवले जाते त्या समासास उभयपद स्वपक कर्मिकारय समास असे म्हणतात.

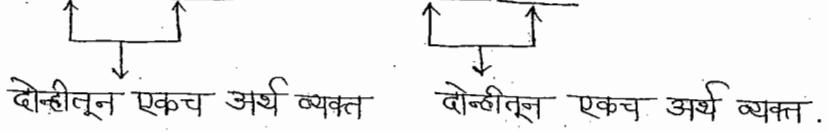
$$\text{उपमेय} + \text{उपमान} = \text{स्वपक}$$

- विघ्रह करताना 'हेच' हा शब्द येतो.

उदा:-

काव्यामृत, भवसागर, विद्यालय, संसारसागर.

१) संसारसागरी विहरे जीवननीका.



दोन्हीतून एकच अर्थ व्यक्त

दोन्हीतून एकच अर्थ व्यक्त.

४) द्विगु समास :-

ज्या समासातील माहिले पद संख्याविशेषण असते, त्या समासाला द्विगु समास असे नहणतात.

- या समासास संख्या पूर्वपद कर्मधार्य समास असे नहणतात.

उदा:-

पंचवटी, नवरात्र, चातुर्मीस, त्रिमुखन, सप्ताह, बारवाही, पंचारती,
चौघडी, नववार, त्रिमुर्ती, पंचमुख, दशमुख, प्रमुख

५) मध्यमपदबोधी तत्पुरुष समास :-

ज्या समासातील सामासिक शब्द वनवताना मध्यली काही पदे गाळली जातात त्यासमासास मध्यमपदबोधी तत्पुरुष समास असे नहणतात.

उदा:-

→ पुरणपोळी, वरणभात, बटाटेवडा, कांदेभाजी, पालकभजी, कांदापोटे, दाळवांगी. [आतेसंबंध]

→ नातसून, आतेवडीण, मार्गेभाऊ, मामेखासू, आजेसासरा, चुलतसासरा [नातेसंबंध]

→ ओजनभाऊ, लंगोटीयार, घोडेस्वार, [वेगळी उदाहरणे].

6) उपपद तत्पुरुष समास :-

- ज्या समासातील दुसरे पद आत्माबिल असते, त्या समासाला उपपद तत्पुरुष समास असे म्हणतात.
- या समासाचा विग्रह करताना आत्मला 'णारा' प्रत्यय लागतो.
 - सामासिक शब्द नाम असतो.

उदा:-

शेतकरी, पुजारी, शिष्यक, कवी, ग्रंथकार, ग्रामस्थ, देशस्थ, गृहस्थ, कलाकार, द्विज (दोनदा जन्मगारे), अंडज (अंडगातून जन्मगारा), पंकज (चिखलातून जन्मगारा), शेषजाई (शेषावर झोपगारा), सर्वज्ञ, लाचखाऊ, वाटसर.

— उपपद तत्पुरुष व अलूक तत्पुरुष समासाची सारखी उदाहरणे :-

उदा:-

- गळेकापू, मारेकरी, सेवेकरी, पाखरेविक्या, खिसेकापू, वाटेकरी,
- हा समास उपपद तत्पुरुष समास व अलूक तत्पुरुष समास हे दोनी समास दाखवतो म्हणून या समासाला उभयविषय तत्पुरुष समास असे म्हणतात.

7) अलूक तत्पुरुष समास :-

लूक म्हणजे लोप पावणे / नष्ट पावणे आणि अलूक म्हणजे लोप न पावणे / नष्ट न होणे.

- ज्या तत्पुरुष समासात पूर्वपदाच्या विभक्ती प्रत्ययाचा लोप होत नाही (सप्तमी, तृतीया) त्या, समासाला, अलूक तत्पुरुष समास असे म्हणतात.

उदा:-

संस्कृत उदा:- पंकेरूह, सरसिज, युधिष्ठीर, कर्मगिम्रघोग, अग्रेसर, कर्तीरिप्रयोग, गळेकापू, मारेकरी, सेवेकरी, वाटेकरी.

मराठी उदा:- तोंडीलावणे.

३) दुंदृ समास:-

ज्या समासातील दोन्ही पदे महत्वाची असतात, त्या समासाला दुंदृ समास असे म्हणतात.

- दुंदृ समासात एकत्र येणारे दोन्ही शब्द नामे किंवा विशेषणे असतात.
- दुंदृ समासाचा संबंध उभयान्वयी अव्ययाशी येतो.
- दुंदृ समासाचे तीन प्रकार पडतात:-

1) इतरेतर दुंदृ समास :-

2) वैकल्पिक दुंदृ समास :-

3) समाधार दुंदृ समास :-

1) इतरेतर दुंदृ समास :-

ज्या समासाचा विग्रह करताना समुच्चय वोधक उभयान्वयी अव्ययाचा वापर केला जातो, तेहा त्यास इतरेतर दुंदृ समास असे म्हणतात. (आगि, वं)

उदा:-

रामलिंगमण, हातपाय, रामकृष्ण, नवरात्रायको, वहीणभाऊ, स्त्रीपुरुष, प्रस्तोतर, आईवडील, नेभाऊ, डुष्टभाऊ, हरिहर, एकवीस, एकतीस, कृष्णर्जुन, विठीदांद, अहीनकूल, कौरवपांडव.

2) वैकल्पिक दुंदृ समास :-

या समासाचा विग्रह करताना विकल्पवोधक उभयान्वयी अव्ययाचा वापर केला जातो. (किंवा, अथवा)

उदा:- घलेवूरे, करेवाईट, पापपुऱ्य, खरेखोटे, षमाळिर्मी, न्यायान्याय, जयपशजय, सत्यासत्य, मानापमान, देवदानव, जन्ममृत्यु, आठदहा, पाचपन्नास, चारपाच.

- या समासात येणारे शब्द विस्त्रितार्थी असतात किंवा संख्याविशेषण असतात.

③) समाहार हृद्द समाप्त :-

समाहार महणजे त्याच जानीचे आणखी शब्द.

- ज्या समासातील दोन्ही पदे महत्वाची असून आशिवाय त्याच जानीच्या इतरही शब्दांचा समावेश विग्रह करताना करावा लागतो, तेव्हा त्या समाप्त समाहार हृद्द समाप्त असे महणतात.
- विग्रह करताना शेवटी इत्याही, वर्गीरे शब्द येतात.

उदा:-

केरकचरा, पालापाचोळा, कपडाबल्ला, सगासोयरा, वेणीफणी,
चूकभूल, गुरेडीरे, अन्नपाणी, मीठभाकर, हळदकुळ, चहापाणी,
झाजीभाकरी, पानसुपारी, बाजारहाट.

4) वहुव्रीही समास :-

ज्या समासातील दोन्ही पदे महत्वाची नसून तिसऱ्या पदाला महत्व प्राप्त होते, तेणा व्यास वहुव्रीही समास, असे म्हणतात.

- वहुव्रीही समासाचे उदाहरण बनलेला सामासिक शब्द विशेषणाचे कार्य करतो.
- वहुव्रीही समासाचे चार प्रकार पडतात.

1) विभक्ती वहुव्रीही समास :

2) नज वहुव्रीही समास :

3) सहवहुव्रीही समास :

4) प्रादि वहुव्रीही समास :

1) विभक्ती वहुव्रीही समास :-

समासाचा विभ्रह करताना शेवटी संवादी सर्वेनाम येते, व ज्याला विभक्तीचे प्रत्यय आगलात म्हणून आला विभक्ती वहुव्रीही समास असे म्हणतात.

1) समानाधीकरण विभक्ती वहुव्रीही समास :

2) ज्याधीकरण विभक्ती वहुव्रीही समास :

3) समानाधीकरण विभक्ती वहुव्रीही समास :

दोन्ही पदे एकाच विभक्तीत असतात.

उदा:-

→ मोढकप्रिय → मोढक आहे प्रिय ज्याला.

→ मानवन → मान हैच व्यन आहे ज्याचे.

→ अष्टपैद → आठ पैलू आहेत ज्याला.

- त्रिकोण → तीन कोन आहेत ज्याला.
- तपोषण → तप हेच थन आहे ज्याचे.

२) व्याखीकरण विभक्ती वहुव्रीही समास :-

दोन्हीही पदे वेगवेगळ्या विभक्तीत असतात.

उदा:-

- चक्रपाणि → चक्र आहे पानित ज्याच्या.
- जिरेंद्रिय → जिंकली आहेत इंद्रिये ज्याने
सप्तमी तृतीया विभक्ती
- गलितपर्ण → गाळली आहेत पाने ज्याने.
- गजानन → गजासरखे आहे आनन ज्याचे

- समानाखीकरण व व्याखीकरण यांची एकत्रित उदाहरणे :-

उदा:-

चंद्रानना, चंद्रमुखी, शजीवाळा, मृगनयना, लंबोदर, हरीगाढी,
मिनाढी, ऊटमाळ्या, घारडोळ्या, काळतोळ्या, मुपकवाहन,
भद्रमीकांत, दुतोळ्या, चौकीन, शशीवण्णना, भारडृष्टवजा,
जाक \rightarrow (नाही दुःख ज्यात,), प्राप्तविन, प्राप्तोदक.
अक \rightarrow दुःख

२) नज वहुव्रीही समास :-

पहिले पद नकारार्थी असते.

उदा:-

नाष्टुरा, निरोगी, निर्धन, निस्तेज, अनंत, अमंगल

३) सह वहुव्रीही समास :-

या समासातील पहिले पद 'स', 'सह' असे असते व व्यावरून 'तुसव्या पदासहित' असा अर्थ व्यक्त होतो.

उदा:-

सहपरिवार, सहकुदंब, सर्कम्मक, शानंद, अचैल, अफल, सवल.

४) प्रादि वहुव्रीही समास :-

पहिले पद प्र, पर, दूर, सू, वी असे असते.

उदा:-

दुर्बिणी, प्रका, पराशमन, सुलोचला, विश्वान, विशुद्ध, सुगम, सुगंध, सुविचार.

वाक्य विचार

- १) वाक्याचे प्रकारः
- २) वाक्य रूपांतरः
- ३) वाक्य संख्येषणः
- ४) वाक्य मुद्देश्यकरणः
- ५) प्रयोगः

* [वाक्य :-]

- मो. के. दामले :- एक विचार पूर्णपणे व्यक्त करणाऱ्या स्वतंत्र शब्द-समुच्चयास वाक्य असे म्हणतात.
- चिपळुणकर :- क्रियापदाशी संवंछ असणारे शब्द, त्या शब्दांशी संवंछ असणारे शब्द यांचा समुदाय म्हणजे वाक्य होय.
- व्याख्या :-
- मुळ्या अर्थाचे बोलणे म्हणजे वाक्य होय.
 - पदांपासून पदवंद, पदवंदांतून उपवाक्य व उपवाक्यातून वाक्ये तयार केली जातात.
 - उपवाक्य हे वाक्याचा संघटक असते.
 - पदवंद हे उपवाक्याचे संघटक असतात.
 - शब्द हे पदवंदाचे संघटक असतात.
 - मात्र वाक्य हे कोणत्याही घटकाचा संघटक नसते.
 - वाक्य म्हणजे केवळ शब्दांची व्याकरणीक रचना नव्हे, तर आशय आणि अर्थ व्यक्त करणारी रचना होय.
 - वाक्य हे संपूर्ण मानवी उच्चारण आहे.
 - श्री. न. गजेंद्र गडकर यांनी वाक्यातील शब्दांची लक्षणे सांगी-तल्ली आहेत, ती मुढील प्रमाणे आहेत.

१) सार्थक :-

वाक्यातील शब्द सार्थकसाले पाहिजेत.

२) सामर्थ्य :-

वाक्यातील शब्दांमध्ये व्याकरणीक आणि अस्थिरिंवंधी अशा दोन्ही प्रकारची घोष्यता असायला हवी.

३) आकांक्षा :-

४) अनिवारी :-

* वाक्यातील संघटक :-

वाक्यरचनेच्या दुष्टीने परस्परांशी संवंध असालेले घटक म्हणजे संघटक होण.

संघटक

१) प्रथमोपास्थित संघटक २) अंतिम संघटक ३) अतिरिक्त संघटक

१) प्रथमोपास्थित संघटक :-

वाक्यरचनेला प्रत्यक्षपणे जवाबदार असालेले संघटक म्हणजे प्रथमोपास्थित संघटक होय.

- कर्ता व क्रियापद, आणि त्यांच्याशी संवंधित इतर शब्द.

उदा :- त्याने आज खूप अश्वास केला.

२) अंतिम संघटक :-

वाक्यातील शब्दांचे जोहा आगांकी विभाजन करता येत नाही तेहा, त्यांना अंतिम संघटक असे म्हणतात.

उदा :-

- वाक्य :- तो आज घरीच झोपून राहीला.

- अंतिम :- तो आज घर झोप राह.

संघटक

३) अविरिक्त संघटक :-

① शब्दांचा क्रम :-

शब्दांचा क्रम हा वाक्याच्या वृष्टीने सुरंगत असला पाहिजे.

उदा :- १) स्थूल सरदार पल्ली.

→ स्थूल सरदाराची पल्ली.] → दोन अर्थ व्यक्त डोतात.

→ सरदाराची स्थूल पल्ली. (ते क्षायला नाही पाहीजेत)

② सिमा संबंधी :-

वाक्य बोलताना किंवा बिहिताना कोरे अंबावे हें कळणे, म्हणजे सिमासंबंधी होय.

उदा :-

१) वृष्ट, मुरुप आणि स्त्रिया. → मुरुप व स्त्रिया दोघेही वृष्ट.

२) वृष्ट मुरुप आणि स्त्रिया. → फक्त मुरुप वृष्ट.

1) वाक्याचे प्रकार :-

वाक्याचे प्रकार

1] विष्णानांवरुन

- 1] विष्णानार्थी वाक्य.
- 2] प्रश्नार्थी वाक्य.
- 3] उद्घारार्थी वाक्य.

2] अर्थावरुन

- 1] स्वार्थी वाक्य.
- 2] आज्ञार्थी वाक्य.
- 3] विष्णार्थी वाक्य.
- 4] संकेतार्थी वाक्य.

3] वाक्यरचनेवरुन

- 1] केवल वाक्य.
- 2] संयुक्त वाक्य.
- 3] मिश्र वाक्य.

1] क्रियापदाच्या विष्णानांवरुन वाक्याचे प्रकार :-

1) विष्णानार्थी वाक्य :-

विष्णानार्थी वाक्य रुद्गाजे आपल्या मनातील विचारांचे प्रकटीकरण असते.

- जेव्हा विचार वाक्यात व्यक्त केला जातो तेव्हा त्यास विष्णानार्थी वाक्य असे रहणतात.
- वाक्यात केवळ विष्णान केलेले असते.
- विष्णानार्थी वाक्य होकारार्थी किंवा नकारार्थी असते.
- विष्णानार्थी वाक्य वर्तमान, भूत व मविष्यकाळी असते.
- जेव्हा दिलेल्या वाक्यावरुन काळाचा बोल्या होतो तेव्हा त्या वाक्यास विष्णानार्थी वाक्य असे रहणतात.

उदा:-

1) हौकीच्या खेळात झारखाला यंदा स्वर्णपदक मिळेल.

→ होकारार्थी विष्णानार्थी (मविष्यकाळ)

2) सचिन तेंझलकर चांगला फलंदाज आहे.

→ होकारार्थी विष्णानार्थी (वर्तमानकाळ)

3) अनिल कुंवळे हा काही फलंदाज नाही.

→ नकारार्थी विद्यानार्थी (वर्तमानकाळ)

4) विटीदांडूचा खेळ सध्या मागे पडला.

→ होकारार्थी विद्यानार्थी (भूतकाळ)

5) आशियाई स्पष्टीमध्ये पुढच्या वर्षी कवड्ही स्पष्ट होणार नाहीत.

→ नकारार्थी विद्यानार्थी (भविष्यकाळ)

6) सर्व मुले अस्यास करत आहेत.

→ होकारार्थी विद्यानार्थी (अपूर्ण वर्तमानकाळ)

7) सतीश निवंश बिहितो.

→ होकारार्थी विद्यानार्थी (वर्तमानकाळ).

2) प्रश्नार्थी वाक्य :-

आपल्या मनातील जिज्ञासा पूर्ण करण्यासाठी

जो विचार व्यक्त केला जातो तेहा, प्रश्नार्थी वाक्य तयार होते.

- वाक्यात प्रश्न विचारलेला असते.

- वाक्याच्या शेवटी प्रश्नचिन्ह घेते.

- प्रश्नार्थी वाक्य तिन्ही काळामध्ये येऊ शकते.

- प्रश्नार्थी वाक्य होकारार्थी किंवा नकारार्थी असते.

- वाक्यात प्रश्न विचारण्यासाठी प्रश्नार्थिक सर्वनामे, प्रश्नार्थिक विशेषगे, प्रश्नार्थिक क्रियाकिंशेषणे यांचा वापर केला जातो.

- प्रश्नार्थक सर्वज्ञात्मे :- कोण १, कायथ १
- प्रश्नार्थक विशेषज्ञता :- कोण + ज्ञाम १, कायथ + ज्ञाम १
- प्रश्नार्थक क्रियाविशेषगत :- कसा १, केढा १, कोडे १, कीटी वेळा १

उद्धवः-

॥ रमेश अणितालि ज्ञापासु कृषा झालो ॥

→ दोकारार्थी प्रश्नार्थिक
रितीवाचक
प्रश्नार्थिक क्रिया वि

२) सत्या आपल्या क्रिकेट संघात वेगवान गोलंदाज नाही का?

→ नकारात्मी प्रस्ताविक
एकावरी क्रिया.वि.

⑦ आपल्या क्रिकेट संघात किंती फलंदाज आहेत. १

→ होकारार्थी प्रस्तार्थिक संज्ञाविशेषण

4) काश्मीरमध्ये केळा शांतता प्रस्थापित होईल. १

→ होकारार्थी प्र. कालवाचक क्रिया वि:

5) रमेश अगिलात पास का नाही झाला. १

→ नकरार्थी प्रश्नार्थक
काशनार्थी
किया वि. अव्यय

→ मुखांच्या अभ्यासाची जवावदारी कोण घेणार २

→ होकारार्थी प्रश्नार्थक
↓
प्रश्नार्थक
सर्वनाम

⇒ तृ कोरे शहतोस १

→ होकारार्थी प्रस्तार्यक

४) तु आज अव्यास केलास का ?

→ होकारार्थी प्रश्नार्थक

५) आपल्याला नोकरी केळा मिळणार ?

→ होकारार्थी प्रश्नार्थक

६) उद्गारार्थी वाक्य :-

मनातील आवनांचे प्रकटीकरण ज्या वाक्यातून केले जाते त्यास उद्गारार्थी वाक्य म्हणतात.

- उद्गारार्थी वाक्यात्वारे मनातील तीव्र आवना व्यक्त केल्या जातात.
- वाक्याच्या शेवटी उद्गारवाचक चिन्ह घेते. (!)
- केवलप्रयोगी अव्ययाच्या ऐवजी वाक्यात आनिश्चित सर्वनामे वापरली जातात.
- उद्गारार्थी वाक्य फक्त होकारार्थी असते.

उदा:-

१) शाब्दास ! किती चांगले उत्तर दिलेस !

→ उद्गारार्थक होकारार्थी

२) बापरे ! किती मोठा साप हा !

→ केवलप्रयोगी अव्यय. (उद्गारार्थी)

३) अवळ ! यात्रेत केवढी ही गर्दी !

→ उद्गारार्थी

४) किती सुंदर फुल आहे हे !

→ आनिश्चित सर्वनाम.

5) काथ मजा येईल डृढ्याच्या सहलीत !

6) किती छान खेळला सचिन आज !

अनिश्चित
सर्वज्ञाम

7) काय अंडी पडली होली आज !

2] अर्थविस्तर वाक्याचे प्रकार (क्रियापदाच्या) :-

1) स्वार्थी वाक्य :-

स्वार्थी मृणजे स्वतःचा अर्थ.

- जेव्हा क्रियापद काळाचा वोष करते तेव्हा ते स्वतःचा अर्थ व्यक्त करत असते, तेव्हा त्या वाक्याला स्वार्थी वाक्य असे महगतात.
- स्वार्थी वाक्य होकारार्थी किंवा नकारार्थी असते.
- वाक्यावरून काळाचा वोष होतो. (तिन्हीही)

उदा:-

1) गांधीजींना सूताच्या माळा आणि आवडत. → मूतकाळ

विष्णुपूरक

→ स्वार्थी वाक्य

2) सुरेश गीत गातो. → वर्तमानकाळ.

3) आज आकाशात चंद्रकोर दिसली. → मूतकाळ पूर्ण

4) वसंत ऋतुत वृक्षांना पालवी फुटते. → भविष्यकाळ

5) उद्धा पाऊस पडणार नाही. → नकारार्थी भविष्यकाळ.

2) आशार्थी वाक्य :-

क्रियापदाच्या उपावरून आशा, विनंती, उपदेश, मागणी, परवानगी, आशीर्वाद, प्रार्थना इत्यादींचा वोष होत असेल तर ते वाक्य आशार्थी वाक्य असते.

- वाक्याच्या शेवटी मूळबाबू येतो.
- आशार्थी वाक्य होकारार्थी / नकारार्थी असते.

- आशार्थी नकारार्थी वाक्यात 'नको' हे क्रियापद असेते.

उदा:-

1) मुलांनो घाप वसा. → आशा
→ होकारार्थी आशार्थी

2) मुलांनो गोंबळ बालू नका. → विनंती
↓
नकारार्थी आशार्थी

3) बाळ, ते पडलेले पेन दे जरा. → मागणी

4) आता जश आगाचेही उत्तरावो एका. → सार्वज्ञा

5) शुक्रजी मी एक ठोष्ट सांघर. → परवानगी

- आशार्थी वाक्याचा कर्ता नेहमी द्वितीय पुलमी असतो.

6) विष्णुर्थी वाक्य:-

क्रियापदाच्या स्पावरुन कर्तव्य, शक्यता, इच्छा,
योग्यता, तर्क, चिंता इ. वीष्म ढोत असेल, तर ते वाक्य विष्णुर्थी वाक्य असते.

- विष्णुर्थी वाक्य होकारार्थी / नकारार्थी असते.

- विष्णुर्थी नकारार्थी वाक्यात 'नये' हे क्रियापद येते.

- मूळ बातूला वा, वी, वे प्रत्यय लागतात.

उदा:-

1) एकतरी ओवी अनुभवावी.

2) थन तोचि देव जाणावा.

3) मरावे परि किर्तिलिपे उरावे.

4) मागसाने स्वकष्टाने थन मिळवावे.

5) खोटे कणी बोलू नये.

6) चोरी कणी करू नये.

7) मुलांनी आईवडीलांना त्रास देवू नये.

→ होकारार्थी
विष्णुर्थी

4) संकेतार्थी वाक्यः-

क्रियापदाच्या रूपावरून जर-तर अशी अट-
व्यक्त होत असेल तर त्या वाक्यास संकेतार्थी वाक्य असे
म्हणतात.

उदा:-

1) मी निये ऊसतो तर हे आंडग होऊच दिले नसते.

→ संकेतार्थी

२) जर दारात कुन्ना असता तर घोर घरात शिरबेच नसते.

→ संकेतार्थी

३) जर कैकथीने हट्ट घरला नसता तर राम वनात गेलाच
नसता.

→ संकेतार्थी

४) शिवाजी महाराज नसते तर शिवशाही निर्माण न गोती.

→ संकेतार्थी

3) क्रियापदाच्या वाक्यरचनेवस्तुन वाक्याचे प्रकार :-

1) केवल वाक्य / साथे वाक्य / शुद्ध वाक्य :-

ज्या वाक्यात एकच उद्देश्य आणि एकच विषेय
असते त्या वाक्याला केवळ वाक्य असे म्हणतात.

उद्दा :-

▷ आजोवा फास्च अकले आहेत.
 उद्देश्य संयुक्त क्रि.

→ अर्थात् होकारार्थी

⇒ ते नेहमी घरीच आसतात → केवल वाक्य
कर्ता (उद्देश्य) विधेय

⇒ वेड्याने सगळे कपडे फाडले → केवल वाक्य
विषय

4) खोटे बोलाने चांगले नावी. → केवल वाक्य
आतूसाधित विषय

5) वनवासानंतर शम राजा झाला. → केवल वाक्य
कर्ता(उद्देश्य) विषेय

6) अशावेळी माणसाने आधी कुरच्छनीवर बोलावे. → केवल
विषय

⇒ अरेच्चा ! आज् कार्यालय वंदे दिसतंय → केवल
उद्देश्य विधीय

४) या कार्यालयाचे मुख्याधिकारी मला कोठे भेटतील? → केवल
उद्देश्य ↓ विषेय

10) उद्योगासून परीक्षा सुरु होईल . → केवल .
उद्योग परीक्षा सुरु होईल विद्येय

2) संयुक्त वाक्य :-

जेव्हा दोन प्रधान उपवाक्य प्रधानत्वसूचक उभयान्वयी
अव्यायांनी जोडली जातात, तेव्हा त्या वाक्यास संयुक्त वाक्य असे
रहणालाई.

- संयुक्त वाचात् ऐरारी सर्व वाक्ये ही प्रधानवाक्ये
असतात्.

- उपर्युक्ती अज्ञय काहन दाक्षिण्यस त्या वाक्थाना केवल वाक्य आसे इहोतात.

* प्रब्लानत्वसंचक उभयान्वयी अव्ययः-

1] समुच्चय वोधक (++) :- आगि , व, शिवाय , आणजी.

2] विकल्पबोधक (+ +) :- किंवा, अथवा, नाहीतर, वा, अगर

उ) व्युनत्व बोधक (+ +) :- पण, परंतु, वाकी, किंतु, परी.

4) परिणाम वोषक (+ +) :- महणून, यासाठी, चास्तव, व्यामुळे, वस्फूत.

अद्वा:-

१) मी तिचा निशेप चेतला आगि निघालो

समुच्चय वोषक

२) मी दररोज व्यायाम करतो महणून आनंदी शहतो.

परिणामवोषक

३) डॉक्टर वेळेवर आले म्हणून तो बचावला.
परिणामबोधक

४) बाकू जेवला व झोपी गेला.
समुच्यवोधक

५) घंटा होते व शाळा सुटते.
समुच्यवोधक

६) मी दररोज दैनंदिनी लिहितो पुरंतु आज नाही लिहिली.
न्युनत्वबोधक

७) मिश्र वाक्य :-

जोळा एक प्रथान वाक्य वा असेही गौण वाक्य
गौणत्वसूचक उभयान्वयी अव्ययांनी जोडली असेही, तेहा त्यास
मिश्रवाक्य असे उहणतात.

- मिश्रवाक्यात केवळ एकच प्रथान वाक्य असते, उसर वाक्ये ही
गौण वाक्ये असतात.

* गौणत्वसूचक उभयान्वयी अव्यय :-

१) स्वरूपबोधक (+ -) :- म्हणजो की दो

२) कारणबोधक (+ -) :- कारण, काळी, काढी

३) उद्देश बोधक (- +) :- म्हणून, सवाल, घासाचा

४) संकेत बोधक (- +) :- जर, तर, तरी

- गौणत्वसूचक उभयान्वयी अव्ययाने जोडले जाणरे वाक्य हे मिश्र वाक्य असते.
 - आशीवाय सर्वनामे, विशेषणे यांचा वापर कसून मिश्र वाक्य बनवता येते. (क्रियाविशेषणे देखील असते) . (-+).
 - मिश्र वाक्यामधील गौण वाक्य हे तीन प्रकारचे असते.

।) नाम गौण वाक्यः

३) विशेषण गौण वाक्यः

३] क्रियाविशेषण गौण वाक्यः

।। नाम गीत वाक्य :-

नामाच्या जाणी येणाऱ्या उपवाक्यास नाम
बोण वाक्य असे म्हणतात.

- नाम गौण वाक्य तीन प्रकारे वापरने जाते :-

1] नाम शौण वाक्य मिश्र वाक्याचा कर्ता महान्:

२) नाम गौण वाक्य मिश्र वाक्याचे कर्म हणून:

३] नाम गौण वाक्य मिश्र वाक्याचे लिंगानुरूप रहानु:

- मिश्र वाक्यात् नाम शौण वाक्य जर नंतर आले असेल तर त्यापूर्वी की, ऐसा, जो हे शब्द घेतात.

- मिश्र वाक्यात् नाम गौण वाक्य जर पूर्वी आले असेब लर त्याच्यानंतर कहणून, हे, असे हे शब्द येतात.

① नाम गौण वाक्य प्रभान वाक्याचा कर्ता म्हणून:-

उदा:-) तु जे म्हणतोस ने मला पट्ट नाही

नाम गीत वाक्य
(कृति)

(**काय ने प्रश्न**)
विचारब्धावर

2) तु जे वोलतोस ते योग्य नाही

| | |
|--------------------------|--|
| नाम गौण वाक्य (कर्ता) | प्रधान वाक्य (काय ने प्रश्न विचारावा) |
|--------------------------|--|

② नाम गौण वाक्य प्रधान वाक्याचे कर्म रूपानु :-

उदाः:-

1) गावाहून अेताना तुला कपडे आणि असे दादा महणाला.

| | | |
|-------------------------|------------------|-----------------|
| नाम गौण वाक्य (कर्म) | दर्शक सर्वनाम | प्रधान वाक्य |
|-------------------------|------------------|-----------------|

2) राजा महणाला की हत्तीवसुन साखर वाटा

| | | |
|----------------------|--------|-------------------------|
| प्रधान वाक्य बोधक | स्वरूप | नाम गौण वाक्य (कर्म) |
|----------------------|--------|-------------------------|

③ नाम गौण वाक्य प्रधान वाक्याचे विष्णानपूरक रूपानु :-

उदाः:-

1) सच्या मारतासमोरचा यक्षप्रश्न हा आहे की मारताची
लोकसंख्या वेगाने वाढत आहे.

| | | |
|-----------------|--------------------------------|-----------------|
| प्रधान वाक्य | नाम गौण वाक्य (विष्णानपूरक) | स्वरूप- बोधक |
|-----------------|--------------------------------|-----------------|

हा = मारताची लोकसंख्या वेगाने वाढत आहे
विष्णानपूरक

2) प्रश्न हा आहे की आपल्या देशातील दारिद्र्य कसे कर्मी
होईल.

| | | |
|-----------------|-----------------|--------------------------------|
| प्रधान वाक्य | स्वरूप- बोधक | नाम गौण वाक्य (विष्णानपूरक) |
|-----------------|-----------------|--------------------------------|

२) विशेषण ग्रौण वाक्यः-

केवल वाक्यात् ज्या-ज्या छिकानी विशेषण
येते, मिश्र वाक्यात् त्या-त्या छिकानी विशेषण गौण वाक्य येते.

उदाः-

▷ दोन्ही हातांनी मोजता घेणार नाही एखटी संपत्ती शरण्यांनी
कमावली. (विशेषण गौण वाक्य) कर्म कर्ता
प्रधान वाक्यातील कर्मचे
विशेषण महणून आले आहे

⇒ त्यांच्यापैकी जी मुलगी बुटकी होती ती सर्वात पुढे आली
 (विशेषण छोण वाक्य प्रबान) करती
 वाक्यातील कर्त्याचे विशेषण
 महाराष्ट्र आले आहे.

जी-ती → संवंधी सर्वनाम .

3) भवभूती असा कवी होता की त्याचा स्वाभिमान अत्यंत

3) क्रियाविशेषण गौण वाक्य :-

केवल वाक्यात क्रियाविशेषणे ज्ञा-ज्ञा ठिकाणी येतात, मिश्र वाक्यात त्या-त्या ठिकाणी क्रियाविशेषण गौण वाक्य येते.

उदा:-

1) जेव्हा भारत संपन्न होता लेव्हा भारतात सोन्याचा घर निघत होता. ↓ ↓
क्रिया.वि. गौण वाक्य
(कालवाचक)

2) दिव्यताची जेथे प्रचिनी लेशे कर माझे जुळती. ↓ ↓
क्रिया.वि. गौण वाक्य प्रब्लान वाक्य
(स्थलवाचक)

3) जर उद्या घडयाळाचा गजर झाला नाही तर मला अठायबा उशीर होईल. ↓
क्रिया.वि. गौण वाक्य

4) तो वाचला काऱण त्याने उडी मारली. ↓ ↓
प्रब्लान वाक्य रितीवाचक क्रिया.वि.
(का ने प्रश्न विचारवा)

5) जसे पेराल तसे उगवेल. ↓ ↓
रितीवाचक क्रिया.वि. प्रब्लान वाक्य
(कसे ने प्रश्न विचारवा)

2) वाक्य रूपांतर :-

वाक्याचा अर्थ वदलून देता वाक्यात केलेला
वदल नहणजे वाक्य रूपांतर होय.

1) करणस्प वाक्याचे अकरणस्प वाक्यात रूपांतर, विश्वद्वार्थी
शब्दाचा वापर :-

→ तो साक्षर आहे.

→ तो निश्चर नाही.

→ तो आज पोटमर जेवला.

→ तो उपाशी शहिला नाही.

3) सिमा मोठमोठ्याने बोलते.

→ सिमा हळुआवाजात बोलत नाही.

4) मुऱ्य कस मढावे, पाप तरी टाळावे.

→ मुऱ्य करता येत नसेल तर पाप तरी कस नये.

5) तस्णपिढी वृद्ध्यांना कमी लेखते.

→ तस्णपिढी वृद्ध्यांना जुमानत नाही.

6) आकाशात दिवसा चंद्र अस्तंगत असतो.

→ आकाशात दिवसा चंद्र दिसत नाही.

7) आजची रुग्णी स्वतःवदल पुरेसा स्वाभिमान वाळशून आहे.

→ आजची रुग्णी स्वतःला कमी लेखत नाही.

2) विष्णुर्थी वाक्य करणस्पचे अकरणस्प :-

- 1) चोंगले बोलावे चोंगले वागावे.
- वाईट बोलू नये वाईट वागू नये.
- 2) पालकांनी मुलांशी प्रेमाने वागावे.
- पालकांनी मुलांना उटसूट घाक दाखवू नये.

3) आज्ञार्थी वाक्य करणस्प चे अकरणस्प :-

- 1) मुलांनो मोळ्यांचा आदर राखा.
- मुलांनो मोळ्यांचा अनादर करू नका.
- 2) तू सतत वाचन करा.
- तू वाचनाशिवाय राहू नकोस.

* 4) शब्दाधी जात बदलून वाक्य रूपांतर :-

- 1) मग घरीव माणसांनी कुणाकडे पाहावे.
- मग घरीवांनी कुणाकडे पाहावे.
- 2) उन्हामुळे त्याच्या चेहऱ्यावर घाम आला.
- उन्हामुळे त्याचा- चेहरा घामाजला
 ↳ नामसाधित क्रियापद
- 3) मी कागद टरकावून फेकून दिला.
- मी कागद टरकावला व फेकून दिला.

4) हा मुलगा हुशार आहे. → (विशेषण)
हा हुशार मुलगा आहे. → (सर्वनाम)] → हा

5) उद्घारार्थी वाक्याचे विद्यानार्थी वाक्यात स्पांतर :-

1) किंति | सुंदर चित्र आहे हे !
→ हे चित्र अर्थात सुंदर आहे.

2) काय | वेगात खाला निर्भय शर्यतील !
→ निर्भय शर्यतील खुप वेगात खाला.

3) अवव ! केवढा झोडा ठग हा !
→ हा फारच झोडा ठग आहे.

4) मी राज्याचा मुळ्यमंत्री झालो तर !
→ मला राज्याचा मुळ्यमंत्री होण्याची तीव्र इच्छा आहे.

5) मला बौतरी लागली तर !
→ मला बौतरी लागली अजी माझी तीव्र इच्छा आहे.

6) आज्ञार्थी वाक्याचे विष्ण्यार्थी वाक्यात स्पांतर :-

1) राजू अभ्यास कर.
→ राजूने अभ्यास करावा.

2) मुलांबो आई-वडीलांची आज्ञा पाळा.
→ मुलांबी आई-वडीलांची आज्ञा पाळावी

३) नागरिकांनो देशसेवेसाठी तथार शहा.
→ नागरिकांनी देशसेवेसाठी तथार शहावे.

७] प्रश्नार्थी वाक्याचे विवानार्थी वाक्यात रूपांतरः-

१) हापूस आंवा कोणाला आवडल नाही ?

→ हापूस आंवा सर्वांनाच आवडतो.

२) गरीबाला मदत करायला नको काय ?

→ गरीबाला जसर मदत करायला हवी.

३) अपमान केळ्यास कोणाला राग येत नाही ?

→ अपमान केळ्यास सर्वांनाच राग येतो.

४) वोलव्याचा आणि खाव्याचा काय संवंछ ?

→ वोलव्याचा आणि खाव्याचा काहीही संवंछ नाही.

५) मध्यरात्री स्मरणभूमीत कोण एकटा जाणार ?

→ मध्यरात्री स्मरणभूमीत कोणीही एकटा जाणार नाही.

८] केवल वाक्याचे मिश्र व संयुक्त वाक्यात रूपांतरः-

१) भूक भागव्यामुळे शजू सर्वांच्या अगोदर जेवला.

→ शजू सर्वांच्या आई जेवला कारण त्याला भूक भागली होती (मिश्र)

→ अूक लागली महणून राजू सर्वांच्या आणी डोवला (संयुक्त)

२) मनस्वी आणि कार्याची मुरुरुप हलाश होऊन श्वस्य बसत नाही.

→ मनस्वी आणि कार्याची मुरुरुप हलाश होत नाही. व श्वस्यही बसत नाही. (संयुक्त)

→ मनस्वी आणि कार्याची मुरुरुप जेसा हलाश होत नाही तसा श्वस्यही बसत नाही. (मिश्र)

३) मला लाप आल्यामुळे मी शाळेत जाणार नाही.

→ मी शाळेत जाणार नाही कारण मला लाप आला आहे. (मिश्र)

→ मला लाप आला आहे महणून मी शाळेत जाणार नाही. (संयुक्त).

3) वाक्य संश्लेषण / वाक्य संकलन :-

दोन किंवा अधिक केवल वाक्यांचे एक वाक्य घेनवणे यास वाक्य संश्लेषण असे म्हणतात.

- वाक्य संश्लेषणात केवल, मिश्र व संयुक्त वाक्ये घेनवली जातात.

उदा:-

1) तो फरशीवरुन चालत होता. त्याचा पाय बसरला. तो पडला.

→ फरशीवरुन चालत असताना तो पाय बसरुन पडला.

2) वाळ्या कोळी जंगलात राहत होता. तो वाटसरुना मारायचा. तो त्यांची संपत्ती लुटायचा.

→ जंगलात राहणार वाळ्या कोळी वाटसरुना मारायचा व त्यांची संपत्ती लुटायचा.

3) दोन मित्र वाटेने चालले होते. वाटेत त्यांना गाईचे वासरु दिसले ते सुंदर होते.

→ वाटेने चाललेल्या दोन मित्रांना गाईचे सुंदर वासरु दिसले.

4) घुवड इंग्रजी वाड्मयात ज्ञानाचे प्रतिक आहे. पण त्या घुवडाला मात्र आपल्याकडे अशुभ मानतात.

→ इंग्रजी वाड्मयात ज्ञानाचे प्रतिक असलेल्या घुवडाला मात्र आपल्याकडे अशुभ मानतात.

5) अडीच रूपयांचे भी वी पेरले. दोन पैशांचीही आजी मिळाली नाही. हे त्यांनी ऐकले. त्यांना हसू आवरेना. माझी मुळीच निराशा झालेली नव्हती.

→ अडीच सूपयांचे बी पेश नही दोन मैशांचीही आजी मिळाली नाही हे ऐकून त्यांना हंसू आवरेना पण माझी मूळीच निशशा झाली नव्हती.

$$\boxed{\text{मिश्र} + \text{केवल} = \text{संयुक्त वाक्य}}$$

$$\boxed{\begin{aligned} \text{केवल} + \text{केवल} &= \text{केवल} \\ &\quad + \text{मिश्र} + \text{केवल} = \text{संयुक्त} \\ \text{केवल} + \text{केवल} &= \text{केवल} \end{aligned}}$$

6) ठे साथं तत्व आहे त्याचा अर्थ समजाला पाहिजे. ते दुष्टारी तब्बलवारीसारखे आहे. ते कापत जातं.

→ हे साथं तत्व आहे पण त्याचा अर्थ समजाला लर ते दुष्टारी तब्बलवारीसारखे कापत जातं.

$$\boxed{\text{केवल} + \text{मिश्र} = \text{संयुक्त}}$$

7) तू अशक्त आहेस का? भरपूर खेळ व्यायाम कर.

→ तू अशक्त असर्णील तर भरपूर खेळ आणि व्यायाम कर.

$$\boxed{\text{मिश्र} + \text{केवल} = \text{संयुक्त}}$$

8) ① उत्तर पत्रिकेची फैशनपासणी व्यर्थ आहे.

② जरी पुन्हा पेपर तपासला तरी मिळालेल्या गुणात विशेष वाढ होणार नाही.

→ उत्तर पत्रिकेची फैशनपासणी व्यर्थ आहे कारण जरी पुन्हा पेपर तपासला तरी मिळालेल्या गुणात विशेष वाढ होणार नाही.

$$\boxed{\text{केवल} + \text{मिश्र} = \text{मिश्र}}$$

→ जरी पुढा पेपर तपासला तरी मिळालेल्या गुणात विशेष वाढ होणार नाही म्हणून उत्तरपत्रिकेची फेरतपासणी व्यर्थ आहे.

मिश्र + केवल = संयुक्त

- १) मी नोकरीतून निवृत्त झालो. मला योडी फूरसत मिळाली. सुताराकडून एक झोपाळा करवून घेतला. त्याची वागेत स्थापना केली.
- मी नोकरीतून निवृत्त झाल्यावर योडी फूरसत मिळताच सुताराकडून एक झोपाळा करवून घेवून त्याची वागेत स्थापना केली.

4) वाक्य पूर्णकरण :-

पूर्णक महणजे वेगळे आणि करण महणजे करणे.

- वाक्यातील घटक वेगळे करण त्यांचा एकमेकांशी असलेला संबंध दाखविणे महणजे वाक्य पूर्णकरण होय.
- वाक्य पूर्णकरण, वाक्य संश्लेषण, वाक्य रूपांतर हे घटक इंग्रजी व्याकरणातून मराठीत आले आहेत.
- वाक्यमीमांसा व वाक्याचे पूर्णकरण वा शंख (।४४४) गोपाळ अणेश आग्रकर यांनी बिहिला.
- वाक्य पूर्णकरणाबाबत वाक्य विश्लेषण असेही महणतात.
- वाक्य पूर्णकरण हा विषय मराठीत मो.के. दामले यांनी आणला.
- कोणत्याही वाक्याचे उद्देश्य व विषय हे प्रथमो पार्श्वित संघटक असतात.

* उद्देश्य :-

ज्याच्या विषयी चाक्यात विष्णान केलेले असते, त्याला उद्देश्य असे महणतात.

उदा :-

1) मनुष्य मर्त्य आहे

उद्देश्य-मनुष्य

2) मो.के. दामले यांनी 'शास्त्रीय मराठी व्याकरण' हा शंख बिहिला.

उद्देश्य- मो.के. दामले.

* विषय :-

उद्देश्याविषयी वाक्यात जे विष्णान केलेले असते, त्याला विषय असे महणतात.

उदा :-

1) मनुष्य मर्त्य आहे.
विषय

2) मुळे गावावहेर खावत गेली
विषेय

- परंतु वाक्यपृथक्करणात मात्र फक्त क्रियापदालाच विषेय असे संबोधले जाते.
- उद्देश्यावस्न व विषेयावस्न वाक्याचे दोन विभाग पडतात:

1] उद्देश्य विभाग

(उद्देश्यांग)

1) उद्देश्य (कर्ता) (नाम)

2) उद्देश्यविस्तार / (कर्त्त्वाची उद्देश्य विस्तारक विशेषणे)

2] विषेय विभाग

(विषेयांग)

1) विषेय (क्रियापद)

2) विषेयविस्तार (क्रियाविशेषण)

3) कर्म / कर्मपूरक (नाम)

4) कर्मचा विस्तार / कर्मपूरकाचा विस्तार (कर्माची विशेषणे)

5) विषेयपूरक

① विषानपूरक (नाम/सर्वनाम)

② कर्मपूरक (नाम/सर्वनाम)

③ विषीपूरक (विषीविशेषणे)

④ आवारपूरक (क्रियाविशेषण)

1] उद्देश्य विभाग :-

उद्देश्य व उद्देश्यावदाल माहिती सांगणारे शब्द उद्देश्य विभागात घेतात.

1] उद्देश्य / मूळ उद्देश्य :-

2] उद्देश्य विस्तार / उद्देश्य विस्तारक :-

1] उद्देश्य :- यालाच मूळ उद्देश्य असे म्हणतात.

- वाक्यातील कर्ता म्हणजेच उद्देश्य होय.

उदा:-

1) प्रवासमाडणातील वाढीचा निषेध करण्यासाठी प्रवासी
रस्त्यावर उत्तरले विषेध उद्देश्य

2) मुले गावाकाहें खावल गोली
उद्देश्य विषेध

3) ऐशगावच्या सारांचाचा बैल शर्गतील पहिला आला
उद्देश्य विषेध

2] उद्देश्यविस्तार / उद्देश्यविस्तारक :-

उद्देश्यविस्तार म्हणजे कर्त्यावद्युल माहिती सांग-
णारे शब्द होय.

- उद्देश्य विस्तारामध्ये कर्त्याची विशेषणे व समानांगीकरणाचा
समावेश होतो.

समानांगीकरण :-

एखाद्या नामाचे स्पष्टीकरण करणाऱ्या त्याच
अर्थाच्या शब्दास समानांगीकरण असे म्हणतात.

- या दोन्ही शब्दांची विभक्ती एकच भसते.

उदा:-

1) मावळ्यांचे उद्घारक आणि मराठी स्वराज्याचे संस्था-
पक छत्रपती शिवाजी महाराज महाराष्ट्राचे दैवत
आहेत विषेध विद्यानपूरक

उद्देश्य - शिवाजी महाराज

उद्देश्य विस्तार - मावळ्यांचे उड्हारक आणि मराठी स्वराज्याचे संस्थापक.

२) मुलांचे आवडते दीनांचे कैवारी साने गुरुजी योर देशमवत
होते. विद्यानपूरक

उद्देश्य - साने गुरुजी

उद्देश्य विस्तार - मुलांचे आवडते दीनांचे कैवारी

३) त्याचा खाकटा मुलगा आज क्रिकेटच्या सामन्यात चांगाबा
खेळला

उद्देश्य - मुलगा

उद्देश्य विस्तार - त्याचा खाकटा

४) तो सडधातळ आणि उंच मुलगा फार हुशार आहे.
विद्यीपूरक

उद्देश्य - मुलगा

उद्देश्य विस्तार - तो सडधातळ आणि उंच.

२] विषेय विभाग :-

विषेय महणजेच क्रियापद व क्रियापदाशी संबंधित असणारे शब्द यांचा समावेश विषेय विभागात होते.

- विषेय विभागात पुढील घटक येतात.

१] विषेय

२] विषेय विस्तार

३] कर्म / कर्मपूरक

४] कर्माचा विस्तार / कर्मपूरकाचा विस्तार

५] विषेय पूरक व त्याचे ५ प्रकार

१] विषेय :-

वाक्यातील क्रियापद महणजेच विषेय होय.

उदा:-

▷ आम्ही मेटकाई बनवित आहोत.
↓ ↓ ↓
उद्देश्य कर्म / विषेय
 कर्मपूरक (संयुक्त क्रि)

▷ रमेश वडीत महिला आला.
↓ ↓ ↓ ↓
उद्देश्य विषेय विषेय विषेय
 विस्तार विस्तार

2] विष्णुय विस्तार :-

विष्णुया वद्दुल माहिती सांगणारे शब्द महाजेच
क्रियाविशेषजो वाक्यात विष्णुय विस्ताराचे कार्य करतात.

उदा:-

- 1) आज लेवकर घरी या.
 विष्णुये विस्तार विष्णुये विष्णुये
 (या वाक्यात कर्ता अव्याहृत आहे (तु/तुम्ही))

2) मी आज सकाळी मैदानावर भराभर चार फेण्या मारल्या
 विष्णुये विस्तार कर्म- कर्म विष्णुये
 (क्रिया.वि.) विस्तार

३) कर्म / कर्मपूरक :-

कर्त्यानि केलेली क्रिया ज्याच्यावर घडते त्यास
कर्म असे महणतात.

- कर्म वाक्यात, वाक्याचा अर्थ पूर्ण करण्यासाठी पूरक महान येते, तेळा त्यास कर्मपूरक असे महातात.
 - वाक्यातील प्रत्यक्ष कर्म व अप्रत्यक्ष कर्म दोघेही कर्मपूरकाचे कार्य करतात.
 - अप्रत्यक्ष कर्म असलेल्या कर्मपूरकाला केळा-केळा विभानपूरक असेही महातात.

उद्दा:-

- | | | | |
|----------|-----------------|-------------------|---------|
| यशोदेने | श्रीकृष्णाला | बोली | दिले. |
| उद्देश्य | कर्मपूरक / | कर्म / | विष्णुय |
| | विष्णानपूरक / | कर्मपूरक | |
| | अप्रत्यक्ष कर्म | प्रत्यक्ष कर्म | |

2) शिळ्हकांनी विष्वार्थ्याना एक शुंतागुंतीचे गाणीत सोडविष्यास
दिले उद्देश्य कर्मपूरक / कर्मपूरकाचा
विष्वेय विष्वानपूरक विस्तार

- विष्वेयविस्तार — सोडविष्यास दिले.

4) कर्मविस्तार / कर्मपूरकाचा विस्तार :-

कर्मविद्वल माहिती सांगणाऱ्या शब्दांना,
महणजेच कर्माच्या विशेषणांना कर्मपूरखाचा / कर्माचा विस्तार
आसे महणतात.

उदा:-

1) मी तिला अलीकडे एकली फोन केला नाही
उद्देश्य ↓ ↓ ↓ ↓ विष्वेय
अप्रत्यक्ष विष्वेय
कर्म विस्तार प्रत्यक्ष
कर्म

2) पोलिसांनी सापळा रचून कुस्त्यात शुंडाला पकडले
उद्देश्य विष्वेय कर्म / कर्म / विष्वेय
विस्तार कर्मपूरकाचा कर्मपूरक
विस्तार

3) मधू गोष्टीचे मुस्तक खुप तन्मयतेने, वाचतो,
उद्देश्य कर्म / कर्म / विष्वेय विष्वेय
कर्मपूरकाचा कर्मपूरक विस्तार
विस्तार

५) विषेषपूरक :-

कर्ता व क्रियापद जोळा वाक्याचा अर्थ पूर्णकरव्या-
साठी असमर्थ तरतात, तेळा वाक्याचा अर्थ पूर्ण करव्यासाठी
एखादा शब्द पूरक म्हणून येतो तेळा त्यास विषेषपूरक असे
महणतात.

- विषेष पूरकाचे चार प्रकार पडतात:

१) विषानपूरक :

२) कर्मपूरक :

३) आषारपूरक :

४) विषीपूरक :

१) विषानपूरक :-

अ) कर्त्याच्या अगोदर आलेले चतुर्थी विषक्तीतील शब्द
विषानपूरकाचे कार्य करतात.

उदा:-

१) राजाभा मुकूट शोभतो.
 ↓ ↓ ↓
 विषानपूरक उद्देश्य विषेष

२) गुलाबाला काटे असतात.
 ↓ ↓ ↓
 विषानपूरक उद्देश्य विषेष

ब) कर्ता व कर्त्यानंतर आलेले नाम दोघेही एकच
असतील तर कर्त्यानंतर आलेले नाम विषानपूरकाचे कार्य करते.

उदा:-

१) राम राजा झाला.
 ↓ ↓ ↓
 उद्देश्य विषान- विषेष
 पूरक

2) कालिदास कवी होता
उद्देश्य विद्यान् विषेय
पूरक

3) नथ हा सोन्याचा दागिना आहे.
उद्देश्य विद्यानपूरक विषेय

2] कर्मपूरक :-

वाक्यातील प्रत्यक्ष कर्म किंवा अप्रत्यक्ष कर्म हे
कर्मपूरकाचे कार्य करते.

1) श्रीकृष्णाने सांघिपाणिना दक्षिणा दिली.
उद्देश्य कर्मपूरक कर्मपूरक विषेय
(विद्यानपूरक)

2) आजीने नातीला घोष्ट सांगितली.
उद्देश्य कर्मपूरक कर्म- विषेय
(विद्यानपूरक) पूरक

३] आधारपूरक :-

वाक्यात् स्थलवाचक क्रियाविशेषो जेष्ठा गतीवाचक
क्रियापदावरोबर येतात् तेष्ठा ती आखारपूरकाचे कार्य करतात.

उदा :-

1) मुले गावावहेर घावत घेली
 ↓
 आघारपूरक

* 2) तो मुंबईला गोला.
 ↓
आखारपूरक/
विष्णेशविस्तार

३) नदी समुद्रास मिळते
 ↓
 आधारपूरक/
 विषेषविस्तार

4) लोक रस्त्यावर उत्तरले
 ↓
आषार पुरक

4) विष्णुपूरक :-

कर्त्याची विष्णीविशेषणे वाक्यात विष्णीपूरकांचे कार्य करतात.

उदाः-

उदाः- द्विसते सुंदर सरिता विषीपूरक

विष्णीविशेषणे वाक्यात्
विष्णीपूरकाचे कार्य करतात्

2) शुक्लजी शगावबेले दिसतात
विषीपूरक

2) शेहन हुशार आहे.
विषेषक

* केवल वाक्याचे वाक्य मूर्खकरण :

उद्दा:-

1) शेजारच्या अविने आमच्या छोट्ला एक पतंग तथार करून दिला.

- उद्देश्य → अविने
- विषेय → दिला
- उद्देश्यविस्तार → शेजारच्या
- विषेयविस्तार → तथार करून
- कर्मपूरक → छोट्ला, पतंग
- कर्मविस्तार → एक, आमच्या
- विषेयपूरक → छोट्ला
- विधानपूरक → आमच्या छोट्ला

{'दिला' क्रियापद वाक्यात
दोन कर्म घेऊन घेते.}

2) देखाळ अंतःकरणाच्या साने गुरुजींनी अंडीत कुडकुडणाऱ्या माणसाला आपला सदरा दिला.

- विषेय → दिला
- उद्देश्य → साने गुरुजींनी
- उद्देश्यविस्तार → देखाळ अंतःकरणाच्या
- विषेयपूरक → सदरा, माणसाला
- कर्मपूरक → सदरा.

- विद्यानपूरक → अंडीत कुडकुडणाऱ्या माणसाला.
- कर्मपूरकाचा → आपला.
- विस्तार.

3) आपांचा मोठा मुलगा यंदाच डॉक्टर ह्याला आहे.

- विषेय → ह्याले
- उद्देश्य → मुलगा
- उद्देश्यविस्तार → आपांचा मोठा
- विषेय विस्तार → यंदाच
- कर्मपूरक → —
- विषेयपूरक → —
- कर्मविस्तार → —
- विष्णानपूरक → डॉक्टर

4) आनंदवनात जागारे प्रवासी माणसाची दुर्दम्य इच्छाशक्ती पाहन अंतर्मृष्य होतात.

- विषेय → होतात
- उद्देश्य → प्रवासी
- उद्देश्य विस्तार → आनंदवनात जागारे.
- विषेय विस्तार → माणसाची दुर्दम्य इच्छाशक्ती अंतर्मृष्य

5) माझ्या मित्राने उम्हा आशुष्यात एकबाही केले नाही.

- विषेय → केले नाही.
- उद्देश्य → मित्राने.
- उद्देश्यविस्तार → माझ्या

- विषेय विस्तार → उम्हा आयुष्यात एकदाही
- कर्मपूरक → आपण

6) समर्थ शमदासांनी लत्काळीन महाराष्ट्राची भ्रमंती करून लोकस्थितीचा अभ्यास केला.

- विषेय → केला
- उद्देश्य → शमदासांनी
- उद्देश्य विस्तार → समर्थ
- विषेय विस्तार → लत्काळीन महाराष्ट्राची भ्रमंती करून
- कर्मपूरक → अभ्यास
- कर्मपूरकाचा → लोकस्थितीचा
- विस्तार

7) शरदाच्या चांदूण्यात गुलगोहर मोहक दिसतो.

- विषेय → दिसतो
- उद्देश्य → गुलगोहर
- विषेय विस्तार → शरदाच्या चांदूण्यात
- विषीपूरक → मोहक

8) भारताचे श्रेष्ठ गायक भीमसेन जोशी आता आपल्यापुढे राग-दरवारी गातील.

- विषेय → गातील
- उद्देश्य → भीमसेन जोशी
- उद्देश्यविस्तार → भारताचे श्रेष्ठ गायक
- कर्मपूरक → राग-दरवारी

- विषेय विस्तार → आता आपल्यापुढे

↳ आमचा छोटा मुलगा काळ विकत घेतलेले पुस्तक अगदी तन्मयतेने वाचीत वसला आहे.

- उद्देश्य → मुलगा

- उद्देश्य विस्तार → आमचा छोटा

- विषेय → वाचीत वसला आहे

- विषेय विस्तार → अगदी तन्मयतेने

- कर्मपूरक → पुस्तक

- कर्मपूरकाचा → काळ विकत घेतलेले विस्तार



संयुक्त वाक्याचे वाक्य पृष्ठकरण :-

उदा:-

1) आम्ही जग सुखारण्याचा ठेका घेऊन बसतो आणि जगात आमची ही गणना होते.

- विषेय → घेऊन बसतो, होते.
- उद्देश्य → आम्ही, गणना
- उद्देश्य किस्तार → आमची ही
- कर्म → ठेका
- कर्मविस्तार → जग सुखारण्याचा
- विषेयविस्तार → जगात.

2) आमच्या वावांनी मला काळ एक वैट दिली, ताईला वरवा दिला आणि आईला सुंदर साडी दिली.

- विषेय → दिली, दिला, दिली.
- उद्देश्य → वावांनी.
- उद्देश्यविस्तार → आमच्या.
- कर्म → वैट, वरवा, साडी.
- कर्मविस्तार → एक, सुंदर.
- विषेयविस्तार → काळ.
- विधानपूरक → मला, ताईला, आईला.

३) काही जोक वरदाणिणा घेतात किंवा काहीजण त्यांचा संबंध स्थिरयोन्या वारसाहककाशी जोडतात.

- विषेय → घेतात, जोडतात
- उद्देश्य → जोक, जण
- उद्देश्य विस्तार → काही, काही
 - कर्म → वरदाणिणा, संबंध
 - कर्मपूरक → त्यांचा
 - विषेयविस्तार → स्थिरयोन्या वारसाहककाशी

४) यंदा पुष्कळ पाऊस पडला पण तो अवेळी पडल्याने पिके चांगली आली नाहीत.

- विषेय → पडला, आली नाहीत
- उद्देश्य → पाऊस, पिके
- उद्देश्य विस्तार → पुष्कळ
 - विषीपूरक → चांगली
 - विषेयविस्तार → यंदा, तो अवेळी पडल्याने

* मिश्र वाक्याचे वाक्य पृष्ठवकरण :-

उदा:-

- 1) पंतप्रधानांनी सांगितले की राष्ट्रीय ऐक्य महत्वाचे आहे.
- विषेय → सांगितले, आहे
 - उद्देश्य → पंतप्रधानांनी, ऐक्य
 - उद्देश्य विस्तार → राष्ट्रीय
 - विधीपूरक → महत्वाचे
- 2) मला तुमच्यावरोवर शडावर येता येगार नाही कारण आमचे बाबा आलेले नाहीत.
- विषेय → येता येगार नाही, आलेले नाहीत
 - उद्देश्य → मला, बाबा.
 - उद्देश्य विस्तार → आमचे.
 - विषेय विस्तार → तुमच्यावरोवर, शडावर.
- 3) रामाचा जन्म झाला हे शब्द ऐकून दरशाव्याला आनंद झाला.
- विषेय → झाला, झाला
 - उद्देश्य → जन्म, आनंद
 - उद्देश्य विस्तार → रामाचा
 - विषेय विस्तार → हे शब्द ऐकून
 - विधानपूरक → दरशाव्याला.

प्रयोग

- कर्ता, कर्म, क्रियापद यांच्या संबंधाबा प्रयोग असे म्हणतात.
- प्रयोग हा शब्द संस्कृत धारा 'प्र+युज' पायऱ्युन बनला आहे, त्याचा अर्थ मांडणी किंवा जुळणी असा होते.
- कर्ता व कर्म यांची क्रियापदाशी जी मांडणी / जुळणी असते, तिला प्रयोग असे म्हणतात.
- क्रियापदाचे स्वप जेहा कर्ता व कर्म यांच्या लिंग, वचन, पुळपानुसार बदलते, तेहा त्यास प्रयोग असे म्हणतात.
- प्रयोगाचे मुख्य तीन प्रकार पडतात

प्रयोग

| <u>कर्तारी</u> | <u>कर्मणी</u> | <u>भावे</u> | <u>संकर</u> |
|----------------|---|------------------------------------|------------------------|
| ① सकर्मक | ① प्रथानकर्तृक | ① सकर्मक भावे | ① कर्तृ-कर्म |
| ② अकर्मक | ② शक्य कर्मणी | ② अकर्मक भावे | संकर. |
| | ③ समापन कर्मणी | ③ भावकर्तृक भावे / अकर्तृक भावे | ② कर्तृ- भावे संकर. |
| | ④ नवीन कर्मणी/ कर्म कर्तारी | | ③ कर्म-भावे संकर . |
| | ⑤ प्राचीन कर्मणी/ पुरुष कर्मणी / पुशाण कर्मणी / पुशतण कर्मणी | | |

1) कर्तरी प्रयोग:-

- जेवा क्रियापदाचे रूप कर्त्त्याच्या लिंग, वचन, मुलधानुसार वहलले तेषा त्यास कर्तरी प्रयोग असे रहणतात.
- कर्तरी प्रयोगात आनुवर प्रभाव टाकणारा कर्ता असतो, महणजेच आत्रक्षेपण कर्ता असतो.
 - कर्तरी प्रयोगात कर्ता नेहमी प्रथमा विभक्तीत असतो.
 - कर्तरी प्रयोगात क्रियापद शक्यतो वर्तमानकाळी येते.
 - कर्तरी प्रयोगाच्या वाक्यात कर्म असेल तर त्या प्रयोगाबा सुकर्मक कर्तरी प्रयोग असे रहणतात.
 - कर्तरी प्रयोगाच्या वाक्यात कर्म असेल तर त्या प्रयोगाबा अकर्मक कर्तरी प्रयोग असे रहणतात.
 - कर्तरी प्रयोगाच्या वाक्यात कर्म असेल तर ते प्रथमा किंवा द्वितीया विभक्तीत येते.
 - कर्माची प्रथमा विभक्ती महणजेच अप्रव्ययी द्वितीया होय.

उदा:-

प्रयोग
↓

- 1) हश्याच्या कानात तारे शिरले. → अकर्मक कर्तरी
- 2) चांदव्या रात्री शुलमोहर मोहक दिसतो. → अ.क.
- 3) रामराव शेतात जात होते → अ.क.
- 4) स्नानाश हळूहळू चालत होता → अ.क.
 ↓
 रितीवाचक
 क्रियाविः
- 5) बहुतेक परिचारिका प्रामाणिक असतात → अ.क.
- 6) तो प्रसंग असेंत हृद्यप्रावक होता → अ.क.

- 7) आरोही गाणे जाते → सकर्मक कर्तरी
- 8) मधू पुस्तक वाचतो → स.क.
- 9) मिलनचे पेन काल हारवले → अकर्मक कर्तरी
- 10) भिकूच्या वाडम्यात चार पैसे पडले → अ.क.
- 11) सचिन क्रिकेट खेळतो → सकर्मक कर्तरी
- 12) भारतात कामगार नेहमीच संप करतात → स.क.
- 13) गुलाबाबा काटे असतात → अकर्मक कर्तरी
- 14) श्रावणीबा घंडी वाजते → अ.क.
- 15) मला दुष्ट आवडते → अ.क.
- 16) नदी सागरास मिळते → अ.क.
- 17) मी पुस्तके उछार आण शकतो → सकर्मक कर्तरी
- 18) तो नेहमी नवेनवे संकल्प करीत असतो → स.क.

2] कर्मणी प्रयोग :-

- जेहा क्रियापदाचे संप कर्माच्या लिंग, वचन, मुख्यानुसार वढलते तेहा त्यास कर्मणी प्रयोग असे महतात.
- कर्मणी प्रयोगात कर्म खात्रपेश असते.
 - कर्मणी प्रयोगात कर्म नेहमी प्रथमा महणजेच अप्रत्ययी हितीयेत असते.
 - कर्मणी प्रयोगात कर्त्तव्याला कायम प्रत्यय लागतो.

कर्मणी प्रयोगाचे प्रकार :-

1] प्रबान कर्तृक कर्मणी :-

कर्मणी प्रयोगाच्या वाक्यात कर्तीच प्रबान असतो तेहा त्यास प्रबान कर्तृक कर्मणी प्रयोग असे महतात.

- कर्ता तृतीया विभक्तीमध्ये असतो.
- कर्माला प्रत्यय बागत नाही.
- भूतकाळी क्रियापद असते.

} अटी

उदा :-

1) अंतुशेठने आपले मिचमिचे डोळे युसले.

कर्ता (तृतीया विभक्ती)

कर्म (प्रत्यय नाही)

2) विद्याकाळी अनारखे केले.

3) आम्ही त्या जागेला 'हडल हाऊस' असे नाव दिले.

['कर्ता तृतीया विभक्तीत
आहे कारण क्रियापद हे
भूतकाळी आहे']

['जर क्रियापद हे कर्तमानकाळी
असते तर कर्ता हा
प्रथमा विभक्तीत असता']

4) पोलिसांनी वेर पकडला

5) कुसुमाग्रजांनी मरठी भाषेत उत्कृष्ट कविता लिहिल्या

6) शेतकऱ्यांना कष्ट करवे लागतात.

7) भिष्माने आजन्म ब्रह्मचर्य पाळण्याची शपथ घेतली.

8) यशोदेने श्रीकृष्णाला लोणी दिले
 ↓ ↓
 संप्रदान कम

2] शक्य कर्मणी :-

अटी:-

- कर्ता चतुर्थी विभक्तीत किंवा सविकरणी विभक्तीत असतो.
- कर्माला प्रत्यय नाही.
- वाक्यात शक्य क्रियापद येते.

उहा:-

1) त्याबा कद्द औषध पिवते.
 ↓ ↓
 कर्ता (चतुर्थी विभक्ती).

2) त्याच्याच्याने आता जेवण करवते.

3) माझ्याच्याने पुस्तक वाचवते.

4) त्याच्याच्याने अभ्यास करवतो.

3) समापन कर्मणी :-

अटी :-

- कर्ता यष्ठी विभक्तीत.
- कर्माला प्रत्यय नाही.
- वाक्यात संयुक्त क्रियापद.
- समापन कर्मणी प्रयोगाच्या क्रियापदावरूप क्रिया पूर्ण झाली आहे हे सुचित होते.

उदा :-

1) त्याची उत्तरपत्रिका लिहून झाली

कर्ता (यष्ठी) कर्म (प्रत्यय नाही) संयुक्त क्रियापद.

2) त्याचे जेवण करून झाले

3) माहा अश्यास करून झाला

4) त्याचे क्रिकेट खेळून झाले

5) त्याचे पुस्तक वाचून झाले

4) नवीन कर्मणी / कर्म-कर्तरी प्रयोग :-

नवीन कर्मणी प्रयोग हा इंग्रजीमधील

'Passive Voice' वरूप मराठीत असता आहे.

- या प्रयोगामध्ये कत्थाला 'कडून' हे शब्दयोगी अव्यय जोडले जाते.
- वाक्यात संयुक्त क्रियापद असते.

उदा:-

1) रामाकृष्ण शवठ मारला गेला
 कर्ता कर्म संस्कृत क्रियापद

2) न्यायाधिशांकृष्ण हड़ करव्यात आला

3) पोलिसांकृष्ण चोर पकड़ला गेला.

4) समेत पत्रके वाटली गेली.

कर्ता अद्याहृत (कोणाकृष्ण तरी)

5) सर्वांना समज दिली जाईल

कर्ता अद्याहृत (कोणाकृष्ण तरी)

5) पुरातण / प्राचीन / पुस्तक कर्मी :-

अटी:-

- संस्कृत प्रमाणे रचना.

- क्रियापदाला 'ज' प्रत्यय.

उदा:-

1) त्वा काय कर्मि करिजेले
 (क्रियापदाला 'ज' प्रत्यय)

2) नळे इंद्रासी असे बोलिलेजे

3) हिंजी निधीबापासाव महणीजेलो.

3] भावे प्रयोग :-

जेहा क्रियापदाचे सप कर्त्तव्या व कर्माच्या लिंग, वचन, पुरुषानुसार न कूलता ते तृतीयपुरुषी एकवचनी व नपुंसकलिंगी असते तेहा भावे प्रयोग असते.

- भावे प्रयोगाच्ये कर्ता व कर्म यांना महत्व नसून क्रियेचा भाव महत्वाचा असतो.
- भावे प्रयोगाच्या वाक्यासाठ्ये शक्यतो विष्ण्यर्थी क्रियापदे येतात.
- भावे प्रयोगाचे तीन प्रकार पडतात:

1) सकर्मिक भावे प्रयोग :

2) अकर्मिक भावे प्रयोग :

3) भावकर्तृक / अकर्तृक भावे प्रयोग :

1) सकर्मिक भावे प्रयोग :-

भावे प्रयोगाच्या वाक्यात कर्म असेल तर त्यास सकर्मिक भावे प्रयोग असे महणतात.

- सकर्मिक भावे प्रयोगाच्या वाक्यात कर्ता व कर्म दोघांनाही प्रत्यय बागतात.

2) अकर्मिक भावे प्रयोग :-

भावे प्रयोगाच्या वाक्यात जर कर्म नसेल तर त्यास अकर्मिक भावे प्रयोग असे महणतात.

- अकर्मिक भावे प्रयोगाच्या वाक्यात कर्त्तव्याला प्रत्यय असतो व कर्म नसते.

३) भावकर्तृक भावे प्रयोग :-

जेव्हा वाख्यात भावकर्तृक क्रियापदे येतात तेव्हा त्या प्रयोगाला भावकर्तृक भावे प्रयोग असे न्हणतात.

- भावकर्तृक भावे प्रयोगात क्रियेचा भाव हाच वाख्याचा करी असतो, दुसरा करी नसतो.

उदा :-

1) विद्यार्थ्यांनी _{करी} उमे राहावे. → अकर्मक भावे.

2) माझ्याच्याने आता मैलभर चालवल जाही. → अकर्मक भावे. /
(शक्य भावे)

3) विद्यार्थ्यांनी नेहमी हसतमुळ ऊसावे. → अकर्मक भावे /
(गौणकर्तृक भावे)

4) त्याचे मैदानावर पळून झाले → अकर्मक भावे /
(समापन भावे)

5) अर्जुनाने अश्वत्थाम्याला समझाविले → सकर्मक भावे.

6) नावाड्याने नयनला पाब्यातून बाहेर काढली → सकर्मक भावे.

7) शामाने रावणास मारले → सकर्मक भावे.

8) मांजराने छंद्रास पकडले → सकर्मक भावे.

9) प्रवाशांनी वाहेर थांवावे. → अकर्मक भावे.

10) विनोदांनी सांगितले आणि साने शुरुजिनी लिहिले
→ आकर्मक भावे

11) आम्हाला कात्रजजवळ उजाडले. → भावकर्तृक भावे

12) तिला सकाळपासून मळमळते → भावकर्तृक भावे

13) आज खेळकर मावळले → भावकर्तृक भावे

14) आकाशात सारखे शडगडते → भावकर्तृक भावे

→ {
क्रियेचा
भाव
हात
कर्ता}

4) संकर प्रयोग:-

1) कर्तृ-कर्म संकर :-

ज्या प्रयोगात कर्ती आणि कर्मणी दोन्ही प्रयोगाच्या छटा दिसतात अशा प्रयोगाला कर्तृ-कर्म संकर प्रयोग असे म्हणतात.

अटी :-

- कर्ता :- (हितीयपुऱ्याची)

एकवचन - तू अनेकवचन - तूम्ही

- कर्माला प्रत्यय नाही.

- क्रियापद :-

एकवचन - स अनेकवचन - त

उदा :-

1) तू मला पुस्तक दिलेस.
कर्ता कर्म (प्रत्यय नाही)

2) तूम्ही मला मेन दिलात

3) तूम्ही चांगले पुस्तक लिहिलेत

4) तू काच फोडलीस

5) तू पत्र पाठवलेस.

6) तुम्ही फार चांगले काम केलेत.

7) कर्तृ-भाव संकर :-

ज्या प्रयोगात कर्तरी आणि भावे दोन्ही प्रयोगात्या छटा दिसतात, अशा प्रयोगाला कर्तृ-भाव संकर प्रयोग असे म्हणतात.

अटी :-

- कर्ती :- (द्वितीयपुरुषी)

एकवचन - तू अनेकवचन - तुम्ही

- कर्माला प्रत्यय आहे.

- क्रियापद :-

एकवचन - स अनेकवचन - त.

उदा :-

1) तू मुलींना सिनेमाला जेळेस.
कर्ती कर्म (प्रत्यय आहे)

2) तू विला वाचविलेस.

3) तू भिकाऱ्याला हकबलेस.

4) तू कुश्याला मारलेस.

5) तू शाईला घालवलेस.

6) हे रामा, तू मारलेस शवगाला.

3] कर्म-भावे संकर :-

ज्या प्रयोगात कर्मी आणि भावे दोन्ही प्रयोगाच्या छटा दिसतात अशा प्रयोगाला कर्म-भावे संकर प्रयोग असे म्हणतात.

उदा:-

▷ वडिलांनी राजूला शाळेत आडला.

▷ शिवाजीने नेताजीला परत स्वधर्मीत घेतला.

* वाक्ये : (उदाः) -

1) गवळी गाय बोखतो → स.कर्तरी

2) गवळी जोशत बोखतो → अ.कर्तरी

3) गवळ्याने गाय बोखली → प्रेषान कर्तृक कर्मणी

4) गवळ्याच्याने गाय बोखवते → शक्यकर्मणी

5) गवळ्याची गाय बोखून इाली → समापनकर्मणी

6) गवळ्याकडून गाय बोखली जाते → नवीन कर्मणी

7) गवळ्याने गाईला बोखले → सकर्मिक मावे

8) गवळ्याने खूप जोशल बोखले → अकर्मिक मावे

9) तू गाय बोखलीस → कर्तृ-कर्म संकर

10) तू गाईला बोखलीश → कर्तृ-गाव संकर

11) गवळ्याने गाईला बोखली → कर्म-माव संकर

विशमचिन्ह

वाक्यात वोलताना कोठे आंबावे हे दाखविष्यासाठी
जी चिन्हे वापरणी जातात त्यांना विशमचिन्हे असे रहणातात
- विशमचिन्हे ही इंग्रजी माझेची मराठीभा देणाऱ्यी आहे.

1) स्वल्पविशम : (,)

- 1) वाक्य वोलत असताना किंचित आंबव्यासाठी
स्वल्पविशमाचा वापर करतात.
- उपवाक्य दाखविष्यासाठी स्वल्पविशमाचा वापर करतात.

उदा:-

ती सकाळी येते, भगेच कामाला लागते.

- 2) संवोषण दाखविष्यासाठी स्वल्पविशमाचा वापर
करतात.

उदा:-

1) समीर, इकडे ये.

2) शीतल, आंब जरा.

- 3) एकाच जालीचे शब्द पाठीपाठ आव्यास रोवटच्या
शब्दाखेशीज इतर शब्दानंतर स्वल्पविशम देतात.

उदा:-

1) चिंच, आंबा, मोसंबी, लिंबू ही आंकट फके आहेत.

2) चिंच, संबी, मोसंबी आगि लिंबू ही आंकट फके आहेत.

2] अर्धविशम :- (;)

स्वल्पविशमापेक्षा जास्त वेळ पण पूर्णविशमापेक्षा
कमी वेळ अंगव्यासाठी अर्धविशमाचा वापर करतात.
- न्युनत्वबोधक उभयान्वयी अव्ययापूर्वी अर्धविशमाचा वापर
करतात.

उदा:-

तु जा पण ; लवकर परत अे .

3] अपूर्णविशम :- (:)

कस्तूचा तपशील सांगव्यासाठी अपूर्णविशमाचा
वापर करतात.

उदा:-

वाजारातून आगायच्या वर्त्तः साष्टर, आईस्क्रीम, दूष.

4] प्रश्नचिन्ह :- (?)

वाक्यात प्रश्न विचारण्यासाठी प्रश्न चिन्हाचा
वापर करतात.

उदा:-

आजचा सामना कोण जिंकेल ?

5] उद्गारवाचक चिन्ह :- (!)

1) केवलप्रयोगी अव्ययान्तर उद्गारवाचक चिन्ह
वापरतात.

उदा:- अरेरे ! फार वाईट झाले .

⇒ वाक्यातून तरी मावना प्रगट इत्यास.

उदा:-

आमच्या निवी हे कुठून असणार !

6) अपसारण चिन्ह / :- (-)

स्पष्टीकरण चिन्ह

⇒ एकाद्या गोष्टीवद्दल स्पष्टीकरण देव्यासाठी
अपसारण चिन्हाचा वापर करतात.

उदा:-

सविता - सर्वे.

⇒ मुद्द्यांच्या आखारे गोष्ट तयार करूयासाठी
अपसारण चिन्हाचा वापर करतात.

7) संयोग चिन्ह :- (-)

⇒ दोन शब्द जोडूयासाठी.

उदा:-

⇒ प्रेम-विवाह

⇒ दोन-तीन

⇒ स्त्री-पुरुष

⇒ ओळीच्या शेवटी शब्द अपुरा राहिल्यास संयोग
चिन्हाचा वापर करतात.

8] बोपचिन्ह :- (.....)

द्युटमळत केलेले विषान आणि अर्धवट
तोडलेले वाक्य दाखविण्यासाठी बोपचिन्हाचा वापर करतात.

उदा:-

बाबा..... माला..... रोझर रूपये.....

9] अवग्रहचिन्ह :- (SSSSS)

विशिष्ट अद्वाशचा उच्चार लांवट कराथचा अस-
ण्यास अवग्रहाचा वापर करतात.

उदा:

शुSSSSSS कोठीही बोलू नका.

10] एकेरी अवतरण चिन्ह :- (‘ ’)

एषादा शब्द, सुभाषित, म्हण यावर भर
देलाना एकेरी अवतरण चिन्हाचा वापर करतात.

उदा:-

‘श्यामची आई’ हे मुस्तक साने शुरू.

11] दुहेरी अवतरण चिन्ह :- (“ ”)

बोलणाराच्या तोँचे शब्द दाखविण्यासाठी
दुहेरी अवतरण चिन्हाचा वापर करतात.

उदा :-

पोपट महाला, “ यापुढे मी नुस्ती पोपटपेंची करणार नाही ”

12] विकल्प चिन्ह :- (1)

एखाद्या शक्कासाठी असलेला पर्याय दाखविण्या-
साठी विकल्प चिन्हाचा वापर करतात.

उदा :-

आपण विवाहीत / अविवाहीत आहात का ?

अलंकार

माधा अधिक परिणामकारक किंवा चांगली दिसावी महणून ती वेगऱ्या पछदीने सांगन आकर्षक पछदीने मांडली जाते याबाच मापेचे अलंकार असे महणतात.

- आपल्या मनातील आशय सुंदर, आकर्षक शब्दात्मन विविध कल्पनांनी सजवून व्यक्त केले जातात यास अलंकार असे महणतात.
- श. श्री. जोग यांनी अलंकाराबा 'काव्यविभ्रम' असे महटले आहे.
- म.वा छोड यांनी अलंकाराबा 'करणाच्या कुडल-कवचा प्रसाणे' मानले आहे.
- अलंकारावद्दल सर्वीत प्रथम अभ्यास 'भरत' या नाटककाराने आपल्या 'नात्यशास्त्र' या ग्रंथात केला.
- अलंकाराचे दोन प्रकार पडतात:

1] शब्दालंकार :

2] अर्थालंकार :

3] शब्दालंकार :

जोळा मापेतील शब्दरचनेमुळे झापेला सौंदर्य प्राप्त होते, तेहा शब्दालंकार असे महणतात.

- शब्दालंकाराचे तीन प्रकार पडतात:

1] अनुप्रास अलंकार :

2] यमक अलंकार :

3] ख्लेप अलंकार :

1] अनुप्रास अलंकार :-

एथाद्या वाक्यात किंवा कवितेच्या चरणात एकाच अहराची पुनरावृत्ती होऊन आधेना जेहा सौदर्य प्राप्त होते तेहा त्यास अनुप्रास अलंकार असे म्हणतात.

आः:-

- 1) मृठेपणाचा सार्ग मुरणाच्या मैदानातून जाले.
- 2) मुनमोहिनी तुळा मोहक मोहरा मुनातून चाढ्या मावळेना.
- 3) काकीने काकांचा काळा कोट कात्रीने कुराकरा कापला.
- 4) पेटवीले पापाण पुगावरती शिवबांनी, बळ्यामध्ये गाजे संतांची वाणी.
- 5) सप्तपदे सहवासे सख्य साथूशी घडते.
- 6) गडद निळे गडद निळे जलद मरुनि आले शितल तजू चूपल चुरण अनिलघान निधाले.

2] थमक अलंकार :-

कवितेच्या खेवटी, मध्ये किंवा द्वाविक ठिकाणी
एक किंवा अनेक अक्षरे वेगळ्या झाऱनी / पढूनीने घेतात,
तेहा थमक अलंकार ठेते.

उदा:-

1) बाल लुङ्गा अंगवता,
बाल लुङ्गा अंबी ताता,
बाल रुगांच्या पेशींचा किंती गं केलाई साठा.

2) भनवव करी गातं,
डोळं नाडी ज्याप्याला,
एकटक पाहू कसं लुकलुकणाऱ्या ताप्याला.

3) मवानी आमुची आई
शिवाजी आमुचा रागा
मराठी आमुची बोली
अभीमी आमुचा चाणा.
— माधव ज्युलीयन.

4) सुकंगती सदा घडो,
सुजन वाक्य कांबी पडो,
कलंक मतिचा झडो
विषय सर्वथा नाआवडो
— शमदस स्वामी.

३) श्लेष अलंकार :-

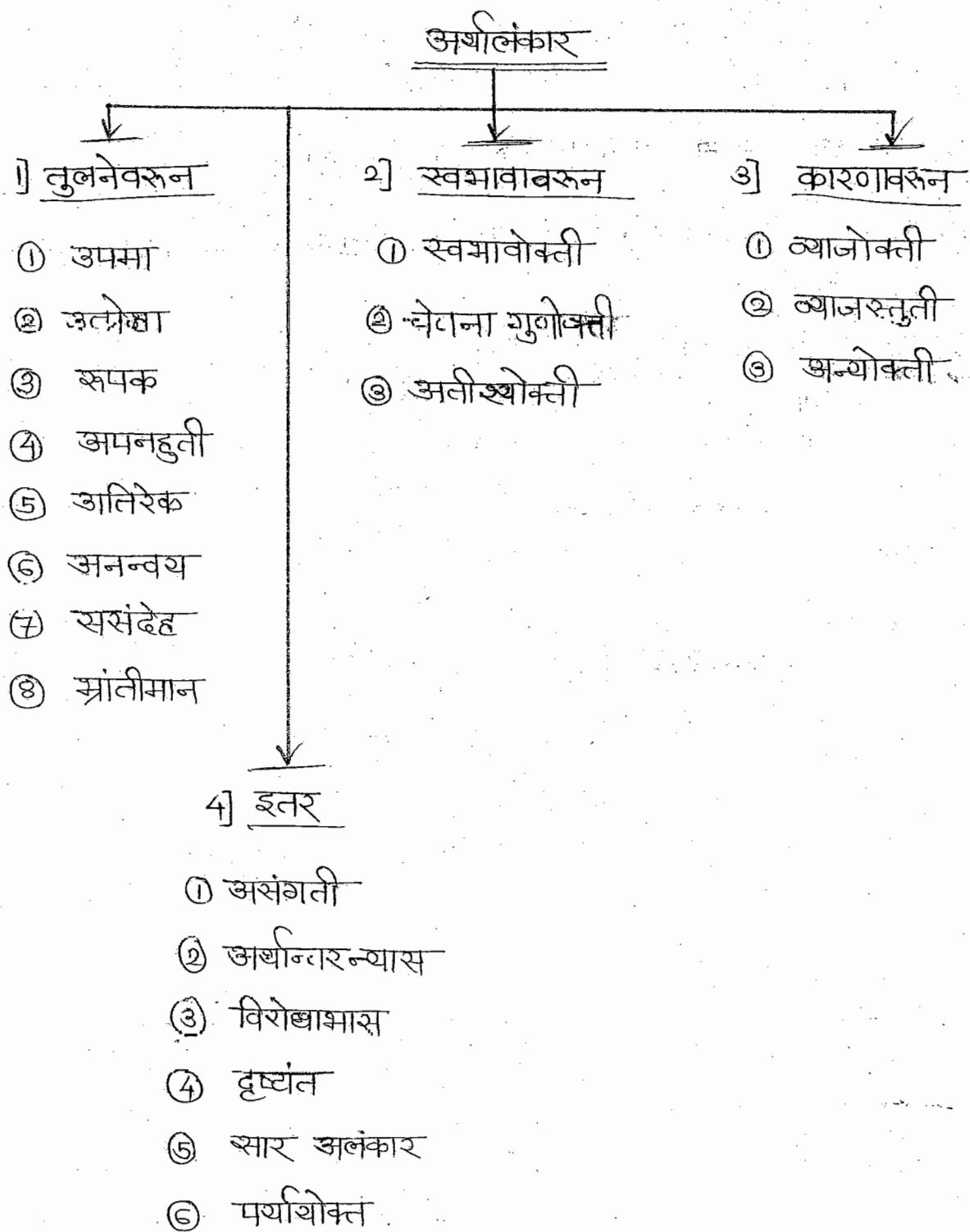
एकच शब्द जेव्हा दोन अर्थांने वापरला जातो
तेळा श्लेष अलंकार होतो.

उदाः:-

- १) औपच नव-गे मजला → समंग श्लेष
- २) मित्राच्या उद्याने कोणास आनंद होत नाही → अमंग श्लेष
- ३) कीर्तजासी नरहो जागा तुम्ही
 - जागाचे तीन अर्थ - ① जावा
 - ② जागा (झोपू नका)
 - ③ जागा (उपदेशाला जाबा)
- ४) रक्षावा घर्म असा करिशी उपदेश तो असे मान्य,
रक्षितसो घर्माते घर्म आमडा ठाऊक.
 - घर्माचे दोन अर्थ :-
 - ① अर्जुनाचा भाऊ घर्म (युधिष्ठिर)
 - ② युष्माचा घर्म.

2] अर्थालंकार :-

-प्रकार :-



① तुलनेवरून प्रकार

1] उपमा अलंकार :-

उपमेय व उपमान यांच्यात सारखेपणा दाखवला जातो.

- या अलंकारात सम, सारखा, समान, प्रमाणे इ. शब्द येतात.

उदा:-

1) गवताच्या पात्याकर पडलेले दवविंदू सोत्याप्रमाणे चमकत होते.

2) हा आंबा साखरेसारखा गोड आहे.

3) असेहा तेथे वाहत सुंदर दुष्टासारखी नदी.

4) सावळा रंग तुळा पावसाळी नमापरि.

2] उत्प्रेक्षा अलंकार :-

उपमेय जण काढी उपमानच आहे असे वर्णन केले जाते.

- या अलंकारात जण, गमे, वाटे, भासे, जणूकाय असे शब्द येतात.

उदा:-

1) हा आंबा जण काढी साखरच आहे

२) सांज ये गोकुळी सावळी-सावळी सावळ्याची जणू
सावळी.

३) विचे दात जणू काही मोतीच आहेत.

४) ती गुलाबी उवा म्हणजे परमेश्वराचे प्रेम जणू

५) अश्रीच्या अश्रमी | नेले गज |
माहेरची वाटे खरेखुरे |

६) कृपक अलंकार :-

छपमेय आणि छपमान दीदो एकच आहेत
असे वर्णन केले जाते.

उदा:-

- १) हा आंवा म्हणजे साखरच आहे
- २) लहानमूळ म्हणजे मातीचा गोळा
- ३) बाई काय सांगू | स्वामीची ती वृष्टी |
असृताची वृष्टी | मज होय |

4) अपनहूती अलंकार :- (लपविणे)

उपमेय हे उपमेय नसून उपमानच आहे असे जेव्हा सांगितले जाते, तेव्हा अपनहूती अलंकार होतो.
- या अलंकारात नकारदर्शक शब्द येतात.

उदाः-

1) हे हृदय नसे, परि स्थंडीन अग्रजगलेले.

2) न हे वदन, चंद्रमा शरदीचा गमे केवळ.

3) न हे नयन, पाकळ्या उमलव्या सरोजातील.

4) ओर कशाचे, देठची फुलव्या पारिजातकाचे.

5) व्यतिरेक अलंकार :-

उपमेय हे उपमानापेक्षा श्रेष्ठ आहे असे जेव्हा होते तेव्हा व्यतिरेक अलंकार होतो.

उदाः-

1) हा ओवा साखरेपेक्षा गोड आहे.

2) अमृताहूनी गोड नाम तूळे देवा.

3) तू माझीहून माथाळ | चंद्राहूनी शीतल |
पाव्याहूनी पातळ | कल्लोक प्रेमाचा |

6) अनन्वय अलंकार :- [अन्वय = संबंध]

[अनन्वय = संबंध नसणे]

जेव्हा उपमेयाची तुलना जेव्हा उपमेयाशीच होऊ शकते तेव्हा अनन्वय अलंकार होतो.

उदा:-

1) आई करी असते, जरी असतेच आई.

2) आहे लाजमहल एक जगती लो, तोन त्याच्या परी.

3) इंते बहु, होलील बहु, आहेतही बहु, परि यासम हाच.

7) संसदेह अलंकार :-

उपमेय कोणते आणि उपमान कोणते असा संदेह जोळा निर्माण होतो, तेळा संसदेह अलंकार होतो.

उदा:-

1) हा आंवा आहे की साखर

2) काळोखात पाथ मडे ढोरखंड की सर्प मुढे.

3) कोणला मानू चंद्रमा शूवरीचा की नवीचा.

४) आंतीमान अलंकार :-

उपमेयाच्या जागी उपमान आहे असा श्रम
निर्माण करून त्यानुस्पृ कृती घडली तर आंतीमान अलंकार
होतो.

उदाः:-

१) शुभ्र चांदगे आळीत पडले दूष समजूनी मणी चाटते

२) आपल्यासाठी दोरगवाढी मानुनी तुळशीदास।
सर्पापकडूनी चढून गेला प्रिया दर्शनास

② स्वभावावरूप प्रकार

1] स्वभावोक्ती अलंकार :-

एषाद्या वस्त्रे किंवा प्राण्याचे हुवेहुव वर्णन केले जाते तेळा स्वभावोक्ती अलंकार होतो.

उदाः -

१) ऐलतटावर पैलतलावर हिरताकी घेऊन निळा-सावळा झाश वाहतो बेटा-बेटातून.

२) मातीत ते पसरले आतिरम्य पंख, केले वरी उदर पांदर निष्कलंक, चंचू तशीच उघडी पद लांबविले, निष्ठाग देह पडला श्रमही निमाले.

३) गणपत वाण्याचे उदाहरण :

2] चेतनाशुणोक्ती अलंकार :-

निर्जीव वस्त्र सजीव आहेत असे समजून जेळा वर्णन केले जाते तेळा चेतनाशुणोक्ती अलंकार होतो.

उदाः -

१) चाफा बोलेना चाफा चालेना चाफा खंतकरी काही काही केल्या बोलेना.

२) डोकी अलगद घरे उचलती काळोखाच्या कुशीवरून.

३) उकडलेली अंडी, बटाटे, पुलाव व रस्सा खाअन, रस्ता वृप्त झाला.

4) अरे वेड्या सोनचाफ्या काय तुझा रे बहर नाही
पाहिलीस माझी चाफेकळी सोनगौर.

अ) अतीश्योक्ती अलंकार :-

एखाद्या गोष्टीचे आहे त्याच्या पेढा
फुगावून सांगितल्यास अतीश्योक्ती अलंकार होते.

उदा:-

- 1) जेव्हा नव्हते चराचर तेव्हा होते पंढरपूर
जेव्हा नव्हत्या शोदाबंधा तेव्हा होती चंद्रभाष्णा.
- 2) दमडीच्या तेलाचे उदाहरण.
- 3) आणी झाले रामायण मग झाला राम जानकीवर

③ कारणावरून प्रकार

1] व्याजोक्ती अलंकार :-

व्याज रहणाजे खोटे आणि उक्ती रहणाजे वोलगे.

- खरे कारण लपवून जेव्हा दुसरेच कारण सांगितले जाते तेव्हा व्याजोक्ती अलंकार होतो.

उद्धा :-

1) कागे वबशी मागे वळूनी अशी, विचारता रहणे,
माझी पिशवी शाहिली करी.

2) येला दण वियोगाचा पाणी नेत्रामध्ये दिसे,
डोऱ्यात काय गेले हे रहणानी नयना पुसे.

3) वंचक सदनी भामक घरणी
नृप दुर्घेविन फसे पडे
खुदूखुदू हसता रहणे द्रौपदी
नको शुद्धगुल्मा करी गडे.

2] व्याजस्तुती अलंकार :-

खोटी स्तुती / निंदा जेव्हा केली जाते तेव्हा
व्याजस्तुती अलंकार होतो.

उदा :-

1) कारे पुऱ्या मातलाशी, त्यो केले विठ्ठलाशी.

२) होती वदनचंद्राच्या दर्शनाचीच आस ती
अष्टिचंद्रच मज तु द्यावा याहन कृपा कोणती

३] अन्योकती अलंकार :-

- अन्य महाजे दुसरा उकती महाजे बोलणे
- एकाला सोइन दुसऱ्याला बोलणे महाजे अन्योकती अलंकार होय.
 - लेकी बोले सुनेलागे अशी रचना असते.

उदा:-

४) सांवाच्या पिंडीते वसशी छेदूनी वृश्चिका आज
परितो आश्रय सुटता खेट्रे उतरतील रे तुझा माज

(4) इतर

1] असंगती अलंकार :-

कारण एका ठिकाणी आणि कार्य दूसऱ्या ठिकाणी असे जेव्हा असते तेव्हा असंगती अलंकार होतो.

उदा:-

- 1) काटा माझ्या पायी रुलला शब्द तुझ्याउरी कोमल का.
- 2) चुबाव माझ्या हृदयी फुलला रंग तुझ्या शाबावरती खुलला.

2] अर्थान्तरन्यास अलंकार :-

एखाद्या विशेष गोष्टीवरून सर्वसामान्य सिद्धांत होतो तेव्हा त्यास अर्थान्तरन्यास अलंकार असे महतात.

उदा:-

- 1) जग हे वंदी शाळा कुणी न येणे अला चांगला जीतो पथ चुकलेला.
- 2) कठीणसमय येला कोण कामास ऐतो.
- 3) जन पळभर महतीज हायहाय.

३] विरोधाभास अलंकार :-

वरवर विरोध असतो पण आतज विरोध नसतो

उदा:-

- ▷ जरी आंखळी मी तुला माहते.
- 2) स्वतःसाठी जगलास तर मेलास
अन् इतरांसाठी मेलास तर जगलास

४] दृष्टांत अलंकार :-

एषाद्या गोष्टीचा स्पष्टीकरणासाठी त्याच अर्धाचा
दाखळा दिला जातो त्याला दृष्टांत अलंकार असे रहिणतात.

उदा:-

- ▷ लहानपण देगा देवा मुंगी साखरेचा रवा
ऐरावत रत्न योर त्यासी अंकुशाचा भार.

५] सार अलंकार :-

एषादी घटना चहत्या क्रमाने सांगून उल्कर्ष साख-
बळा असतो त्या अलंकारास सार अलंकार असे रहिणतात.

उदा:-

- ▷ काव्यात नाटके रम्य नाटकात शाकुंतल त्यामध्ये
चौथा अंक त्यातरी चार रलोक.

6] पर्यायोक्त अलंकार :-

एखादे विष्वान सरळ शब्दात न सोंगता
अडवळणाने सोंगते.

उदा :

- 1) तो सरकारचा माहुणाचार घेत आहे
- 2) त्याला काळाने भागच्यातून हिरावून नेले.

xerox odar 7 4 4 8 0 4 3 5 4 3

xerox odar 7 4 4 8 0 4 3 5 4 3